Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

पथिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167931

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक

'स्वाधीनता के पथ पर' का नायक मधुसूदन गांधीवाद, सत्याग्रह, साम्यवाद, आतंकवाद आदि की प्रचण्ड लहरों के आलोड़न-विलोड़न को देखता और स्वयं भी उनमें पड़कर संघर्ष के थपेड़ों द्वारा पूर्णिमा की मृत्युरूपी कठोर चट्टान पर गिरकर विक्षिप्त हो गया था। वही लेखक के इस दूसरे उपन्यास में 'पथिक' के नाम से फिर कार्यक्षेत्र में पदार्पण करता है। आजादी मिली नहीं इसलिए फिर संघर्ष आवश्यक है।

× × ×

यह पुस्तक हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर स्पष्टतः और स्वतन्त्रता से इस रूप में लिखा गया प्रथम उपन्यास है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक

Central Library
167931
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

लेखक : *गुरुदत्त*

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Religious
All Yog & Organic Products

081
167931

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 05

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-P

© भारतीय साहित्य सदन

मूल्य 150/-
प्रकाशक **हिन्दी साहित्य सदन**
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
email: indiabooks@rediffmail.com
फोन 51545969, 23553624
फैक्स 011-23553624
संस्करण 2004
मुद्रक नॉवल्टी प्रिन्टिंग प्रैस, शाहदरा, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक

श्रापित मंदिर

हिमालय की तराई में, ठीक जहाँ से पर्वत-शृङ्खला आरम्भ होती है, एक छोटा-सा गाँव है। गाँव का नाम देवा है। यह गाँव स्वच्छ, निर्मल जल वाली नदी के किनारे बसा है। नदी को वहाँ के लोग पद्मा के नाम से जानते हैं। नदी के किनारे पर एक आम की बगिया है और बगिया में एक मकान है जो बाहर से देखने पर मन्दिर प्रतीत होता है। परन्तु इसमें किसी देवता की मूर्ति स्थापित नहीं की गई है।

इस बगिया अथवा मकान में कोई नहीं रहता। न ही इसमें कोई जाता है। गाँव के लोगों की धारणा है कि इसमें भूत रहते हैं। बगिया और वह मकान दोनों ही श्रापित हैं।

इस बगिया और मन्दिर को देवा गाँव और इस इलाके के ज़मींदार के एक पुरखा ने बनवाया था। उनका नाम लेते हुए भी लोगों का हृदय काँपता है। कारण यह है कि वह अति निर्दयी, दुराचारी, कामी, क्रोधी और आततायी था। एक ब्राह्मण की कन्या से दुराचार करने पर, ब्राह्मण ने पद्मा नदी में डूबकर आत्मघात करते समय उसे श्राप दिया था, 'दुष्ट, तेरे नाम लेनेवाले का भी सत्यानाश होगा।' ब्राह्मण तो डूबकर मर गया, परन्तु उसका श्राप अभी तक जीवित है।

ज़मींदार को जब श्राप का पता चला तो उसने प्रायश्चित्त किया, व्रत रखा, यज्ञ करवाया, बाग लगवाया और भगवती का मन्दिर बनवाया। व्रत अधूरा रह गया, ज़मींदार ज्वर-ग्रस्त हो गया, यज्ञ पूरा नहीं हो सका और पुरोहित को अर्धाङ्ग वात हो गई। मन्दिर बन तो गया, परन्तु देवी की मूर्ति की प्रतिष्ठा नहीं हो सकी क्योंकि उसके पूर्व ही ज़मींदार का देहान्त हो गया।

कथा यहीं समाप्त नहीं हो गई। ज़मींदार का इकलौता पुत्र भी पिता के देहांत के कुछ ही काल बाद इस संसार से चल बसा। इस प्रकार उनकी ज़मींदारी किसी दूर के सम्बन्धी को मिली।

नये ज़मींदार ने जब श्राप की कथा सुनी तो उसने अपने घर में और गाँव में मृत ज़मींदार का नाम लेने और मन्दिर तथा बगिया में जाने की मनाही कर दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दुःखद घटना को हुए एक सौ वर्ष से ऊपर व्यतीत हो चुके थे, परन्तु ज़मींदार के परिवार और देवा ग्राम के लोग उस आततायी का नाम लेने से अभी तक डरते थे। मन्दिर और बगिया को तो लोगों ने ऐसा छोड़ा कि वह भूतों का निवासस्थान ही माना जाने लगा। उन सबको श्रापित विशेषण देकर स्मरण किया जाता था—श्रापित ज़मींदार, श्रापित बगिया तथा श्रापित मन्दिर।

लोगों में किंवदन्ती थी कि उस कन्या के पिता की आत्मा भूत बन उस मन्दिर में रहती है। ग्राम के नर-नारी नित्य पद्मा पर स्नान करने और जल भरने जाते थे। नदी के किनारे पक्का घाट बना है और श्रापित मन्दिर तथा बगिया इस घाट के समीप ही पीछे की ओर हैं। घाट से नदी पूर्व की ओर है और बगिया तथा मन्दिर पश्चिम की ओर। स्नान करने वाले तथा पानी भरने वाले जब वहाँ जाते तो मन्दिर तथा बगिया की ओर आँख उठाकर भी न देखते।

कार्तिक मास के अन्तिम दिन थे। एक दिन प्रातःकाल एक स्त्री अपनी छः-सात वर्ष की लड़की के साथ स्नान करने तथा पानी भरने घाट पर आई हुई थी। जाड़े का आरम्भ था। इतने सवेरे स्नान के लिए घाट पर अभी और कोई नहीं पहुँचा था। स्त्री धार्मिक विचारों में रत प्रतीत होती थी। स्नान करते-करते विष्णु-सहस्र-नाम का पाठ करती जाती थी। लड़की भी तोतली भाषा में 'हरे राम ! हरे कृष्ण !' की रट लगा रही थी।

स्नान कर, कपड़े पहन, माँ-बेटी गगरी भरने लगी थीं कि तभी पीछे से अति मधुर स्वर में किसी के गाने का शब्द सुनाई दिया। कोई गा रहा था :

बन्दों श्री हरि पद सुखदाई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे,
अंधरे को सब कछु दरसाई···

लड़की ने पहले सिर उठाकर गाने वाले की ओर देखना चाहा। वह घाट पर जल के समीप खड़ी थी। किनारा ऊँचा था, इसी कारण वह गाने वाले को नहीं देख सकी। वह अपनी छोटी-सी गगरी को, जो उसने जल से भरकर सीढ़ी पर रखी थी, वहीं छोड़, भागकर घाट की सीढ़ियों पर चढ़ गई और बगिया की ओर देखने लगी।

बगिया में, मन्दिर के बाहर, चबूतरे की सीढ़ियों पर एक सिर-नंगा, बड़ी-बड़ी दाढ़ी-मूंछों वाला आदमी बैठा गा रहा था। लड़की ने अपनी माँ और अन्य गाँव वालों से सुना हुआ था कि इस मकान में भूत रहते हैं। अस्तु, इस गाने वाले को उसने भूत समझ लिया और चिल्लाकर माँ से कहने लगी, "माँ, भूत !" और उँगली से श्रापित बगिया की ओर संकेत करने लगी।

माँ भी दौड़ती हुई घाट के ऊपर चढ़ आई और गाने वाले की ओर देखने लगी। न जाने गाने वाले ने उनको देख लिया था अथवा वैसे ही, वह मन्दिर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीढ़ियों से उठा। उठने पर तो उसकी आकृति और भी भयानक प्रतीत होने लगी। वह धीरे-धीरे घाट की ओर आने लगा।

दोनों माँ-बेटी अपने-आपको अकेला जान भय से काँपने लगीं और फिर बिना अपने गीले कपड़े और गगरियाँ उठाये गाँव की ओर 'भूत ! भूत !' चिल्लाती हुई भाग खड़ी हुईं। भागते हुए उनको किसी की विकराल हँसी पीछा करती हुई सुनाई दी।

गाँव, नदी के किनारे से कुछ हटकर, बगिया से दक्षिण की ओर था। आगे-आगे माँ और पीछे-पीछे लड़की को चिल्लाते और भागते हुए देख गाँव में सब लोग घरों से बाहर निकल आये और अचम्भे से उन्हें देखने लगे।

माँ-बेटी अपने घर में घुसने वाली थीं कि तभी पड़ोस की कुछ स्त्रियों ने उन्हें रोक लिया। "अरी, बताती क्यों नहीं ? क्या हुआ है ? भागती हुई क्यों चली आ रही हो ?"

लड़की का नाम नलिनी था। पकड़े जाने पर वह खड़ी हो गई और हाँफती हुई, अवाक् दूसरों की ओर देखती रही। तब तक गाँव के और लोग भी वहाँ पर एकत्रित हो गये। आखिर नलिनी की माँ को बताना ही पड़ा। वह बोली, "हमने श्रापित मन्दिर में भूत देखा है।"

"तुम वहाँ गयी ही क्यों थीं ?" एक ने पूछा।

"गयी नहीं थी। घाट पर स्नान कर धोती छाँट रही थी कि बिटिया ने मन्दिर की सीढ़ियों पर उसे बैठे देखा और फिर मुझे दिखाया। जब हमने उसे अपनी ओर आते देखा तो हम भाग खड़ी हुईं। हाय रे ! बाप रे !! हमारे कपड़े-गगरियाँ सब वहीं पर हैं।

: २ :

इस घटना के बाद उस दिन घाट पर स्नान के लिए कोई नहीं गया। गाँव-भर में हलचल मच गई। गाँव की पंचायत बुलाई गई और भूत से बचने के उपायों पर विचार होने लगा। कुछ लोगों ने, गाँव के दक्षिण में, पद्मा पर नया घाट बनवाने का प्रस्ताव किया। गाँव का ज़मींदार तो लखनऊ ताल्लुकेदार स्कूल से पढ़कर आया था। वह भूत की कथा पर और गाँव वालों की मूर्खता पर हँसते हुए बोला, "देखो, भूत-वूत कुछ नहीं होते, यह सब तुम लोगों का भ्रम-मात्र है। एक पगली स्त्री के कहने पर तुम सब लोग साहस छोड़ बैठे हो। और फिर घाट एक दिन में तो बनेगा नहीं। तब तक स्नान करने और पानी भरने का क्या प्रबन्ध होगा ?"

एक गाँव वाला बोला, "महाराज ! (वहाँ ज़मींदार को राजा और महाराजा कहकर पुकारा जाता था) यदि आपको खर्चा करने में संकोच हो तो चंदा कर लिया जाये।"

ज़मींदार बाईस-तेईस वर्ष का युवक था। वह इस लाञ्छन से भड़क उठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोला, "रुपया खर्च करने में संकोच नहीं है, परन्तु केवल एक स्त्री की मूर्खता से हज़ारों रुपये व्यय करना भी क्या अक्लमन्दी है !"

"तो क्या भूत नहीं होते ?"

"नहीं।"

"क्या श्रापित ज़मींदार श्राप से नहीं मरा ?"

"नहीं, वह अपनी मौत मरा है।"

"बाबू ! आप भी उसी मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं।"

खुशामद से अथवा किसी अन्य कारण से बहुत-से लोग ज़मींदार की बात काटने वाले को धिक्कारने लगे।

उस आदमी ने फिर कहा, "यदि भूत नहीं होते तो, महाराज, हमारे आगे-आगे चलकर बगिया और मन्दिर की तलाशी करके देखें कि वह कौन है जो वहाँ गा रहा था। मैंने अपने कानों से वहाँ किसी को गाते सुना है।"

इस पर युवक ज़मींदार ने वहाँ जाना स्वीकार कर लिया। वह और गाँव के कुछ अन्य युवक, लाठियाँ ले, जाने को तैयार हो गये। यद्यपि सब अपने-अपने मन में डरते थे, परन्तु एक-दूसरे के सम्मुख भय प्रकट करने में लज्जा मान, घाट पर चलने को तैयार हो गए। कुछ लोग तो तमाशा देखने के लिए ही चल पड़े थे।

पुरुषों को भय के स्थान पर जाते देख, भला स्त्रियाँ कब पीछे रह सकती थीं। जब उनके प्रियजन, पति, पुत्र तथा भाई, अपनी जान हथेली पर रखकर सौ वर्ष से प्रचलित विश्वास की परीक्षा करने जा रहे थे तो वे घरों में बैठी नहीं रह सकती थीं। बिना किसी परामर्श के, बिना संगठन के, बिना किसी प्रकार की लज्जा-संकोच के गाँव की प्रायः सब प्रौढ़ स्त्रियाँ, पुरुषों के पीछे-पीछे घाट की ओर चल पड़ीं। लड़के-लड़कियों ने भी घर बैठे रहना उचित नहीं समझा। वे भी अपनी माताओं के पीछे-पीछे हो लिये।

जब लाठियों से सुसज्जित पुरुषों की टोली के साथ ज़मींदार घाट पर पहुँचा तो उसने वहाँ एक अपरिचित आदमी को गहरी नींद में सोते देखा। उसे देख ज़मींदार ने कहा, "पूछो तो, कहीं नलिनी की माँ इसे ही तो भूत नहीं कह रही थी। यह तो कोई भला मनुष्य प्रतीत होता है।"

यह ठीक था कि उस सोये हुए मनुष्य के बाल बड़े-बड़े हो गये थे। उसकी दाढ़ी और मूँछें बढ़ रही थीं। उसके कपड़े मैले और फटे हुए थे। जूता घिस गया था और जूते के तले में सुराख हो गये थे। तो भी उसके मुख पर एक विशेष आभा थी। घाट पर के नीम के पेड़ के पत्तों में से छनकर आने वाली सूर्य-किरणें उसके मस्तक की दिव्य ज्योति को देदीप्यमान कर रही थीं। जब गाँव के लोगों ने उसे देखा तो सब एक स्वर में कहने लगे, "यह तो बेचारा पथिक है।"

ज़मींदार ने स्त्रियों के झुंड की ओर देखकर पुकारा, "नलिनी की माँ, देखो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो, यही तुम्हारा भूत है क्या ?"

नलिनी की माँ ने आगे बढ़कर देखा और कहा, "हाँ, कुछ ऐसा ही प्रतीत होता था।"

यह सुन सब खिलखिलाकर हँस पड़े। इस हँसी ने और लोगों के परस्पर के वार्तालाप ने सोये हुए पथिक को जगा दिया। वह उठकर बैठ गया और आँखें मल-मलकर अपने चारों ओर स्त्री-पुरुषों की भीड़ देखने लगा। वह समझ नहीं सका कि ये सब लोग क्यों एकत्रित हुए हैं। उसके मुख से अचम्भा प्रकट हो रहा था। ज़मींदार कुछ आगे बढ़कर पूछने लगा, "तुम कौन हो ?"

पथिक ने प्रश्न का उत्तर न देकर स्वयं पूछा, "तुम सब लोग मुझे ऐसे क्यों देख रहे हो ?"

ज़मींदार ने कहा, "तुम भूत जो हो।"

पथिक ने और भी अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा, "भूत ? कौन कहता है ?"

अब नलिनी की माँ ने अपने-आपको मुक्त करवाने के लिए कह दिया, "नलिनी कहती थी।"

"नलिनी ? कौन नलिनी ? कहाँ है वह ?"

ज़मींदार ने फिर पूछा, "महाशय, तुम कौन हो और यहाँ क्यों आये हो ?"

इस बात ने पथिक को गम्भीर विचार में डाल दिया। वह प्रश्नकर्ता का मुख देखने लगा। उसका दाहिना हाथ आधा उठकर रह गया, मानो वह कुछ कहने लगा हो, परन्तु कोई बाधा आ पड़ने से रुक गया हो। फिर वह अपने हाथ से सिर खुजलाने लगा। बहुत यत्न के पश्चात् वह बोला, "आपने पूछा है, मैं कौन हूँ ? मैं भी अपने-आपसे यही पूछ रहा हूँ, परन्तु कुछ उत्तर सूझ नहीं पड़ता।

"मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मैं बहुत दूर से चला आ रहा हूँ। जिस मार्ग पर मैं चला आ रहा हूँ, कुछ दूर तक तो दिखाई देता है। उससे पहले वह मेरी स्मृति में धुँधला-सा प्रतीत होता है, और फिर उससे पूर्व सर्वथा अन्धकार है। मेरी बुद्धि, स्मरण-शक्ति उस अन्धकार को भेदने में असफल है। मुझे कई वर्ष भ्रमण करते हुए हो गये हैं। मैं सैकड़ों स्थानों पर ठहरा हूँ। प्रत्येक स्थान के लोग मुझसे यही पूछते हैं और मैं भी हर बार अपने से पूछता हूँ, परन्तु मैं समझ नहीं पा रहा कि मैं कौन हूँ।"

इतना कहकर पथिक ने अपने मस्तक को दोनों हाथों से पकड़ लिया। ज़मींदार और दूसरे लोग अचम्भे में उसकी ओर देख रहे थे। पथिक ने माथे को वैसे ही पकड़े हुए कहना जारी रखा, "मुझे कुछ याद नहीं आता। जब भी मैं सोचता हूँ, मेरे सिर में घोर वेदना होने लगती है। मैं ८ ल नहीं हूँ। मैं देख रहा हूँ कि आप लोग खड़े मुझे देख रहे हैं। यह नदी बह रही है और वे दूर पर्वत हैं। इस नीम के पेड़ से छनकर आने वाली किरणें बहती हुई नदी पर अठखेलियाँ कर रही हैं। स्वयं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे खुशी होती है, शोक होता है, डर लगता है। अभिप्राय यह है कि मेरी इन्द्रियाँ ठीक काम करती हैं। मैं गाता हूँ, खाता हूँ, सोता हूँ, और प्रत्येक बात को अपनी इच्छा से करता हूँ। सुन्दर दृश्य मुझे आनन्द देते हैं। योग, ध्यान, सन्ध्या, उपासना, कर्म, ज्ञान, सब समझता हूँ। मैं पढ़ा-लिखा भी हूँ, परन्तु जब मैं अपने जीवन-पथ को देखना चाहता हूँ तो विवश हो जाता हूँ और कुछ नहीं सूझ पड़ता। कुछ लोग मुझे पागल कहते हैं और दूसरे धूर्त। मुझे किसी से शिकायत नहीं। कारण कि मैं स्वयं नहीं जानता कि मैं क्या हूँ।"

यह परिचय इतना लम्बा होने पर भी ज़मींदार की समझ में नहीं आया। वह अपने मन में यह निश्चय नहीं कर सका कि वह धूर्त है अथवा पागल। प्रश्न के पहले भाग के उत्तर से निराश हो उसने दूसरे भाग को फिर दोहराया और पूछा, "यहाँ किस प्रयोजन से आये हो?"

"मैं एक प्रयोजन से घूम रहा हूँ, वह है चित्त की शान्ति। दूर पहाड़ों में योगी, तपस्वी, साधु, महात्मा, अनेक से मिलता चला आता हूँ। जहाँ सुन्दर प्राकृतिक दृश्य देखता हूँ, वहाँ ठहर जाता हूँ। कल गौपुरी से चला था। सायंकाल यहाँ पहुँचा। पश्चिम से सूर्य की किरणें आकर इस नदी की उछलती-कूदती लहरों पर सुनहरी चादर डाल एक विशेष शोभा उत्पन्न कर रही थीं। नदी के पार वे पहाड़ और उनसे दूर और ऊपर हिम से ढकी हुई चोटियाँ, अस्त होते हुए सूर्य की किरणों से चुम्बन किये जाने पर, लज्जा से लाल हो रही थीं। यह सब मन को इतना आकर्षित कर रहा था कि मैंने यहीं ठहरने का निश्चय कर लिया। मैंने समझा कि वह कोई मन्दिर है, परन्तु पहुँचने पर उसे वीरान पाया। रात चबूतरे पर लेट तो गया, पर सो नहीं सका। मच्छरों ने सोने नहीं दिया। अब घाट पर चलती वायु में नींद आ गई और सो गया था।"

ज़मींदार ने पथिक से बहुत प्रश्न पूछे। वह बुद्धिमान, धीर, गम्भीर और सभ्य था। उसके उत्तरों और बोलने के ढंग से प्रतीत होता था कि वह पढ़ा-लिखा, विद्वान् और सुशील है। परन्तु जब भी उसके पूर्व निवासस्थान अथवा नाम इत्यादि के विषय में पूछा जाता, तो वह, जैसे किसी जंगल में खो गया हो, भौचक्का हो प्रश्नकर्ता का मुख देखने लगता था। अन्त में ज़मींदार ने कहा, "तुम बहुत धूर्त प्रतीत होते हो। भला यह कैसे हो सकता है कि अपना पूर्व परिचय देने के समय ही तुम्हारा दिमाग काम करना छोड़ देता है। और बातें तो तुम सब ठीक करते हो। केवल अपना नाम-धाम नहीं बताते। अवश्य ढोंगी हो।"

पथिक यह लांछन सुनकर चुपचाप ज़मींदार का मुख देखता रहा। बहुत यत्न कर उसने केवल यह कहा, "आपका ऐसा कहना स्वाभाविक है। मैं स्वयं परेशान हूँ। मैं नहीं जानता कि मुझे क्या हो गया है। केवल एक धुँधला-सा चित्र मेरे मन पर है। एक कोठी में एक घास के लॉन (मैदान) पर एक देवी मुझे चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीने को दे रही थी। यह कब था, कहाँ था और वह देवी कौन थी, मैं नहीं जानता। पश्चात्, कश्मीर में एक अति सुन्दर घाटी में एक देवी सेवा-सुश्रूषा करती थी। फिर एक समय कुल्लू में मैं भजन गाता था और लोगों की भीड़ मेरे आसपास एकत्रित हो जाती थी। इसके पश्चात् का चित्र, जो मेरे मन पर अंकित है, अधिक स्पष्ट है। कुल्लू में मुझे एक महात्मा मिले थे। वह मुझे अपने साथ कैलाश-यात्रा को ले गये। उनकी संगति ने और उनकी औषधियों ने मेरे मन को कुछ अंशों में स्वस्थ कर दिया है। कैलाश से लौटकर मैं पंजाब की राजधानी लाहौर में पहुँचा। वहाँ सार्वजनिक सेवा में कुछ समय व्यतीत किया। वहाँ पर मुझे यह ज्ञान हुआ कि मेरी विचार-शक्ति मेरा पूर्ण रूप से साथ नहीं देती। मैं अनेकानेक विषयों पर विचार करता था, परन्तु सर्वसाधारण से भिन्न परिणामों पर पहुँचता था। इससे प्रायः सदैव लोगों से मेरा झगड़ा रहता था। मैं वहाँ से चला आया और नेपाल पहुँचा। वहाँ से मुझे आदेश हुआ कि मैं पुनः मैदानी इलाके में लौट जाऊँ। अतएव घूमता-फिरता, स्थान-स्थान पर चित्त की शांति के साधन ढूँढ़ता हुआ यहाँ पहुँच गया हूँ।''

''नेपाल से चले जाने का आदेश किसने दिया था? नेपाल राज्य ने?''

''नहीं, मेरी अन्तरात्मा ने; अथवा यों कहो कि सृष्टि के नियन्ता ने।''

''सृष्टि के नियन्ता ने?''

''हाँ, भगवान् ने।''

''अब यहाँ कब तक रहोगे?''

''नहीं बता सकता। यहाँ रहना अथवा यहाँ से चला जाना मेरे अपने अधीन नहीं है।''

''किसके अधीन है?''

''मनुष्य के जीवन का संचालन करने वाली शक्तियाँ अनेक हैं। मान लो, यदि मुझ यहाँ से निकाल बाहर करने पर आप हठ करें तो मुझे आप लोगों से झगड़ा करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।''

इस स्पष्ट कथन ने ज़मींदार को विचार करने पर मजबूर कर दिया। वह सोचने लगा कि इस विचित्र व्यक्ति को गाँव में ठहरने दे अथवा न दे। इस विषय में अपने साथियों के विचार जानने के लिये उसने गाँव वालों की ओर देखा। गाँव वाले बहुत-से लोग वापस चले गये थे। स्त्रियाँ जो प्रातःकाल से स्नान करने अथवा पानी भरने घाट पर नहीं आयी थीं, अपने-अपने घर से गगरी ले आयीं और जल भरने लगी थीं। ज़मींदार के पास कुछ लड़के-लड़कियाँ, जिनमें नलिनी भी थी, और एक-दो गाँव के लोग रह गये थे। इनमें एक वृद्ध व्यक्ति भी था। ज़मींदार ने उसे ही सम्बोधित कर पूछा, ''काका, तुम ही बताओ, क्या किया जाये?''

वह वृद्ध पुरुष कुछ सोचकर बोला, ''बेटा सुरेश, यह रहेगा कहाँ?''

ज़मींदार सुरेश ने कुछ व्यंग्य के भाव से और कुछ लोगों के मन में अंकित करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये कि वह भूत-प्रेत को नहीं मानता, तुरन्त उत्तर दे दिया, "इसी बगिया में रह जाये, अच्छा ही तो है।"

वृद्ध ने दाहिने हाथ से सिर खुजलाते हुए कहा, "इस बगिया में ! भला यह कैसे हो सकता है ?"

सुरेश ने अब कुछ जोश के साथ कहा, "हो क्यों नहीं सकता ? सुनो, मैं भूत-प्रेत, श्राप, आशीर्वाद को नहीं मानता। इतनी बड़ी बगिया और सुन्दर मकान हम लोगों की मूर्खता से वीरान पड़ा है। यह पथिक यहाँ रह सकता है।"

वृद्ध चुप रहा। अन्य कोई आपत्ति उठाने वाला था ही नहीं। सुरेश ने पथिक की ओर देखकर कहा, "हम लोगों को तुम्हारे रहने में आपत्ति नहीं। हाँ, यदि तुमने कुछ भी उपद्रव किया तो तुम्हारे लिये ठीक नहीं होगा।"

इतना कह वे लोग वहाँ से चले गये। लड़के-लड़कियाँ भी वहाँ से खिसक रहे थे। नलिनी वहाँ से जाने वालों में सबसे अन्तिम थी। वह वहाँ खड़ी क्या सोच रही थी, यह बताना कठिन है। पथिक दोनों हाथों में सिर को रखे, आँखें नीची किये हुए गम्भीर विचार में मग्न था। नलिनी उसके मुख की ओर देख रही थी। एकाएक उसने कह दिया, "मैं तुम्हें पहचानती हूँ। तुम हो…।" जैसे एकाएक वह बोलने लगी थी, वैसे ही चुप रह गयी।

पथिक ने, एक भोली लड़की को यह कहते सुना कि वह उसे पहचानती है, मुख ऊपर उठाकर उसकी ओर देखा। वह निरीह बालिका का भोलापन और अद्वितीय सौंदर्य देखकर चकित रह गया। उसने उत्सुकता से पूछा, "तुम मुझे पहचानती हो ? बताओ, मैं कौन हूँ ?"

लड़की कुछ स्मरण करने का यत्न कर रही थी। आँखें मूँदकर और दाहिने हाथ को कुछ उठाकर, मानो कोई पिछली बात याद कर बताने लगी हो, बोली, "तुम्हें देखा तो जरूर है, पर नाम याद नहीं आता। हाँ, क्या तुम भूतनाथ तो नहीं हो ?"

पथिक भूतनाथ का नाम सुन हँसने लगा। फिर कुछ अपने मन को स्थिर कर पूछने लगा, "और तुम कौन हो ?"

"मैं ?" अपने विषय में प्रश्न पूछे जाने पर उसे कुछ लज्जा और संकोच अनुभव हुआ। वह दाहिने हाथ की उँगली मुँह में डाल और मुख फेरकर बोली, "मैं नलिनी हूँ।"

"ओह ! तुमने ही मुझे सुबह देख भूत समझा था ?"

नलिनी को अब ज्ञात हुआ कि सब पुरुष और बच्चे घाट पर से चले गये हैं और वह अकेली भूत से बातें कर रही है। यह जानते ही उसके मन में एक अनिश्चित-सा भय उठा। उसने इधर-उधर देखा और वह वहाँ से भाग खड़ी हुई। कुछ दूर जाकर खड़ी हो लौटकर पथिक की ओर देखने लगी। फिर भागी तो सीधी घर पहुँची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ३ :

नलिनी घर पहुँची तो कुछ सहमी हुई थी। उसकी माँ ने उसे देखा तो घबराकर पूछा, "क्यों, क्या हुआ? नलिनी, तेरा मुख पीला क्यों पड़ गया है?"

"कुछ नहीं, माँ, मैं डर गई थी।"

"किससे डर गयी थी?"

"भूत से।"

माँ हँस पड़ी। बोली, "तो तू अभी तक वहीं खड़ी थी! पगली-सी! वह भूत नहीं है।"

नलिनी के मुख का रंग ठीक हो रहा था। माँ को निडर देख उसका उत्साह बढ़ रहा था। उसने कहा, "हाँ, माँ, वह भूत नहीं है। मैंने उसे पहचान लिया है।"

माँ ने नलिनी को ऐसी बातें करते पहले कभी नहीं देखा था। वह ऐसे कह रही थी, जैसे किसी भूली बात के याद आने पर मनुष्य अलौकिक आनन्द अनुभव कर उस बात को वर्णन करने लगता है; जैसे मानो उसने कोई पहेली बूझ ली हो और प्रकट कर वह सारे संसार को चकाचौंध कर देने वाली है।

माँ ने उत्सुकता से पूछा, "तूने पहचान लिया है? भला, सुनूँ, कौन है वह?"

"भूतनाथ…नहीं…हाँ…नहीं…ऊँ…मुझे नाम याद नहीं रहा। मैंने उसे देखा है।"

"कहाँ देखा है?"

"याद नहीं। नदी के किनारे पर। यह नदी नहीं, माँ। एक बड़े मकान में। बहुत सुन्दर कपड़े पहने हुए।"

माँ ने समझा, लड़की घबरा गई है। यह सोच कि कहीं उसका दिमाग न हिल जाये, बात को टालकर कहने लगी, "पगली-सी, छोड़ इस बात को। देख, किसी से यह कहना नहीं, नहीं तो लोग तुझे पागल कहेंगे। चल, रोटी खा।"

माँ ने कुछ भुने चावल और अरहर की दाल उसको दे दी। नलिनी खाने लगी, परन्तु उसका ध्यान घाट पर पथिक की ओर था। जब वह चावल-दाल खा चुकी तो कुछ चावल, नमक, हरी मिर्च एक कपड़े के टुकड़े में बाँधने लगी। माँ दूसरे कमरे से आई तो पूछने लगी, "यह क्या कर रही है?"

"चावल बाँध रही हूँ।"

"क्यों?"

"उसके लिए।"

"किसके लिए?"

"भूतनाथ के लिए। उसने कुछ खाया नहीं होगा।"

"कैसे जानती है, कुछ नहीं खाया?"

"वहाँ घाट पर कोई नहीं है, माँ। वह अकेला है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो उसे कौन देने जायेगा ?"

"मैं।"

"तुझे डर नहीं लगेगा?"

जैसे कोई भूमि पर लावारिस पड़ी वस्तु को पाकर उस पर अपना विशेष अधिकार समझता है, वैसे ही नलिनी इस पथिक को अपना समझने लगी थी। गाँव में सबसे पहले उसी ने उसको देखा था। इससे वह उस पर अपना विशेष अधिकार समझती थी। फिर और कोई उसे खाने को क्यों देगा? किसी दूसरे ने तो उसे पाया नहीं है। इसके अतिरिक्त उसे ऐसा प्रतीत होता था कि बहुत छोटी अवस्था में उसकी आँखों के सम्मुख वह आता रहा है। उसके रूप का-सा मनुष्य उसके मन के पर्दे पर अंकित था।

वह चावलों की पोटली लिये हुए घाट पर जा पहुँची। पथिक सच ही अकेला था। अब उसने स्नान कर लिया था और मैले कपड़ों को धो डाला था। एक उज्ज्वल चादर और धोती पहने हुए घाट के एक कोने पर नदी की ओर मुख किये बैठा वह अब भयानक प्रतीत नहीं होता था। नलिनी उसके समीप जाकर खड़ी हो गई। पथिक ने उसकी ओर देखा और मुस्कराकर कहा, "तुम फिर आ गई हो! यह हाथ में क्या है?"

"चबेना।"

पथिक ने हाथ से समीप बैठने का संकेत कर कहा, "बैठ जाओ। तुम तो बहुत अच्छी लड़की मालूम होती हो। कुछ पढ़ती भी हो या नहीं?"

"हाँ, पढ़ती हूँ।" यह कहती हुई वह समीप ही बैठ गई।

"क्या पढ़ती हो?"

"हरे राम, हरे राम, राम-राम, हरे-हरे। हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे-हरे। मेरी माँ मुझे पढ़ाती है।"

"और क्या पढ़ी हो?"

"रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम।"

"ओह, तुम तो बहुत कुछ जानती हो!"

लड़की ने सहज भाव से कहा, "हाँ, और मैं गाना भी जानती हूँ। सुनाऊँ?"

"हाँ, सुनाओ।"

लड़की ने पोटली अपने सम्मुख रख ली और दोनों हाथ जोड़, आँखें मूँद गाना आरम्भ कर दिया :

"विनती सुनो प्रभु मोरी, भक्ति माँगूँ प्रभु तोरी,
द्रौपदी, मीरा, अहिल्या, सती सावित्री बाई।
सब के दुःख मेटन हारे; मैं दासी प्रभु तोरी॥
विनती सुनो प्रभु मोरी........."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारी माँ तुम्हें बहुत कुछ पढ़ाती हैं। वह बहुत अच्छी हैं।"

"तुम भी तो गाते थे। सुबह तुम गा रहे थे न!"

"ओह, तो तू सुन रही थी?"

"तभी मैंने तुम्हें भूत समझा था। तुम्हें और भी गाना आता है?"

"हाँ, सुनोगी?"

"सुनाओ, सुनूँगी।"

पथिक ने गाना आरम्भ कर दिया :

"मनुआ काहे होत उदास!
रात गुजरकर दिन आता है, दुःख बीते सुख बन जाता है।
सुख दुःख, दुःख सुख हो जाता है, कुदरत का सब है यह प्रयास।
मनुआ······"

नलिनी बड़े ध्यान से सुन रही थी। जब पथिक चुप हो गया तो उसने कहा, "तुम तो बहुत अच्छा गाते हो।"

"तुम्हें पसन्द है?"

"हाँ, बहुत।"

"और सुनाऊँ?"

"हाँ।"

"लो सुनो :

जब नदिया गहरी होती है, नाव भँवर में पथ खोती है।
एकाएक छुपे हाथों से होगी पार, रखो विश्वास। मनुआ······"

गाने और बातों में बहुत समय व्यतीत हो गया। जब बहुत देर तक नलिनी घर नहीं पहुँची तो उसकी माँ को चिन्ता लग गई। वह घर से उसकी खोज में निकल पड़ी। घाट पर दोनों को बातों में बहुत लीन देख चकित-सी खड़ी रह गई। अपनी बातों में लगे होने से उन दोनों ने उसे नहीं देखा। पथिक नलिनी को एक कहानी सुना रहा था। वह कह रहा था, "उस लड़की ने अपने देश के लिए जान दे दी। परमात्मा उस पर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने उस लड़की को स्वर्गवास में बुला लिया। स्वर्ग का सब आनन्द उसको प्राप्त हुआ। बहुत सुन्दर भूषण, वस्त्र, मिठाइयाँ, बढ़िया खिलौने और सभी कुछ जो वह चाहती थी, उसे मिला।"

इसी समय नलिनी की माँ की आवाज उसके कान में पहुँची, "बेटी, नलिनी!"

दोनों चौंक पड़े। नलिनी ने खड़े होकर कहा, "माँ।"

पथिक समझ गया। वह भी उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर नमस्कार कर दिया।

माँ ने कहा, "चलो घर। बहुत देर हो गयी है।"

नलिनी को अब याद आया कि वह किस मतलब से आई थी। उसने पोटली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक के सम्मुख रखकर कहा, "यह तुम्हारे खाने को लाई थी।" इतना कह वह भागकर माँ के साथ घर को चल पड़ी।

मार्ग में माँ ने पूछा, "क्या बातें कर रही थी?"

"वह मुझे कहानी सुनाता था।"

"क्या कहानी थी?"

नलिनी ने माँ के साथ-साथ चलते हुए कहानी सुनानी आरम्भ कर दी :

"एक दूर देश में एक लड़की रहती थी। नाम था जोन। उसके देश पर एक आततायी ने आक्रमण कर दिया। देश की धन-दौलत, अन्न-अनाज और स्त्रियाँ पकड़-पकड़कर ले जाने लगा। देश के लोग भूखों मरने लगे। उनकी स्त्रियों, बहिनों, माताओं को आक्रमण करने वाले सिपाही पकड़-पकड़कर अपने देश में ले जाते थे। इससे लोगों को बहुत दुःख होने लगा। सब त्राहि-त्राहि करने लगे। भगवान् को दया आ गई। किसान की लड़की जोन को वे स्वप्न में दिखाई दिये। भगवान् ने लड़की से कहा, 'तुम आक्रमण करने वाले सिपाहियों के विरुद्ध सेना एकत्रित करके लड़ो। तुम्हारी विजय होगी। तुम्हारे देश के लोगों का दुःख दूर होगा।' लड़की ने लोगों को यह बताया। लोग लड़ने को तैयार हो गये। उस लड़की की जीत हुई। आक्रमणकारी लौट गये, परन्तु किसी धोखेबाज़ ने उस लड़की को आक्रमण करने वालों के हाथ बेच डाला। उसे पकड़वा दिया। शत्रु ने उसे जीता जला दिया। इस पर भी उसके प्रयत्न का फल यह हुआ कि उसका देश स्वतन्त्र हो गया। लोग फिर प्रसन्नता से रहने लगे। उनका धन, माल, स्त्रियाँ बच गईं। लूटने वाला वहाँ से चला गया। परमात्मा उस लड़की से बहुत प्रसन्न हुआ। उसे स्वर्ग मिला। भूषण, वस्त्र, मिठाइयाँ और सब अच्छे-अच्छे पदार्थ उसको मिले।"

इतना कह नलिनी ने माता की ओर देखकर पूछा, "क्यों, माँ, कैसी अच्छी कहानी है?"

माँ बहुत ध्यान से नलिनी की बातें सुन रही थी, वह बोली, "हाँ।"

"माँ, क्या यह सच्ची बात है?"

"वह क्या कहता था?"

"कहता था, बिल्कुल सत्य है। उस लड़की की समाधि अभी भी उसके देश में है और लोग उस पर अब भी फूल चढ़ाते हैं।"

"ओह!"

"पर, माँ! जलते समय उसे पीड़ा ज़रूर हुई होगी।"

"इसी से तो स्वर्ग मिला। वह भगवान् के अपने देश में चली गई।"

"और उसको क्या हुआ जिसने उसे धोखा दिया था?"

"उससे पूछा क्यों नहीं?"

"तुम जो आ गई थीं। अच्छा, कल पूछूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ४ :

पथिक सत्य ही बहुत भूखा था। उसने नलिनी की पोटली खोली और उसमें से चावल नमक-मिर्च के साथ खा लिये। उसके धुले वस्त्र सूख गये थे। उन्हें एकत्र कर वह मन्दिर में पहुँचा। मन्दिर की सफाई करना एक दिन का काम नहीं था। एक सौ वर्ष से अधिक हो गया था कि उसमें किसी ने कदम नहीं रखा था। वह मन्दिर के ऊपर चढ़ गया। उसकी छत को साफ कर रात में सोने का प्रबन्ध कर लिया।

सायंकाल वह गाँव में गया। वहाँ उस वृद्ध से भेंट हो गई जो ज़मींदार के साथ था। पथिक ने उसे पहचान लिया। दोनों में बातचीत होने लगी और खाने का प्रबन्ध हो गया। वह वृद्ध गाँव का मुखिया छत्रपालसिंह था।

कुछ ही दिनों में गाँव के प्रत्येक आदमी से पथिक का परिचय हो गया। सब उसके सद्व्यवहार और बातचीत के ढंग से प्रसन्न थे। वह कभी-कभी लोगों को कथायें सुनाया करता था। उसका ध्यान अधिकतर गाँव के बालकों की ओर था। छोटे बच्चे, लड़के-लड़कियाँ तो उसे घेरे रहते थे। सायंकाल बच्चे और अन्य लोग घाट पर एकत्रित हो जाते और पथिक उन्हें कहानियाँ सुनाता, गीता सुनाता। रामायण और महाभारत की कथा सुनने तो स्त्रियाँ भी आ जाया करती थीं।

मन्दिर और बगिया बुहारकर साफ कर दी गई और वहाँ लड़कों की पाठशाला खोल दी गई। पढ़ने वालों में अधिक संख्या छोटी जाति के लड़कों की थी। हिन्दी पढ़ना-लिखना, भगवद्भक्ति और देशभक्ति के गीत पढ़ाई के मुख्य विषय थे। लड़कों में जातीय और देश-प्रेम उत्पन्न करने का यत्न किया जाता था। पाठशाला के लड़कों तथा कथा सुनने वाले लोगों में स्वतन्त्रता की भावना, प्राचीन आर्य-सभ्यता से प्रेम और हिन्दू धर्म तथा रीति-रिवाज के लिए श्रद्धा उत्पन्न करना पथिक का मुख्य काम था। दृष्टान्त रामायण से हों अथवा महाभारत से, किसी पुराण से हों अथवा ब्राह्मण ग्रन्थ से, परिणाम सदैव यह निकलता था कि आर्यावर्त्त देश देवताओं का देश है। इसे संसार-भर में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होनी चाहिये। इसकी पराधीनता का पाप देश में रहने वाले पर है। इस पाप को मिटाने के लिए सर्वस्व की आहुति देनी पड़े तो भी अधिक नहीं।

कथा के पश्चात् प्रायः लोग अपना संशय निवारण किया करते थे। एक दिन वहाँ का ज़मींदार सुरेश पथिक के कथा के ढंग की प्रशंसा सुन वहाँ चला आया। कथा सुनकर उसके मन में अनेक संशय उत्पन्न हुए। वह ताल्लुकेदार-स्कूल लखनऊ का पढ़ा हुआ था। वहाँ पर अंग्रेज़ी की प्रभुता को लड़कों के मन पर अंकित करने में कोई कसर नहीं रखी जाती थी। अंग्रेज़ी भाषा, अंग्रेज़ी वेष, अंग्रेज़ी आचार-व्यवहार वहाँ के विद्यार्थियों के लिए आदर्श बातें थीं। इसके मुकाबले में हिन्दुस्तानी रहन-सहन घटिया और तिरस्कार-योग्य समझा जाता था। केवल एक बात थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो अंग्रेज़ी होते हुए भी उनकी पहुँच से दूर बताई जाती थी। वह थी स्वतन्त्र, प्रजातन्त्र राज्य-पद्धति। इस विषय में वहाँ विद्यार्थियों को बताया जाता था कि हिन्दुस्तानी इसके योग्य नहीं हैं। यहाँ पढ़े-लिखे संख्या में बहुत कम हैं। यहाँ की जलवायु ऐसी है जिसमें लोग कामचोर, आलसी, निकम्मे और अयोग्य ही रहते हैं। यहाँ धर्म और मत-मतान्तरों के झगड़े हैं।

आज सुरेश के सम्मुख जब प्राचीन आर्य-सभ्यता और देश के जलवायु तथा यहाँ की उपज की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई तो वह बिना बोले नहीं रह सका। वह पूछने लगा, "इस देश की प्राचीन संस्कृति बहुत उत्तम थी, यह आपने कहा है। यदि यह सत्य है तो इसका पतन क्यों हुआ? क्या हमारे देश में अंग्रेज़ी राज्य होने से यह सिद्ध नहीं होता कि हमारा धर्म, हमारे रीति-रिवाज सब झूठे हैं और हमें उनको छोड़ देना चाहिये?"

पथिक ने गम्भीरता से उत्तर दिया, "धर्म और सभ्यता का दोष नहीं; उस पर हम लोगों के न चलने का दोष है। मिश्री मीठी होती है, पर वह मीठा स्वाद खाने वाले को मिलता है, केवल हाथ में पकड़ने वालों को नहीं। श्रेष्ठ धर्म उसको फल देता है जो उसका अनुसरण करता है। केवल धर्म-धर्म कहने से धर्म का फल प्राप्त नहीं हो सकता।"

"तो क्या हमारे पूर्वज आर्य धर्म पर आचरण नहीं करते थे?"

"पहले तो करते थे, परन्तु बीच के काल में धर्म-कार्य को छोड़ बैठे थे। ये मध्यकालीन भारतवासी वेदों की पूजा करते थे, परन्तु इन पर आचरण नहीं करते थे। गीता का पाठ तो होता था, परन्तु केवल पाठमात्र से ही मुक्ति का प्राप्त होना माना जाता था। गीता में लिखी बातों पर आचरण नहीं होता था। परिणाम यह हुआ कि मुट्ठी-भर विदेशियों ने भारतवर्ष की अतुल जनसंख्या को अपने अधीन कर लिया। वेदशास्त्र जिस बात को कहते हैं, व्यवहार में ले आओ और फिर देखो तुम्हारी अवस्था सुधरती है या नहीं।"

"इतना झगड़ा करने की क्या आवश्यकता है? पहले तो खोज करो कि वेद-शास्त्र क्या कहते हैं और फिर उस पर आचरण करो। क्या यह अच्छा न होगा कि विजयी जाति के धर्म, आचरण और रीति-रिवाज को अपना लिया जाय? ऐसा करने से जितनी विजयी जाति शक्तिशालिनी है उतने ही हम भी शक्तिशाली हो जावेंगे। हम संख्या में अधिक हैं, इससे राज्य हमारा हो जाएगा।"

"ऐसा होना असम्भव है। एक तो लोगों का आचरण देश के जलवायु के अनुकूल होना उचित है। भारतवासियों का आचरण भारतवर्ष के जलवायु के अनुकूल होना चाहिये, न कि इंगलिस्तान के जलवायु के। दूसरी बात यह है कि अंग्रेज़ी सभ्यता कोई आदर्श सभ्यता नहीं है। हम जो कुछ आजकल हैं इससे वे कुछ अंशों में अवश्य अच्छे हैं, परन्तु यथार्थ अच्छाई के विचार से उनमें बहुत कमी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज तो अंग्रेज़ी सभ्यता भारतवासियों के लिए विष का काम कर रही है। चरित्र सब प्रकार की उन्नति का स्रोत है और यह सभ्यता हमारे चरित्र को ही भ्रष्ट कर रही है। स्कूलों और कॉलेजों से जो विद्यार्थी पढ़कर निकलते हैं प्रायः चरित्रहीन हो जाते हैं। अंग्रेज़ों में स्वयं भी कुछ बहुत ऊँचा चरित्र नहीं है और इसका परिणाम शीघ्र ही निकलने वाला है। यह भविष्यवाणी करना कुछ कठिन प्रतीत नहीं होता कि ब्रिटिश साम्राज्य टूट-फूटकर नाश को प्राप्त होने वाला है। रूस और जर्मनी इस साम्राज्य पर चील-कौवों की भांति मँडरा रहे हैं और इस ताक में हैं कि अवसर मिलते ही इसके शव को नोच-नोचकर खा जायें।"

"परन्तु इसका प्रमाण क्या है कि अंग्रेज़ चरित्रहीन हैं और हमें चरित्रहीनता सिखा रहे हैं। देखिये, महात्मा गांधी तथा अन्य कांग्रेसी नेता, सर पी० सी० राय, सर रमन, सर बोस, जिन्होंने संसार में भारतवर्ष का नाम उज्ज्वल कर रखा है, सब अंग्रेज़ी शिक्षा में ही उन्नत हुए हैं।"

"ये लोग अंग्रेज़ी शिक्षा की उपज ज़रूर हैं और यही कारण है कि संसार में दूसरे लोग इनकी प्रशंसा करते हैं। यूरोप और अमेरिका अपनी सभ्यता की उपज की प्रशंसा नहीं करेंगे तो और किसकी करेंगे? महात्मा गांधी और दूसरे राजनैतिक नेता देश-प्रेम भी सीखे हैं तो अंग्रेज़ों से। यही कारण है कि समय पड़ने पर वे भारतवर्ष के हित को न समझ सके हैं और न कभी समझ सकेंगे। यही बात एक-दो वैज्ञानिकों की है। वे भी भारतवर्ष को कुछ विशेष लाभ नहीं पहुँचा सके।"

"यह आपका कहना मात्र है। इसमें प्रमाण तो कुछ नहीं है।"

"प्रमाण है। भारतवर्ष में अंग्रेज़ी राज्य आये लगभग दो सौ वर्ष हो चुके हैं। इतने काल में इतने बड़े देश में एक-दो वैज्ञानिकों का उत्पन्न हो जाना कोई श्लाघा की बात नहीं और फिर उन लोगों ने भारत को कितना उन्नति के मार्ग पर डाला है? कुछ भी नहीं। दूसरी ओर जापान ने पचास वर्ष में वह उन्नति की है कि रूस जैसी महान् शक्ति के दाँत खट्टे कर दिये हैं। यहाँ तक कि इंगलिस्तान, जर्मनी और अमेरिका को भी व्यापार में परास्त कर दिया है। व्यापार का आधार विज्ञान है और यदि पचास वर्ष में जापान ने यूरोप और अमेरिका को व्यापार में परास्त कर दिया है तो अनुमान लगा सकते हो कि उन्होंने विज्ञान में कितनी उन्नति की है। इंगलिस्तान और जर्मनी जापान से एक सौ वर्ष आगे थे। पचास वर्ष में जापान न केवल उनके बराबर हो गया है, प्रत्युत् उनसे आगे निकल गया है। जापान ने यह सब उन्नति यूरोपियन संस्कृति के आधार पर नहीं की। हमारी शिक्षा का आधार यूरोपियन भाषा और ढंग है और हम डेढ़ सौ वर्ष में केवल एक-दो वैज्ञानिकों को पाकर फूले नहीं समाते।"

सुरेश ने लखनऊ में तो यह पढ़ा था कि ब्रिटिश साम्राज्य बहुत सुदृढ़ और विस्तृत है। आज यह पगला उसे यह बता रहा था कि यह साम्राज्य नष्ट-भ्रष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने वाला है। उसने पढ़ा था कि अंग्रेज़ी साहित्य संसार में सर्वोत्तम है और यह देहाती गँवार उसे यह बताने का यत्न कर रहा था कि वह चरित्रहीनता की ओर ले जा रहा है। एक बात थी कि जापान की उन्नति चकाचौंध कर देने वाली थी और वे लोग न तो कोट-पतलून पहनते हैं और न ही अंग्रेज़ी भाषा में उनको शिक्षा दी जाती है। इस उदाहरण ने उसके चिरनिर्मित विचारों को हिला दिया था।

: ५ :

पथिक की ख्याति और सर्वप्रियता देवा ग्राम से बाहर भी फैल रही थी। प्रत्येक आदमी से वह अत्यन्त सहानुभूति और सच्चाई से बर्ताव करता था। लोग भी अपनी घरेलू और निजी बातों में उससे सम्मति लेने आया करते थे। आठ-दस आस-पड़ोस के गाँव के लोग प्रायः अपने-अपने मुकदमे लेकर आते और बहुधा पथिक की सहायता से बहुत पेचीदा समस्यायें भी सुलझ जाती थीं। स्त्री-पुरुष, भाई-भाई और पड़ोसी-पड़ोसी जब भी झगड़ पड़ते थे, तो कचहरी जाने के बजाय पथिक से जाकर फैसला करवा लेना अधिक सुगम, सस्ता और न्याययुक्त मानने लगे थे। पथिक को स्वयं न तो किसी से लगाव रहता था और न ही निजी लालच। इस कारण उसके निर्णय निष्पक्षतापूर्ण होते थे। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वह दोनों पक्षों को ऐसे ढंग से समझाता था कि झूठा और दोषी अपना दोष मान जाता था।

एक दिन मुखिया छत्रपालसिंह बेनी कहार और उसकी स्त्री को साथ लेकर वहाँ पहुँचा। पथिक श्रापित मन्दिर के बाहर चबूतरे पर आसन जमाये संगीत का अभ्यास कर रहा था। इन लोगों को आया देख अपना तानपूरा एक तरफ रखकर बोला, "ठाकुर साहब, क्या बात है, जो इनको साथ लेकर आये हो?"

जब सब लोग बैठ गये तो कुशल-समाचार के पश्चात् बात आरम्भ हुई। पथिक ने कहा, "मैं आप लोगों की क्या सेवा कर सकता हूँ?"

बेनी की स्त्री ने घूंघट काढ़े हुए कहा, "महाराज, यह मेरा आदमी है, परन्तु घर पर नहीं आता। बताइये, मैं क्या करूँ?"

पथिक ने बेनी की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा। बेनी उत्तर में कहने लगा, "पाँच वर्ष की सख्त मेहनत के पश्चात् लखनऊ से पाँच सौ रुपया कमाकर लाया था। वह सब रुपया इस रांड ने चुराकर किसी के पास रख छोड़ा है। यह रुपया मुझे देती नहीं, और मैं इससे घृणा करता हूँ। मैं इसका मुख भी देखना नहीं चाहता।"

अब पथिक ने छत्रपालसिंह की ओर देखा। वह बोला, "बेनी की स्त्री मेरे पास यह शिकायत लेकर आई थी। मैंने दोनों को समझाने का यत्न किया है, परन्तु फल नहीं निकला। अब इनको आपके पास लाया हूँ। आप बतायें कि इनका क्या किया जाये?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-P
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेनी पथिक के पास प्रायः नित्य आया करता था और पथिक के शिक्षा और कथा के काम में बहुत उत्साह प्रकट किया करता था। अतएव बेनी से पथिक को कुछ लगाव हो गया था। देवा में बहुत कम लोग थे जो उसको इतनी सहायता देते थे। पथिक उसे भला मनुष्य समझता था, परन्तु इस घरेलू झगड़े से उसके मन में वेनी के विषय में कई संशय उत्पन्न हो गये। वह उन सबका निवारण करना चाहता था।

"वेनी भाई, तुम तो बहुत धार्मिक विचारों के प्रतीत होते थे। क्या तुम घर में इस प्रकार झगड़ा करते हो? तुम्हारे जैसे आदमी को तो घर में ही सब बातें समझा-बुझाकर ठीक कर लेनी चाहियें।"

वेनी ने हाथ जोड़कर कहा, "गुरुदेव, यह सबकुछ कर चुका हूँ, परन्तु यह स्त्री कुछ मानती ही नहीं। जब इससे मेरा विवाह हुआ था तब यह बहुत छोटी उम्र की थी। इसकी आयु ग्यारह वर्ष की रही होगी। मैं इसे माँ के घर छोड़ लखनऊ नौकरी के लिये चला गया। दिन-भर एक बीमा कम्पनी की नौकरी करता था और प्रातः-सायं समाचार-पत्र बेचता था। इस प्रकार २४ घंटे में १६ घंटे काम कर रुपया कमाता रहा हूँ। पाँच वर्ष निरन्तर यत्न के पश्चात् पांच सौ रुपया जमा करके मैं घर लौटा। मैं यह सुनहरी आशा लगाये हुए था कि इसके साथ रहकर सुख से जीवन व्यतीत करूँगा। घर पहुँचने पर अपनी आशाओं पर पानी फिर गया देख बहुत निराश हुआ। मेरी स्त्री ने गाँव के एक ठाकुर विजयबहादुर से मित्रता कर ली थी। मैंने बिगड़ी बात बनाने का यत्न किया। मैं इसकी माँ के पास पहुँचा। उसे लखनऊ में मेहनत से कमाई करने की अपनी कथा सुनाई और उसका फल पांच सौ रुपया उसे दिखाया। माँ ने लड़की को समझाया और यह मेरे पास आकर रहने लगी। एक दिन मैं नदी पर स्नान करने आया हुआ था कि यह मेरे सन्दूक का ताला तोड़ रुपये निकाल अपने मित्र को दे आई। मैंने इसे बहुत समझाया कि यह रुपया हम दोनों के लाभ के लिए है, परन्तु यह मानती ही नहीं। यह कहती है, रुपया इसने नहीं लिया। मुझे विश्वास है, इसी ने लिया है।"

"क्या अभी भी विजयबहादुर से इसका सम्बन्ध है?"

"मैं नहीं बता सकता। मैं छः मास से रात के समय घर पर नहीं रहता। यह मेरे घर में रहती है और मैं अपनी मौसी के घर रहता हूँ। कभी-कभी दिन के समय इसे समझाने जाता हूँ, परन्तु परिणाम में गालियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता।"

पथिक यह हृदयविदारक कथा सुन गम्भीर विचार में पड़ गया। बहुत सोच-विचार कर उसने वेनी की स्त्री से कहा, "बेटी, क्या यह सत्य कहता है?"

'बेटी' शब्द कुछ ऐसे ढंग से कहा गया था कि वेनी की स्त्री का शरीर काँप उठा। पथिक ने इस काँपने को देख लिया था और वह इसका अर्थ सोचने लगा था।

Central Library
167931
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेनी की स्त्री विस्मय-भरी दृष्टि से घूँघट में से पथिक के मुख पर देखने लगी। वह मुख सर्वथा गम्भीर था।

पथिक ने इस शब्द के प्रभाव का अर्थ समझने के लिये फिर कहा, "देखो, बेटी, मैं तुम्हें बुलाने नहीं गया। तुम अपनी इच्छा से आई हो। मैं सरकारी अफसर नहीं, न ही मैं तुम्हारे गाँव का मुखिया हूँ। यदि तुम्हारी इच्छा बेनी के साथ रहने की न हो तो मैं तुम्हें मजबूर नहीं कर सकता। मेरे पास यदि तुम आई हो तो मेरी सहायता लेने के लिए। बताओ, यदि तुम मुझे सत्य नहीं बताओगी तो मैं तुम्हारी सहायता कैसे कर सकूँगा? बताओ, क्या बेनी सत्य कहता है?"

बेनी की स्त्री पथिक का मुख देखती रही थी। उसका घूँघट कुछ हट गया था और एक बालिका का सहमा हुआ मुख बितर-बितर आँखों से उसे देख रहा था।

जब पथिक को अपने प्रश्न का कुछ उत्तर नहीं मिला तो उसने 'बेटी' शब्द के प्रभाव का अभिप्राय जानने के लिए स्पष्ट प्रश्न किया, "तुमने अपने पिता को देखा है?"

अब बेनी की स्त्री का धीरज टूट गया। उसने एक लम्बा साँस लेकर कहा, "बापू को? हाँ।"

पथिक समझ गया कि यह लड़की अपने पिता से विशेष प्रेम रखती है। बेटी शब्द से उसके काँपने का अभिप्राय अब स्पष्ट हो गया। पथिक ने बेनी की स्त्री के हृदय तक पहुँचने का मार्ग ढूँढ़ लिया था। उसने कहा, "वह अब कहाँ है?"

बेनी की स्त्री की आँखों में आँसू भर आये। पथिक यह देख रहा था। छत्रपालसिंह ने पथिक को परिचित करने के लिए कहा, "इसके बाप का देहान्त हुए एक वर्ष हो गया है। बेचारा बहुत ही भला आदमी था। एकाएक रात को पीड़ा हुई और देह छोड़ गया।"

इस पर तो बेनी की स्त्री सिसकियाँ भरकर रोने लगी। पथिक ने उसे सांत्वना दे बहुत कठिनाई से चुप कराया। जब वह कुछ शांत हुई तो फिर पूछने लगा, "यदि इस समय तुम्हारा पिता तुमसे पूछता कि, बेटी, सत्य कहना तो क्या तुम झूठ बोलतीं? जिनसे हम प्रेम करते हैं उनकी आत्मा सदैव हमारे पास रहती है। उनको असत्य बात सुनने पर कितना दुःख होता है, यह तुम नहीं जानतीं। बताओ, बेटी, क्या तुम अभी भी विजयबहादुर को पसन्द करती हो?"

"नहीं।" बेनी की स्त्री ने आवेग में कहा। यह उसका पहला शब्द था जो अन्तरात्मा से निकला प्रतीत होता था।

"बहुत ठीक। मैं भी ऐसा ही समझता था। परन्तु तुम उसके जाल में क्यों फँसी हुई हो?"

"मैं उसे नहीं चाहती। मैं उससे घृणा करती हूँ, परन्तु मैं उसके वश में हूँ। मैं उसे छोड़ नहीं सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ? क्या मैं जान सकता हूँ ?"

इस पर वह फिर भयभीत हो पथिक और छत्रपालसिंह की ओर देखने लगी। पथिक समझता था कि इस लड़की के नन्हे-से दिल में कोई बात छिपी है जिसके प्रकट हो जाने से वेनी के घर की समस्या सुलझ सकती है। इस कारण पथिक ने बहुत ही मीठी आवाज़ में कहा, "हम तुम्हारे शत्रु नहीं हैं। यदि कोई ऐसी बात भी तुमने की होगी जिसके जानने से कोई तुम्हें हानि पहुँचा सके, तो भी हम तीनों तुमको कुछ नहीं कहेंगे। वेनी तो तुम्हारा पति है। यह तो तुम्हें दुश्चरित्रा जानते हुए भी एक बार अपने घर ले गया था। अब भी इसने तुम्हें अपने घर से निकाला नहीं है, प्रत्युत् स्वयं घर से निकल गया है। यह बहुत बड़ा दिल रखता है और यदि तुमने कोई खराब बात भी की होगी तो तुम्हें कुछ नहीं कहेगा।"

ये सब बातें वेनी की स्त्री के लिए घाव पर मरहम का काम कर रही थीं। पथिक में आकर्षण था और उसके मुख से 'बेटी' के शब्द ने उसे पिता की याद दिला दी थी। उसकी इच्छा न रहते हुए भी उसके मन की बात फूट-फूटकर उसके मुख से निकलने लगी। वह पहले धीरे-धीरे, मानो बोलने का यत्न कर रही हो, इस प्रकार बताने लगी और पश्चात् एक बार जब वह अपना दोष स्वीकार करने के मार्ग पर चल पड़ी तो फिर मन की बात धाराप्रवाह रूप से बताने लगी :

"मैं बिल्कुल नासमझ थी। मुझे अपने विवाह की बात भी भली-भाँति स्मरण नहीं। विवाह के समय तो मैं सो रही थी। बाद में यह लखनऊ चले गये। साल-पर-साल बीतने लगे। मुझे संसार की बातों का ज्ञान होने लगा। मेरी माँ विजय बाबू के घर चौका-वासन करने जाती थी। मैं भी कभी-कभी वहाँ जाया करती थी। आज लगभग एक वर्ष हुआ है जब उसने मुझे भ्रष्ट किया था। मेरी माँ को सब मालूम था। उसको विजय ने शायद दस-दस के दो नोट दिये थे। मेरी माँ ने वे रुपये बापू से छिपाकर रख छोड़े थे। उसके पश्चात् विजय ने माँ को और रुपये भी दिये थे। मैं उसके घर माँ के साथ प्रायः जाया करती थी। माँ काम करती थी और मैं उसके कमरे में चली जाती थी। विजय की माँ भी इस बात को जानती थी।

"माँ एक दिन घर में कुछ नये कपड़े खरीदकर लाई। बापू ने पूछा, 'कहाँ से लाई हो ?' माँ ने कह दिया, 'विजय की माँ ने दिये हैं।' दूसरे दिन जब हम विजय के घर से लौटकर आये तो हमने देखा कि बापू हाथ में कुछ नोट पकड़े थे और वह सन्दूकची, जिसमें माँ रुपये छिपाकर रखती थी, सामने रखी थी। माँ ने समझा, सब भेद खुल गया। वह घबरा गई। बापू ने माँ की घबराहट देख ली और माँ को डाँटा। माँ बक गई। उसने बहाना यह लगाया कि बेटी का आदमी तो सालों से घर नहीं आया और उसकी जवानी खराब जाती है। बापू मुझे बहुत प्रेम करते थे। वे केवल मेरे पालन-पोषण के लिए दिन-भर मेहनत करते थे और कहा करते थे, 'यदि यह बिटिया न होती तो इस भूखे देश को छोड़ कहीं और चले जाते।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँ ने अपना दोष मेरे सिर पर डाल दिया। बापू को मुझ पर क्रोध चढ़ आया। मैंने सब बातें ज्यों-की-त्यों बता दीं। मैं उनके सम्मुख झूठ नहीं बोल सकी। सब दोष मेरी माँ का था। बापू ने छड़ी उठाई और माँ को बहुत पीटा। पश्चात् हाथ-पाँव बाँध उसे कोठरी में बुन्द कर दिया। दो दिन ऐसे ही निकल गये। प्रातः-काल बापू माँ को बाहर लाते थे। टट्टी-पेशाब करवाकर फिर कोठरी में बन्द कर देते थे।

"तीसरे दिन रात के समय की बात है। हाय! हाय!! का शब्द सुन मेरी नींद खुल गई। मैं कोठरी से बाहर निकल आई। रसोईघर में मेरी माँ बापू की छाती पर सवार बैठी थी और विजय ने बापू के हाथों को पकड़ा हुआ था। माँ के हाथ बापू के गले पर थे। उनकी जबान मुख से बाहर लटक रही थी और आँखों की पुतलियाँ घूम चुकी थीं। मैं भागकर घर से बाहर आना चाहती थी और शायद बाहर आकर हल्ला करती, परन्तु विजय ने मुझे देख लिया। उसने बापू के हाथ छोड़ दिये। वह अब मर चुके थे। भागकर उसने मुझे पकड़ लिया। मुझे हाथ से पकड़कर खींचता हुआ सोने के कमरे में ले गया। वहाँ माँ भी आ गई, और उन्होंने कहा कि यदि मैंने कुछ भी भेद खोलने का यत्न किया तो वे मुझे मार डालेंगे। विजयबहादुर ने मुझे दो-तीन चाँटे भी लगाये। मैं डर गई और बापू की मृत्यु का रहस्य आज तक किसी को मालूम नहीं हुआ।

"बापू के मरने के पश्चात् माँ और मैं और भी विजयबहादुर के अधीन हो गई। कुछ महीने बाद यह लखनऊ से लौट आये और मुझे अपने घर ले जाने का प्रस्ताव किया। माँ नहीं चाहती थी, कारण यह कि मैं विजयबहादुर से रुपये वसूल करने का साधन थी, परन्तु विजय ने मेरी माँ को मुझे भेज देने की सम्मति दी और मैं इनके घर चली गई। विजय के कहने पर मेरी माँ ने रुपया चुराने पर मुझे विवश किया। इस पर मेरा इनसे झगड़ा हो गया। तब से फिर विजयबहादुर मेरे पर प्रभाव जमाये हुए है। मैं चाहती हूँ कि यह अपने घर में रहें, परन्तु यह रुपये वापस पाये बिना आना नहीं चाहते और इस प्रकार मुझे विजय के पंजे में छोड़े हुए हैं। मैं उससे घृणा करती हूँ, परन्तु मेरी रक्षा करने वाला भी तो कोई नहीं।"

यदि बेनी का कथन दुःखदायक था, तो बेनी की स्त्री की कथा रोमांचकारी थी। बेनी ने भी अपनी स्त्री का वृत्तान्त सुना तो उसका मन काँप उठा। वह अपनी स्त्री की विवशता को समझ गया। इस वृत्तान्त को सुनने के पूर्व जब उसकी स्त्री उसे घर बुलाती थी तो वह समझता था कि कोई षड्यन्त्र रच रही है। वह समझता था कि जब तक पहला रुपया न निकल आये आगे, विश्वास करना भयरहित नहीं। इस कथन से उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपनी स्त्री को घर में अकेली छोड़कर उसे दुराचार की ओर धकेल रहा है। इतना-सा भी अपना दोष जान लेने पर उसे अपने पाँच सौ की चोरी वसूल करने का विचार भूल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कहने लगा, "महाराज, इसने यह कथा मुझे पहले कभी नहीं बताई। मैं तो जब भी इससे रुपया माँगता था यह गालियाँ देने लगती थी।"

पथिक ने कहा, "बेटी, तुम इसे गालियाँ देती थीं! अपना दोष जानते हुए भी तुम यह कैसे करती थीं?"

बेनी की स्त्री ने आँखें नीची किये हुए कहा, "यह पुरुष है, मैं औरत हूँ। इसे मेरी रक्षा करनी चाहिये। जब मैं देखती थी कि यह मुझे अकेली, निःसहाय विजयबहादुर के पंजे में छोड़कर रात को चला जाता है तो मेरा जी इसे गालियाँ देने को करता था।"

"ओह!" पथिक ने हैरानी प्रकट करते हुए पूछा, "यदि यह रात को तुम्हारे पास रहता और विजयबहादुर तुम्हारे पास आता तो तुम क्या करतीं?"

"इसकी सहायता से मैं वही करती जो विजय की सहायता से माँ ने बापू का किया था।"

यह बात इतनी गम्भीरता से कही गई थी कि पथिक को विश्वास हो गया कि वह मन से विजयबहादुर को घृणा करती है। इस पर बेनी ने कहा, "मैं न तो किसी की हत्या करना चाहता हूँ और न ही अपनी हत्या करवाना। मैं तो इस बात का विश्वास करना चाहता हूँ कि तुम अपनी माँ और विजयबहादुर से कोई सम्पर्क नहीं रखोगी?"

"परन्तु तुमने मुझे यह तो कभी कहा ही नहीं। सदा रुपया ही माँगते रहे हो। लेकिन वह तो अब चला गया है। वापस नहीं आ सकता। माँ के पास भी शायद नहीं है। विजय माँ से उधार माँग ले गया है।"

पथिक ने देखा कि रुपया वापस आना तो कठिन है। इस कारण उसने बेनी से कहा, "बेनी भैया, रुपया हाथ का मैल है। औरत का मूल्य तो रुपयों में नहीं लग सकता। यह तो भगवान् की देन है।"

"गुरुदेव, जैसी आप आज्ञा दें, मैं करने को तैयार हूँ। हाँ, इसे आपके सम्मुख वचन देना होगा कि यह सती बनकर रहेगी।"

पथिक ने बेनी की स्त्री के सर पर हाथ रख आशीर्वाद देते हुए कहा, "बेटी, यह तो करना ही होगा। जाओ, भगवान् तुम्हारी सहायता करे। बेनी के पाँवों पर सिर रखो और उससे पिछली बात के लिए क्षमा माँगो।"

बेनी की स्त्री ने उसके पाँव पर सिर रख दिया। उसने उसे उठाकर उसका हाथ पकड़ लिया। जब वे जाने लगे तो पथिक ने कहा, "देखो, इसके पिता की चर्चा व्यर्थ है। विजयबहादुर और इसकी माँ को सर्वथा भूल जाओ।"

वे दोनों चले गये। छत्रपालसिंह उन दोनों को, जो आते समय परस्पर गाली के बिना सम्बोधन नहीं करते थे, अब चुपचाप शान्ति से जाता देख विस्मय में डूब गया। उनके दूर निकल जाने पर उसने पथिक से कहा, "आपने कमाल की है। पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह न्याय तो न हुआ।"

"काका, मैं न्यायाधीश बनकर यहाँ नहीं आया। मैं तो आप लोगों का सेवक हूँ। मन, वचन और कर्म से आप लोगों की सेवा करने का प्रण किया है, सो अपनी शक्ति के अनुसार करता रहता हूँ।"

"परन्तु अन्यायी को छोड़कर आपने अन्याय को प्रोत्साहन दिया।"

"किसी रोग को मिटाने के लिए उसे परिपक्व अवस्था तक पहुँचने देना भी एक उपाय है।"

: ६ :

छत्रपालसिंह के चले जाने के पश्चात् पथिक ने फिर तानपूरा उठाया और स्वर भरने लगा। तीसरे पहर का समय हो चला था। इस समय वहाँ नलिनी आ पहुँची। वह प्रायः नित्य आती थी और पथिक उसे संगीत सिखाता था। नलिनी के आने पर पथिक में एक विशेष आनन्द और उत्साह भर जाया करता था। वह अत्यन्त लगन से उसे सिखाता। उधर नलिनी भी अब बिना नित्य का सबक लिये नहीं रह सकती थी। इस बालिका को इस पुरुष की संगति में वह सुख तथा आनन्द अनुभव होता था जो वह अपनी माँ और भाई की संगति में नहीं पाती थी। वह आती तो शिष्य बनकर थी, परन्तु मन में समझती थी कि भूतनाथ, नलिनी के मन में उसका यही नाम अंकित था, एक बहुत बढ़िया व्यक्ति है और उसे खोज निकालने का श्रेय उसी पर है। वह उसे अपनी मिलकियत समझ उसके पास आती थी।

पथिक गा रहा था :

"हरि-नाम सुमर सुख में, दुःख में।
मत मान करो, सब नश्वर है॥"

नलिनी ने पीछे से आकर उसकी आँखें मूँद लीं। पथिक जानता था कि और किसी में इतना साहस नहीं। वह बोला, "तुम आ गईं? नलिनी बहिन, लो आओ और सबक आरम्भ करो।"

"मैं आज गाना नहीं सीखूंगी।"

"क्यों?"

"मैं आज कहानी सुनूंगी।"

"अच्छा, तो दोनों करना। पहले थोड़ा गाने का अभ्यास कर लो और फिर तुम्हें एक कहानी सुनाऊँगा।"

इस वचन पर वह राजी हो गई और अपने हाथ आँखों पर से उठाकर सम्मुख आ बैठी। तानपूरे से स्वर मिलाकर, पहले एक-दो बार स र ग म कह गई। अब पिछले दिन का सबक सुनाने लगी :

"ध प म ग स रे प—
ध प म ग मम—"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, ठीक है। अब इसके बोल सुनाओ।"

"रघुवीर तेरो ही दास कहाऊँ।
तुमरो ही नाम जपूँ निशि बासुर॥"

"बहुत ठीक। अब तुम ठीक गाने लगी हो।"

"कल मैंने यही गीत माताजी और भाई को सुनाया था।"

"हाँ, तो उन्होंने क्या कहा?"

"माताजी ने शाबाशी दी, परन्तु भाई ने डाँटकर पूछा, 'किससे सीखा है?' मैंने तुम्हारा नाम बता दिया। वह कहने लगा, 'मत सीखने जाया करो। वह तुम्हें एक दिन खा जायेगा।'"

"फिर?"

"मुझे विश्वास नहीं आया। एक बार तो डर गई थी, परन्तु तुरन्त ही डर दूर हो गया और मैंने कहा, 'भूतनाथ लड़कियों को नहीं खाता।'

"वह बोला, 'वह तुम्हें खा जायेगा।'"

पथिक ने मुस्कराते हुए पूछा, "फिर?"

"फिर क्या? वह कहता था, तुम मुझे खा जाओगे और मैं कहती थी, तुम नहीं खाओगे।"

"तुम्हें मुझसे डर नहीं लगता?"

"डर? नहीं। मेरा यहाँ तुम्हारी बातें सुनने को जी चाहता है। माताजी भी पहले कहती थीं कि यहाँ न आया करूँ। परन्तु एक दिन वह तुम्हारी कथा सुनने आई थीं। तब से वह नहीं रोकतीं। आज मैंने जब पूछा, 'माताजी, जाऊँ?' वह बोलीं, 'हाँ, जाओ। परन्तु जल्दी लौट आना।'"

"तब तो तुम जल्दी लौट जाओ।"

"मगर कहानी तो सुनाई नहीं। अभी कैसे जाऊँगी!"

पथिक तानपूरे पर कपड़ा चढ़ा मन्दिर के अन्दर रखने चला गया। नलिनी उसके पीछे-पीछे मन्दिर में पहुँच गई। वह कई दिन से वहाँ नहीं गई थी। आज उसने वहाँ एक मिट्टी की मूर्ति देखी। ऐसी पहले वहाँ नहीं थी। नलिनी बहुत ध्यान से उसे देखने लगी। मूर्ति ठीक उसी के कद की थी और बहुत सुन्दर थी। नलिनी ने देखा कि मूर्ति एक सिंहासन पर बैठी है। हाथ में वीणा है। सिर पर मुकुट है। उसे ऐसा प्रतीत होता था कि सूरत किसी देखी हुई लड़की की है। उसने पथिक को पुकारा, "भूतनाथ!" वह उसके पास खड़ा हो गया। नलिनी ने पूछा, "यह किसकी मूर्ति है?"

"माँ सरस्वती की।"

"यह हाथ में क्या है?"

"एक बाजा है। इसे वीणा कहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मां सरस्वती गाती हैं ?"

"हाँ, यह सब कलाओं की देवी हैं। संगीत आदि कला सीखने वाले इसी देवी की पूजा करते हैं।"

"संगीत के अतिरिक्त और क्या-क्या सिखाती हैं यह ?"

"नाचना, चित्र खींचना, मूर्ति बनाना और अन्य विद्यायें।"

"यह मूर्ति किसने बनाई है ?"

"मैंने।"

"तुम मूर्ति बनाना भी जानते हो ?"

"हाँ। अब यही मूर्ति एक पत्थर पर बनेगी। होगी वह इतनी बड़ी और बिल्कुल ऐसी ही। मैं तस्वीर भी बनाता हूँ। मेरी बनी तस्वीर देखोगी ?"

"तुम तो बहुत कुछ जानते हो। एक मेरी तस्वीर भी बना दो।"

पथिक ने कुछ उत्तर नहीं दिया। भीतर कमरे में से कागज़ का टुकड़ा उठा लाया। लाकर उसने नलिनी को दिखाया। यह नलिनी का चित्र था। इसे वह पहचान गई। वही लहँगा, वही चोली, बाल घूंघर वाले भी वैसे ही थे। मोहन के कमरे में एक आईना था और उसमें वह अपना मुख देखा करती थी। इस कागज़ पर बिल्कुल वैसा ही रूप था, जैसा उसे आईने में दिखाई देता था।

"यह तो मेरा चित्र है।" उसने कागज़ को देखते ही कहा।

"हाँ।" पथिक का उत्तर था।

"यह मुझे दे दो। मैं माताजी को दिखाऊँगी।"

"हाँ, ले सकती हो।"

नलिनी और पथिक दोनों बाहर चले आये। वे साथ-साथ टहलते हुए घाट पर पहुँच गये। घाट से आगे, नदी के किनारे, दोनों कुछ दूर जाकर एक स्थान पर बैठ गये।

पथिक ने कहानी सुनानी आरम्भ की ही थी कि ज़मींदार का एक नौकर वहाँ पहुँच गया। पथिक की ओर देखकर बोला, "ओ पगले ! चल, महाराज बुलाते हैं।"

पथिक इस प्रकार के सम्बोधन से चिढ़ गया। साथ ही वह इस समय नलिनी को कहानी सुना रहा था। इसको वह एक धनी की दरबारदारी करने से अधिक आवश्यक समझता था। अतएव इस समय बुलाये जाने से वह बहुत नाराज़ तो हुआ, किन्तु फिर भी उसने यही उचित समझा कि नौकर को कुछ उत्तर न दे।

उसने नलिनी को कहानी सुनानी आरम्भ कर दी, "एक राजा था। राजा की एक लड़की थी। लड़की का नाम सावित्री था। सावित्री का कोई भाई……"

ज़मींदार का नौकर और अधिक उपेक्षा सहन नहीं कर सका। कड़ककर बोला, "सावित्री के भाई के बच्चे ! सुनता है या नहीं ? महाराज बुलाते हैं।"

पथिक ने सोचा, चुप रहने से काम नहीं चलेगा। बोला, "क्यों ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं क्या जानूं।"

"तो कह दो, पागल नहीं आता। उसे फुरसत नहीं है।"

इस पर नौकर ने घूमकर उसकी ओर देखा और कहा, "तुम कर ही क्या रहे हो जो फुरसत नहीं है?"

"देखते नहीं हो! इस लड़की को कहानी सुना रहा हूँ।"

"ओह! बहुत भारी काम है। फुरसत नहीं है!" नौकर ने मुख टेढ़ा कर व्यंग्य से कहा, "जानते हो, महाराज को भी शायद ज़रूरी काम है।"

"तो उनको कह दो, यहाँ चले आवें। तब तक कहानी समाप्त हो जायेगी।"

ज़मींदार का नौकर बिना पथिक को लिये लौट गया। कोट (महल) में ज़मींदार की युवक-मण्डली उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। मोहन के, जो इस मण्डली में गाने वाला था, कुछ बीमार होने और गा न सकने के कारण सबकी इच्छा पथिक से गाना सुनने की हुई थी। विचार आते ही चपरासी को पथिक के पास भेज दिया था।

सुरेश ने अपनी प्रभुता स्थिर रखने के लिये नौकरों के सम्मुख अपनी मान-मर्यादा को बहुत ऊँचा बना रखा था। यदि गाँव का कोई भी व्यक्ति उसकी किंचित्-मात्र इच्छा की भी अवहेलना करता तो पिटवा दिया जाता था। यही कारण था कि उसके चपरासी बहुत बददिमाग हो रहे थे।

चपरासी बिना पथिक के लौट आया था। कारण पूछे जाने पर हाथ जोड़कर बोला, "महाराज, वह नहीं आता।"

"क्या कहता था?" विजयबहादुर ने पूछा।

"कहता था, फुरसत नहीं है।"

चपरासी ने पथिक के दोष को अधिक-से-अधिक बढ़ा-चढ़ाकर बताने के लिए कहा, "मोहन बाबू की बहिन से मीठी-मीठी बातें कर रहा था।"

यद्यपि मोहन की बहिन नलिनी सात वर्ष की बालिका थी, तो भी इस बात को सुनकर सब सन्न रह गये। मोहन ने इसको भारी अपमान समझा। उसने सबको अपनी ओर देखते हुए जान, उठकर दीवार पर लटके हुए हंटर को उतार लिया और एक भी शब्द बोले बिना बैठक से बाहर निकल आया।

युवक-मण्डली के सब सदस्य उसका अभिप्राय समझ, हाथ में छड़ी, लाठी, जो जिसको मिली, लेकर मोहन के पीछे हो लिये। सुरेश खाली हाथ था।

जब सब लोग नदी के किनारे पहुँचे तब भी पथिक नलिनी को बता रहा था, "सावित्री ने पति की सेवा की। उसके लिए भगवान् से प्रार्थना की और अपनी पति-भक्ति के बल से होनी को भी टाल दिया। सावित्री देवी थी, सती थी और संसार उसके सम्मुख सिर···।"

इसके आगे वह नहीं कह सका। मोहन क्रोध में अन्धा हो रहा था। उसने वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचते ही खट से हंटर की एक चोट पथिक की पीठ पर लगा दी।

"आह !" पथिक के मुख से आवाज़ निकल गई। नलिनी चीख मारकर खड़ी हो गई। इतने में मोहन ने एक और वार किया। पथिक अब उठ खड़ा हुआ। तीसरी बार मोहन का हाथ उठा था कि पथिक ने लपककर उसका हाथ पकड़ लिया। हाथ इतने ज़ोर से पकड़ा कि हंटर ज़मीन पर गिर गया। पथिक ने हंटर उठा लिया और मोहन को पीटने के लिए उसे उठाया। नलिनी यह सब देख रही थी। उसने देखा कि उसका भाई काँप रहा है। उसने यह भी देखा कि अब वह पिटने वाला है। इस कारण स्वाभाविक तौर पर उसे दुःख हुआ। वह पथिक के सम्मुख आ खड़ी हुई और उसके मुख से आवाज़ निकल गई, "भूतनाथ !"

नलिनी के दोनों हाथ ऊपर उठे हुए थे और 'भूतनाथ' का शब्द चीख निकलने की भाँति था। पथिक आवाज़ सुन नलिनी की ओर देखने लगा। नलिनी ने याचना के भाव में कहा, "मेरा भाई।"

पथिक नलिनी की घबराई हुई शक्ल देख मुस्कराया और बोला, "तुम्हारा भाई मोहन? बहुत अच्छा।"

इतना कह उसने हंटर को नीचे कर लिया और मोहन का हाथ छोड़ते हुए बोला, "नलिनी के भाई होने से बच गये हो। भाग जाओ, नहीं तो खैर नहीं।"

मोहन को पथिक की शारीरिक शक्ति का ज्ञान हो गया था। उसकी पकड़ लोहे के शिकंजे से कम नहीं थी। मोहन का क्रोध फेन की भाँति बैठ गया। उसे अपने दुर्बल होने पर लज्जा आई।

सुरेश और उसके साथी अभी तक तमाशा देख रहे थे। उनका अनुमान था कि पथिक हंटर की चोट खाने से भाग खड़ा होगा। परन्तु मोहन को लज्जित और निस्सहाय खड़ा देख सब चकित रह गये। विजयबहादुर से नहीं रहा गया। वह आगे निकल आया और बोला, "अबे ओ! सलाम करो।"

पथिक ने आज्ञाकर्ता के मुख की ओर देखकर कहा, "क्यों?"

विजयबहादुर ने दाँत पीसते हुए कहा, "क्यों? साले, देखता नहीं कि किससे बातें कर रहा है?"

विजयबहादुर के हाथ में लाठी थी। उसने अपनी बात समाप्त करने के साथ ही लाठी का वार किया। परन्तु पथिक सचेत खड़ा था। उसने पैंतरा बदलकर वार से अपने को बचा लिया। साथ ही उसने हंटर से विजयबहादुर की कलाई पर वार किया। लाठी उसके हाथ से गिर पड़ी। पूर्व इसके कि वह लाठी उठाने के लिए आगे बढ़े, पथिक ने लपककर लाठी उठा ली। अब उसके हाथ में लाठी थी। उसने हंटर को वेग से बहती हुई नदी के पानी में फेंक दिया और लाठी तानकर खड़ा हो गया। सुरेश समझता था कि पथिक कोई कोरा ब्राह्मण ही है। अब उसे उसमें एक चतुर लठैत के चिह्न दिखाई देने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामदीन आगे बढ़ा ही था कि पथिक की लाठी उसके कंधे पर लगी। अब किसी अन्य को आगे बढ़कर लड़ने का साहस नहीं हुआ। इस पर सुरेश ने बिगड़ते काम को बनाने के लिए अपने साथियों को कहा, "यह तो पागल है और पागल में विशेष शक्ति होती है। इससे झगड़ा करने में क्या लाभ ?"

पथिक को सम्बोधन कर उसने कहा, "देखो जी, तुम लड़ते क्यों हो ? फिर ऐसा किया तो पागलखाने भिजवा दिये जाओगे।"

पथिक इस धमकी को सुन हँसने लगा। सुरेश और उसके साथी अपना-सा मुख लिये लौट गये। मोहन ने जाते समय नलिनी को हाथ से पकड़ साथ कर लिया। वह यह सब झगड़ा देख सहम गई थी।

मोहन, सुरेश और दूसरे साथियों के साथ नहीं गया। वह नदी-किनारे से सीधा घर की ओर चल पड़ा। घर पर माँ के सम्मुख पहुँच बोला, "माँ, तुमने इसे फिर वहाँ भेज दिया था !"

माँ मोहन का पीला मुख देखकर घबरा गई। वह चिन्ता में बोल उठी, "क्या हुआ है, मोहन ? कहाँ से लाये हो इसे ?"

"उस पागल के पास से। मैंने तुम्हें मना किया था, परन्तु तुमने इसे रोका नहीं।"

"आखिर हुआ क्या है ? बताते क्यों नहीं ?"

मोहन लज्जा और अपमान से मरा जा रहा था और उसके मुख से आवाज़ नहीं निकलती थी। नलिनी, जो लड़ाई देख सहम गई थी, माँ को देख उत्साहित हो कहने लगी, "मैं भूतनाथ के पास बैठी कहानी सुन रही थी कि भैया, राजा बाबू, विजू भैया, रामू सब आये और भैया चाबुक से भूतनाथ को पीटने लगे।"

नलिनी की माँ को अभी भी कुछ समझ नहीं पड़ा। उसने मोहन को अपने पास खाट पर बैठा लिया और पूछा, "मोहन, बताओ, तुम सब मिलकर वहाँ क्यों गये थे और तुमने उस भले आदमी से झगड़ा क्यों किया ?"

"माँ, नलिनी के उसके पास नित्य जाने से हमारी भारी निन्दा होती है। इसे वहाँ मत भेजा करो।"

नलिनी अब समझी कि मोहन उसको भूतनाथ के पास जाने से रोक रहा है। इस पर उसने अपनी चतुराई और बहादुरी का परिचय देने के लिए कह दिया, "हूँ ! यदि मैं वहाँ न होती तो आज भैया की चाबुक से खूब पिटाई होती। माँ, जब भूतनाथ ने भैया से चाबुक छीन ली और इसे पीटने लगा तो मैंने उसे कहा, 'यह मोहन भैया है' तो उसने हंटर नीचे कर लिया और भैया को छोड़ दिया।"

माँ ने नलिनी की बात अनसुनी कर मोहन से पूछा, "लोग क्या निन्दा करते हैं और कौन लोग हैं जो निन्दा करते हैं ? पथिक साधु है। सुना है, आज उसने क्या किया है ? वेनी और वेनी की स्त्री की सुलह करा दी है। वेनी अब अपने घर चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है। बेनी की मौसी अभी आई थी और कह रही थी कि वह कहता था, 'मैंने रुपया छोड़ दिया है। बहू पाँच सौ रुपये में महँगी नहीं है।' मोहन, ऐसे आदमी को तुम पीटने गये थे! किसलिये?"

"बेनी की स्त्री से सुलह हो गई! माँ, यह ठीक नहीं हुआ। अब इस गाँव में ऊधम मचे बिना नहीं रहेगा। बेनी की स्त्री बेनी को मिल गई। गज़ब हो गया है, माँ।"

इतना कहते-कहते मोहन घर से बाहर निकल गया। माँ 'मोहन! मोहन!' पुकारती रह गई।

: ७ :

गाँव-भर में यह खबर फैल गई थी कि सुरेश और उसके साथी पथिक को पीटने गये थे। लोगों में हलचल थी और वे बहुत बड़ी संख्या में आज कथा में उपस्थित हुए थे। सब जानना चाहते थे कि पथिक को कितनी चोटें आई हैं। कुछ लोग तो मन में यह भी आशंका कर रहे थे कि वह गाँव छोड़कर भाग गया होगा। पथिक को सही-सलामत आसन पर बैठे, कथा के लिए तैयार देख, लोग विस्मय और प्रसन्नता प्रकट कर रहे थे।

पथिक ने कीर्तन के पश्चात् आज महाभारत का तत्त्व समझाया। वह कहने लगा, "आर्य-सभ्यता में विदेशी सभ्यता का मिश्रण हो रहा था। चन्द्रवंशी उन लोगों में से थे जो किसी समय आदि आर्य लोगों के पश्चात् सीरिया और अरब देशों से भारतवर्ष में आये थे। इन लोगों ने आर्य-सभ्यता को स्वीकार तो कर लिया था, फिर भी अपनी सभ्यता की छाप को भी रखे हुए थे। इनकी अपनी सभ्यता आदि आर्य लोगों की सभ्यता से निकृष्ट थी। इसके मिश्रण से आर्य-सभ्यता में अवनति ही हुई थी, उन्नति नहीं। परिणाम में उस समय के लोगों में चरित्रहीनता उत्पन्न हो गई।

"चन्द्रवंशीय राजाओं में दुष्यंत का उल्लेख सबसे पूर्व आता है। महाराजा भरत इसी की सन्तान था। दुष्यंत का शकुन्तला से गान्धर्व विवाह नियम-विरुद्ध था। उसका कारण यह है कि गान्धर्व विवाह आपत्ति-काल का धर्म है। अर्थात् युद्ध-काल में यदि किसी की सन्तान न होने से बहुत हानि होने की आशंका हो और विवाह के सब रीति-रिवाज के लिए समय न हो तब गान्धर्व विवाह किया जा सकता है। दुष्यंत के लिए ऐसी कोई आपत्ति नहीं थी। शुद्ध काम-लिप्सा के लिए ऐसा विवाह करना विशेष रूप से एक राजा को अनुचित था। इस प्रकार पाप से बोया हुआ बीज कुछ समय पश्चात् पाप का पेड़ बन गया। महाराजा शान्तनु का धीवर की लड़की से विवाह, राज्य के उचित और योग्य उत्तराधिकारी को राज्य से वंचित कर, अनर्थ का कारण बना। भीष्म पितामह का काशीराज की लड़कियों को, बिना उनकी इच्छा के, धीवर की लड़की के लड़के से विवाह करने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठा लाना अन्याय की पराकाष्ठा थी। कौरवों का पाण्डवों से ईर्ष्या, द्वेष, धोखा, फरेब आर्य-सभ्यता के पतित हो जाने के लक्षण थे। यह पाप का वृक्ष, जिसे दुष्यंत ने बोया था और जिसे शान्तनु और भीष्म पितामह ने सींचा था, महाभारत-युद्ध में काल-रूप बनकर प्रकट हुआ। यह आर्य लोगों के पतन का इतिहास है। जो लोग इसे इस प्रकार अध्ययन करते हैं उन्हें इन सब त्रुटियों से बचना चाहिये।

"रामायण उन्नति की ओर बढ़ती हुई जाति का इतिहास है तो महाभारत पतन की ओर जाने वाली जाति का। रामायण को उसमें वर्णित आचरण को ग्रहण करने के लिए पढ़ना चाहिये और महाभारत को उसमें वर्णित आचरण को छोड़ने के लिए।

"महाभारत-काल में श्रीकृष्ण भगवान् का आचरण और उनकी शिक्षा उस काल के कूड़ा-करकट को साफ करने के लिए थी। एक बार तो पतन की ओर जाती हुई जाति को रोककर पुन: उन्नति के मार्ग पर लाकर खड़ा कर देने का श्रेय गीता की शिक्षा को ही है। भगवान् कृष्ण की महिमा इसी में है।"

कथा के अनन्तर आरती हुई। सब मिलकर गाने लगे :

जय अम्बे, जगदम्बे, जय भारत माता।
हम सब तव गुण गावें, तू सकल विधाता।।
मणि-माणिक्य मढ़ित जड़ित, शीश पर हिम-मुकुट।
भानु-किरण हेम रंग, शोभा बहु लाता।।
जय भारत माता।
हिमाचल विशाल भाल, मुख सुन्दर पञ्चाल।
अवध उदर, वंग प्राण, पग सिंहल राता।।
जय भारत माता।
विन्ध्याचल वन उपवन, जल प्रपात अनेक।
खनिज, धन दौलत से, तव मूल्य बढ़ाता।।
जय भारत माता।
महावीर महाराष्ट्र, धीर, वीर पञ्जाब।
मेधावी मद्रास, तव अंग बनाता।।
जय भारत माता।
मारवाड़, गुजरात, बड़े व्यापारी।
संगीत कला प्रवीण, बंगाल सुहाता।।
जय भारत माता।
वीर भूमि, पुण्य भूमि, सब सुखों की खान।
कीर्ति, मान तुम्हारा, सभी जगत गाता।।
जय भारत मात:।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकल जगत की संस्कृति, कला, ज्ञान, विज्ञान।
विश्व-विभूति की तुम रही जन्मदाता ।।
जय भारत माता।

निष्कलङ्क, निर्विकार, अति सुन्दर आकार।
तव छवि रूप अपार सब के मन भाता ।।
जय भारत माता।

कथा समाप्त हुई। आज किसी ने भी शंका-निवारणार्थ प्रश्न नहीं किये। सबके मन दूसरी बात में लगे थे। कथा समाप्त होने पर भी लोग वहाँ से नहीं हटे। सब पथिक को घेरे खड़े रहे। मुरली चमार आगे बढ़कर पूछने लगा, "गुरुदेव, लोग यह जानना चाहते हैं कि क्या आप देवा छोड़ रहे हैं?"

इस प्रश्न से पथिक को बहुत विस्मय हुआ। उसने पूछा, "कौन कहता है?"

मुरली ने कह दिया, "गाँव में चर्चा हो रही है।"

"मैं क्यों जा रहा हूँ?"

"लोग कहते हैं, ज़मींदार आप पर नाराज़ है।"

"यदि वह मेरा यहाँ रहना पसन्द नहीं करता तो उसे मुझे कहना चाहिये। उसने तो मुझे कुछ नहीं कहा।"

"वह और उसके साथी आज आपको पीटने जो आये थे।"

"हाँ। परन्तु जब एक पहलवान दूसरे से कुश्ती करने जाता है तो इससे यह अभिप्राय कैसे निकल सकता है कि वह उसे देश से बाहर निकालना चाहता है।"

"गुरुदेव, यह बात दूसरी है। ये लोग तो आपको पीट और डराकर भगा देने आये थे।"

"परन्तु न तो मुझे पीट सके, न डरा सके। प्रत्युत् स्वयं पिट गये और डरकर भाग गये। इससे तो यह सिद्ध हुआ कि यदि भागना चाहिये तो उनको, न कि मुझे।"

इससे सब हंसने लगे। इस पर भी सब लोगों को वहाँ से टलते न देख पथिक ने फिर कथा करने के स्थान पर खड़े होकर लोगों को सांत्वना देने के लिए कहा; "मुझे कहा गया है कि यहाँ के ज़मींदार, सुरेश बाबू, मुझे यहाँ से निकाल देना चाहते हैं। मैं नहीं जानता, क्यों? मैंने अपनी ओर से जानबूझकर तो कोई पाप अथवा अपराध नहीं किया। मुझे ज़मींदार से कोई वास्ता नहीं। मैं उसके आश्रय नहीं हूँ। अतएव यदि आप चाहें तो मैं आज यहाँ से चला जाऊँगा। यहाँ के जल-वायु ने और उससे भी अधिक आप लोगों के प्रेम ने मुझे यहाँ बाँध रखा है। मेरे यहाँ से चले जाने का निर्णय आपके हाथ में है।"

सब लोग बोल उठे, "नहीं, हम नहीं चाहते। हम नहीं चाहते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ८ :

रात का समय था। वेनी अपनी स्त्री के पास बैठा कह रहा था, "भली औरत, यदि यह बात तूने पहले बताई होती तो मैं तुझे इस गाँव से कहीं बाहर ले गया होता, जहाँ यह दुष्ट विजयबहादुर तेरी खुर-खोज भी न पा सकता। मुझे तो यही ज्ञात था कि तेरा बापू बीमार होकर मरा था।"

"मैं तुमसे डरती थी कि तुम मेरे चुप रहने का कारण मेरा भी इस पाप-कर्म में शामिल होना समझोगे। सच्ची बात तो यह थी कि मैं तुमको इतना उदार नहीं समझती थी। चाहे तो नाराज़ हो जाओ, चाहे राज़ी, मैं समझती थी कि यदि तुम जान गये कि मैं अपनी माँ और विजयबहादुर को बापू का घातक जानते हुए भी उससे सम्बन्ध रखे हुए थी तो तुम मुझे मार डालोगे। मेरी माँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजते समय यह समझा दिया था। और मैं चुप थी।"

"हाँ, ठीक तो है। मैं सोचता था कि तूने रुपया चुराकर जब विजयबहादुर को दे दिया था तो तू किसी दिन मुझे मरवा भी देगी। रुपया माँगने वाले को मार्ग के काँटे की भाँति दूर करना स्वाभाविक ही प्रतीत होता है। इस पर मुझे यदि ज्ञात हो जाता कि विजयबहादुर तेरे बाप का घातक भी है, तो मैं क्या कर बैठता, कह नहीं सकता। परन्तु अब तूने यह सब बता क्यों दिया? क्या तुझे अब मुझसे भय नहीं लगता? मैं अब भी तो वही बेनी हूँ।"

"मेरे मन में पहले भी कई बार यह आया करता था कि अपनी सब बात खोलकर तुम्हारे सम्मुख रख दूँ, परन्तु तुम्हारे मुख पर क्रोध देखते ही मेरा मुख बन्द हो जाता था और मन की बात मन में ही रह जाती थी। क्या तुम समझ सकते हो कि मैं अपनी आँखों से बापू की हत्या देखकर हत्यारे से प्रेम कर सकती थी? वह मेरे शरीर का उपभोग करता था। मैं मजबूर थी। मेरी रक्षा करने वाला कोई नहीं था। मेरा मन सदैव उससे घृणा करता था। परन्तु एक औरत बेचारी क्या कर सकती है!

"गुरुदेव ने जब मुझे बेटी कहकर पुकारा तो मुझे बापू की याद आई। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि सत्य ही वह मेरा पिता है और वह मेरी रक्षा करेगा। मेरे मन में विश्वास-सा हो गया था कि मेरे दोष स्वीकार कर लेने पर यदि तुम मुझे स्वीकार नहीं करोगे तो वह मेरी सहायता करेगा और मुझे तुमसे तथा विजय से बचायेगा। पिता अपनी लड़की को, चाहे वह कितनी भी पतित हो, त्याग नहीं सकता। गुरुदेव की आँखों में कुछ ऐसी शक्ति थी कि मैं उनके देखते हुए झूठ नहीं बोल सकी, न ही कोई बात छिपा सकी। अब तो मैं तुम्हारे हाथ में हूँ। तुम मुझे मार भी डालोगे तो चुप रहूँगी।"

"परन्तु विजयबहादुर यहाँ तुझे कष्ट देगा। मैं सोच रहा हूँ कि एक-दो दिन में ही तुझे लेकर कहीं बाहर चला जाऊँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जैसा मन माने, करो। मैं अब तुमसे पृथक् नहीं रहूँगी।"

अभी बातें हो ही रही थीं कि बाहर के दरवाज़े के खटखटाने का शब्द हुआ। वेनी की स्त्री के मुख से निकल गया, "वह आ गया है।"

बेनी ने कहा, "तू चुप बैठी रह। मैं निपट लूंगा।"

एक डंडा हाथ में लेकर वह वहाँ से उठकर बाहर दरवाज़े के पास चला आया। उसने भीतर से आवाज़ दी, "कौन है?"

"दरवाज़ा खोलो।" बाहर से उत्तर आया।

"भाई, तुम बताओ, कौन हो और क्या काम है? क्यों दरवाज़ा खोला जाये?"

"अबे, बेनी के बच्चे, दरवाज़ा खोल दे, नहीं तो मौत के घाट उतार दूंगा।"

"ओह! तो तुम लड़ने आये हो? लो, आ जाओ। यहाँ भी चूड़ी पहने हुए नहीं हैं।" इतना कह वेनी ने दरवाज़ा खोल दिया।

ज्यों ही आने वाले ने कदम भीतर रखा, बेनी ने, जो दरवाज़े से एक तरफ हटकर खड़ा था, खट से डंडे का एक वार कर दिया। दरवाज़े के पास अन्धेरा था। वेनी पहचान नहीं सका कि आने वाला कौन है। उसने एक वार किया और आने वाला पिछले पाँव बाहर भाग गया। वेनी की स्त्री ने, जो एक और डंडा लिये दरवाज़े के दूसरी ओर पहुँच गई थी, झट से दरवाज़ा बन्द कर लिया। दरवाज़ा बन्द करते समय उसने देखा कि दो आदमी भागे चले जाते थे।

कुछ और समय के पश्चात् सोने की तैयारी हो गई और वेनी प्रसन्न मन से गहरी नींद सो गया। बहुत रात गये पश्चात् उसकी नींद खुल गयी। उसकी स्त्री घबराई हुई उसे जगा रही थी।

मकान के चारों ओर आग धक-धक जल रही थी। बाहर निकलने को कोई मार्ग नहीं था। दरवाज़े के ऊपर की छत तो जलकर गिर पड़ी थी और मार्ग ज्वालामुखी पर्वत की भाँति लपटें छोड़ रहा था। वह उठा, परन्तु धुएँ से उसका गला घुट गया और वह अर्धचेतना की अवस्था में ही वहीं फर्श पर लेट गया। वेनी की स्त्री चीखें मारती हुई उसके ऊपर गिर गई।

अकस्मात् बाहर की दीवार गिर गई। आग कुछ दब गई और एक मनुष्य ऊपर से नीचे तक गीला, मोटा कपड़ा लपेटे हुए, लपकता हुआ भीतर घुस आया। वेनी की स्त्री, जो अभी तक अचेत नहीं हुई थी, ज़ोर से बोल उठी, "हम यहाँ हैं।"

आने वाला इस बुलाने पर वहाँ पहुँचा और वेनी को कंधे पर डालकर तथा वेनी की स्त्री को बगल में उठाकर ऐसे बाहर ले आया मानो बच्चों को उठाये हुए है। बाहर आते समय उसका गीला कपड़ा वेनी और उसकी स्त्री पर लिपटा हुआ था। परिणाम यह हुआ कि आग की लपटों ने उसके शरीर को कई स्थानों से झुलसा दिया। धुएँ के कारण अथवा आग में जल जाने के कारण वह घर से बाहर आते ही भूमि पर लेट गया और बेहोश हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ९ :

रात के दो बजे के लगभग देवा के लोगों ने देखा कि बेनी का घर चारों ओर से धड़ाधड़ जल रहा है। पड़ोसी अपने-अपने घरों से निकल आये। सबसे पहली बात जो उन्होंने देखी वह दो मनुष्यों का जलती आग पर तेल गिराना था। पड़ोसी उन्हें पकड़ने के लिए भागे। एक, जो कुछ अधिक चुस्त था, भाग गया। दूसरा पकड़ लिया गया। भागने वाले को लोगों ने पहचान लिया। वह विजयबहादुर था। पकड़ा जाने वाला मोहन था। जब तक लोग इन आग लगाने वालों को पकड़ते रहे, आग ने मकान को चारों ओर से घेर लिया था।

पड़ोसियों को मालूम था कि बेनी आज घर आया था, और वे विजयबहादुर का घर को आग लगाने का प्रयोजन भी समझते थे। उनको यह भी पता चल गया था कि बेनी और उसकी स्त्री दोनों घर के भीतर थे। उन्हें बचाने का कोई उपाय न जान लोग घड़े भर-भरकर आग बुझाने लगे।

इस समय पथिक, जो आग का प्रकाश देख वहाँ चला आया था, पूछने लगा, "यह किसका मकान है?"

किसी समीप खड़े ने उत्तर दिया, "बेनी का। वह और उसकी स्त्री भीतर हैं। बाहर नहीं आ सके।"

यह सुनते ही पथिक सन्न रह गया। उसने ही बेनी को घर पर चले जाने की राय दी थी और शायद इसी का परिणाम यह आग थी। पथिक ने अनुभव किया कि बेनी की मुसीबत का कुछ उत्तरदायित्व उस पर भी है। इसके अतिरिक्त भी उसकी आत्मा यह सहन न कर सकी कि दो मनुष्य जीते ही जल जायें और उनके बचाने का यत्न न किया जाये। उसने तुरन्त एक आदमी से, जो दुहर ओढ़े एक तरफ खड़ा था, दुहर ले ली। उसे जल में भिगो डाला और ओढ़कर भीतर जाने को तैयार हो गया। दैवी-कृपा से इसी समय घर के एक ओर की दीवार गिर पड़ी। इससे उस ओर की आग कुछ दब गई। यह सुअवसर जान पथिक लपककर भीतर चला गया।

जब वह बेनी और उसकी स्त्री को लेकर बाहर निकला तो सब लोग उसके चारों ओर एकत्रित हो गये। वह बेनी को कंधे से उतारता-उतारता स्वयं अचेत हो गया। छत्रपालसिंह समीप खड़ा था। उसने खाटें मँगवा तीनों घायलों को उन पर डलवा मन्दिर में भिजवा दिया। एक आदमी को गाँव के वैद्य को बुलाने भेज दिया।

: १० :

बेनी के पड़ोसी मोहन के हाथ-पाँव बाँध उसे थाने ले गये। अभी दिन निकला ही था। चौकीदार बरामदे में खाट पर कम्बल ओढ़े पड़ा था। लोगों के आने से वह उठ खड़ा हुआ। इतनी सुबह उठाये जाने पर ताव खाकर पूछने लगा, "क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ? क्यों आये हो ?"

लोगों ने बेनी के घर की आग का वृत्तान्त बताया और मोहन तथा विजयबहादुर को आग लगाने वाला बताया। मोहन को घर पर तेल डालते हुए पकड़े जाने की बात भी बताई। चौकीदार ने देखा कि मामला सीधा नहीं; अतएव बोला, "वहाँ बरामदे में बैठ जाओ, अभी दारोगा साहब आयेंगे तो उन्हें बताना।"

जो लोग थाने में पहुँचे थे उनमें एक पंचम कोरी था। कांग्रेस खद्दर-भंडार वालों के लिए खद्दर तैयार करने के सिलसिले में कांग्रेस-कार्यकर्ताओं के सम्पर्क में आने से वह कुछ स्वतंत्र विचारों का बन गया था। चौकीदार के इस शुष्क उत्तर से चिढ़कर बोला, "तो क्या इस समय थाना बन्द है ? कोई भी आदमी ड्यूटी पर नहीं है ?"

चौकीदार, जो बहुत मीठी नींद से जगा देने पर पहले ही क्रोध से भर रहा था, इस कथन से आपे से बाहर हो गया। कहने लगा, "बहुत बक-बक न करो। आराम से बैठ जाओ। तुम्हारे बाप के नौकर नहीं जो चौबीस घंटे बैठे रहें।"

इतना कह उसने कम्बल ओढ़ लिया और टाँगें लम्बी कर खर्राटे भरने लगा। विवश सब लोग अपने बीच मोहन को बैठाकर उसके चारों ओर बैठ गए। पहले तो आग बुझाने में भाग-दौड़ करने में, फिर मोहन को पकड़ थाने में लाने में प्रायः सब थक चुके थे। अब उनको दारोगा की प्रतीक्षा करनी पड़ी।

दिन के छः बज गये। चौकीदार उठा, कम्बल लपेट अपनी बैठक में घुस गया। दूसरे सिपाही आ पहुँचे और अपने-अपने काम में लग गये। किसी ने उन लोगों से नहीं पूछा कि वे वहाँ किस प्रयोजन से बैठे हैं। धीरे-धीरे नौ बज गये। अभी भी दारोगा घर से बाहर नहीं आया था।

मोहन की अवस्था अति शोचनीय थी। वह सोचता था कि मुकदमा कहीं साबित हो गया तो दो-तीन वर्ष का कठोर दण्ड तो अवश्य ही होगा। यह एक अत्यन्त दुःखदायक विचार था। वह मन में विजयबहादुर का साथ देने पर पश्चात्ताप भी करता था। एक आशा उसके मन में थी कि सुरेश उसे बचाने का यत्न अवश्य करेगा। वह धनी है, इलाके का ज़मींदार है और यदि वह चाहेगा तो एक भी गवाह विपरीत नहीं हो सकेगा। इस पर भी क्या होगा और क्या नहीं होगा, वह नहीं कह सकता था। इस अनिश्चित अवस्था से ही वह परेशान था। सबसे दुःख की बात उसकी माँ और बहिन के मन पर उसके कैद होने का दुष्प्रभाव था। घर में उसकी प्रतिष्ठा भंग होगी। गाँव में तो वह बदनाम हो ही चुका था।

इन्हीं विचारों में वह डूबा हुआ था कि दारोगा, रात की पोशाक में, ऊपर लम्बा कोट पहने, मुख में लम्बी-सी दातुन दबाये हुए, घर से बाहर निकल आया। पंचम, जो अपने क्रोध को अभी तक भीतर ही भीतर दबाये हुए था, दारोगा को देख उसके सम्मुख सलाम कर खड़ा हो गया। दारोगा ने धीरे-धीरे टहलते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछा, "क्या है ?"

"हुज़ूर, गाँव में बेनी कहार के घर को आग लगा दी गयी है और आग लगाने वाले को पकड़ लाये हैं।"

दारोगा आग की बात सुन कुछ सचेत हो पूछने लगा, "मकान जल गया या बच गया ?"

"सबकुछ जल गया है। एक पैसे का भी सामान नहीं बचा। बेनी और उसकी स्त्री आग में फँस गये थे, परन्तु गुरुदेव की कृपा से बच गये हैं। उनको बचाने में गुरुदेव स्वयं, बेनी और उसकी स्त्री बुरी तरह जले हुए अब मन्दिर में पड़े हैं। उनकी चिकित्सा हो रही है।"

इस समाचार को सुन दारोगा विस्मय में पंचम का मुख देखने लगा। "आग कब लगी थी ?" उसने पूछा।

"रात के दो बजे।"

"अब तो नौ बज गये हैं। अभी तक तुमने रपट क्यों नहीं लिखाई ?"

"पहले तो आग बुझाने का यत्न करते रहे और पाँच बजे से यहाँ आये हुए हैं। कोई सुनता ही नहीं।"

दारोगा कुछ क्रोध में आ गया और जल्दी से दफ्तर में पहुँच मुन्शी से बोला, "मियाँ अब्दुलसमद, इनकी रिपोर्ट क्यों नहीं लिखते ?"

अब्दुलसमद अपनी डैस्क के सम्मुख बैठा बीड़ी पी रहा था। दारोगा को लाल-पीला होते देख, बीड़ी को एक तरफ रख, कहने लगा, "जनाब, ये लोग चुपचाप यहाँ बैठे थे। इन्होंने कुछ कहा ही नहीं।"

"तुम्हें मालूम है गाँव में आग लग गई है ?"

"नहीं तो, हुज़ूर। कहाँ लगी है ?"

"इनकी रिपोर्ट लिख लो।"

इतना कह दारोगा ने पंचम से पूछा, "कौन आग लगाते पकड़ा गया है ?"

पंचम ने मोहन को दिखाया। दारोगा ने उसे देख विस्मय से पंचम की ओर देखा और पश्चात् उसे डाँटकर कहा, "अबे पंचम के बच्चे, क्या मौत आई है जो इसे पकड़ लाया है ? जानता है, यह कौन है ? ज़मींदार और उसके साथी मार-मारकर जान निकाल देंगे। होश ठिकाने है या नहीं ?"

पंचम को दारोगा के मुख से ये कटु वचन सुन, वह सब क्रोध, जो वह मन में इतनी देर से दबाये हुए था, चढ़ आया। उसके नथुने फूलने लगे। आँखें लाल हो गयीं। इस पर भी केवल उसने यह कहा, "देखो जी, रपट लिखनी हो तो लिखो, नहीं तो जवाब दे दो। तब हम सोच लेंगे कि क्या करें। जानते हो, यह मोहन बाबू और विजयबहादुर दोनों आग लगा रहे थे। ये ज़मींदार के मित्र हैं तो क्या इनके विरुद्ध रपट भी नहीं लिखोगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अबे उल्लू, तेरे ही लाभ की बात कहता हूँ। बड़े लोगों से माथापच्ची न करो।"

"देखो, उल्लू-वुल्लू मत कहो। सीधी तरह बात करो। सुबह चार बजे से जाड़े में ठिठुर रहे हैं और जनाब सोये हुए अब उठकर आये हैं। इस पर उलटे हमें ही डाँटने लगे हैं।"

"तो मुझे तुमने अपना नौकर समझ रखा है कि जब भी तुम्हें ज़रूरत हो तो भागा-भागा चला आऊँ?"

"हाँ, पब्लिक के नौकर तो हो ही। क्या चोरी करने वाला यह सोचकर चोरी करने आयेगा कि दारोगा साहब जाग रहे हैं या नहीं? आपके सोने के समय आपकी नींद खराब न करने के लिए चोरी करने से चोर रुक नहीं जायेगा। वह तो किसी समय भी आ सकता है। जब चोर पकड़ा जायेगा तभी तो थाने में लायेंगे।"

दारोगा जाति का ब्राह्मण था। नाम था चन्द्रशेखर। महकमे में मुसलमानों का ज़ोर था और बेचारे की शिकायतें पहले भी हो चुकी थीं। अब इस जुलाहे को इस प्रकार की बातें करते सुन कुछ डर गया। साथ ही वह समझता था कि ऐसे अवसर पर तो मौके पर हाज़िर होकर आग बुझाने में मदद देनी चाहिये थी। अब ये लोग रिपोर्ट लिखाने आये भी तो छः घंटे तक बैठना पड़ा। उसने कुछ नरमी से कहा, "पंचम, कांग्रेस में रहकर बहुत बातें सीख गये हो। सुबह-सुबह झगड़ा करना ठीक नहीं।" यह कहकर दारोगा दातुन करता-करता फिर घर के भीतर चला गया।

अब्दुलसमद न तो हिन्दू था, न जाति का ब्राह्मण। वह जानता था कि वह मुसलमान है और उसके विरुद्ध शिकायत करने का कुछ प्रभाव नहीं होगा। दारोगा के चले जाने के पश्चात् जब लोग रिपोर्ट लिखाने उसके पास आये तो बोला, "हमारा मेहनताना?"

सब एक-दूसरे का मुख देखने लगे। इतने भारी जुर्म की रिपोर्ट पर भी मेहनताना अर्थात् रिश्वत माँगी जायेगी, कोई नहीं जानता था। पंचम ने कहा, "मुन्शीजी, बेनी का तो मकान और सबकुछ जल गया है। वह स्वयं अधजला और बेहोश पड़ा है। जब वह ठीक हो जायेगा तो उससे अपना मेहनताना माँग लेना। हमारे पास तो देने को कुछ नहीं है।"

मुन्शी पंचम की बातों से घबराने वाला नहीं था। बोला, "बहुत अच्छा! बहुत अच्छा! यहाँ बैठो, मैं अभी आकर तुम्हारी रिपोर्ट लिखता हूँ।" इतना कह उसने कलम को कान पर चढ़ा लिया और एक बीड़ी जेब से निकाल, जलाकर धुआँ छोड़ता हुआ, दफ्तर से बाहर निकल गया।

सब लोग परेशान थे कि क्या किया जाये। वे लोग दफ्तर के बाहर आ गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन, जिसके पाँव उन्होंने खोल दिये थे, परन्तु हाथ अभी बँधे थे, उनके बीच वहाँ बहुत चिन्तातुर खड़ा था। उसने पंचम से कहा, "मुझे छोड़ दो। आखिर पुलिस से आपको क्या मिलेगा?"

मोहन के पास चार-पाँच आदमियों को छोड़ पंचम दूसरे लोगों को लेकर एक तरफ दूर जाकर विचार करने लगा। कुछ लोग कहते थे, "हमें क्या पड़ी है कि दूसरे के झगड़े में पड़ें। मोहन को छोड़ दें और घर का रास्ता पकड़ें।" कुछ दूसरे कहते थे, "अब जब यहाँ आ गये हैं तो बात को किसी हद तक पहुँचाकर ही जाना चाहिये। रपट तो अब लिखवा ही देनी चाहिये। आखिर मुन्शी कब तक रोक रखेगा?"

ये लोग अभी बातचीत कर ही रहे थे कि मुरली वहाँ पहुँच गया। पूछने लगा, "क्या बात है? अभी रपट नहीं लिखी गई?"

पंचम ने उत्तर दिया, "नहीं, भाई, मुन्शी मेहनताना माँगता है।"

इस पर मुरली ने कहा, "मुझे गुरुदेव ने भेजा है। वह कहते हैं कि यदि रपट न लिखी गई हो तो मत लिखाओ और मन्दिर में चले आओ।"

"क्यों?"

"वहाँ पंचयात हो रही है। सब गाँव इकट्ठा हुआ है और यह मामला उसमें तय होगा।"

जो लोग रिपोर्ट लिखाने के हक में थे वे भी पथिक की सम्मति सुनकर थाने से चले जाने पर राज़ी हो गये।

पाँच-छः बीड़ी फूँककर मुन्शी ने विचार किया कि देखूँ वे लोग कुछ देने पर राज़ी हुए हैं या नहीं। वह दफ्तर में आया तो दफ्तर खाली था। उसने बाहर इधर-उधर देखा। उन लोगों में से वहाँ कोई नहीं था। वह अब चिन्तित हो सोचने लगा कि ये बदमाश के बच्चे कहाँ चले गये।

बाहर आ मुन्शी ने ड्यूटी पर के कांस्टेबल को बुलाया, "फतेमुहम्मद, फतेमुहम्मद! अबे, देखना, देवा के लोग एक मुकदमा लेकर आये थे।"

"मुन्शी साहब, वे चले गये।"

"अबे, कहाँ चले गये?"

"अपने-अपने घर को गये होंगे, मुझे मालूम नहीं।"

"अबे, ज़रा जाना, उनको बुला लाना।"

"हुज़ूर, ड्यूटी पर हूँ। यहाँ से कैसे जा सकता हूँ?"

: ११ :

रात-भर मोहन की माँ मोहन की प्रतीक्षा करती रही। वह घर नहीं आया। नलिनी तो शीघ्र ही सो गई थी, परन्तु उसकी माँ जागती रही। जब उसने गाँव में बहुत हल्ले का शब्द सुना, वह उठकर मकान के दरवाज़े में आ खड़ी हुई। पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कुछ पता नहीं चला, परन्तु कुछ ही देर बाद किसी के घर जलने का प्रकाश आकाश को लाल करता हुआ दिखाई दिया। लोग इधर-उधर भागे चले जाते थे। कुछ काल पश्चात् उसने लोगों को यह कहते सुना कि बेनी के घर को आग लग गई है और बेनी और उसकी स्त्री बीच में जलकर मर गये हैं। यह सुनते ही मोहन की माँ के सिर में चक्कर आने लगे। उसे मोहन का यह कहना, कि अब इस गाँव में ऊधम मचे बिना नहीं रहेगा, याद आने लगा। वह अपने मन में कहती थी, 'हे भगवान् ! मोहन कहाँ होगा ?'

वह कितनी ही देर तक, हाथों में सिर पकड़े हुए, दरवाज़े में बैठी रही। एक पड़ोसी, जो बेनी के घर की तरफ से आ रहा था, मोहन की माँ को दरवाज़े में बैठा देख बोल उठा; "मोहन की माँ, बहुत बुरा हुआ है। मोहन आग लगाते पकड़ा गया है और लोग उसे थाने ले गये हैं।"

मोहन की माँ, जैसे यही सुनने के लिए वहाँ बैठी थी, उठकर भीतर चली आई। इस समय तक दिन चढ़ने वाला हो गया था। वह पूजा के कमरे में चली गई और आँखें मूँद भगवान् के सम्मुख हाथ जोड़ बैठ गई। इसी तरह बैठे-बैठे दो घण्टे के लगभग व्यतीत हो गये। शायद उसे नींद आ गई थी, अथवा मन में भ्रम हो गया था। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि भगवान् अपने आसन से उठकर खड़े हो गये हैं। वे चलकर समीप आ गये हैं। उनके समीप आने पर मोहन की माँ को ऐसा प्रतीत हुआ कि भगवान् के रूप में पथिक खड़ा है। वह कह रहा है, "चिन्ता मत करो। नलिनी और तुम्हारे लिए मैं मोहन की रक्षा करूँगा।"

इतने में मोहन की माँ को झोंका आ गया और वह गिरती-गिरती बची। जब उसने आँखें खोलकर देखा तो भगवान् वैसे ही दीवार के साथ अपने आसन पर, ओठों से मुरली लगाये, अचल बैठे थे। वह विस्मय में सोचने लगी कि यह केवल स्वप्न-मात्र था अथवा इसमें कुछ तत्त्व था।

इस विषय पर बहुत विचार करने पर उसको यही समझ पड़ा कि भगवान् की प्रेरणा थी कि पथिक से सहायता माँगी जाये। वह भगवान् के सम्मुख से उठी। नलिनी तब तक सो ही रही थी। उसने उसे जगाया, स्नानादि से निवृत्त करा, भगवान् की मूर्ति के सम्मुख ले जाकर इस प्रकार समझाया, "तुम्हारा भाई मोहन आज पकड़ा गया है। पुलिस ने उसे पकड़ लिया है। तुम्हारे भाई को छुड़ाने के लिए मैंने भगवान् से प्रार्थना की थी और उन्होंने मुझे कहा है कि पथिक में मोहन को छुड़ा देने की शक्ति है।"

नलिनी का छोटा मन यह समझ तो गया कि पथिक मोहन को किसी मुसीबत से, जिसे वह नहीं समझी, बचा देगा; परन्तु भगवान् की बात उसकी समझ में नहीं आई। उसने माँ से पूछा; "भगवान् कैसे बोलते हैं, माँ ?"

"बेटी, वे मुख से नहीं बोलते। सच्चे मन से यदि उनकी भक्ति की जाये तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे मन में आकर वता जाते हैं। मैं जब उनसे प्रार्थना कर रही थी कि हमारी रक्षा करें तो उन्होंने मुझे वताया कि पथिक मोहन की रक्षा करेगा। अब तुम पथिक के पास चली जाओ और उससे कहना कि भगवान् ने तुम्हें भेजा है। कहते हैं कि तुम ही मोहन को बचाओ।"

: १२ :

लोग पथिक, वेनी और उसकी स्त्री को खाटों पर डालकर श्रापित मन्दिर में ले गये। बेनी और उसकी स्त्री को तो आग ने कुछ अधिक हानि नहीं पहुँचाई थी। केवल धुएँ के कारण वेहोश हो गये थे। हाँ, पथिक की टाँगें बुरी तरह जल चुकी थीं।

जब वैद्य वहाँ पहुँचा तो वेनी और उसकी स्त्री होश में आ गये थे। उनके लिए तो वैद्य ने केवल दिल को ताकत देने की औषधि दे दी। पथिक अभी तक वेहोश था। उसे होश में लाने के लिए यत्न किया जाने लगा। दूसरी ओर जले हुए स्थानों पर लगाने के लिए तेल बनने लगा।

दो घण्टे के प्रयत्न के पश्चात् पथिक की चेतना लौटी। तब तक तेल भी तैयार हो गया था। वह घावों पर लगाया जाने लगा। पथिक को जब चेतना हुई तो सबसे पहला प्रश्न उसने बेनी और उसकी स्त्री के विषय में पूछा। छत्रपालसिंह समीप ही खड़ा था, वह बताने लगा, "वे ठीक हैं। बेनी तो आपके लिए तेल बना रहा है और उसकी स्त्री आपके खाने की औषध घोट रही है।"

इससे पथिक को सन्तोष हुआ। उसके घावों में तीव्र वेदना हो रही थी। फिर भी उसने कहा, "भगवान् का धन्यवाद है, और विजयबहादुर?"

"वह तो भाग गया है, परन्तु उसका मित्र मोहन आग लगाते हुए पकड़ा गया है। लोग उसे थाने में ले गये हैं।"

"मोहन?" पथिक ने बड़े अचम्भे में पूछा।

"हाँ, महाराज, पड़ोसियों ने उसे पकड़ लिया था। अव तक तो वह हवालात में होगा।"

इससे पथिक गम्भीर विचार में डूब गया। तेल उसके घावों पर लगाया जाने लगा था। उसके लगाते ही पथिक को शान्ति अनुभव होने लगी। अब उसे नींद आ गई। वैद्य ने उसे हिलने-डोलने से मना कर दिया और बता दिया कि जितना वह आराम से सोयेगा उतना शीघ्र स्वस्थ हो जायगा।

पथिक मन्दिर के एक कोने में खाट पर पड़ा सो रहा था। छत्रपालसिंह बगिया में एक गिरे पेड़ के तने पर बैठा लोगों से बातें कर रहा था। ये लोग पथिक की हालत जानने आये थे। नलिनी भी इन लोगों में खड़ी हो बातें सुनने लगी। छत्रपालसिंह कह रहा था, "भगवान् की अपार दया है कि किसी जान की हानि नहीं हुई। विजय और मोहन ने बहुत बुरा किया है और अपने किये का फल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोगेंगे।"

एक ने पूछा, "मोहन हवालात में दे दिया गया है?"

"यह तो मैं नहीं जानता। मैं थाने नहीं गया। हाँ, पंचम वगैरह उसे लेकर गये थे। ज़रूर अब तक हवालात में होगा। जो जैसा करता है वैसा भरता है।"

"इस मुकदमे में सुरेश बाबू क्या करते हैं, यही देखना है। वे लोग उसी के भरोसे ही तो अन्याय और अत्याचार करते हैं।"

"यदि सुरेश बाबू अब भी न समझे तो उनको स्मरण रखना चाहिये कि परमात्मा की ताक़त सबसे अधिक है और वह न्याय करता है।"

मुरली कहार घाट पर स्नान कर, घर जाने से पूर्व, पथिक की बात पूछने चला आया। छत्रपालसिंह के पास कुछ लोगों की भीड़ देख वह भी वहीं आ पहुँचा। वहाँ पहुँच पूछने लगा, "बाबू, गुरुदेव का क्या हाल है?"

"ठीक हो जायेंगे। अब सो रहे हैं।"

"विजयबहादुर पकड़ा गया है या नहीं? सबसे बड़ा बदमाश तो वही है। वेनी की औरत पर तो अपना हक़ ही समझता है। रात वहाँ नहीं जाने पाया तो आग ही लगा दी।"

छत्रपालसिंह ने मुरली के क्रोध को शान्त करने के लिए कह दिया, "भाई, जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। ईश्वर अपने नियमों का पालन बहुत ही विचित्र ढंग से करवाता है।"

मुरली किसी बात को परमात्मा के भरोसे छोड़ने वाला नहीं था। बोला, "भगवान् तो जो करेगा सो करेगा, अब तो यह हमारे पर है कि डटकर गवाही देते हैं या नहीं। सुरेश बाबू गवाही तोड़ने की पूरी कोशिश करेंगे। मैं तो आज शाम को कथा के समय लोगों को कहने वाला हूँ कि हम लोग कसम खावें कि सच्ची बात कहने में नहीं डरेंगे। रुपये के लालच अथवा किसी भय से झूठ नहीं बोलेंगे।"

मुरली की बात सुन सब उपस्थित लोग जोश में आ गये। घाट पर जो भी आता था, वह इसी टोली में सम्मिलित होता जाता था। दिन के नौ बजते-बजते गाँव के बहुत-से लोग वहाँ एकत्रित हो गये। सबकी इच्छा थी कि पथिक को एक बार देख लें। रात को जान-जोखिम का जो काम उसने किया था, वह उसे देवता की पदवी तक उठा ले गया था। लोग उसे भगवान् का स्वरूप ही समझने लगे थे। इस समय वेनी छत्रपालसिंह को बुलाकर पथिक के पास ले गया। नलिनी और दूसरे एकत्रित लोग भी उनके पीछे मन्दिर में जा पहुँचे।

नलिनी को देख पथिक ने सबसे पहले उसी से बात की। उसने कहा, "ओ नलिनी बहिन, तुम आज इतनी सवेरे ही आ गई हो?"

"हाँ, मोहन भैया···।"

इसके आगे वह भूल गई थी कि क्या कहना है। वह मन में समझती थी, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको प्रकट करने के लिए शब्द नहीं रखती थी। पथिक समझ गया। वह इस बालिका के मन की बातें उसका मुख देखकर ही समझ जाया करता था। वह उसे समझाना चाहता था कि बुरा काम करने वाले को बुरा फल मिलता है। परन्तु इसी समय सुरेश वहाँ पहुँच गया। सुरेश ने पथिक को नमस्कार किया। पथिक ने उठने का यत्न किया, परन्तु उठ नहीं सका। इस कारण लेटे-लेटे क्षमा माँगकर उत्तर दे दिया।

एक दूसरी खाट पर सुरेश बैठ गया और कहने लगा, "आपके जल जाने का समाचार सुनकर बहुत ही दुःख हुआ है। माताजी (अभिप्राय राजमाता से था) ने भी आपकी बहादुरी का समाचार सुना है और उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है कि आपका हाल-चाल मालूम करूँ।"

पथिक ने मुस्कराते हुए कहा, "जो कुछ मैंने किया है, वह केवल अपने पागलपन के कारण ही कर पाया हूँ। आप ही ने तो कहा था कि पागलों में विशेष शक्ति होती है। साधारण मनुष्य तो ऐसा काम कर नहीं सकता।"

सुरेश अपने-आप में लज्जा अनुभव करने लगा। उसने क्षमा का भाव दिखाते हुए कहा, "मुझसे कल भूल हो गई थी। इसे पागलपन नहीं, बहादुरी कहना चाहिये। माताजी ने आज्ञा दी है कि आपके इस मन्दिर में मूर्ति-स्थापना के लिए जो कुछ खर्चा हो उसे राजकोष से दिया जाय और आपके लिए तीस रुपया मासिक बाँध दिया जाये। माताजी की बहुत इच्छा है कि आप हमारे राज्य में रहें और इस प्रकार हमारे राज्य की शोभा बढ़ायें।"

पथिक यह सुन गम्भीर विचार में पड़ गया और चुप रहा। सुरेश ने अपना कहना जारी रखा, "यह जानकर कि आपने बेनी और उसकी स्त्री में सुलह करवा दी है, मुझे और माताजी को प्रसन्नता हुई है। बेनी की स्त्री का कोई दोष नहीं था। सब दोष बेनी की सास का था। वह दुराचारिणी बेटी से पेशा करवाकर धन पैदा करना चाहती थी। विजयबहादुर तो बेचारा इसी रांड के षड्यन्त्र का शिकार हो गया है। और मोहन तो अभी बच्चा है। वह तो मित्रता निभाते हुए फँस गया है।"

बातों का रंग ऐसे बदलता देख पथिक के मस्तक पर त्योरी चढ़ गई। उसने बीच में ही टोककर कहा, "तो क्या आप इन दोनों की वकालत करने आये हैं अथवा इनके लिए वायुमण्डल सुधारने के लिए ही मुझे यह सब रिश्वत दी जा रही है?"

सुरेश ने तुरन्त अपनी सफाई देने का यत्न करते हुए कहा, "नहीं, नहीं। मेरा यह अभिप्राय नहीं। माँ को तो विजयबहादुर और मोहन के दोष का पता भी नहीं। जो कुछ उनकी आज्ञा है, उससे विजय और मोहन की बात का कोई सम्बन्ध नहीं। इनकी बाबत जो कुछ मैंने कहा है, अपने अनुभव से कहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपके कहने का प्रयोजन मैं नहीं समझा। और जहाँ तक मन्दिर बनवाने तथा मासिक का सम्बन्ध है, मुझे कुछ नहीं चाहिये। मैं एक बात आपको बता देना चाहता हूँ कि विजय और मोहन अब बच नहीं सकते। उन्हें दण्ड मिलना ही चाहिये।"

"उन्हें दण्ड मिलना ही चाहिये," छत्रपालसिंह ने भी पथिक की बात का समर्थन करते हुए कहा। इस समय बगिया में खड़े लोगों की भीड़ मन्दिर के चबूतरे पर जमा हो गई थी। वे सब भी एक स्वर से बोल उठे, "उन्हें दण्ड मिलना ही चाहिये।"

सुरेश लोगों को इतना क्रोध में भरा हुआ देख भय से काँप उठा। वह यथार्थ में पथिक को अपने पक्ष में कर मुकदमा रोकने के लिए आया था। परन्तु लोगों में विजयबहादुर और मोहन की करतूत पर रोष देख चुप रह गया। नलिनी, जो अभी तक लोगों की भीड़ में खड़ी अपने आशय को भूल गई थी, चारों ओर से दण्ड की आवाज़ें सुन सचेत हो गई। उसे अपने यहाँ आने का प्रयोजन याद हो आया। वह आगे बढ़कर पथिक की खाट के समीप आ खड़ी हुई और उसके कान के पास मुख ले जाकर कहने लगी, "परन्तु भगवान् तो कहते थे कि तुम मोहन को बचा लोगे।"

पथिक नलिनी के मुख पर देखने लगा। वह उसके कहने का अभिप्राय नहीं समझा। उसने नलिनी की ओर देखकर पूछा, "तुम क्या कहती हो, नलिनी? फिर कहो तो।"

नलिनी ने तनिक ऊँची आवाज़ में कहा, "भगवान् कहते थे, तुम उसकी रक्षा करोगे।"

"कौन भगवान्? कब कहते थे?"

"वही, जो हमारे घर पर हैं, जिनकी पूजा हम किया करती हैं।"

"ओह! तुम पूजा किया करती हो?"

"हाँ। मैं और माँ हम दोनों सायंकाल घी का दीपक जलाकर उस मुरली वाले कृष्ण-मुरारी की पूजा करती हैं।"

"और उसने तुम्हें कहा है कि मैं मोहन की रक्षा करूँगा! भला उसने कैसे कहा होगा? वह तो बोलता नहीं है।"

"नहीं, वह बोलता नहीं है; परन्तु जब कोई सच्चे मन से उसके सम्मुख प्रार्थना करे तो वह मन में बता देता है।"

"तो भगवान् ने यह बात तुम्हारे मन में बताई?"

"मैं तो सो रही थी। सुबह आज कई घण्टे तक माँ भगवान् से प्रार्थना करती रही थी और उसने कहा कि तुम यह काम करोगे।"

"और यदि मैं न कर सकूँ तो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह कैसे हो सकता है? भगवान् का कहना असत्य नहीं हो सकता।"

"परन्तु मेरी इच्छा तो उसको छुड़ाने की नहीं है।"

यह सुन नलिनी का मुख उदास हो गया। वह काँपते हुए हाथों से बोली, "भूतनाथ, तुम भैया को छुड़ा दो न! क्या मेरे कहने से भी नहीं करोगे?"

पथिक हँस पड़ा। नलिनी और दूसरे लोग भी, जो इस लड़की की बातें सुन रहे थे, हँसने लगे। सबके हँसने का आशय एकसमान नहीं था। पथिक तो यह सोच-कर हँसा था कि यह लड़की उस पर अपना कितना अधिकार मानती है। नलिनी इस कारण हँसी थी कि पथिक हँस पड़ा है तो उसकी बात स्वीकार हो गई है। कुछ लोग उस लड़की की तोतली बातों पर हँसे थे और कुछ यह सोचकर हँसे थे कि मोहन को कितना दुर्बल वकील मिला है।

नलिनी ने अब पूछा, "तो मोहन भैया छूट जायेंगे?"

बालिका का अपने पर इतना अगाध विश्वास देख पथिक गम्भीर विचार में डूब गया। वह कुछ देर तक सोचता रहा। पश्चात् नलिनी की ओर देखकर बोला, "मेरी छोटी बहिन, मैं क्या कर सकता हूँ? तुम कहती हो इसलिये मैं यत्न करता हूँ; परन्तु वह छूटेगा या नहीं, मैं नहीं जानता।"

नलिनी ने बहुत ही भोलेपन से कह दिया, "मैं जानती हूँ कि वह छूट जायगा। भगवान् ने जब कहा कि तुम्हारे कहने से छूट जायगा तो वह अवश्य छूटेगा।"

पथिक हिम्मत कर उठकर खाट पर बैठ गया। उसने बेनी को बुलाया और कहा, "बेनी, यह लड़की चाहती है कि इसके भाई को क्षमा कर दिया जाय। बताओ तुम क्षमा कर सकते हो?"

बेनी ने हाथ जोड़कर कहा, "गुरुदेव, आपके कहने पर ही मैंने अपनी स्त्री को ग्रहण कर लिया था। अब तो आप मेरी जान के भी मालिक हैं। मैं आपके कहने पर क्या कुछ नहीं कर सकता।"

पथिक ने मुरली को बुलाया और कहा, "मुरली भैया, अभी इस गाँव की पंचायत होगी। जाओ, पंचम इत्यादि को थाने से बुला लाओ। उन्होंने बयान दिया हो तब भी और यदि नहीं दिया हो तब भी उन्हें शीघ्र यहाँ ले आओ। मोहन यदि हवालात में न डाल दिया गया हो तो उसको भी लेते आना।"

मुरली यद्यपि चाहता था कि मोहन और विजयबहादुर पर मुकदमा चले और उन्हें दंड मिले, फिर भी उसमें पथिक के कहने को टालने की हिम्मत न थी। वह सिर नीचा किये थाने चला गया।

शीघ्र ही पंचम, उसके साथी और मोहन, जिसके हाथ अभी तक बँधे थे, मुरली के पीछे पथिक के सम्मुख आकर खड़े हो गये।

मन्दिर के बाहर, चबूतरे पर, धूप में पथिक खाट पर बैठा था। एक दूसरी खाट पर सुरेश और छत्रपालसिंह बैठे थे। गाँव के प्रायः सब लोग वहाँ एकत्रित हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये और चबूतरे पर भूमि पर बैठ गये। मोहन सब लोगों के बीच नंगे सिर, पीठ के पीछे हाथ बँधे, अपराधी की भाँति खड़ा था। नलिनी पथिक के समीप खाट पर बैठी लज्जा से पीला पड़ा हुआ मोहन का मुख देख रही थी।

जब सब चुप हो गये तो पथिक ने मोहन से कहा, "तुम्हारी बहिन नलिनी तुम्हारी सिफारिश करती है। वह गाँव वालों को कहती है कि मोहन भैया को छुड़ा दिया जाये। यह तब ही हो सकता है जब तुम अपना दोष गाँव की पंचायत के सम्मुख मान लो और भविष्य में अच्छा जीवन व्यतीत करने का वचन दो।"

मोहन बहुत डरा हुआ था, और साथ ही गाँव के सब लोगों के सम्मुख अपने-आपको अपराधी बना खड़ा देख बहुत ही लज्जा और संकोच में था। उसका गला रुँध गया और उसके मुख से शब्द नहीं निकला। पथिक ने उसके मन को तैयार करने के लिए फिर कहना आरम्भ किया, "देखो, मोहन, ये लोग सब तुम्हारे अपराध को जानते हैं। इस पर भी ये तुम्हें अपना मानकर तुम्हारे साथ सहानुभूति रखते हैं। ये तुमसे बदला नहीं लेना चाहते। ये तो तुम्हें सुधारना चाहते हैं। दूसरी ओर, कचहरी में मजिस्ट्रेट तुम्हारा अपना नहीं होगा। वह सहानुभूति रखता हुआ भी उसका प्रदर्शन नहीं कर सकेगा। वह तो निष्ठुर, शुष्क, अचल और कठोर बने हुए कानून के अधीन होगा। उसका अभिप्राय सुधार करना होते हुए भी वह प्रायः बिगाड़ ही कर सकता है। वह ऐसे कानून के अधीन है जो अपराध के छोटा-बड़ा होने से छोटा-बड़ा दण्ड देता है, अर्थात् अपराध की नाप-तोल कर बदला लेता है। इस कानून को अपराधी के मनोभावों और अपराध करने के प्रयोजन से कुछ वास्ता नहीं। वह कानून बदला लेने के विचार से बना है, परन्तु यहाँ बात दूसरी है। वहाँ तो तुम, अपना दोष मानो चाहे न मानो, प्रमाण मिल जाने पर दण्ड मिलता ही है, और यहाँ प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। सत्य बात सब जानते हैं। गवाहों की आवश्यकता नहीं है। प्रायः सब लोग गवाह हैं। इस पर भी तुम्हारे पश्चात्ताप करने पर तुम्हें मुक्त कर देने के लिए उत्सुक हैं। तुम उनके अपने हो। वे तुम्हें अपना समझते हैं।"

मोहन समझ गया। उसने मन को दृढ़ कर कहा, "मैं दोषी हूँ। मैं क्षमा माँगता हूँ। फिर ऐसा नहीं करूँगा।"

पथिक ने लोगों की ओर देखा। सब चुप थे। उसने लोगों से पूछा, "भाइयो, क्या तुम इसके कहने पर विश्वास करते हो? क्या इसे छोड़ दिया जाये?"

सबने एक स्वर में कहा, "हाँ, इसे छोड़ दिया जाये।"

पथिक ने वेनी से कहा, "इसके हाथ खोल दो।"

इस समय भीड़ के पीछे से आवाज़ आई, "नहीं, अभी नहीं। मैं आ गया हूँ।"

सब लोगों की दृष्टि उस आवाज़ की तरफ चली गई। थाने का दारोगा, मुन्शी और दो-तीन कांस्टेबल लपकते हुए चबूतरे के ऊपर चढ़ते आ रहे थे। जब तक वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों की भीड़ को लाँघकर पथिक की खाट के समीप पहुंचे, मोहन के हाथ खुल चुके थे और बेनी उसे भीड़ से बाहर की ओर धकेल रहा था।

पथिक ने लोगों को हाथ के संकेत से चुप कराकर कहा, "तुम लोगों ने मोहन को क्षमा कर दिया है। यह पुरुषों का वचन है। तुम सबको इसका पालन करना चाहिये। जब तुमने क्षमा कर दिया है तो उसके विपरीत किसी को कुछ नहीं करना चाहिये।"

इस पर दारोगा ने पथिक से कहा, "परन्तु, पंडितजी, यह क्या कर रहे हो? ऐसे दुष्ट को दण्ड मिलना ही चाहिये।"

"जब दुष्ट प्रायश्चित्त कर ले तो वह पवित्र हो जाता है और दण्ड देने का भी यही आशय होना चाहिये।"

दारोगा ने कहा, "यह तो मुझे मालूम नहीं। मुझे तो कानून के अनुसार काम करना है।"

"आपका कानून तो अन्धा है। जब तक उसको रोशनी दिखाने वाले वकील न हों वह स्वयं कुछ देख ही नहीं सकता।"

"यह तो है ही। आखिर हमको कैसे पता चले कि किसी ने जुर्म किया है?"

"पता तो ऐसे ही चल सकता है जैसे और लोगों को चलता है। हाँ, एक बात आप बतायें कि आप बिना रिपोर्ट और बिना गवाही के किसी को गिरफ्तार कर सकते हैं? बेनी ने उसको क्षमा कर दिया है। गाँव वालों ने उसे मुआफी दे दी है। आप तो अब चुप रहने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते।"

दारोगा को ये बातें गैरकानूनी प्रतीत होती थीं। उसने कहा, "गवाह तो बाद में बन जायेंगे। मेरा काम तो गिरफ्तार करना है।"

परन्तु मोहन वहाँ से निकल गया था।

: १३ :

मोहन दारोगा के हाथ से निकल गया। वह मन्दिर से बाहर निकल सीधा घर पहुँचा। माँ से मिल उसने रेल के स्टेशन का मार्ग पकड़ा। जब तक दारोगा ने थाने में पहुँच मोहन को पकड़ने के लिए सिपाही भेजे तब तक मोहन रेलगाड़ी में बैठ पच्चीस मील प्रति घंटे की गति से लखनऊ की ओर भागा जा रहा था। सिपाही मोहन के घर से खाली हाथ लौट आये। थाने में पहुँच उन्होंने बताया, "हुज़ूर, मोहन घर पर नहीं है।"

"कहाँ चला गया कमबख्त?"

समीप ही चटाई पर मुन्शी अब्दुलसमद बैठा था। वह कहने लगा, "हुज़ूर, पहले रिपोर्ट तो लिखवाइये। पीछे मोहन के वारंट जारी करा देंगे। और अगर वह वापस न आया तो उसकी जायदाद ज़ब्त करवा देंगे। पहली बात तो मुकदमा कायम करना है। आप एक कच्चा परचा बनवा दें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारोगा मुन्शी की राय पर फड़क उठा। बोला, "अच्छा लिखो—बतारीख १६ फरवरी, सन् १६३६ को रात के दो बजे हल्ला सुन, मैंने मकान के बाहर निकलकर देखा। गाँव देवा में आग लगी देख फौरन मौके पर हाज़िर हुआ। आग बेनी कहार के घर को लगी थी। मकान चारों तरफ से जल रहा था। लोग कह रहे थे कि आग लगाने वाला मोहन बाबू है। तीन घण्टे की भारी मेहनत के बाद आग बुझवाई। मगर बेनी का मकान जलकर राख हो गया। एक पाई का भी माल नहीं बचा। बेनी और उसकी औरत की जान थाने के एक सिपाही फतेमुहम्मद ने कमाल बहादुरी और जुर्रत से बचा ली।

"मुन्शी, यह रिपोर्ट मेरी ओर से लिख लो।"

"मगर, हुज़ूर, फ़तेमुहम्मद तो वहाँ गया तक नहीं।"

"तो वहाँ गया कौन है? क्या मैं गया था या तुम गये थे? भाई, ये तो कानूनी बातें हैं। इनको लिख ही लेना चाहिये।"

"मगर, हुज़ूर, उसे मुफ्त में इनाम-इकराम मिल जायेगा।"

"तो, भाई, अपना नाम लिख लो। मैं चाहता हूँ उस पगले को नेकनामी न मिल सके।"

मुन्शी ने रजिस्टर खोल रिपोर्ट दर्ज कर ली और उस पर दारोगा के हस्ताक्षर करवा लिये।

अब मुन्शी ने तीन आदमियों के नाम रोबकार लिख, दारोगा के हस्ताक्षर करवा, सिपाही के हाथ भेज दी। वह रोबकार ठाकुर छत्रपालसिंह, देवा का मुखिया, बेनी कहार और पंचम कोरी के नाम थी। तीनों को फौरन थाने में हाज़िर होने की आज्ञा थी।

सबसे पहले छत्रपालसिंह आया। आते ही दारोगा ने कहा, "बाबू साहब, गाँव में अपनी ही हुकूमत कर बैठे हो। यह जानते हो, अंग्रेज़ी सरकार का राज्य है?"

"हाँ, सरकार, जानता हूँ।"

"तो फिर घरों को आग लगाने वाले आदमियों को, जीते-जी जला देने वाले मुजरिम को, आप कैसे छोड़ सकते हो?"

"मैंने किसी ऐसे को छोड़ा नहीं।"

"छोड़ा क्यों नहीं? मोहन बाबू को जो छोड़ा है।"

"मोहब बाबू? उसने क्या जुर्म किया है?"

"ओह! तो अब तुम जानते ही नहीं कि मोहन ने क्या जुर्म किया है? अच्छी बात। ओ फ़तेमुहम्मद, इन बाबू साहब को ज़रा हवालात में बन्द कर देना।"

छत्रपालसिंह ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा "मगर क्यों? मैंने क्या किया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो मुजरिम की रक्षा करता है वह स्वयं भी मुजरिम होता है।"

इसके पश्चात् पंचम कोरी की बारी थी। उसके दफ्तर में दाखिल होते ही दारोगा तमककर बोला, "क्यों वे, पंचम के बच्चे, रिपोर्ट लिखाये बिना ही भाग गया था!"

"हुज़ूर, आपने ही तो कहा था कि मोहन बाबू को पकड़कर हमने भूल की है।"

"अच्छा, तो फिर मेरे कहने पर तुम यहाँ से चले गये थे?"

"आप बिलकुल ठीक कहते हैं, हुज़ूर!"

"तो अब रिपोर्ट लिखाओ। रहा मोहन बाबू। उसको हम पकड़ लेंगे।"

"हाँ, साहब, लिखिये—बेनी के घर को आग लग गई थी। गाँव के लोगों ने बुझाने का बहुत यत्न किया, पर बुझा न सके। सारा का सारा घर जल गया। बेनी और उसकी स्त्री आग में फँस गये थे और गुरुदेव…"

दारोगा ने उसे वहीं रोक दिया और कहा, "गुरुदेव नहीं, अब्दुलसमद मुन्शी ने उनको बचाया, ऐसा लिखवाओ।"

"ऐसा लिखाने के लिए मुझे मिलेगा क्या?"

"मिलेगा क्या! सच्ची रिपोर्ट लिखाने में संकोच करते हो?"

"सच्ची रिपोर्ट तो यह नहीं है।"

"सच्ची नहीं, तो क्या यह झूठी है?"

"बिलकुल, हुज़ूर। सच्ची बात तो यह है कि गुरुदेव ने उन्हें बचाया।"

"तुम झूठ बोलते हो। तुम्हें हवालात में बन्द कर दिया जायगा और तब तक नहीं छोड़ा जायगा जब तक तुम सच्चे बयान न दोगे।"

पंचम ने दृढ़ता से कहा, "सत्य क्या है यह आप भी जानते हैं और मैं भी। परन्तु मेरे मुख से आप मोहन के विपरीत कुछ कहलवा नहीं सकते।"

"अच्छी बात है। देखें, तुम बोलते हो या नहीं।"

छत्रपालसिंह की कोठरी में पंचम को भी बन्द कर दिया गया। इसके पश्चात् बेनी की बारी थी।

"क्यों भाई बेनी," दारोगा ने अब कठोरता को कुछ कम करके कहा, "तुम भी सत्य बोलोगे या नहीं?"

"आप झूठ न बुलवायें तो मैं आपका अहसान मानूँगा।"

"परन्तु मैं अपने फर्ज़ (कर्त्तव्य) का पालन कैसे कर सकूँगा? हम लोगों का काम है मुजरिम (अपराधी) को पकड़ना। उसे छोड़ना या दंड देना मजिस्ट्रेट का काम है।"

"मैंने कानून नहीं पढ़ा, हुज़ूर। मैं एक बात जानता हूँ और वह यह है कि जब एक बार किसी को वचन दे दिया तो दे दिया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारोगा ने दाँत पीसते हुए कहा, "तुम लोग कितने मूर्ख हो ! वह जिसने तुम्हारी औरत को खराब किया, जिसने तुम्हारे घर को जलाकर बरबाद किया, जिसने तुम्हें ज़िन्दा जला देने का यत्न किया, उसी को बचाने के लिए तुम हठ कर रहे हो।"

"हुज़ूर, आप सबकुछ ठीक कहते हैं, परन्तु मैं तो उसका कहना मान रहा हूँ जिसने मेरी औरत को वापस दिलाया है, जिसने जलते मकान में अपने-आपको डालकर मेरी और मेरी औरत की जान बचाई है। आपने तो उस मुसीबत के वक्त मेरी कुछ भी सहायता नहीं की। मैं तो एक गरीब और अनपढ़ व्यक्ति हूँ। आपको यहाँ की थानेदारी करते कितने ही वर्ष हो गये हैं। बताइये, आपने हम लोगों से कब पहले सहानुभूति दिखाई है?"

थानेदार निरुत्तर था। इस पर भी उसने बेनी को भी हवालात में बन्द किये जाने के लिए भेज दिया। जब तीनों आदमी उसके कहने के अनुसार बयान देने के लिए तैयार नहीं हुए तो दारोगा ने मुन्शी से कहा, "मियाँ अब्दुलसमद, अब बताओ। यह पागल न जाने कहाँ से यहाँ आ टपका है कि हम लोगों की अब चलती ही नहीं है। कितने ही मुकदमे तो यह घर पर ही निपटा देता है। कहीं दो-चार और गुरुदेव ज़िले में आ जायें तो बस कचहरियाँ ही बन्द करनी पड़ जायें।"

"पंडितजी, यह है तो ठीक, मगर इसका इलाज यह नहीं जो आप कर रहे हैं। पहले तो आशा ही नहीं कि ये लोग बयान देने पर राज़ी हों और मान लो कि इनको मार-पीटकर आप मतलब के बयान लिखवा भी लें तो वह गुरुदेव तो यहाँ डटा रहेगा। हमें तो उसकी जड़ यहाँ से उखाड़नी चाहिये। उसकी वजह से तो मुकदमे आने ही बन्द हो गये हैं और सूखी तनखा पर तो अब जिया नहीं जा सकता।"

"मुन्शी साहब, आप कहते तो ठीक हैं, परन्तु यह हो कैसे? मैं यही तो चाहता हूँ कि किसी तरह बेनी यह कह दे कि पथिक ने ज़बरदस्ती मोहन को भगा दिया है, तो सब काम बन जाय।"

"नहीं, साहब, यह ऐसे नहीं होगा। आप मेरे कहने पर चलें तो मैं सब ठीक कर दूंगा।"

"हाँ, बताओ तो, क्या करूँ?"

"आपको कुछ नहीं करना। बस, एक बात करें कि जब मौका मिले तो फिर किसी का लिहाज़ नहीं करें।"

"मगर कुछ बताओ भी तो।"

"आप इन लोगों को छोड़ दें। मैं एक-दो दिन में ही पथिक को हवालात का पक्षी बना दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १४ :

जब बेनी, पंचम और छत्रपालसिंह हवालात से छूटकर आये तो लोगों ने समझा कि दारोगा ने अपने अफसरों को दिखाने के लिए यह झूठमूठ की पकड़-धकड़ की थी। लोग उससे प्रसन्न थे। दारोगा के छत्रपालसिंह इत्यादि को शीघ्र ही छोड़कर केस बन्द करने पर सुरेश ने थानेदार को धन्यवाद दिया।

कुछ ही दिनों में पथिक स्वस्थ हो गया और फिर कीर्तन-कथा आरम्भ हो गयी। परन्तु अब एक नई बात हो गई। श्रापित बगिया के बाहर एक कोने की ओर एक छोटा-सा चबूतरा था। यह किसी समय एक साधू ने तपस्या करने के लिए बैठने को बनवाया था। यह स्थान गाँव से नदी पर आने के मार्ग में था और साधू का विचार था कि यहाँ दान-भिक्षा मिल जाया करेगी। किसी कारण से वह साधू तो चला गया, परन्तु चबूतरा टूटी-फूटी अवस्था में अभी भी विद्यमान था। एक दिन लोगों ने देखा कि उस चबूतरे की मरम्मत कर दी गई है। उन्होंने समझा कि वह साधू फिर आने वाला है। परन्तु लोगों के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उन्होंने सायंकाल थाने के मुन्शी और गाँव के कुछ और मुसलमानों को वहाँ नमाज़ पढ़ते देखा।

लोगों ने इस बात को पथिक को बताया। पथिक ने कह दिया, "हमें मुसलमानों से वैर नहीं। यदि वे अपने ढंग से परमात्मा की भक्ति करना चाहते हैं तो हमें इस पर प्रसन्नता प्रकट करनी चाहिये।"

जब सुरेश को यह मालूम हुआ तो उसने सोचा कि मन्दिर तो बन ही रहा है, एक छोटी-सी मसजिद भी बन जाय तो क्या हानि है। सुरेश ने मसजिद बनाने के लिए पचास रुपये चन्दा भी दे दिया। अगले दिन मसजिद कमेटी की तरफ से सुरेश को पचास रुपये की रसीद और शुक्रिया की चिट्ठी मिल गई।

अब्दुलसमद एक दिन तहसील के हाकिम डिप्टी कलक्टर को वहाँ बुला लाया। वह मुसलमान था। उसके हाथ से मसजिद की नींव रखवा दी। इस समय श्रीमान् राजा सुरेशचन्द्र की उदारता की प्रशंसा भी कर दी गई। इस प्रकार सुरेश बाबू के रुपये से चबूतरा पक्का बनवा दिया गया। पश्चिम की ओर महराब भी बनवा दी गई। उस चबूतरे को इस भाँति एक मसजिद का आकार दे दिया गया।

इस प्रकार अब मसजिद में प्रतिदिन शाम को नमाज़ पढ़ी जाने लगी। एक दिन पथिक की कथा के पश्चात् नित्य की भाँति आरती हो रही थी। पथिक आसन पर बैठा हाथों में करताल लिये 'जय अम्बे जगदम्बे' गा रहा था। एकाएक वहाँ एक पत्थर आकर पथिक के सम्मुख गिरा। लोगों ने देखा कि पत्थर नयी बनी मसजिद की ओर से आया है। सब लोगों की दृष्टि उस तरफ चली गई। वहाँ दस-पन्द्रह मुसलमान खड़े 'अल्ला हो अकबर' के नारे लगा रहे थे। अभी लोग इस नयी परिस्थिति पर विचार कर ही रहे थे कि कई और पत्थर के ढेले उन पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर पड़े। एक ढेला उपस्थित बालकों में से एक के मस्तक पर लगा। उसके माथे से रक्त की धारा बहने लगी।

रक्त बहता देख लोग उतावले हो गये। वे भी जोश में आ 'हर-हर महादेव' के नारे लगाने लगे। पथिक ने बहुत कठिनाई से लोगों को शान्त किया। बेनी को मसजिद में भेज पूछा कि वे क्या चाहते हैं। जो कुछ उनको कहना है, यहाँ आकर बतायें।

बेनी वहाँ गया और वहाँ से सन्देशा लाया कि वे नमाज़ पढ़ रहे हैं। नमाज़ पढ़ने के पश्चात् वे यहाँ आकर बतायेंगे। तब तक आरती न की जाय।

यह एक नई समस्या थी। पथिक का उस ओर कभी ध्यान भी नहीं गया था। लोगों ने बेनी की बात सुनी तो क्रोध से उबलने लगे। इस गाँव में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। गाँव के पिछवाड़े में एक मसजिद पहले भी थी। उस मसजिद के समीप कोई मन्दिर नहीं था और कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ था। लोग आरती करना चाहते थे, परन्तु पथिक के अनुरोध पर चुप थे। पथिक ने आज बिना आरती के ही कथा समाप्त कर दी।

जब नमाज़ी नमाज़ पढ़ चुके तो सब-के-सब वहाँ बाग में चले आये। उनमें से कबीरदीन उपस्थित लोगों को सम्बोधित कर कहने लगा, "नमाज़ के वक्त यहाँ आरती, भजन-कीर्तन नहीं होना चाहिये।"

हिन्दुओं में से छत्रपालसिंह, जो गाँव का मुखिया भी था, कहने लगा, "हमारी आरती के वक्त तुम लोगों को नमाज़ ही नहीं पढ़नी चाहिये।"

"मगर हमारी नमाज़ का वक्त मुकर्रर है। तुम्हारी आरती का समय बदल सकता है।"

"हम आरती पहले से करते हैं और नमाज़ तो आप लोगों ने अब शुरू की है।"

"सवाल पहले-पीछे का नहीं है। बात तो यह है कि नमाज़ का वक्त नहीं बदला जा सकता।"

पथिक ने अति नम्रता से कहा, "बात तो ठीक है। हम आपको नमाज़ का समय बदलने को नहीं कहते। हम तो यह कहते हैं कि यदि इस स्थान पर आपकी नमाज़ में और खुदा की इबादत में बाधा पड़ती है तो आप अपनी मसजिद किसी और जगह बना सकते हैं। हमसे दूर जहाँ हमारी आवाज़ आप तक न पहुँच सके।"

"हमने इतना रुपया जो खर्च कर दिया है!"

"रुपया तो सब सुरेश बाबू का खर्च हुआ है। मैं उनसे कहकर और दिलवा दूंगा।"

"मगर हम मसजिद नहीं छोड़ सकते।"

यह सुन किसी ने कह दिया, "और हम आरती नहीं छोड़ सकते।" अन्य कथा पर आये लोगों को सम्बोधन कर उसी ने कहा, "आओ जी, आरती गाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग गाने लगे, "जय अम्बे……।"

मुसलमान लोगों ने हल्ला करना आरम्भ कर दिया, "अल्ला हो अकबर।"

पथिक ने दंगा होता देख आरती करने वालों को चुप करा दिया। उसने पुनः मुसलमानों से कहा, "भाईजान, अब तो आपकी नमाज़ खतम हो चुकी है। अब आप आरती में बाधा क्यों डालते हैं ?"

इसका उत्तर मुसलमानों के पास नहीं था। साथ ही वे आरती भी नहीं होने देना चाहते थे। अतएव वे कुछ दूर हटकर फिर लोगों की भीड़ पर पत्थर फेंकने लगे। इधर हिन्दुओं ने जब यह देखा कि धड़ाधड़ पत्थरों से सिर फट रहे हैं तो वे लाठियाँ ले मुसलमानों के पीछे दौड़े। मुसलमान मसजिद की ओर भागे। एकाएक बीस-पच्चीस पुलिस कान्स्टेबल, थानेदार और मुन्शी अब्दुलसमद वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने हिन्दुओं पर लाठी-चार्ज कर बगिया की ओर भगा दिया।

लोगों पर लाठियाँ चलती देख पथिक ने आगे बढ़ लाठियाँ रोकने के लिए हाथ उठाकर संकेत किया। पुलिस ने लाठियाँ रोक दीं। पथिक थानेदार के पास जा पहुँचा और बोला, "यह आप क्या कर रहे हैं ?"

"आपकी गैरकानूनी कार्यवाही को रोक रहा हूँ।"

इतना कह दारोगा ने हुक्म दिया, "पथिक, छत्रपालसिंह और बेनी को पकड़ लो। ये बलवा कर रहे हैं।"

पुलिस वालों ने इनको हथकड़ी लगा दी और थाने की ओर ले गये। वहाँ इनको हवालात में डाल दिया। इनसे छुट्टी पा दारोगा ने मुन्शी से कहा, "मुन्शी अब्दुलसमद, तुम्हारी योजना सफल तो खूब हुई है, पर मेरा मन भीतर-ही-भीतर दबा जा रहा है।"

"क्यों ?"

"अन्याय जो हो गया है।"

"वाह, पंडितजी महाराज, आप बिल्ली का-सा जिगर लेकर थानेदारी कर चुके। इसीलिये तो आपकी शिकायत हो जाती है।"

"मेरा दिल बिल्ली का-सा नहीं है। दिल तो शेर का-सा है, मगर साथ ही कुछ अकल भी रखता हूँ। बताओ, क्या यह सब दोष तुम्हारा और तुम्हारे साथी मुसलमानों का नहीं है ? फसाद तो तुम लोगों ने खड़ा किया है, न कि पथिक और छत्रपालसिंह ने।"

"देखो, दारोगा साहब, यह सबकुछ आपके हुक्म से हुआ है। मैं तो आपके मातहत हूँ। यह भी याद रखो कि पथिक को पकड़कर आप अपने अफसरों को प्रसन्न कर रहे हैं। अगर आपने मेरी ओर नज़र की तो आप अफसरों को नाराज़ कर देंगे। फिर आपकी बरखास्तगी के हुक्म में देरी नहीं रह जायगी।"

मुन्शी की बात सुनकर दारोगा बेचारा सहम गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १५ :

मुरली यह सब नाटक देखकर आगबबूला हो रहा था। वह समझता था कि इस कार्यवाही में सुरेश का हाथ है। सुरेश का अपनी मित्र-मण्डली को साथ लेकर पथिक को पीटने जाना, विजयबहादुर और मोहन का बेनी को, जो पथिक के मुख्य सहायकों में से था, जीते-जी जला देने का यत्न करना, तदनन्तर सुरेश का मोहन और विजय को बचाने के लिए पथिक को लालच देना, पथिक का सुरेश की बात को दुत्कार देना—ये सब बातें साफ-साफ प्रकट करती थीं कि पथिक सुरेश की आँखों में खटकता है।

अब एक साधू-महात्मा के अड्डे को मसजिद बनने से न रोकना, प्रत्युत् उसके बनने के लिए रुपया देना भी मुरली को सुरेश की तरफ से गुरुदेव को निकाल बाहर करने का उपाय ही प्रतीत हो रहा था।

जब पुलिस वाले पथिक इत्यादि को लेकर चले गये तो मुरली ने सब लोगों को अपने विचार बताये और फिर कहा, "हम लोगों को सुरेश से तो कुछ आशा नहीं। हाँ, यदि राजमाता को यह वृत्तान्त बताया जाय तो अवश्य कुछ सहायता की आशा की जा सकती है।"

यह सुझाव पाकर गाँव के तीन आदमी मुरली कहार के साथ राजमहल पहुँचे। राजमाता ने पहले तो सुरेश के पास जाने को कहा, परन्तु जब उसे पता लगा कि सुरेश बाबू की शिकायत लेकर ही लोग आये हैं, तो वे ड्योढ़ी में आ गईं और पूछने लगीं, "तुम कौन हो और क्या कहना चाहते हो?"

मुरली ने हाथ जोड़, सिर ज़मीन पर टेक कहा, "हुज़ूर, हम सब लुट गये। सुरेश बाबू के हाथों हमारा सत्यानाश हो गया। हमें गाँव की पंचायत ने भेजा है।"

"पर कुछ बताओ भी तो। सुरेश बाबू ने क्या किया है?"

राजमाता ने डाँटकर ऐसा पूछ तो लिया, परन्तु उनका मन भीतर-ही-भीतर धक-धक कर रहा था। वह सुरेश की कुसंगति को जानती थीं और डर रही थीं कि सुरेश ने कोई अन्याय अथवा अत्याचार किया है, जो ये लोग इस प्रकार आये हैं।

मुरली ने ज़मीन से मिट्टी उठाकर अपने सिर पर डालते हुए कहा, "माताजी, मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि जो कह रहा हूँ, सच कह रहा हूँ। कई महीने से श्रापित बगिया में एक महात्मा आकर ठहरे हुए हैं। उनकी कृपा से लड़के-लड़कियों के पढ़ने का प्रबन्ध हो रहा है। धर्म-शास्त्र की कथा-वार्ता भी होती है। भजन-कीर्तन-आरती भी होती है। हम लोगों का केवल आश्रय, भगवान् की भक्ति, इस समय देवा के बच्चे-बच्चे के मुख पर है। लोगों ने झूठ बोलना छोड़ दिया है। अब देवा में मुकदमे नहीं होते। चोरी, डाका, व्यभिचार आदि तो बिलकुल ही बन्द हो गये हैं। यह सब उन महात्माजी की कृपा से हुआ है।

"परन्तु सुरेश बाबू को यह पसन्द नहीं। कुछ दिन की बात है कि बेनी कहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसकी स्त्री में गुरुदेव ने सुलह करवा दी। इस पर सुरेश बावू अपने मित्रों को लेकर गुरुदेव को पीटने घाट पर जा पहुँचे। लाठी चली; परन्तु ईश्वर की कृपा से गुरुदेव बाल-बाल बच गये। इस प्रकार वहाँ से असफल होकर सुरेश बावू के मित्र विजयबहादुर और मोहन बाबू बेनी के घर को आग लगाते देखे और पकड़े गये। बेनी और उसकी स्त्री तो घर के भीतर ही जलकर राख हो जाते अगर गुरुदेव ने अपनी जान को खतरे में डालकर उन्हें न बचा लिया होता। जब मोहन पकड़ा गया तो बिना गुरुदेव की सहायता के उसे छुड़ाने के लिए यत्न भी सफल न हो सकने से सुरेश बाबू चिढ़ गये हैं। अब गुरुदेव को निकाल बाहर करने के लिए सुरेश बावू ने यवनों से सहायता ली है। कुछ कुंजड़ों और चिकवों (कसाइयों) को भड़काकर श्रापित बगिया के बगल में एक मसजिद बनवा दी है। उस मसजिद के लिए जगह तो दी ही थी, साथ ही बनवाने के लिए रुपया भी दिया है। परिणाम यह हुआ है कि मसजिद बनकर तैयार हो गई और आज मुसलमानों ने कथा-कीर्तन करने वालों पर पत्थर फेंके हैं। वे कहते हैं कि नमाज़ के समय कीर्तन-आरती न की जाये। जब हम उनको समझाने लगे तो उन्होंने पत्थर फेंके। जब उन्हें बगिया से बाहर करने लगे तो पुलिस आ गई और गुरुदेव, छत्रपालसिंह और बेनी कहार को पकड़कर ले गई है। माताजी, यह अन्याय है। हम लोगों के लिए तो अब पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन भी बन्द है। यदि यह मसजिद वहाँ न बनती तो यह झगड़ा खड़ा न होता।"

"तुम कैसे कहते हो कि सुरेश ने यह करवाया है?"

"सुरेश बाबू ने वहाँ मसजिद बनाने के लिए भूमि दी। फिर उस पर इमारत बनाने को रुपया दिया। एक मन्दिर के पास मसजिद की इजाज़त देना ही यह प्रकट करता है कि बाबू साहब गुरुदेव को फँसाने का यत्न कर रहे हैं।"

"मुझे विश्वास नहीं आता। फिर भी मैं इस मामले में कोशिश करूँगी। सुरेश का कुछ दोष हो या न हो तब भी इस मसजिद को हटाने का प्रबन्ध कर दूँगी।"

राजमाता ने इस प्रकार कहकर मुरली इत्यादि को विदा कर दिया और फिर भीतर जाकर सुरेश को अपने पास बुलवाया। उसे बैठाकर पूछने लगीं, "यह बगिया के पास मसजिद क्यों बनने दी गई है?"

"मैंने कोई हर्ज नहीं समझा।"

"मन्दिर के पास मसजिद तो कभी बनने नहीं दी जाती।"

"क्यों?"

"इस कारण कि स्त्री-पुरुष-बच्चे सब मन्दिर में जाते हैं। मार्ग में मसजिद होने से उनकी स्वतंत्रता में बाधा पड़ती है।"

"नहीं, माँ, आजकल तो हिन्दू-मुसलमानों में एकता की बातें हो रही हैं। हमें छोटे दर्जे के लोगों से ऊपर उठना चाहिये। जहाँ हिन्दू हमारी प्रजा हैं, वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान भी। हमें इन दोनों में भेद-भाव नहीं रखना चाहिये।"

"इसमें भेद-भाव की क्या बात है? सुना है, आज क्या हुआ है?"

"नहीं तो।"

"मुसलमानों ने आरती और कीर्तन में बाधा डाली है। आरती करने वालों पर पत्थर फेंके हैं। इस पर पुलिस ने पथिक, छत्रपालसिंह और बेनी को पकड़ लिया है।"

"कौन कहता है, माँ? मेरे पास थाने का मुन्शी आया था और कहता था कि जगह का पट्टा दे दिया जाय। मैनेजर साहब ने कहा था, 'झगड़ा नहीं करना' और वह कहता था, 'आपसे झगड़ा कर कैसे यहाँ रह सकते हैं?' इस पर उनको इजाज़त दे दी गई।"

"और तुमने मसजिद बनवाने को रुपया भी दे दिया?"

"सिर्फ पचास रुपये दिये थे।"

"तो मुरली की बात ठीक निकली कि तुमने ही फसाद की जड़ पैदा की है। देखो, सुरेश, यह मामला हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों का है। हम अपने मन्दिर, पूजा-पाठ नहीं छोड़ सकते। तुम दो अंग्रेज़ी के अक्षर पढ़कर अपने-आपको भगवान् से भी ऊपर समझ लो तो समझ लो, परन्तु जो करोड़ों हिन्दू अभी भी ईश्वर-भक्ति की लाठी का आश्रय लिये हुए हैं, वे मर जायेंगे पर इसे बन्द नहीं कर सकेंगे। देखो, अभी मैनेजर को जाकर कह दो, मसजिद का पट्टा नहीं होगा। हो गया हो तो वह रद्द करना होगा। मसजिद वहाँ से उठ जायगी। पथिक और छत्रपाल इत्यादि को छुड़ाना होगा। यदि तू ऐसा नहीं कर सकता है तो अभी बता दे, मैं स्वयं प्रबन्ध करूँगी।"

सुरेश सिर झुकाये वहाँ से बाहर बैठक में चला आया। वह मुसलमानों के साथ रियायत करने के लिए लज्जित था। उसने तो अपनी उदारता के कारण ही मसजिद बनने की आज्ञा दी थी। ज़मींदारी के मैनेजर ने तो पट्टा देने से मना कर दिया था। सुरेश ने ही आग्रह कर उसको राज़ी किया था।

बैठक में पहुँचते ही उसने मैनेजर को बुलवाया और एक दूसरे नौकर के हाथ मुरली को बुलाया। मुरली पंचम को साथ लिये हुए वहाँ पहुँच गया। मुरली डर रहा था कि राजमाता के पास शिकायत करने पर पिटवाया जायगा। इस कारण पंचम को साथ ले आया था। उसके वहाँ पहुँचते ही सुरेश ने पूछा, "तुमने मुझे क्यों नहीं कहा? माताजी के पास क्यों गये?"

मुरली को डर के मारे चुप देख पंचम ने कहा, "हुज़ूर, क्षमा करें। हम लोगों ने यह समझा था कि मसजिद आपने गुरुदेव को यहाँ से भगा देने के लिए बनवाई है।"

"तुम लोगों ने यह अनुमान कैसे लगाया?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपके पिताजी से एक बार मुसलमानों ने घाट के समीप मसजिद के लिए भूमि माँगी थी। उन्होंने साफ मना कर दिया था। वह कहते थे कि हमारी स्त्रियाँ वहाँ जल भरने और स्नान करने जाती हैं। वहाँ हम मुसलमानों का अड्डा नहीं बनने देंगे। आपने बिना किसी की राय लिये ही जब वहाँ भूमि दे दी तो लोगों को ऐसा सन्देह होना स्वाभाविक था।"

"तुम्हारा सन्देह गलत है।"

इसी समय मैनेजर वहाँ पहुँच गया। उसे बैठाकर सुरेश ने पंचम से घटना का पूरा वृत्तान्त सुनाने के लिए कहा। जब सब बात कही जा चुकी तो मैनेजर ने कहा, "मैंने तो आपसे पहले ही अर्ज़ की थी। इन लोगों से रियायत करने के लिए आपने ही आग्रह किया था। यह तो हमारा सौभाग्य है कि पट्टा अभी मेरे दफ्तर में ही पड़ा है। मसजिद का प्रबन्ध तो मैं आज रात ही कर दूंगा। रहा इन लोगों के छुड़ाने का। उसमें भी कोशिश करनी पड़ेगी।"

इसके पश्चात् उन्होंने पंचम और मुरली को सांत्वना देकर भेज दिया। अब इस मामले को तय करने के लिए योजना बनने लगी। सुरेश मैनेजर की बात सुन चकित रह गया, "आखिर इतना झूठ!" उसके मुख से निकल गया।

मैनेजर का उत्तर था, "ज़मींदारी का काम सच्चाई से नहीं चल सकता और विशेष रूप में जब विपक्षी प्रत्येक प्रकार की धूर्तता करने पर तुला हो। बताइये, इन लोगों ने कौन-सी भलमनसाहत की बात की है?"

दूसरे दिन जब नमाज़ी मसजिद में नमाज़ पढ़ने गये तो वहाँ मसजिद का चिह्नमात्र भी नहीं था। न तो महराब थी और न ही चबूतरा। एक ईंट तक भी वहाँ पर नहीं थी। ज़मीन समतल थी और ज़मीन पर हल जोता जा रहा था। बगिया की बगल में एक लम्बा-चौड़ा खेत था और वहाँ पर मुसलमान कलवार के लड़के अपने बैलों से हल जोत रहे थे। थाने का मुन्शी आज बहुत सुबह नमाज़ पढ़ने आया था। वहाँ कुछ लोगों को हैरानी से मसजिद के स्थान को ढूंढ़ते हुए देख पूछने लगा, "क्या देख रहे हो?"

एक ने उत्तर दिया, "मुन्शीजी, मसजिद।"

मुन्शी ने खेत को एक सिरे से दूसरे सिरे तक देख डाला। एक ईंट या कंकड़ भी नहीं था। उसने हल जोतने वालों को बुलवाया और एक से पूछा, "तुम कौन हो?"

"असगर कलवार का लड़का।"

"क्या कर रहे हो यहाँ?"

"दिखाई नहीं देता? हल जोत रहा हूँ।"

"अरे भाई, मसजिद की जगह पर!"

"रात की पी हुई अभी उतरी नहीं क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं शराब पिये हूँ ?"

"और नहीं तो क्या ? मसजिद तो गाँव के पिछवाड़े में है। यहाँ कैसे आ गई ?"

"अबे, यह ज़मीन किसकी है ?"

"मेरे बाप ने राजा साहब से पट्टे पर ली है।"

"कब ?"

"दो महीने से ऊपर हो गये हैं।"

सब काम और प्रबन्ध इतनी सफाई से किया गया था कि मुन्शी और दूसरे लोग अपनी आँखों और कानों पर सन्देह करने लगे थे।

नमाज़ी मुन्शी के साथ थाने की तरफ चल पड़े। एक ने पूछा, "मियाँ अब्दुलसमद, अब क्या होगा ?"

"भाई, ये काफिर बड़े चालाक हैं। देखा न, हमारे मुकाबले में एक मुसलमान को खड़ा कर दिया है, ताकि हम लड़ें तो अपने भाई से ही।"

"यह तो है। पर क्या किया जायगा ?"

"अभी थाने में जाकर इस बदमाश कलवार को बुलाता हूँ और इसे सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करूँगा।"

दारोगा को जब पता चला कि मसजिद ही गायब है तो वह बहुत चकराया। पिछले दिन के बन्दियों को अब मुचलके और ज़मानत पर छोड़ने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं था। मुन्शी से दारोगा ने कहा, "मेरे विचार में इस मुकदमे में अब कुछ नहीं रहा। मसजिद ही नहीं तो आरती करने से नमाज़ में विघ्न-बाधा कैसे ?"

मुन्शी ने ज़रा जोश में कहा, "वाह ! मसजिद क्यों नहीं है ? खुद डिप्टी कलक्टर साहब ने इसकी नींव रखी थी।"

"सो तो ठीक है। परन्तु यह बयान कचहरी में कौन देगा ? सिवाय इन कुछ कुंजड़ों के और कौन कहेगा ? डिप्टी कलक्टर स्वयं मुकदमा करेंगे तो वह गवाह कैसे बन सकेंगे ? यदि उन्होंने ऐसा कुछ भी लिखा कि वह स्वयं वहाँ थे तो विपक्षी तुरन्त मुकदमा उनके यहाँ से बदलवा देंगे। फिर भी तो हमारा पक्ष दुर्बल रहेगा।"

मुन्शी ने सिर हिलाते हुए कहा, "आप यह बात समझ लें कि यदि यह मुकदमा आप न बना सके तो आपकी बर्खास्तगी यकीनी है।"

इस पर दारोगा और मुन्शी सदर पहुँचे। डिप्टी कलक्टर वहीं रहता था। उससे राय के लिए ही वहाँ जाना ज़रूरी था। डिप्टी कलक्टर भी यह बात सुन आगबबूला हो गया। मसजिद के न रहने का उसे कुछ भी शोक नहीं था। उसे तो पथिक को कैद न कर सकने का अफसोस था। बहुत सोच-विचार कर डिप्टी कलक्टर ने कहा, "इस बार हम चूक गये। फिर विचार कर कोई और उपाय किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायगा।"

पथिक को जब हवालात से बाहर किया तो उसने दारोगा के पास जाकर पूछा, "हमें क्यों छोड़ा जा रहा है?"

दारोगा ने कहा, "मुकदमा नहीं चलाया जायगा।"

"तो हम लोगों को व्यर्थ में इतना कष्ट क्यों दिया?"

"इलाके में अमन रखना मेरा काम है। आप लोग फसाद कर रहे थे। मैंने फसाद रोकने का सबसे अच्छा तरीका यह समझा कि आप लोगों को हवालात में बन्द कर दूं। आप जा सकते हैं।"

पथिक बहुत हैरान था। वह समझने का यत्न कर रहा था कि यह न्याय है अथवा अन्याय? जब दो आदमियों का झगड़ा हो जाय, एक दूसरे को पीट रहा हो, तो पिटने वाले को हवालात में देकर झगड़ा बन्द करने का उपाय कितना उचित और न्याययुक्त है? यह है तो सहज उपाय। जो झगड़ा करने पर अग्रसर है उसे पकड़ना सहज नहीं। मार खाने वाले को पकड़कर झगड़े के मैदान से दूर ले जाना झगड़ा बन्द करने का सुगम उपाय है। परन्तु क्या इस नीति का परिणाम झगड़ा करने वालों को प्रोत्साहन देना नहीं? यही प्रश्न था जो पथिक के मन में बार-बार उठ रहा था।

पथिक जब बगिया में पहुंचा तो उसने देखा कि मसजिद लोप हो गई है। वह बगिया के किनारे पर पहुँचकर अपने भ्रम को दूर करने गया। अब उसने देखा कि मसजिद के स्थान पर खेत बना है और उसमें हल जुत चुका है। वह इस समस्या को समझ नहीं सका।

उसी रात वह रियासत के मैनेजर के पास पहुँचा। मैनेजर अपने बँगले में बैठा चुरुट पी रहा था। पथिक को वहाँ आया देख उसे कुर्सी पर बैठने का संकेत कर पूछने लगा, "क्यों, पंडितजी, कैसे आये हैं? आपका इस मास का रुपया तो आपको मिल चुका होगा?"

"मैं रुपये के लिए नहीं आया। मैं तो उस मसजिद के विषय में पूछने आया हूँ।"

"मसजिद तो वहाँ न थी, न है।"

"ओह! तो वह केवल स्वप्नमात्र था?"

"स्वप्न ही समझ लो।"

"परन्तु यह असत्य, अन्याय और धींगा-मस्ती नहीं है क्या?"

मैनेजर ने पथिक की आँखों में अपनी आँखें गाड़कर देखते हुए कहा, "क्या असत्य और अन्याय? पंडित, तुम पागल हो। तुम सत्य ही पागल हो। मैं समझता था कि लोग मज़ाक करते हैं। मगर नहीं, वे ठीक ही कहते हैं। तुम बिलकुल पागल हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक को मैनेजर के कथन से दुःख भी हुआ और विस्मय भी। दुःख इसलिये कि वह अपने-आपको पागल नहीं समझता था और विस्मय इसलिये कि वह मसजिद को गायब कर देना और फिर उसके प्रमाण मिटा देने को भारी धोखा मानता था। उसने नम्रता से कहा, "हो सकता है कि मैं पागल हूँ, पर आपके कथन में कुछ युक्ति नहीं है। यह ठीक है कि मुसलमानों का व्यवहार अयुक्तिसंगत था, पर आप गाँव-भर के लोगों को ज़बरदस्ती झूठ बोलने के लिए कह रहे हैं। आप चाहते हैं कि वे कहें कि वहाँ मसजिद थी ही नहीं। कितना भारी झूठ है।"

"पंडित, तुम वहुत कथा किया करते हो। मगर कथा का सार नहीं समझते। मैं तुम्हें महाभारत की एक घटना बताता हूँ :

"महाभारत का युद्ध हो रहा था। द्रोणाचार्य दुर्योधन की सेना का नायक था। उसे मार डालने या परास्त करने की शक्ति किसी में नहीं थी। वह पांडवों की सेना के परछे-के-परछे उतार रहा था। उसके बाणों की वर्षा से हज़ारों के सिर धड़ से पृथक् हो रहे थे। पांडवों में भगदड़ मचने ही वाली थी कि कृष्ण को एक बात स्मरण हो आई। कृष्ण जानता था कि अपने पुत्र अश्वत्थामा से द्रोणाचार्य का अगाध प्रेम है। कृष्ण ने द्रोणाचार्य के पास जाकर कहा, 'आचार्य, तुम लड़ रहे हो और तुम्हारे लड़के का मृत शरीर भूमि पर मिट्टी में लुढ़क रहा है।'

"द्रोणाचार्य को विश्वास नहीं आया। वह बोला, 'तुम झूठ बोलते हो।'

"कृष्ण ने कहा, 'युधिष्ठिर से पूछ लो।'

"युधिष्ठिर से झूठ बोलते नहीं बनता था। इस कारण एक अश्वत्थामा नामक हाथी को मरवाकर कृष्ण युधिष्ठिर को उसके सामने ले गया। जब द्रोणाचार्य ने पूछा कि क्या अश्वत्थामा मारा गया है, तो युधिष्ठिर ने उत्तर दिया, 'हाँ, अश्वत्थामा मारा गया है परन्तु वह अश्वत्थामा हाथी था, मनुष्य नहीं।' कृष्ण ने अर्जुन इत्यादि को पहले ही सिखा रखा था। युधिष्ठिर के वाक्य के पहले भाग को तो शान्ति से द्रोणाचार्य को सुनने दिया, परन्तु ज्योंही युधिष्ठिर कहने लगा, 'परन्तु वह...' कृष्ण और अर्जुन आदि ने अपने शंख बजा दिये। शंखों के नाद में द्रोणाचार्य युधिष्ठिर के वाक्य का अन्तिम भाग न सुन सका। पुत्र की मृत्यु का समाचार सुन, उदास होकर उसने धनुष-बाण रख दिए और लड़ाई छोड़ दी। अर्जुन ने अवसर जान एक बाण से द्रोणाचार्य का सिर धड़ से पृथक् कर दिया।

"पंडितजी महाराज, अब आप बताइये, क्या कृष्ण ने झूठ बोला था?"

पथिक ने कहा, "परन्तु कौरव अति दुष्ट थे। मैं मुसलमानों को ऐसा नहीं समझता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनाव

विजयबहादुर और मोहन देवा से भागे तो लखनऊ जा पहुँचे। मोहन पथिक के अहसान में दबा हुआ था। उसने उसे कैद होने और गाँव वालों से लज्जित होने से बचाया था। मोहन पंचायत का दृश्य भूल नहीं सकता था। उसके मन पर क्रोध से भरे हुए लोगों की आँखों का चित्र अभी भी चित्रित था। फिर कैसे पथिक के कहने पर लोग उसके शत्रु होने के स्थान उससे सहानुभूति प्रकट करने लगे थे। वही बेनी, जिसके घर को आग लगाते हुए वह पकड़ा गया था, उसके पंचायत में क्षमा माँगने के पश्चात् उसे थानेदार से बचाने के लिए भीड़ से धक्के देकर बाहर कर रहा था। ये सब बातें उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रही थीं।

परन्तु विजयबहादुर के मन में अभी भी विष भरा था। वह समझता था कि पथिक देवा में रहकर देवा वालों का भारी अनिष्ट कर रहा है। वह मोहन को दुर्बल आत्मा कहता था। वह कहता था कि पथिक बड़ा धूर्त है और अपने प्रभाव को सुरेश इत्यादि पर जमाने के लिए ही उसने मोहन को छुड़ा लिया है। यथार्थ में वह इतना अच्छा आदमी नहीं है।

लखनऊ में मोहन और विजयबहादुर की नहीं बनी। मोहन तो यह खबर पाते ही कि उस पर कोई मुकदमा नहीं बना, देवा वापस आ गया। परन्तु विजयबहादुर वहीं पड़ा रहा। वह पथिक से बदला लेने के उपायों पर विचार कर रहा था।

इन दिनों प्रान्तीय धारा-सभाओं के चुनाव की चर्चा आरम्भ हो गई थी। भिन्न-भिन्न पार्टियाँ चुनाव के मैदान में उतरने के लिए लंगर-लंगोट कस रही थीं। हिन्दू महासभा, मुस्लिम संस्थाओं और कांग्रेस कमेटियों के जलसे हो रहे थे और सब पार्टियों के लोग अपने-अपने सिद्धान्तों को सर्वसाधारण के सम्मुख स्पष्ट कर रहे थे।

विजयबहादुर लखनऊ में राजा साहब पिपरागंज की कोठी में ठहरा हुआ था। राजा साहब हिन्दू महासभा की स्थानीय शाखा के प्रधान थे। वह हिन्दू महासभा की ओर से चुनाव में खड़े करने के लिए हिन्दू प्रतिनिधियों का प्रबन्ध कर रहे थे। भिन्न-भिन्न हलकों के लोग हिन्दू महासभा का टिकट लेने के लिए आ रहे थे। विजयबहादुर ने सुरेश के विषय में राजा साहब से कहा तो वे सुरेश को हिन्दू महासभा के टिकट पर प्रान्तीय धारा-सभा की सदस्यता के लिए खड़ा करने पर राज़ी हो गये।

सुरेश के मन पर मोहन के मामले ने भारी प्रभाव डाला था। पथिक को वह पहले एक अर्द्धपागल समझता था, परन्तु इस घटना के पश्चात् वह उसका हृदय से मान करने लगा। इस परिवर्तन में मोहन का भी हाथ था। सुरेश अब प्रायः बगिया में जाया करता था। वहाँ कथा-कीर्तन से उसके विचारों में परिवर्तन हो रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे अधिक प्रभाव उसके मन पर मसजिद के मामले ने डाला था।

इस पर भी वह किसी एक निश्चित विचारधारा में नहीं पड़ा था। एक ओर तो ज़मींदारी की गन्ध उसके मस्तिष्क में बसी हुई थी, दूसरी ओर ताल्लुकेदार स्कूल की शिक्षा का अराष्ट्रीयता उत्पन्न करने वाला प्रभाव भी था। इधर पथिक अपने कथा-कीर्तन से हिन्दुत्व की छाप लगा रहा था।

ऐसे समय पर लखनऊ से विजयबहादुर का पत्र आया। लिखा था, 'पं० अवध-नारायण तिवारी, प्रान्तीय हिन्दू महासभा के मंत्री और राजा साहब पिपरागंज, स्थानीय हिन्दू सभा के प्रधान चाहते हैं कि होने वाले प्रान्तीय धारा-सभा के चुनाव में आप खड़े हो जायें। दादा, दुनिया में बड़ा होने का ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिलता। पहले तो विरोध में कोई खड़ा ही नहीं होगा, यदि कोई हुआ तो उसे परास्त कर देना कुछ कठिन नहीं। आपने लिखा है कि मोहन के मामले के पश्चात् पथिक का प्रभाव इलाके में दूर-दूर तक फैल गया है और आपकी मैत्री उससे बढ़ती जाती है। ऐसी परिस्थिति में आपका कौंसिल का सदस्य बन जाना कुछ भी कठिन नहीं। आप एक बार लखनऊ आकर हिन्दू महासभा के कार्ड पर हस्ताक्षर कर दें तो हिन्दू महासभा की ओर से आपका नाम निकल जायगा।'

यह पत्र मिलने पर सुरेश को रात-भर नींद नहीं आई। उसने सार्वजनिक कार्यों में कभी भाग नहीं लिया था, फिर भी वह यह तो जानता था कि देश के बड़े-बड़े नेता और वकील हज़ारों रुपया व्यय करके धारा-सभा के सदस्य बनते हैं। वह अपने-आपको उन लोगों में बैठने का अनुमान कर खुशी से उतावला हो उठता था। ऐसे सुख-स्वप्नों में नींद असम्भव थी।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही वह अपनी माता के पास पहुँचा। माँ ने जब आने का कारण जाना तो पूछा, "तिवारीजी का पत्र आया है या विजयबहादुर का?"

"माँ, तुम तो ऐसे ही संशय करती रहती हो। विजयबहादुर बेचारे को इतनी बुद्धि ही कहाँ है कि ऐसे प्रस्ताव कर सके। माँ, तुम कहो तो खड़ा हो जाऊँ?"

"तो क्या आज तक तुम सब काम मुझसे पूछकर ही करते रहे हो? जैसा मन में आए वैसा करो।"

"परन्तु, माँ, इसमें तो रुपया खर्च होगा। रियासत का तो यह हाल है कि अभी तक मालगुजारी अदा नहीं हुई। कलक्टर साहब की चिट्ठी कल भी आई थी। वसूली हो रही है, पर इलाके में अकाल पड़ा है। सोलह आने वसूली की आशा नहीं। और चुनाव में तो लगभग बीस-तीस हज़ार रुपया खर्चा होगा। सो सब इसी वर्ष की आय में से निकल नहीं सकेगा। यदि, माँ, तुम घर में से कुछ रुपया दे दो, तो कुछ इस वर्ष और कुछ अगले वर्ष में दे दूँगा।"

"देखो, बेटा, जितनी चादर हो उतना ही पाँव पसारना चाहिए। यदि इतना रुपया नहीं है तो चुप रहो। फिर पाँच वर्ष बाद जब चुनाव होगा तब तक रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकत्रित कर लेना और मन की लालसा पूरी कर लेना।"

"नहीं, माँ, इतनी देर में तो न जाने क्या हो जाय? कौन जियेगा, कौन मरेगा? न, मैं तो इसी बार सदस्य बनूंगा।"

माँ जानती थी कि सुरेश से बहस करना व्यर्थ है। वह मन में आई बात करके छोड़ता है। अतएव स्वीकृति दे दी और कहा, "परन्तु खर्च करने के लिए किसी योग्य आदमी को नियत करना ताकि खर्चा सीमा से बाहर न हो जाय।"

माँ की स्वीकृति मिलने पर सुरेश पथिक के पास पहुँचा। जयपुर से मूर्ति गढ़ने वाले आये हुए थे और वे सरस्वती की वैसी ही मूर्ति, जैसी पथिक ने मिट्टी की बनाई थी, वना चुके थे। मन्दिर की इमारत की आवश्यक मरम्मत हो चुकी थी।

पथिक प्रातःकाल की पूजा इत्यादि कर संगीत का अभ्यास कर रहा था। यह उसका नित्य प्रति का काम था। जो लोग स्नान इत्यादि के लिए नदी पर आते थे, प्रायः स्नान के पश्चात् पथिक के दर्शन कर घर जाते थे। कई लोग तो कुछ फल-फूल और पैसे भी चढ़ा जाते थे।

जब पथिक ने अपना नियमित संगीत का अभ्यास समाप्त कर तानपूरा और करताल भूमि पर रखी तो सुरेश ने अपना वहाँ पहुँचने का प्रयोजन बताया। उसने कहा, "गुरुदेव, अगले वर्ष के आरम्भ में ही कौंसिलों के नये चुनाव होंगे।"

"हूँ।" पथिक ने केवल इतना ही कहा।

"यह नई राज्य-प्रणाली यद्यपि आदर्श नहीं तो भी प्रान्तों में तो लोगों को बहुत अधिकार मिल ही गये हैं।"

"हूँ।"

इस 'हूँ-हूँ' से सुरेश कुछ उत्साहित नहीं हुआ। इस पर भी साहस बाँधकर बोला, "कांग्रेस के लोग यद्यपि सन् पैंतीस के गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट को स्वीकार नहीं करते, तो भी चुनाव के लिए खड़े हो रहे हैं।"

"हूँ।"

"यह जनता से अन्याय है, गुरुदेव। वे लोग जनता से राय लेकर तो मैम्बर बनेंगे, परन्तु कौंसिलों में हाज़िर नहीं होंगे, और लोगों का जो कुछ भी भला मैम्बर कर सकते हैं, वे न स्वयं करेंगे और न दूसरों को करने देंगे।"

"हूँ।"

अब तो सुरेश से नहीं रहा गया। वह इस 'हूँ-हूँ' से तंग आ गया था। कहने लगा, "गुरुदेव, मैं आपकी 'हूँ-हूँ' का अर्थ नहीं समझ सका।"

पथिक हँस पड़ा। कहने लगा, "सुरेश बाबू, पहले अपने मन का आशय पूर्ण रूप से बता दो, तो फिर मैं अपनी सम्मति दूंगा।"

सुरेश अपने मन की बात बताने के लिए विवश हो गया। उसने कहा, "हिन्दू महासभा के कुछ लोगों की इच्छा है कि मैं इस इलाके से धारा-सभा के लिए खड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाऊँ। इसमें मैं आपकी सम्मति चाहता हूँ।"

"यह बात यदि तुमने पहले ही बताई होती तो मैं अब तक अपनी सम्मति दे चुका होता।"

"हाँ, तो आपकी क्या राय है ?"

"हिन्दू महासभा के टिकट पर खड़ा होना ठीक नहीं।"

"क्यों ?"

"हिन्दू महासभा है भानुमती का पिटारा। इसमें एक सिद्धान्त पर दृढ़ रहने वाले व्यक्ति सम्मिलित नहीं हैं। हिन्दू महासभा, यथार्थ में, राजनैतिक संस्था न थी और न है।"

"आपको इस सभा के विषय में बहुत कम ज्ञान है। यह यथार्थ में एक राजनैतिक संस्था है। इसकी नीति है हिन्दू राजनैतिक अधिकारों की रक्षा करना।"

"क्या हिन्दुओं के राजनैतिक अधिकार अन्य हिन्दुस्तानियों के अधिकारों से विलक्षण हैं ? जब सब हिन्दुस्तानी एक समान दास हैं तो हिन्दुओं की विशेष रक्षा के क्या अर्थ हैं ? यथार्थ में, हिन्दू महासभा के लोगों के मस्तिष्क में न तो राजनैतिक विचारों में एकता है, न ही राजनैतिक अधिकारों की प्राप्ति के साधनों में एकमत। यही कारण है कि हिन्दू महासभा न तो कभी कोई कार्यक्रम बना सकी है और न ही बना सकेगी।"

"मैं आपका मतलब नहीं समझा।"

"मेरा मतलब स्पष्ट है। राजनैतिक दृष्टि से भिन्न-भिन्न विचारों के लोग हिन्दू महासभा में सम्मिलित हैं। इन लोगों का इस विषय में ध्येय एक नहीं। अच्छा, देखो, राजा साहब पिपरागंज हैं। वे ब्रिटिश राज्य का यहाँ रहना अत्यावश्यक और भारतवर्ष के लाभ की बात समझते हैं। वे लखनऊ हिन्दू सभा के प्रधान हैं। दूसरी ओर पंजाब में और अन्य स्थानों पर ऐसे सदस्य हैं जो हिन्दू महासभा का ध्येय ब्रिटिश राज्य से मुक्ति पाना तो मानते हैं, इस पर भी वे इस समय सरकार को सहयोग देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। इन लोगों से विपरीत पं० मालवीयजी हैं। वे सरकार का पग-पग पर नियमानुकूल विरोध करने के लिए कहते हैं। सबसे बढ़कर हिन्दू महासभा में वीर सावरकर जैसे भी लोग हैं जो जिस-किस भांति भी हो सके ब्रिटिश राज्य को भारतवर्ष से उखाड़ बाहर करना चाहते हैं। हिन्दू महासभा में वे लोग भी हैं जो हिन्दुस्तान में शुद्ध हिन्दू राज्य स्थापित करना अपना ध्येय समझते हैं और वे लोग भी हैं जो दूसरे सम्प्रदायों से समझौता करने पर सदैव तैयार हैं। जिस सभा के लोगों का राजनैतिक मत एक नहीं वह सभा कैसे राजनैतिक सभा हो सकती है ? मेरी सम्मति में या तो इस सभा वालों को राजनैतिक क्षेत्र से अपना हाथ खींच लेना चाहिए या अपने संविधान में संशोधन कर एक ही विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लोगों को अपने भीतर रखना चाहिये।"

"तो क्या आप मेरा स्वतन्त्र रूप से खड़ा होना पसन्द करेंगे?"

"कदापि नहीं। मैं तुमको धारा-सभा में जाने योग्य नहीं समझता।"

सुरेश इतनी मुँहफट बात से चकित रह गया। फिर भी पथिक को मनाने की आशा में उसने कहा, "आप मुझे कैसे अयोग्य समझते हैं?"

"आपकी आयु, अनुभव, शिक्षा और ज्ञान अभी बहुत कम है। सबसे बड़ी बात जो एक धारा-सभा के सदस्य में होनी चाहिये, वह भी आपमें नहीं है।"

"क्या मैं जान सकता हूँ कि वह क्या है?"

"हाँ, यदि तुम्हारी इच्छा हो तो। तुममें चरित्र नहीं है।"

इससे तो सुरेश का मुख क्रोध से लाल हो गया। पथिक ने अपने कथन को समझाते हुए कहा, "चरित्र के अर्थ इस शब्द के विस्तृत अर्थों में समझना। मैं कहता हूँ कि जिस व्यक्ति में अपने दोष और त्रुटियों के मानने का स्वभाव नहीं, वह चरित्र-हीन है। तुममें भी यही दोष है।"

सुरेश का क्रोध अभी शान्त नहीं हुआ था। उसने आवेश में कहा, "मुझमें दोष है और मैं मानता नहीं, यह कैसे?"

"मेरा अभिप्राय त्रुटियों से है। तुमने आज तक धारा-सभा की सदस्यता करने के लिए अपने में योग्यता पैदा करने का यत्न तक भी नहीं किया। तुमने न तो राजनीति की शिक्षा प्राप्त की है और न ही कभी विचार किया है कि धारा-सभा में सदस्य होने पर तुम्हारे क्या-क्या उत्तरदायित्व हो जायेंगे। तुम अयोग्य हो। इस पर भी मान-प्रतिष्ठा के लालच में उस पद को पाने की इच्छा कर रहे हो। यही चरित्रहीनता है। अपनी त्रुटियों को न मानना है।"

यद्यपि इससे भी सुरेश का क्रोध शान्त नहीं हुआ था, परन्तु पथिक को अपने पक्ष में कर लेने के लोभ में उसने एक और युक्ति दी। उसने कहा, "मैं तो समझता हूँ कि मैं किसी भाँति भी सदस्य बनने के अयोग्य नहीं हूँ। सरकार ने जो योग्यताएँ सदस्य बनने के लिए नियत की हैं वे सब मुझमें हैं। मैं कई लाख रुपया सालाना कर देता हूँ। मेरी आयु पच्चीस वर्ष की हो गई है। मेरा नाम वोटरों की सूची में है। इसके अतिरिक्त सरकार ने और योग्यता नियत नहीं की है। केवल सरकार ही नहीं, प्रत्युत् हिन्दू महासभा भी मुझे सब प्रकार से योग्य समझती है। यदि मैं चाहूँ तो कांग्रेस-टिकट भी प्राप्त कर सकता हूँ। तो क्या ये लोग एक अयोग्य व्यक्ति को टिकट दे रहे हैं?"

"सुरेश बाबू, तुमने तो मेरी सम्मति माँगी है, न कि सरकार की अथवा हिन्दू महासभा की या कांग्रेस कमेटी की। वे भले ही तुम जैसे लोगों को धारा-सभा की सदस्यता के योग्य समझें, मैं तो ऐसा नहीं समझता। मैंने तुमको अयोग्य समझने का कारण भी बता दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपके विचारानुसार तो बहुत ही कम लोग इन सभाओं के सदस्य बनने की योग्यता रखते होंगे। यदि आपका पैमाना प्रयोग में लाया जाए तो सभायें खाली रह जायेंगी।"

"रहनी ही चाहियें। दो-चार बुद्धिमान, अनुभवी, शिक्षित, चरित्रवान व्यक्ति हज़ारों तुम जैसों से अच्छे होंगे।"

"यदि मैं खड़ा हो जाऊँ तो क्या आप मेरी सहायता नहीं करेंगे?"

"यदि तुम स्वतन्त्र रूप से खड़े होगे तो मैं अपने प्रियजनों से कह दूंगा कि जिसको उचित समझें वोट दें। हाँ, यदि तुम किसी पार्टी की ओर से खड़े होगे तो मैं या तो विरोध करूंगा या सहायता। तब क्या करूंगा, यह मैं अभी नहीं बता सकता। इसका कारण यह है कि पार्टियों ने अभी अपना कार्यक्रम निश्चित नहीं किया। हिन्दू महासभा में अनुशासन नहीं है। हिन्दू महासभा राजनीति में एक मत रखने वाली सभा नहीं है। इसे राजनैतिक पार्टी बनाने के लिए इसमें भारी संशोधन की आवश्यकता है।"

"खैर, जैसे आपकी इच्छा हो करें। मैं तो आज लखनऊ जा रहा हूँ और वहाँ जाकर निश्चय करूंगा। इस पर भी एक बात आपसे पूछना चाहता हूँ कि आप पार्टियों के विषय में इतना कड़ा व्यवहार क्यों रखेंगे?"

"सुरेश बाबू, बात सीधी ही है। यदि तुम स्वतन्त्र रूप से खड़े होगे तो मैं तुम्हें अयोग्य समझता हुआ भी तुम्हारा विरोध नहीं करूंगा। लोग तुम्हारे विषय में अपना-अपना अनुमान स्वयं लगा लेंगे। हाँ, यदि तुम किसी पार्टी के टिकट पर खड़े होगे, तो लोगों को पार्टी के गुण-अवगुण बताने की आवश्यकता रहेगी। पार्टी में यदि अनुशासन ठीक हो तो एक व्यक्ति की योग्यता व अयोग्यता का प्रश्न नहीं रह जाता। तब तो एक अयोग्य आदमी भी पार्टी के नियम से बँधा हुआ पार्टी के कार्यक्रम के अनुकूल अपना आचरण रख सकता है। ऐसे अवसर पर देखना यह होता है कि पार्टी का कार्यक्रम क्या है और उस पार्टी का अपने सदस्यों पर कितना अधिकार है। जिस पार्टी का कार्यक्रम ठीक है और जिस पार्टी के सदस्य पार्टी के लिए अपने परम स्वार्थ को भी त्याग सकते हैं, वह पार्टी हमारे वोट की हकदार हो सकती है।"

"यदि आपकी सहायता हो तो ठीक है, नहीं तो मैं समझता हूँ कि आपकी सहायता के बिना भी मैं सफल हो जाऊँगा।"

"मैं तुम्हारा विरोध नहीं करूंगा।"

"धन्यवाद।"

: २ :

सुरेश को हिन्दू महासभा का टिकट लेने में कुछ भी कठिनाई नहीं हुई। एक हज़ार रुपया पार्टी-फंड में देना पड़ा। पश्चात् सुरेश ने मिस्टर आर० सी० सिन्हा बी० ए०, एलएल० बी० को अपना इलैक्शन-एजेंट नियत कर लिया। यह सिन्हा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी विजयबहादुर का ढूंढ़ा हुआ आदमी था।

अपने पर हिन्दू पार्टी का लेबल लगाकर सुरेश ने ज़िला कचहरी में 'नौमीनेशन' के पर्चे दाखिल कर दिये। कांग्रेस की ओर से लखनऊ के प्रसिद्ध वकील मिस्टर अवधबिहारी माथुर खड़े किए गये। मिस्टर माथुर बहुत धनी वकील थे। रुपये-पैसे का उन्हें विचार नहीं था। वह चाहते तो लाखों रुपया चुनाव पर खर्च कर सकते थे, परन्तु कांग्रेस पार्टी में उन्होंने स्पष्ट कह दिया था, "मैं पाँच सौ रुपये से अधिक खर्च नहीं करूँगा। मुझे सदस्य बनने का लालच नहीं है। यदि लोग मुझे चुनेंगे तो भला उनका होगा, और यदि उन्होंने मुझे नहीं चुना तो वे जानें। मुझे दुःख नहीं होगा।"

कांग्रेस के नेता माथुर बाबू जैसे योग्य आदमी को अपनी पार्टी में लेकर फूले नहीं समाते थे। वे यह तो समझते थे कि बाबू साहब रुपये की कंजूसी कर कोई अच्छी बात नहीं कर रहे। फिर भी वे चाहते थे कि माथुर बाबू सफल हो जायें, और उन्होंने ज़िला-भर की कांग्रेस संस्थाओं को पूरे मन से यत्न करने के लिए आदेश भिजवा दिया था।

जाँच के दिन सुरेश आधे दर्जन वकील लेकर कचहरी पहुँचा था, परन्तु मिस्टर माथुर अकेले ही थे। सुरेश के वकीलों ने भरसक यत्न किया कि माथुर बाबू का पर्चा रद्द हो जाय, परन्तु ऐसा न हो सका। इसके विपरीत जब सुरेश के पर्चे की जाँच आरम्भ हुई तब माथुर बाबू ने कह दिया, "मुझे राजा साहब के 'नौमीनेशन' के पर्चे पर कुछ भी आपत्ति नहीं। मैं चाहता हूँ कि राजा साहब मैदान में आकर दो-दो हाथ दिखायें।"

परिणाम यह हुआ कि देवा के इलाके में जंग छिड़ गई। हिन्दू महासभा और कांग्रेस का मुकाबला था। इलाके के राजा और उसके रुपये से लदे कोष का एक खाली हाथ वकील से मुकाबला था। एक ओर सरकार के अफसरों की पूर्ण शक्ति से सहायता थी। दूसरी ओर दो टके की खद्दर की टोपी पहने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं का सहयोग था। जबरदस्ती, धोखा, रिश्वत, सरकारी अफसरों की धमकियाँ एक तरफ थीं और रूखी-सूखी महात्मा गांधी की जय विपक्ष में थी।

तीन मास तक गाँव-गाँव, घर-घर, खेत-खेत में, कुओं पर, घाटों पर, खेत की मेड़ों पर, अभिप्राय यह कि जहाँ भी दो आदमी मिलते थे, चुनाव की ही बात होती थी। कोई कहता था, 'महात्मा गांधी यह कहते हैं'; दूसरा कहता था, 'पं० मदनमोहन मालवीयजी का वक्तव्य इस प्रकार है।' एक और बोल उठता था, 'वीर सावरकर यह कहते हैं।' अधिक गँवार आदमी यह कह देते थे, 'कांग्रेसी सब झूठे हैं; हिन्दू महासभा देशद्रोहियों की सभा है।'

स्थान-स्थान पर सभायें हो रही थीं। कांग्रेस का संगठन बड़ा प्रबल था। ज़िला-ज़िला, तहसील-तहसील और प्रायः गाँव-गाँव में कांग्रेस कमेटियाँ बनी हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं और सैकड़ों कार्यकर्ता अवैतनिक और साधारण वेतन लेकर कांग्रेसी उम्मीदवार की सहायता कर रहे थे। दूसरी ओर हिन्दू महासभा का कोई संगठन नहीं था। अतएव सुरेश को कार्यकर्ताओं की एक फौज नौकर रखनी पड़ी। ये लोग उचित वेतन पाने पर भी उस लगन से काम नहीं कर सकते थे जिससे कांग्रेसी कार्यकर्ता करते थे। बात भी ठीक थी। भाड़े के टट्टू कहाँ तक चल सकते थे। रुपया धड़ाधड़ व्यय हो रहा था। राजमाता ने पहले दस हज़ार पर उँगली रखी। जब वह समाप्त हो गया तो दस हज़ार और दिया। वह भी गरम तवे पर पानी की बूंद के समान भस्म हो गया। चुनाव में अभी एक मास शेष था। राजमाता ने पूछा, "बेटा, अभी और कितने की आवश्यकता होगी ?"

"माँ, बीस हज़ार और चाहिये। मुकाबले में सारी कांग्रेस है और इधर मैं अकेला हूँ। हार गया तो बहुत लज्जा की बात होगी और बीस हज़ार खर्च किया हुआ भी विफल जायगा।"

"बेटा, एक दिन लखनऊ चले जाओ और तिवारी इत्यादि एक-दो नेताओं को तुम भी ले आओ। उन्हें ज़रा इलाके में घुमा दो और व्याख्यान दिलवा दो न।"

"परन्तु, माँ, इसमें भी तो खर्चा होगा। यदि यह बदमाश पथिक मान जाता तो इलाके का एक वोट भी कांग्रेस को न मिलता। वह बहुत प्रभावशाली वक्ता है और अब तो बेनी की जान बचाने के पश्चात् देवता माना जाने लगा है। सुना है, वह भी कांग्रेस के पक्ष में इलाके का दौरा करने वाला है। परसों ही प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान उसके पास आये थे। घंटों बातें होती रहीं और, न मालूम, क्या निश्चय हुआ है।"

"बेटा, तुमने पथिक की बात मानी नहीं। यदि तुम कांग्रेस की ओर से खड़े हो जाते तो न तो इतना धन व्यय होता और न ही लोग, जो अब तुम्हारे विरोध में घूम रहे हैं, तुम्हारे विरोध में होते।"

"माँ, है तो ठीक। मेरे लिए तो कांग्रेस और हिन्दू महासभा में कोई अन्तर नहीं। लखनऊ जाकर मेरी भी राय हुई थी कि कांग्रेस के प्रधान से मिल लूँ। परन्तु विजयबहादुर और अन्य हितचिन्तकों ने बताया कि सरकारी अफसर नाराज़ हो जायेंगे। मालगुज़ारी में लाखों की छूट, जो अकाल के कारण होने वाली है, फिर न हो सकेगी और रियासत कोर्ट ऑफ वार्ड में हो जायगी।"

माँ इन युक्तियों के सम्मुख चुप थी। सुरेश ने कहा, "माँ, एक बार तुम पथिक को यहाँ बुलाकर समझा क्यों नहीं देतीं? अभी तो चुनाव में एक मास शेष है। यदि वह मेरी सहायता करनी स्वीकार कर ले तो मैं एक मोटरगाड़ी उसकी सवारी में दे दूंगा। मुझे पूर्ण आशा है कि यदि वह हमारी ओर आ जाय तो कुछ ही दिनों में पासा पलट जायगा।"

राजमाता गम्भीर विचारों में डूब गई। एकाएक खड़ी हो गई और कहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी, "यदि कुछ कहना ही है तो यहाँ बुलाने की अपेक्षा उससे वहाँ जाकर कहना अधिक ठीक रहेगा। तुम्हारे पिता के देहान्त के पश्चात् जब मैं राज्य का प्रवन्ध करती थी, तब भी तो बाहर निकला करती थी। अब तो तुमने जंग छेड़ दी है। मुझे परदे में रहना नहीं सुहाता। तुमने ठीक किया है या खराब, कुछ भी हो, जीत तुम्हारी होनी चाहिये।"

: ३ :

जब राजमाता वहाँ पहुँची तो पथिक नलिनी को संगीत की शिक्षा दे रहा था। नलिनी गा रही थी। राजमाता पालकी से निकल पथिक के सम्मुख बिछी चटाई पर बैठ गयी। नलिनी ने गाना बन्द कर दिया। वह लज्जा अनुभव करने लगी थी। उसने नलिनी की पीठ पर हाथ फेरकर उसका उत्साह बढ़ाते हुए कहा, "गाओ। गाती जाओ, बेटी। तुम तो बड़ा अच्छा गाती हो।"

"हाँ, हाँ, नलिनी, माताजी को सुनाओ न!" पथिक ने भी प्रोत्साहन देते हुए कहा।

नलिनी ने फिर गाना आरम्भ कर दिया—

भज मन रामचरण सुखदाई।
जिहि चरणन निकसी सुरसरी, शंकर जटा समाई।
जटा शंकरी नाम पड़ो है, त्रिभुवन तारन आई॥
जिहि चरणन की चरण पादुका, भरत लेहु लव लाई।
तिहि चरणन संतन जन सेवें, प्रभु हरि नाम जपाई॥

नलिनी को सुर, ताल और लय सहित गाते देख राजमाता चकित रह गयी। वह मुग्ध हो उसका गीत सुनती रही। कुछ-कुछ तानालाप भी वह करने लगी थी। जब वह समाप्त कर चुकी तो पथिक को ऐसी अच्छी प्रतिभाशाली शिष्या पाने पर बधाई दी। पथिक ने अति आनन्दित हो कहा, "यह लड़की मुझे बहुत प्यारी लगती है। इसकी बुद्धि और चतुराई सराहनीय है।"

अब राजमाता ने अपने वहाँ आने का प्रयोजन बताने के लिए बात आरम्भ की, "आपसे एक अत्यावश्यक काम है। कई दिन से आने का विचार कर रही थी। आज कुछ अवकाश मिला है। आप तो जानते ही हैं कि सुरेश धारा-सभा के लिए खड़ा हुआ है। वह अभी बालक है। उसकी सहायता तो आपको करनी ही चाहिये।"

"माताजी, मैं आपका विरोध नहीं कर रहा।"

"यह ठीक है। मैं उसकी सहायता करवाना चाहती हूँ।"

"उसकी सहायता का अर्थ है, सरकार के सहायकों की सहायता करना। प्रान्त-भर के सरकारी अफसरों का यह यत्न हो रहा है कि कांग्रेसी उम्मीदवार असफल रहें। यह केवल इस कारण है कि वे परिवर्तन नहीं चाहते। वही मजिस्ट्रेट,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलक्टर, कमिश्नर इत्यादि कांग्रेस वालों को प्रायः अन्याय के कष्ट देते रहे हैं। अब वे यह पसन्द नहीं करते कि वही कल के कैदी आज उन पर अफसर बन जायें। उनके अपने ही पाप उनके सम्मुख आ रहे हैं। अतएव ये अफसर जी तोड़ यत्न कर रहे हैं कि कांग्रेस का कोई भी प्रतिनिधि धारा-सभा में न पहुँच सके।"

"तो आप कांग्रेस वालों की सहायता करना चाहते हैं ?"

"नहीं, मैं सरकार का विरोध करना चाहता हूँ। विदेशी राज्य भारतवर्ष में सब पापों का मूल है। इससे हम अपनी आत्मा तक को खो रहे हैं। जो भी विदेशियों से मुक्ति प्राप्त करने का यत्न करते हैं, मैं उनकी सहायता करना चाहता हूँ।"

"हिन्दू महासभा का भी यही उद्देश्य है। वह भी तो भारतवर्ष में स्वतन्त्रता चाहती है।"

"उद्देश्य-मात्र से तो काम नहीं चल सकता। उद्देश्य-प्राप्ति के लिए उपाय और प्रयत्न भी तो होने चाहियें। हिन्दू महासभा की वर्तमान नीति विदेशी सरकार से सहयोग की है। हिन्दू महासभा के नेता समझते हैं कि यदि सरकार का विरोध किया गया तो वह मुसलमानों को अच्छी-अच्छी पदवियों पर नियुक्त कर हिन्दुओं को दुर्बल कर देगी। इस कारण वे सरकार के अधीन उन ओहदों को पाने के लिए सरकार की बातों में सहयोग देने की सम्मति देते हैं। फलस्वरूप, सुरेश जैसे सरकार के आश्रित लोग हिन्दू महासभा में पहुँचकर नेता बन गये हैं। इन लोगों के मन में देशोन्नति तथा देश और जाति की स्वतन्त्रता का विचार तक नहीं है। हिन्दू सहासभा का उद्देश्य अच्छा है, परन्तु विदेशी सरकार के आश्रय पर पलने वाले लोग इस उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकेंगे।"

"सुरेश को भला आप कैसे सरकार के आश्रय कह सकते हैं ?"

"सुरेश ताल्लुकेदार है। किंचित्मात्र बात का बहाना कर सरकार उसकी ज़मींदारी कोर्ट ऑफ वार्ड में ले सकती है। क्या सुरेश अपनी ज़मींदारी को देश की स्वतन्त्रता के लिए त्याग सकता है ? यदि नहीं, तो उसे सरकार के अधीन ही समझना चाहिये।"

राजमाता को सुरेश का कहना स्मरण हो गया। सुरेश ने कहा था कि अफसर नाराज़ हो गये तो रियासत कोर्ट ऑफ वार्ड में कर लेंगे।

पथिक ने अपनी बात को कुछ और स्पष्ट करने के लिए कहना जारी रखा, "माताजी, यदि धारा-सभा में गवर्नर की नीति अथवा अनुचित हस्तक्षेप के विरोध का प्रश्न उपस्थित हुआ तो हिन्दू महासभा से भेजे जाने वाले सदस्य इस विरोध में सम्मिलित नहीं हो सकेंगे। सुरेश गवर्नर तो दूर रहा, एक डिप्टी कमिश्नर को भी नाराज़ नहीं कर सकता। तब देश को स्वतन्त्र करने का उद्देश्य कैसे पूरा कर सकता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजमाता निराश घर लौट गई। तो भी पथिक के विपरीत उसके मन में रोष नहीं था। उसे पथिक की युक्तियाँ अकाट्य प्रतीत होती थीं। सुरेश के पूछने पर उसने कह दिया, "पथिक को कुछ मत कहो, उसे चुप रहने दो।"

सुरेश की चुनाव में सहायता करने के लिए विजयबहादुर लखनऊ से देवा वापस आ गया था। उसने जब सुना कि राजमाता पथिक को समझाने गई थी और इस पर भी वह नहीं माना तो वह क्रोध से उबल उठा। उसने पथिक को शिक्षा देने का निश्चय कर लिया।

: ४ :

लखनऊ से हिन्दू महासभा के महामन्त्री तिवारीजी सुरेश की सहायतार्थ प्रचार करने के लिए आये हुए थे। वह पूरे इलाके का दौरा कर देवा में ठीक उस दिन पहुँचे जिस दिन कांग्रेस के कई प्रमुख नेता मिस्टर माथुर की सहायता के लिए देवा में उपस्थित थे। ऐसे अवसर पर बीसियों गाँवों के लोग देवा में एकत्रित हो गये। दो लाख से ऊपर की भीड़ रही होगी। श्रापित बगिया एक कोने से दूसरे कोने तक खचाखच लोगों से भर रही थी। लाउडस्पीकर लगाये गये थे और दोनों पार्टियों में समझौता हो गया था कि वारी-वारी से बोलेंगे। यह समझौता कराने वाला पथिक था। वह अभी भी किसी एक पार्टी का सहायक बनना पसन्द नहीं करता था। इसलिए उसे सभा का प्रधान बनाया गया था। सुरेश की पार्टी वालों की इच्छा के अनुसार पहले तिवारीजी को अपना पक्ष समर्थन करने का अवसर दिया गया। पूरे डेढ़ घंटे तक तिवारीजी का भाषण होता रहा। लोग चुपचाप उनकी युक्तियों और विचारों को सुनते रहे। यद्यपि लोगों में बहुमत कांग्रेस के पक्ष में था तो भी पथिक के अनुरोध और कांग्रेसी नेताओं के कहने पर सब दत्तचित्त होकर बैठे रहे। तिवारीजी ने भी बहुत सभ्यता और योग्यता से अपने पक्ष का प्रतिपादन किया। उन्होंने यह भी बताया कि सुरेश यद्यपि राजनैतिक बातों में कुशल नहीं, तो भी उसका वचन है कि वह पार्टी के नियन्त्रण में रहेगा। यह उस पर भरोसा करने के लिए काफी गारण्टी हो सकती है।

तिवारीजी के व्याख्यान के पश्चात्, पूर्व निर्णय के अनुसार, एक कांग्रेसी नेता का व्याख्यान होने वाला था, परन्तु विजयबहादुर ने स्वयं कुछ कहने के लिए आग्रह किया। पथिक ने इस बात की स्वीकृति नहीं दी। सुरेश और तिवारीजी ने विजयबहादुर को रोका भी, परन्तु वह बोलने के लिए हठ करता ही रहा। वह मंच पर खड़ा होकर बिना प्रधान की आज्ञा के बोलने लगा। लोग उसकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं थे। लोगों ने 'बैठ जाओ', 'बैठ जाओ' का शोर करना आरम्भ कर दिया। विजयबहादुर कहता जा रहा था। जब उसने देखा कि लोग उसकी बात सुनने को तैयार नहीं, तो उसने लोगों को गालियाँ देनी प्रारम्भ कर दीं, "बदमाश! साले! अपने राजा के खिलाफ बगावत करते हो! याद रखो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबके साथ एक-एक करके......" बहुत अश्लील बातें करनी आरम्भ कर दीं।

विजयबहादुर की उद्दण्डता को रोकने के लिए पथिक ने लाउडस्पीकरों का सम्बन्ध बैटरी से विच्छेद कर दिया। अब भीड़ के शोर में विजयबहादुर की बात दब गई। उसे इस बात पर भारी क्रोध चढ़ आया और उसने पथिक के मुख पर एक घूंसा लगा दिया। इस पर विजयबहादुर और पथिक गुत्थमगुत्था हो गये। सब लोग उठ खड़े हुए। अकस्मात् इस समय कुछ लोग बगिया के चारों कोनों पर से जनता पर लाठियों से प्रहार करने लगे। यह सबकुछ इतना अकस्मात् और कायदे से किया गया कि लोग एकदम भाग उठे। यह सब विजयबहादुर का षड्यन्त्र था।

कुछ लोग लाठियाँ लिये हुए मंच पर टूट पड़े। पथिक और कांग्रसी नेताओं को लठैतों ने घेर लिया। इस समय लोगों को विदित हो गया कि पथिक और कांग्रेसी नेताओं की जान का भय है। वे लौट पड़े और बड़ी कठिनाई से नेताओं को छुड़ाया।

सभा भंग हो गई। लाउडस्पीकर इत्यादि चकनाचूर हो गये। मंच और मेज़-कुर्सियाँ सब टूट-फूट गईं। पथिक के एक हल्का-सा घाव मुख पर आँख के नीचे हो गया। कांग्रेसियों को भी चोटें आई थीं। केवल सन्तोष इस बात का था कि जान किसी की नहीं गई।

लखनऊ के तिवारीजी तथा अन्य सुरेश के सहायक सभा से कोट में पहुँचे तो तिवारीजी ने विजयबहादुर को इस उद्दंडता के लिए बहुत डाँटा। परन्तु उसने कहा, "पंडितजी, मेरा तो दोष केवल इतना ही था कि मैंने अपने विचार लोगों को बताने का यत्न किया। झगड़ा करने वाले कांग्रेसी थे।"

"तुमने गालियाँ क्यों दीं?"

"यह तो, साहब, हम देहातियों के कहने का ढंग है। ऐसी ही बातों को यहाँ के लोग ठीक-ठीक समझते हैं।"

"मैं इन बातों को नहीं मानता। तुमने जो कुछ किया वह अपने मित्र मिस्टर सुरेश के लिए अच्छा नहीं किया। जनता पर इसका उलटा प्रभाव पड़ेगा।"

सुरेश विजयबहादुर की उच्छृंखलता से डर गया था। वह सोचने लगा था कि अब पथिक खुल्लमखुल्ला उसके विरुद्ध प्रचार करने लगेगा। वह गम्भीर विचार में मग्न था। अब जब तिवारीजी को भी आशंका प्रकट करते सुना तो उसने विजयबहादुर से कहा, "परन्तु तुमने पथिक को घूंसा क्यों मारा?"

"उसने लाउडस्पीकर क्यों बन्द कर दिया था?"

"केवल इसलिए कि लोग तुम्हारी गालियाँ न सुन सकें। वे तो पहले से ही भड़क रहे थे।"

"सुरेश, तुम देखना कि आज के फसाद का बहुत अच्छा प्रभाव होगा। कांग्रेस के जलसों में अब इतनी भीड़ नहीं होगी, और हम जीत जायेंगे। मेरी तो राय है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि कांग्रेस के सब जलसों पर लाठी चलवा दी जाय, ताकि लोगों में आतंक फैल जाय और वोट देने के लिए कोई उपस्थित न हो सके।"

इस पर तिवारीजी ने कहा, "तुम्हारी यह नीति मुझे पसन्द नहीं।"

"पंडितजी, आप चुप रहें और देखते जायें कि मैं कैसी सफाई से प्रबन्ध करता हूँ। झगड़ा करने वाले सदैव खद्दर पहने, गांधी टोपियाँ लिये हुए होंगे।"

जब विजयबहादुर चला गया और दूसरे लोग भी विदा हो गये तो सुरेश ने तिवारीजी से कहा, "पंडितजी, मुझे तो निराशा हो रही है।"

"तुम्हारा काम करने वालों का चुनाव गलत है। पथिक को यदि तुम राज़ी कर लेते तो तुम्हारी सफलता निश्चित थी।"

सुरेश ने लज्जा से आँखें नीची कर कहा, "परन्तु अब तो उसे राज़ी करने की कुछ भी आशा नहीं। इस समय तो वह अपनी आँख सेंक रहा होगा।"

"यह विजयबहादुर बहुत ही उद्दंड व्यक्ति है। तुमने उसे इस काम से बाहर क्यों नहीं रखा?"

"मेरे रखने अथवा कहने से क्या होता है। वह स्वयं ही सबकुछ कर रहा है। वह किसी की मानता थोड़े ही है।"

"मेरी इच्छा कल पथिक से मिलकर उसे अपने पक्ष में करने की है।"

"अच्छी बात है, पर स्मरण रखिए कि सफलता की आशा नहीं।"

तिवारीजी रात-भर उस सायंकाल की घटना और अपने दिन के कार्यक्रम पर विचार करते रहे। दूसरे दिन बहुत सवेरे सुरेश को साथ लेकर पथिक से मिलने मन्दिर की ओर चल पड़े। तिवारीजी पिछले दिन की घटना के लिए पथिक से क्षमा माँगना अत्यावश्यक समझते थे।

परन्तु दैव विपरीत था। बगिया में पहुँचते ही इन्होंने देखा कि बेनी एक बैलगाड़ी पर सामान लादे लिये जा रहा है। सुरेश ने पूछा, "बेनी, यह किसका सामान है?"

"महाराज, यह कांग्रेसी व्याख्यान देने वालों का है।"

"गुरुदेव जाग गये हैं?"

"जाकर देख लें।"

इस उत्तर से सुरेश का माथा ठनका। वह समझ गया कि दाल में कुछ काला है। लम्बे-लम्बे पाँव उठाते हुए वे दोनों मन्दिर में पहुँचे। वहाँ की अवस्था अति भयानक थी। ऐसा प्रतीत होता था कि भारी फसाद हुआ है। संगमरमर की मूर्ति और दूसरे सामान के टुकड़े-टुकड़े उड़ चुके थे। संगमरमर की सरस्वती की मूर्ति पर कई हज़ार रुपया व्यय हो चुका था। वह टूट-फूटकर टुकड़े-टुकड़े हुए इधर-बिखरी पड़ी थी। मिट्टी की मूर्ति, जो पथिक ने अपने हाथ से बनाई थी, वह मिट्टी का ढेर हो गई थी। केवल इतना ही नहीं, प्रत्युत् खून के छींटे और दाग फर्श और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवारों पर थे। मन्दिर के एक तरफ एक कोठरी थी। उसमें पथिक स्वयं रहता था। उस कोठरी का सब सामान टूटा-फूटा पड़ा था।

वहाँ पर कोई नहीं था जिससे पता चल सकता था कि यह सब किसने किया है। सुरेश और तिवारीजी बाहर निकल आये और बेनी को, जो अब दूर निकल गया था, पुकारने लगे।

सुरेश उसके पीछे भागा। एक फर्लांग तक पीछे जाने पर वह बेनी को पकड़ पाया। तिवारीजी भी हांफते हुए उसके पीछे-पीछे आ रहे थे।

"क्यों बे, बताये बिना किधर भागा जाता है ? कहाँ हैं गुरुदेव ?"

"मैंने समझा था, आपको सब मालूम है।"

"क्या मालूम है ? मालूम होता तो तुझसे पूछते ही क्यों ?"

"तो क्या विजयबहादुर ने आपको बताया नहीं ?"

"विजयबहादुर ने ? अबे, क्या बकता है ? सीधी तरह से क्यों नहीं बताता ?"

बेनी कुछ देर तक सुरेश का मुख देखता रहा। वह सोच रहा था कि सुरेश सत्य कह रहा है या झूठ। आखिर उसने कहना आरम्भ किया, "रात के दो बजे एक सौ से ऊपर लोग लाठियाँ लिये हुए मन्दिर में पहुँचे। गुरुदेव और कांग्रेसी लोग खाटों पर बरामदे में और चबूतरे पर सो रहे थे। आने वालों ने न आव देखा न ताव, धड़ाधड़ लातों और मुक्कों से सोये हुओं को पीटना आरम्भ किया। मैं अपनी झोंपड़ी में था। हल्ला सुन यहाँ पहुँचा तो देखा कि मन्दिर में हाथापाई हो रही है। विजयबहादुर चबूतरे पर खड़ा कह रहा था, 'देखो, कोई मरने न पाये।' इस समय भीतर लाठियाँ चलने का शब्द होने लगा। गुरुदेव लड़ते-लड़ते बाहर चबूतरे पर आ गये। उनके सिर पर के घाव में से बहता हुआ रक्त चाँद की चाँदनी में स्पष्ट दिखाई दे रहा था। वे लाठी घुमा रहे थे। मालूम होता था कि वे उसमें बहुत कुशल थे। ज्यों ही खुली जगह पर निकल उन्होंने लाठी घुमानी आरम्भ की कि विजयबहादुर के आदमी घायल होकर भागने लगे। विजयबहादुर ने जब यह देखा तो उसने साथियों को कहा, 'भाग जाओ, भाग जाओ' और सब लोग सिर पर पाँव रखकर भाग खड़े हुए।

"विजयबहादुर और उसके साथियों के भाग जाने के पश्चात् मैं भागकर मिट्टी के तेल की कुप्पी जला लाया। मैंने और गुरुदेव ने भीतर बरामदे में जाकर देखा कि सब घायल हुए लोग कराह रहे हैं। गुरुदेव को भी चोट आई थी। आखिर मैं और मेरी स्त्री ने सबके घावों पर पट्टी की और गुरुदेव के कहने पर सबको दो बैलगाड़ियों पर लाद पहले भेज दिया है। मैं उनका सामान लेकर जा रहा हूँ। गुरुदेव और मेरी स्त्री भी उनके साथ चले गये हैं।"

सुरेश यह वृत्तान्त सुन बहुत समय तक सिर नीचा किये सोचता रहा। उसका मुख लज्जा और रोष से फीका पड़ गया था। तिवारीजी की हिम्मत टूट गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालूम होती थी। उन्होंने सुरेश के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "चलो, भाई, चलें।"

जाने से पूर्व सुरेश ने पूछा, "ये लोग किधर गये हैं?"

"आपके इलाके से शीघ्रातिशीघ्र निकल जाने का विचार था।"

"क्यों?"

"मैं नहीं जानता। कांग्रेस के लोग तो चिकित्सा के लिए लखनऊ चले जायेंगे। गुरुदेव का पता नहीं।"

"तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मुझे तो सब सामान लेकर रेल के स्टेशन पर पहुँचने की आज्ञा हुई है।"

सुरेश और तिवारीजी वहाँ से लौटकर कोट में आ गये।

: ५ :

पथिक सुरेश की ज़मींदारी से बाहर चला गया। देवा से बीस मील के अन्तर पर एक छोटे-से गाँव में, जिसका नाम शिवपुर है, उसने एक साधारण-सी झोंपड़ी में निवास बना लिया। पथिक की ख्याति उसके साथ थी और वहीं कीर्तन-कथा आरम्भ हो गये। अन्तर यह था कि यह गाँव मुसलमानों का था। जहाँ देवा में दस-बीस घर मुसलमानों के थे, वहाँ शिवपुर में दस-बीस हिन्दुओं के। कथा-कीर्तन में भी मुसलमानों की संख्या पर्याप्त होती थी।

पथिक की संगीत-कला में प्रवीणता उसे सर्वप्रिय बनाने में बहुत सहायता देती थी। इस गाँव का ज़मींदार भी मुसलमान था। उसका नाम था ज़ाहिद-अली। यह ज़मींदारी इतनी बड़ी नहीं थी जितनी कि देवा की। फिर भी वह नवाब के नाम से पुकारा जाता था।

नवाब ज़ाहिदअली संगीत के बड़े शौकीन थे। जब एक बार उन्होंने पथिक को गाते सुना तो वे लट्टू हो गये। प्रतिदिन सायंकाल वे अपने दोस्तों और मशीरों के साथ पथिक की झोंपड़ी में आ जाते और घण्टों ही उसे कीर्तन करते देखा करते थे। इसी कारण और मुसलमान भी वहाँ शामिल हो जाते थे।

पथिक को वहाँ आये अभी कुछ ही दिन हुए थे कि एक दिन नवाब ज़ाहिद-अली के मकान पर शिवपुर की एक मसजिद का मुल्ला पहुँच शिकायत करने लगा, "हुज़ूर, जब से यह गाने-बजाने वाला पंडित शिवपुर में आया है, मसजिद में शाम की नमाज़ में कम लोग आने लगे हैं।"

नवाब साहब ने कुछ बेपरवाही दिखाते हुए कहा, "अच्छी बात है। क्या दिन में एक बार नमाज़ पढ़ लेनी काफी नहीं?"

"लाहौल विला! आप कैसी बात करते हैं? किताबे-पाक में तो हज़रत सुलाउल इस्लाम दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ने को कह गये हैं।"

"तो तुम ज़रा नमाज़ का वक्त पीछे क्यों नहीं कर देते, ताकि वहाँ गाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनकर भी नमाज़ पढ़ने का वक्त रह जाये ?"

"हुज़ूर, यह मेरे बस से बाहर की बात है।"

"तो फिर तुम ही बताओ, क्या किया जाय ?"

"हुज़ूर, थानेदार से कहकर उसे शिवपुर से बाहर हो जाने का हुक्म दिलाया जाय।"

"ओह ! यह बात है हज़रत ! आप यहाँ से तशरीफ ले जा सकते हैं; और फिर यहाँ न आना, नहीं तो जूतों से पिटवा दूंगा।"

मुल्ला मुँह लटकाये मसजिद में लौट आया। वहाँ मसजिद के पिछवाड़े के कमरे में, जहाँ वह रहता था, विजयबहादुर उसकी प्रतीक्षा में बैठा था। मुल्ला ने जब सब बात बताई तो उसने कहा, "तो नवाब साहब उसके विपरीत थाने में रिपोर्ट लिखाने को तैयार नहीं हैं ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं।"

"अच्छी बात है। तुम यहाँ के दूसरे बड़े-बड़े आदमियों को लेकर स्वयं वहाँ रिपोर्ट करा दो कि पथिक के भजन-कीर्तन से उनके मज़हबी अधिकारों में गड़बड़ मचती है। शेष मैं समझ लूंगा।"

"बात तो आपकी ठीक है। मगर एक बात है। यदि मैंने कुछ भी किया तो नवाब साहब नाराज़ हो जायेंगे और मेरा यहाँ रहना दूभर हो जायेगा।"

"नवाब साहब कुछ न कहेंगे। जब उनको पता चलेगा कि बड़े साहब (डिप्टी कलक्टर) भी यही चाहते थे तो वे चुप कर जायेंगे।"

"मगर मुझे क्या मिलेगा ?"

"तुम्हें पाँच सौ रुपया नकद दिलवा दूंगा। यदि पथिक की ज़मानत हो गई या वह यहाँ से निकाल दिया गया तो इनाम और भी अधिक कर दिया जायेगा।"

दूसरे दिन ही मुल्ला ने थाने में रिपोर्ट लिखवा दी। यह इस प्रकार थी— "शिवपुर मुसलमानों का गाँव है। गाँव-भर में दस मसजिदें हैं। सबमें सायंकाल नमाज़ी नमाज़ पढ़ने एकत्रित होते हैं। पथिक और उसके साथी हिन्दू लोग ठीक उसी वक्त गाना और कीर्तन करते हैं। इससे नमाज़ियों की नमाज़ में खलल पड़ता है। मुसलमान इससे बहुत नाराज़ हैं और फसाद हो जाने की सम्भावना है।"

उसी दिन दोपहर को डिप्टी कलक्टर ने ज़ाब्ता फौजदारी की दफा दो सौ दो की कार्यवाही कर दी। यह वही डिप्टी कलक्टर था जिसने देवा में बगिया के समीप मसजिद की नींव रखी थी। पिछली बार पथिक के साफ-साफ बच जाने से वह चिढ़ा हुआ था। इस बार वह ऐसी कार्यवाही करना चाहता था कि पथिक बिना ज़मानत के न बच सके। दफा दो सौ दो में प्रारम्भिक जाँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है। डिप्टी कलक्टर ने मुल्ला की सहायता से पाँच-दस मुसलमानों को बुला, खाली कागज़ पर उनसे दस्तखत करवा लिए। उनको केवल यह बताया कि उनके मज़हबी हकूक की रक्षा के लिए यह किया जा रहा है।

फौरन ही इस जाँच के बाद पथिक और बेनी को ज़ाब्ता फौजदारी की दफा एक सौ सात में गिरफ्तार कर लिया गया। जब थानेदार उनके वारण्ट लेकर आया तो विजयबहादुर साथ था। बेनी को जब हिरासत में लिया जा रहा था तो विजयबहादुर ने बेनी की स्त्री के कान में कह दिया, "अरी रांड, अब देखूंगा तू कहाँ जाती है?"

ज्योंही थानेदार और विजयबहादुर पथिक और बेनी को लेकर थाने की तरफ गये, बेनी की स्त्री ने अपनी झोंपड़ी को बन्द कर देवा का रास्ता पकड़ा। वह वहाँ से पैदल ही चल पड़ी।

सायंकाल नवाब ज़ाहिदअली जब गाना सुनने पथिक की झोंपड़ी पर आये तो उसे वीरान पा चकित रह गये। लोगों के पूछने पर उन्हें मालूम हुआ कि पथिक और बेनी को थानेदार पकड़कर ले गया है। नवाब साहब ने अपने नौकर को थाने भेजकर खबर मँगवाई। उन्हें पता चला कि वे डिप्टी साहब के हुक्म से पकड़े गये हैं और उन्हीं की अदालत में चाराजोई हो सकती है। यद्यपि नवाब ज़ाहिदअली को पथिक से कोई विशेष लगाव नहीं था तो भी इसमें मसजिद के मुल्ला का हाथ समझ उसे छकाने के लिए कुछ करने के विचार से उन्होंने कलक्टर की कचहरी में अपने एक वकील को भेज दिया।

वकील को सब बात मालूम हो गई। उसने तमाम मिसल पढ़ी। इसके पश्चात् ज़मानत पर रिहाई का प्रार्थना-पत्र उपस्थित कर दिया। उस प्रार्थना-पत्र पर विचार करने के लिए एक सप्ताह की तारीख दे दी गई। यद्यपि वकील ने बहुत कहा कि दफा एक सौ सात का मुकदमा है, इसलिए ज़मानत तुरन्त हो जानी चाहिये, परन्तु डिप्टी कलक्टर ने कह दिया कि इससे पूर्व उसे अवकाश ही नहीं।

जिस दिन पथिक और बेनी पकड़े गये थे उसी शाम को विजयबहादुर अपने विपुल प्रयत्न का फल पाने के लिए बेनी की झोंपड़ी में पहुँचा। उसका विचार बेनी की स्त्री को वहाँ से ले भागने का था, परन्तु पक्षी पिंजरे से निकल भागा था।

: ६ :

राजमाता को लाठी चलने का समाचार मिला और पश्चात् पथिक के घायल हो देवा छोड़ जाने की बात मालूम हुई। वह इन घटनाओं से सुरेश के अनिष्ट की ही संभावना कर सकती थी। परन्तु अब क्या हो सकता था। चुनाव का युद्ध हो रहा था। वह कोई ऐसी बात सुनना अथवा करना नहीं चाहती थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि जिससे सुरेश के चुनाव-सम्बन्धी प्रयत्न में ढीलापन आ जाय। उसे पथिक के साथ दुर्व्यवहार पर बहुत शोक हुआ, परन्तु इस विषय में इस समय वह कुछ कहना नहीं चाहती थी। वह चुनाव के झमेले के समाप्त होने की प्रतीक्षा में थी।

चुनाव के दिन से दो दिन पहले की बात थी। बेनी की स्त्री पाँव से सिर तक धूल-मिट्टी में लथपथ और बहुत थकी हुई राजमाता के सम्मुख आ खड़ी हुई। वह शिवपुर से पैदल भागती हुई ही देवा पहुँची थी और पहुँचते ही राजमाता के सम्मुख आ पहुँची।

राजमाता ने उसे ऐसी अस्त-व्यस्त अवस्था में देख पूछा, "कौन हो और क्या चाहती हो?"

"मैं बेनी कहार की स्त्री हूँ।"

"यहाँ क्यों आई हो?"

इस पर उसने शिवपुर में जो कुछ हुआ था, वर्णन कर दिया और साथ ही विजयबहादुर का थानेदार के साथ होना और उसका उससे बदला लेने की धमकी देना भी बता दिया। अंत में उसने कहा, "अपनी जान बचाने के लिए मैं कल तीसरे पहर वहाँ से अकेली पैदल चल पड़ी थी, ताकि आपके चरणों का आश्रय पा सकूँ।"

राजमाता यह एक नया झंझट देख घबरा उठी। बेनी की स्त्री को कोट में दूसरी नौकरानियों के साथ रहने को कह वह सुरेश से मिलने बाहर बैठक में चली आई।

सुरेश भिन्न-भिन्न पोलिंग स्टेशनों पर अपने कारिन्दे भेजने का प्रबन्ध कर रहा था। माँ का मुख क्रोध से लाल देख काँप उठा। इतने क्रोध में उसने माँ को पहले कभी नहीं देखा था। वह सब काम वहीं छोड़ माँ के साथ भीतर चला आया।

"क्या बात है, माँ?" सुरेश ने बहुत नम्रता से पूछा।

माँ ने पूछा, "विजय कहाँ है?"

"कल शिवपुर गया था। अभी लौटा नहीं है।"

"शिवपुर किस काम से गया था?"

"पोलिंग के दिन के लिए बाबू नरेशबहादुर से कुछ खेमे माँगने।"

"खेमे मिल गये?"

"ज़रूर मिल गये होंगे।"

"सुरेश, तुमने माँ से झूठ बोलना कब से सीखा है?"

"झूठ? नहीं, माँ, झूठ नहीं। मुझे तो वह यही कहकर वहाँ गया था।"

"यह विजयबहादुर तुम्हारे पीछे अपशकुन होकर चिपटा है और तुम्हारी सफलता तो दूर रही, तुम्हें कहीं का भी नहीं छोड़ेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या हुआ, माँ ?"

इस पर राजमाता ने शिवपुर की घटना, जैसी उसने बेनी की स्त्री से सुनी थी, सुना दी।

"परन्तु यह कैसे जानती हो कि विजयबहादुर ने ही उसे पकड़वाया है ?"

"शिवपुर वालों का क्या दिमाग खराब हो गया है कि पथिक और बेनी को कैद करा देंगे ?"

"मगर मुझे कुछ पता नहीं।" सुरेश ने कुछ लापरवाही दिखाते हुए कहा।

"तुम्हें चुनाव में सफल भी होना है या नहीं ? अभी यह समाचार कि पथिक पकड़ा गया है, इलाके-भर में फैल जायेगा और सब लोग यही संदेह करेंगे कि तुमने अफसरों से मिलकर पकड़वाया है। परिणाम यह होगा कि तुम्हारी पर्ची डालने कोई नहीं जायेगा।"

"पर, माँ, अब क्या हो सकता है ?"

"यदि कर सकते हो तो करो। उसको ज्यों-त्यों कर छुड़ा लाओ और अपने साथ मोटर में बैठाकर सब इलाके में घूम आओ।"

सुरेश को युक्ति तो पसन्द आई, परन्तु अब इसे कार्यरूप में लाने के लिए समय नहीं था। आज शनिवार था। कचहरी दो बजे बन्द हो जायेगी। उस समय बारह बज चुके थे और ज़िला देवा से तीस मील के फासले पर है। अगले दिन रविवार था। सुरेश ने पोलिंग स्टेशनों पर कारिन्दे भेजने का प्रबन्ध मोहन के हाथ में दे मोटर ली और सदर (ज़िला शहर) की तरफ चल पड़ा। जब वह वहाँ पहुँचा तो डिप्टी कलक्टर और कलक्टर दोनों दौरे पर शिवपुर गये हुए थे। शिवपुर को सीधा रास्ता नहीं था। रास्ता देवा होकर जाता था। अतएव सुरेश वापस देवा पहुँचा और सायंकाल पाँच बजे शिवपुर पहुँच गया। वहाँ जा उसे पता चला कि पथिक तो ज़िला जेल में है और कलक्टर और डिप्टी कलक्टर मुरगाबियों का शिकार खेलने वहाँ से चालीस मील पर एक बड़े सरोवर पर चले गये हैं।

सुरेश ने अभी भी आशा नहीं छोड़ी। पथिक को साथ लेने का यह अन्तिम यत्न था। वह सरोवर पर कलक्टर के खेमे में रात आठ बजे पहुँच गया। उसके वहाँ पहुँचते ही कलक्टर ने भीतर बुला लिया। पूछा, "सुरेश बाबू, क्या बात है ?"

"हुज़ूर, पथिक और बेनी दो आदमी कल शिवपुर में पकड़े गये हैं। मैं चाहता हूँ कि उन्हें जिस-किस भाँति भी छोड़ने की आज्ञा मिल जाये।"

"वह बहुत खतरनाक आदमी है। तुम्हारा दोस्त विजय बाबू ही बताता था। वह कहता था कि अगर वह चुनाव के दिन बाहर रहा तो तुम्हारे बहुत-से वोटरों को बहका देगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयबहादुर का नाम सुन सुरेश हैरान रह गया। उसने पूछा, "हुज़ूर, विजयबहादुर यहाँ कब आया था ?"

"परसों वह मुझे शिवपुर में मिला था। उसने बताया था कि पथिक क्रान्तिकारी है और तुम्हारे विरुद्ध काम कर रहा है। उसके खिलाफ कोई शिकायत नहीं थी। इस पर भी हिन्दू-मुसलमानों में बलवा कराने के इलज़ाम में उसे पकड़वाकर ज़िला जेल में भेज दिया है। यह मुकदमा कायम करने के लिए शिवपुर के मुसलमानों को भड़काना पड़ा है। उन्होंने गवाहियाँ दी हैं और अब यह सबकुछ हो जाने पर तुम उसे छुड़ाने चले आये हो।"

"उसके छूट जाने से मेरा बहुत काम बन सकता है।"

"मिस्टर सुरेश, मुझे बहुत अफसोस है कि इस समय कुछ नहीं हो सकता। मुकदमे की फाइल हमारे पास नहीं है। आज सुबह नवाब ज़ाहिदअली का वकील पथिक की ज़मानत के लिए बहुत यत्न करता रहा था। हमने उसे इन्कार कर दिया है और एक सप्ताह की तारीख डाल दी है। अगर अब उसे छोड दें तो भारी भद्द होगी।"

: ७ :

देवा में जिस दिन सभा पर लाठी चली थी, उसी दिन से ही वहाँ और तमाम इलाके में, जहाँ से सुरेश खड़ा हुआ था, सर्वथा शान्ति थी। उस सभा के पश्चात् कोई सभा नहीं हुई, न ही कोई नेता फिर दौरा करने के लिए इस इलाके में आया। इस शान्ति को विजयबहादुर ने अपनी जीत समझा। इस समय सुरेश की ओर से कार्यकर्ता चुपके-चुपके लोगों के घरों में जाते थे और उनको सुरेश के नाम पर वोट देने के लिए कहते थे। लोग बिना बहस सुरेश के कार्यकर्ताओं का कहना मान जाते थे और कह देते थे, "हाँ, अपने राजा को छोड़ भला कैसे बाहर के आदमी को वोट दिया जा सकता है ?"

मिस्टर अवधबिहारी माथुर का प्रचार भी हो रहा था। लोग कानोंकान कहते थे, "माथुर साहब को वोट देना। ऊपर से चाहे सुरेश का नाम लो, परन्तु वोट के समय माथुर का नाम ठीक रहेगा।"

इस प्रकार चुनाव का दिन आ पहुँचा। बीसियों वोट डालने के स्थान नियत किये गये थे। लोगों की अथाह भीड़ थी। सबसे विचित्र बात यह थी कि उपस्थित लोगों के हाथ में एक-एक छपा हुआ पत्र था। उसमें लिखा था, 'हिन्दू महासभा के टिकट पर खड़े होने वाले ने हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध प्रचारक श्री पथिक को जेल भिजवा दिया है। पहले उसे मारपीट कर देवा से बाहर किया, पश्चात् उसे झूठ-मूठ के लांछन लगवाकर पकड़वा दिया।'

ये पत्र कहाँ छपे थे, किसने बँटवाये थे, लोगों को कौन बाँट रहा था, किसी को पता नहीं था। एक से दूसरा और दूसरे से तीसरा ले-लेकर पढ़ रहा था। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र ने तमाम पोलिंग स्टेशनों पर हलचल मचा दी। सुरेश के कार्यकर्ता घबरा उठे।

वोट डालने वालों के मुख गम्भीर हो उठे थे, परन्तु कोई कुछ भी मुख से नहीं कहता था। प्रायः लोग सुरेश के कैम्पों में एकत्रित थे। वहाँ मिठाई, पूरी, चबैना, तम्बाकू, सिगरेट, चरस और भाँग बँट रही थी। वोटरों को घरों से लाने के लिए सुरेश की लारियाँ चल रही थीं।

मिस्टर माथुर ने वोटरों के लिए कैम्प तो लगवाये थे, मगर इसके अतिरिक्त और कुछ भी खर्चा नहीं किया था। मिस्टर माथुर के इलेक्शन एजेन्ट तथा कांग्रेस कार्यकर्ता अपनी जेब से खर्चा कर चबैना खाकर और पानी पीकर काम कर रहे थे। बहुत कम वोटर इस तरफ आते थे।

वोटर मोटर और बसों में लदे आते थे और सुरेश के कैम्प में दाखिल हो जाते थे। वहाँ उनको खाने को मिलता था। पश्चात् एक पर्ची पर उनका नाम और वोटर नम्बर लिखकर दे दिया जाता था, जिसे लेकर वे पोलिंग बूथ में चले जाते। वहाँ पहले उनके नाम-नम्बर की परीक्षा होती, पश्चात् वे पोलिंग अफसर के सम्मुख उपस्थित हो चुनाव के पर्चे पर निशान लगवा दूसरे मार्ग से बाहर आ जाते थे। बाहर आने पर जब लोग उनसे पूछते कि किसको वोट दिया है तो वे निस्संकोच कह देते, "राजा साहब को और किसको ?"

यह नहीं कि माथुर साहब के कैम्प में कोई गया ही न हो। कोई-कोई बिरला व्यक्ति उस कैम्प से भी वोट देने जाता देखा गया। जब ऐसा कोई देखा जाता तो सुरेश के कारिन्दे शोर मचा देते थे, "क्यों अपनी पर्ची व्यर्थ खोने जा रहे हो ? हिन्दू धर्म का ध्यान रखो। अपने राजा की इज्जत का ध्यान रखो" इत्यादि। वे लोग जो मिस्टर माथुर के कैम्प से निकलते थे, प्रायः गम्भीर, दृढ़ निश्चय और अविचलित मन वाले होते थे। ये लोग जब पोलिंग बूथ से बाहर निकलते तो उनसे पूछा जाता, "वोट किसको दिया है ?" वे माथे पर त्योरी चढ़ाकर उत्तर देते, "तुम्हारा प्रयोजन ?" पूछने वाले चुप हो जाते।

सुरेश के कैम्पों से जितनी पर्चियाँ गई थीं उनसे अनुमान लगाया गया था कि सुरेश को नब्बे प्रतिशत वोट मिले हैं। सुरेश, विजयबहादुर और अन्य कार्यकर्ता खुशी से बल्लियों कूद रहे थे। कोट में बधाई देने वालों के आने-जाने की चहल-पहल थी।

राजमाता इन सब शुभ सूचनाओं से प्रसन्न नहीं थी। उसके मस्तिष्क में पथिक के जेल में बन्द होने से भारी उथल-पुथल मच रही थी। सुरेश जब माँ को अपनी सफलता की सूचना देने आया तो माँ ने कहा, "बस, ये बच्चों की बातें छोड़ो। मान लो कि तुम चुनाव जीत जाओगे, परन्तु कितना खर्चा हुआ है; कितना झूठ, दगा और अन्याय करना पड़ा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरेश इस मीमांसा को सुन चुप रहा। खर्चे का अनुमान लगाया गया तो सत्तर हज़ार से ऊपर खर्च हो गया था।

राजमाता के आग्रह पर सुरेश ने वकील भेज पथिक और बेनी की ज़मानत पर रिहाई करवा ली। पथिक छूट तो गया, पर देवा वापस नहीं आया। ज़मानत के समय नवाब ज़ाहिदअली का वकील भी उपस्थित था। जब सुरेश के आग्रह करने पर भी पथिक ने देवा जाना स्वीकार नहीं किया तो नवाब साहब के वकील ने उसे नवाब साहब की ओर से निमंत्रण देते हुए कहा, "आप हमारे यहाँ चलिये। वहाँ आपकी कदर की जायेगी।"

"वहाँ के मुसलमान भी तो नहीं चाहते।"

"यह सब विजयबहादुर की चालाकी थी। उसने कुछ मुसलमानों को लालच देकर आपके विरुद्ध खड़ा कर दिया था।"

पथिक के लिए और कहीं ठिकाना नहीं था। बेनी और उसकी स्त्री का प्रबन्ध भी करना था। अतएव उसने कुछ दिन के लिए शिवपुर में रहना स्वीकार कर लिया।

: ८ :

शिवपुर में पथिक के लौट आने से नवाब ज़ाहिदअली को बहुत प्रसन्नता हुई। जब वह पथिक से मिलने उसकी झोंपड़ी पर आये तो पथिक ने अपना निर्णय बताया कि वह कुछ दिन तक ही वहाँ रहेगा। इस पर उन्होंने कहा, "यह आपकी खुशी पर है। मैंने तो सिर्फ इसलिए आपको यहाँ आने का आग्रह किया था ताकि आपको विश्वास हो जाये कि आपके पकड़े जाने में मेरा हाथ नहीं था। कुछ मुसलमानों ने आपके विरुद्ध बयान दिये ज़रूर हैं, मगर यह सब मुसलमानों की बात नहीं है। ऐसे बहुत हैं जो आपके शिवपुर में रहने और भजन-कीर्तन पर कुछ भी एतराज़ नहीं करते।"

"शुक्रिया," पथिक ने केवल इतना ही कहा। वह स्वयं नहीं समझ सका था कि उसके निष्पक्ष रहने पर भी सुरेश और विजयबहादुर क्यों उसके पीछे पड़ गये थे। एक ओर तो वे उसे पिटवाते थे, दूसरी ओर उसे पुनः देवा चलने को कहते थे। शिवपुर में भी उसे विलक्षण समस्या का सामना करना पड़ा था। नवाब साहब और दूसरे मुसलमान उसका कीर्तन सुनने आते थे और उसकी प्रशंसा करते थे और फिर कुछ ऐसे भी थे जो कीर्तन को फसाद की जड़ बताकर उसे वहाँ से भगा देना भी चाहते थे। वह इस दुरंगी से तंग आ गया था और इसका अर्थ समझना चाहता था।

राजमाता ने सुरेश को जब बिना पथिक के लौटा देखा तो स्वयं जाकर उसे देवा में लाने का विचार किया। अगले दिन वह शिवपुर गई और पथिक को देवा वापस चलने के लिए कहा। पथिक ने बहुत मान और सत्कार से उसे बैठाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पश्चात् कहा, "मेरा देवा में क्या है ? मैं वहाँ क्यों जाऊँ ? इन प्रश्नों का उत्तर मेरे मन में नहीं है।"

राजमाता ने कहा, "मन्दिर में मूर्ति की स्थापना अभी शेष है। वह आपके बिना अति कठिन है।"

"जो कुछ मैं चाहता था, नहीं हो सका। शायद इसमें भी भगवान् का हाथ है। यदि भगवान् को मंजूर होता तो बनी मूर्ति ही न टूटती। सुरेश राजा है। वह सैंकड़ों मुझ-से विद्वान् पंडितों को नौकर रख सकता है। मन्दिर आबाद करने के लिए मेरी आवश्यकता अनिवार्य नहीं।"

राजमाता ने बहुत समझाया, परन्तु पथिक चट्टान की भाँति दृढ़ रहा और देवा जाने के लिए तैयार न हुआ।

राजमाता जब देवा लौटी तो उसे एक युक्ति सूझी। उसने अगले दिन अपनी मोटर गाड़ी में नलिनी और उसकी माँ को पथिक को बुलाने के लिए भेज दिया।

पथिक नलिनी को देख अति प्रसन्न हुआ। उसके आनन्द का पारावार नहीं रहा। शिष्टाचार के पश्चात् मोहन की माँ ने कहा, "आप देवा नहीं चलेंगे ?"

"मेरा वहाँ कौन है ?"

नलिनी ने बात के बीच में ही बोलकर उत्तर दे दिया, "मैं।"

पथिक ने अपने उत्तर और नलिनी के प्रत्युत्तर पर विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "तुम ! नलिनी, तुम मेरी कौन हो ?"

इस प्रश्न से नलिनी गम्भीर विचार में पड़ गई। वह यह तो समझती थी कि उसका पथिक से विशेष सम्बन्ध है, मगर क्या सम्बन्ध है, वह नहीं जानती थी। मन के भावों को वह शब्दों का रूप नहीं दे सकती थी। उसने शब्दों से जो कुछ अनुभव किया था वह ही बता दिया, "मैं तुम्हारी छोटी बहिन हूँ।"

"ओह !" पथिक हँस पड़ा, "ठीक, याद आ गया है; परन्तु जब मोहन पकड़ा गया था तो तुमने उसे छुड़ाने के लिए यत्न किया था न ? क्या तुम मुझे भी अपमान और दुर्व्यवहार से बचाने के लिए उतनी ही उत्सुक हो ?"

नलिनी की माँ ने बीच में ही टोककर कहा, "बिटिया को इन बातों का पता नहीं है। विजयबहादुर ने अपना निजी क्रोध निकालने के लिए आपके साथ दुर्व्यवहार किया है। आपने त्रेनी की स्त्री को उसके चंगुल से निकाला है। वह इस बात को भूल नहीं सका। ये बातें नलिनी बेचारी क्या जाने। इस समय तो देवा के सब लोग और राज-परिवार भी आपको वहाँ वापस देखकर प्रसन्न होंगे। यह नलिनी और मोहन तो जन्म-भर आपका अहसान नहीं भूल सकते।"

"परन्तु माताजी," पथिक ने आँखें नीची किये हुए कहा, "कल मैंने राजमाता से इन्कार कर दिया था। उस दिन सुरेश की बात भी नहीं मानी। साथ ही मेरे वहाँ जाने से मेरे साथ सहानुभूति और प्रेम रखने वालों को भी कष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है।"

नलिनी की माँ बार-बार अनुरोध करती थी, परन्तु पथिक इन्कार करता जाता था। नलिनी ने जब समझा कि वह देवा वापस जाने को तैयार नहीं होता तो उसने आँखों में आँसू भरकर कहा, "भूतनाथ दादा, तुम बड़े कठोर हो।"

"कैसे ?"

"माँ मिन्नत करती है और तुम मानते ही नहीं।"

"तुम्हारा मोहन भैया माँ की सब बातें मान लेता है क्या ?"

पथिक का कटाक्ष बहुत ही तीखा सिद्ध हुआ। नलिनी की माँ की आँखें आँसुओं से डबडबा आईं। नलिनी ने कहा, "मोहन क्रूर है और तुम निर्दयी।"

नलिनी की माँ ने यत्न से आँसुओं को रोकते हुए कहा, "बेटा, तुम ठीक कहते हो। अपनी कोख से उत्पन्न हुआ बेटा जब कहना नहीं मानता तो ऐसी अभागिन दूसरों से क्या आशा कर सकती है ?"

इतना कह वह उठ खड़ी हुई। नलिनी का हाथ पकड़ लड़खड़ाते हुए पाँवों से मोटर की तरफ, जो कुटिया के बाहर खड़ी थी, चल पड़ी। पथिक को अपनी कठोरता का ज्ञान हो गया। वह बोल उठा, "माँ, माँ, ठहरो !" परन्तु नलिनी की माँ चलती ही गई। पथिक भागकर नलिनी की माँ के पास जा पहुँचा। वह मोटर में सवार हो रही थी। उसने विनय से कहा, "माँ, तनिक ठहरो।"

"क्यों ?"

"मैं साथ चलूँगा।"

"तुम चलोगे ?" नलिनी ने कूदते हुए पूछा।

"हाँ।"

नलिनी कूदकर पथिक के गले से लटक गई। पथिक ने उसे सिर पर प्यार देते हुए मोटर में बैठा दिया। पश्चात् बेनी को पुकारकर बुलाया और कहा, "बेनी, मैं देवा जा रहा हूँ। तुम यह सब सामान लेकर चले आना।"

बेनी ने अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा, "गुरुदेव, देवा अब फिर ?"

"हाँ, नलिनी की संगीत-शिक्षा अधूरी रह गई है।"

: ६ :

कांग्रेस को सन् सैंतीस के चुनावों में आशातीत सफलता मिली। पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत, संयुक्त प्रांत, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रांत, मद्रास और बम्बई प्रांत में कांग्रेस पार्टी के सफल सदस्यों का निश्चित बहुमत था।

देवा में तो कांग्रेस के सदस्य अवधबिहारी माथुर की सफलता चमत्कारक प्रतीत होती थी। पर्चियाँ गिनने तक सुरेश के सहकारियों को उसके सफल होने पर विश्वास था। वे लोग कलक्टर के दफ्तर के बाहर, जहाँ पर्चियाँ गिनी जा रही थीं, भारी संख्या में फूलों के हार लिए उपस्थित थे। सुरेश आशा से भरा हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक तरफ मोटर में बैठा हुआ परिणाम जानने की प्रतीक्षा में था। दफ्तर के अन्दर सुरेश की ओर से सिन्हा पर्चियों का गिनना देख रहा था। मिस्टर माथुर स्वयं लखनऊ से आये हुए थे। चुनाव के दिन लोगों का रुख देखकर वह कुछ आशा से वहाँ नहीं आये थे, बल्कि एक अच्छे वकील की भाँति अपने मुकदमे की हार सुनने आये थे। कांग्रेस के दो-चार स्थानीय वालण्टियरों के अतिरिक्त उनके साथ और कोई नहीं था। वे मिस्टर माथुर की मोटर के पास दफ्तर के बाहर खड़े थे। सुरेश की पार्टी वालों की सुरेश के स्वागत की तैयारी देख वे बहुत ही संकोच में थे। उनमें से एक ने लम्बी साँस लेकर कह ही दिया, "मिस्टर माथुर ने रुपये की कंजूसी कर हार मोल ली है।"

भीतर सिन्हा और मिस्टर माथुर के मुखों का नक्शा जल्दी-जल्दी बदल रहा था। ज्यों-ज्यों पर्चियों के बंडल खुलते जाते थे, मिस्टर माथुर के नाम की पर्चियों के ढेर लगते जाते थे। सिन्हा के मुख का रंग फीका पड़ता जा रहा था। मिस्टर माथुर, जो पहले केवल कायदा पूरा करने के लिए वहाँ आये थे, पर्चियों का रहस्य जानने पर अधिक और अधिक दिलचस्पी से गिनती देखने लगे। सिन्हा के माथे से पसीने की बूँदें टपकने लगीं। उसको पाँव-तले से मिट्टी खिसकती प्रतीत होने लगी। वह दूर रखी एक बेंच पर जाकर बैठ गया।

जब पर्चियाँ गिन ली गईं तो पता चला कि मिस्टर माथुर को अस्सी प्रतिशत वोट पड़े हैं। सिन्हा को कचहरी के कमरे से बाहर जाने का साहस नहीं हुआ। मिस्टर माथुर प्रसन्न-वदन अपनी मोटर के पास जा खड़े हुए और उनके साथी बुरा समाचार सुनने के लिए आँखें नीची किये उनके पास आ खड़े हुए। मिस्टर माथुर ने खुशी में उछलते हुए साथियों से हाथ मिलाते हुए कहा, "बधाई, मैं कामयाब हो गया हूँ।" एक क्षण के लिए तो कांग्रेसी वालण्टियरों को यह मजाक जान पड़ा, मगर मिस्टर माथुर का प्रसन्न मुख देख उनके मुख से अनायास ही निकल गया, "महात्मा गांधी की जय!"

इस प्रसन्नता का प्रदर्शन देख सुरेश की पार्टी के लोग बहुत अचम्भे में पड़ गये। सुरेश ने विजयबहादुर को पता लेने के लिए भीतर भेजा। वह सिन्हा को, जिसकी गर्दन लज्जा से झुकी हुई थी, साथ ले सुरेश के पास आकर बोला, "दादा, बहुत धोखा हुआ। लोगों ने दगाबाज़ी की। केवल बीस प्रतिशत वोट मिले।"

सुरेश चकित रह गया। वह एक क्षण के लिए तो मूर्तिवत् हो गया। एकाएक वह अपनी गाड़ी से बाहर निकला और अपने साथियों के हाथ से एक फूलों की माला ले मिस्टर माथुर के पास जा पहुँचा। मिस्टर माथुर अपने साथी वालण्टियरों को गाड़ी में बैठा वहाँ से चलने ही वाले थे कि सुरेश को फूलों की माला लिए अपनी ओर आते देख वह गाड़ी से बाहर निकल आये और सुरेश के साथ हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़े। "मिस्टर सुरेश, मुझे अत्यन्त खेद है।" उन्होंने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरेश ने गले में माला पहना, हाथ मिलाते हुए कहा, "बहुत-बहुत बधाई।"

"धन्यवाद।"

जब सुरेश वापस आ अपनी मोटर में सवार हुआ तो विजयबहादुर ने कहा, "दादा, यह क्या किया है तुमने ?"

"क्यों, क्या किया ?"

"कलक्टर के दफ्तर के सामने ही कांग्रेसियों के गले में माला पहना दी। ताल्लुकेदारी करनी है या कोर्ट ऑफ वार्ड के सम्मुख नाक रगड़नी है ?"

सुरेश का संचित क्रोध भड़क उठा। वह विजयबहादुर की नीति से ऊब गया था। अब उसकी इस समय की बात ने उसकी क्रोधाग्नि पर तेल का काम दिया। वह विजयबहादुर की ओर घूमकर देखते हुए बोला, "अपनी शुभ सम्मति को अपने पास ही रहने दो। कांग्रेसियों से झगड़ा कर बहुत हानि उठा चुका हूँ।"

विजयबहादुर सुरेश की लाल-लाल आँखें देखकर चुप रह गया।

: १० :

पथिक देवा में पहुँच तो गया, परन्तु उसका मन अभी भी स्थिर नहीं हुआ था। कथा-कीर्तन पुनः आरम्भ हो गया था, परन्तु मन्दिर में मूर्ति-स्थापना का काम आरम्भ नहीं हो सका। नलिनी पहले की भाँति संगीत सीखने आती थी और अब वह इस कला में बहुत ही प्रवीण हो चली थी। फिर भी पथिक तो वहाँ पर ऐसे ही था, जैसे उसका कुछ खो गया हो। वह घंटों ही पद्मा के किनारे एकान्त में बैठा अपने भूत और भविष्य पर विचार करता रहता था। देवा के लोग तथा सुरेश और राजमाता उससे मिलते रहते थे। हिन्दू समाज की भिन्न-भिन्न समस्याओं पर बातचीत होती थी और वह अपनी बातों को अकाट्य युक्तियों से प्रस्तुत किया करता था। इस पर भी कभी-कभी बातों के बीच में ही वह चुप हो जाता था, मानो वह मार्ग खो गया हो। उसे इस प्रकार विचारों में विलीन होते देख सब चकित हो उसका मुख देखने लगते थे।

एक दिन सुरेश के घर पर पथिक, राजमाता, सुरेश, मोहन और नलिनी उपस्थित थे। सुरेश को विजयबहादुर की संगति से दूर रखने के लिए राजमाता प्रायः इन लोगों को भोजन के समय आमंत्रित कर लिया करती थी। पथिक का नाम सुन विजयबहादुर वहाँ से भाग जाया करता था। उसे पथिक से घृणा थी।

राजमाता के किसी प्रश्न पर पथिक कह रहा था, "भारतवर्ष में पैंतीस करोड़ से अधिक नर-नारी बसते हैं, परन्तु हम कितने निःसहाय हैं। इतनी भारी संख्या में होते हुए भी हम विदेशियों के पाँव-तले रौंदे जा रहे हैं। हम हिन्दुस्तान जैसे हरे-भरे देश में रहते हुए भी भूखों मरते हैं। दर्शन और उपनिषदों का ज्ञान रखते हुए भी कुत्तों की भाँति परस्पर लड़ते हैं। गीता जैसी ज्ञान की पुस्तक रखते हुए भी भीरु बन कष्टों से भागते हैं। हम क्या थे और क्या हो रहे हैं। उफ्........"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक आँखें मूंद कुछ सोचने लगा। सब चुप हो उसे बात समाप्त करने का अवसर दे रहे थे, परन्तु वह ऐसे चुप हुआ था मानो कुछ कहना चाहता है और उसे कहने को उसके पास शब्द नहीं।

एक और अवसर पर अवधबिहारी माथुर से बातचीत हो रही थी। वह लखनऊ से देवा में होने वाले राजनैतिक सम्मेलन में सम्मिलित होने आया था। वह इस इलाके से धारा-सभा में सदस्य बनकर गया था और उसका यहाँ आना स्वाभाविक ही था। सम्मेलन में पथिक का व्याख्यान विशेष रूप से रखा गया था। इस व्याख्यान में पथिक ने कांग्रेस नीति की निन्दा की। उसने कहा, "कांग्रेस सुधारक संस्था हो तो हो, किन्तु राजनैतिक संस्था नहीं हो सकती। शान्तिमय असहयोग और फिर शान्तिमय कानून-भंग आन्दोलनों में शांति शब्द के विशेष अर्थ किये गये हैं। उस अर्थ में आत्मोन्नति को विशेष रूप से लक्ष्य रखा गया है और भारत की भौतिक उन्नति को गौण कर दिया गया है। भारतवर्ष का यह रोग पुराना है। यहाँ आत्मोन्नति को सांसारिक उन्नति से केवल ऊँची पदवी ही नहीं दी जाती, प्रत्युत् उसी को सबकुछ समझा जाता है। महात्मा बुद्ध से लेकर दादू और कबीर तक सब संसार को झूठा बताते आये हैं। यही बात कांग्रेस ने राजनैतिक क्षेत्र में लाकर उन महात्माओं का अनुसरण किया है। इन महात्माओं के कारण कितने भारतवासी मोक्ष-सिद्धि प्राप्त कर सके हैं, मैं नहीं कह सकता। हाँ, यह कि सांसारिक उन्नति को निकृष्ट और तुच्छ मानने से भारतवर्ष लगभग एक सहस्र वर्ष से दासता की बेड़ियों में पड़ा है, सर्वथा स्पष्ट है। कांग्रेस अपने अहिंसात्मक आन्दोलन से और अहिंसा की विशेष व्याख्या से कितनी आत्माओं को जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त कर सकी है और भविष्य में कितनों को मुक्त कर सकेगी, कहना कठिन है। हाँ, इतना तो देखने वालों को प्रतीत हो ही रहा है कि भारतवर्ष की राजनैतिक परिस्थिति इस शान्तिमय आन्दोलन से अधिकाधिक जटिल हो रही है।"

कांग्रेस के मंच से कांग्रेस की ही निन्दा सुन लोग चकित थे। प्रधान था सुरेश और मिस्टर माथुर थे प्रतिष्ठित उपस्थित जनों में।

सायंकाल तक सब लोग चले गये। सुरेश के घर में केवल इने-गिने बड़े-बड़े लोग बैठे थे तो उसने आज के व्याख्यान के विषय पर चर्चा आरम्भ कर दी। वह कहने लगा, "गुरुदेव, आपने आज कांग्रेस की नीति का विरोध किया है। चुनाव के दिनों में आपने हिन्दू महासभा की सहायता नहीं की। ये परस्पर विरोधी बातें क्यों?"

"हिन्दू महासभा के विषय में मैं आपको समझा चुका हूँ कि वह राजनैतिक संस्था नहीं है। उसमें सम्मिलित होने के लिए किसी भी राजनैतिक विषय पर कोई विशेष मत रखना आवश्यक नहीं। पूंजीपति और साम्यवादी, प्रजातन्त्रवादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और एकाकी राज्य-सत्ता को मानने वाले, विदेशी सरकार के भक्त और विदेशी सरकार से विद्रोह करने वाले, सब इस सभा में सम्मिलित हो सकते हैं। ऐसी सभा जो किसी भी राजनैतिक सिद्धान्त पर एकमत नहीं, वह कैसे राजनैतिक सभा हो सकती है? कोई भी और कैसा भी राजनैतिक कार्य सम्पादन करने के लिए ऐसी सभा कैसे प्रयत्न कर सकती है और प्रयत्न करने पर सफलता प्राप्त कर सकती है?

"अब कांग्रेस की बात सुन लीजिये।। यह संस्था इस रूप में तो राजनैतिक संस्था कही जा सकती है, परन्तु इसकी राजनीति एक ऐसे सिद्धान्त की पुट से प्रस्तुत की गई है कि जिसकी सत्यता का न तो कोई प्रमाण है और न सफलता में आशा। मैं तो कांग्रेस के अहिंसात्मक सिद्धान्त को देश की वर्तमान परिस्थिति में हानिकारक समझता हूँ।"

मिस्टर माथुर, जो इस देहाती ब्राह्मण की युक्तियाँ बहुत ध्यान से सुन रहे थे, पूछने लगे, "हानिकर कैसे है?"

पथिक ने मिस्टर माथुर की ओर घूमकर कहा, "विशुद्ध अहिंसा अन्यायी को अन्याय करने पर उत्साहित करती है। जब अन्यायी यह जान जाता है कि प्रतिपक्षी उसके अन्याय को चुपचाप सहन करने को तैयार है तो उसको अन्याय करने में भय नहीं रह जाता। एक-आध व्यक्ति तो ऐसा कर सकता है कि वह अन्याय को शान्तिपूर्वक सहन करे। ऐसे एक-आध व्यक्ति पर अन्याय करने वाला यदि यह जान ले कि उस व्यक्ति के सम्बन्धी अथवा सजातीय अहिंसा का व्रत लिये हुए नहीं हैं तो वह डर जाता है। वह उनकी हिंसा से डरकर अपना अन्याय अथवा अत्याचार रोक देता है। परन्तु जब सब कोई, पूरी-की-पूरी जाति अथवा देश, अहिंसा का व्रत ले ले तो आततायी को खुली छुट्टी मिल जाती है। उसे किसी का डर नहीं रह जाता।"

मिस्टर माथुर धुरंधर वकील थे। वह केवल एक सिद्धान्त के प्रतिपादन से मान जाने वाले नहीं थे। सिद्धान्त को सिद्ध करने के लिए प्रमाण आवश्यक समझते थे। उन्होंने पूछा, "इस सोलह-सत्रह साल के अहिंसात्मक आन्दोलन ने देश की क्या अवनति की है?"

"भारतवर्ष पर अन्याय करने वाले प्रत्येक व्यक्ति अथवा जाति को अपने अन्यायपूर्ण आचरण में प्रोत्साहन मिला है। एक अहिंसावादी सदैव यह यत्न करता रहता है कि वह अपने विपक्षी को समझावे और सीधे मार्ग पर लावे। यदि वह न आवे तो उसके उलटे मार्ग पर चलने से जो दुःख और कष्ट उत्पन्न हो, उसे शान्ति से सहन करे। मुसलमानों की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई माँग इसी नीति का सीधा परिणाम है। कांग्रेस नीति सन् १९१५ से यही रही है कि मुसलमानों को अपनी माँगों का अन्याययुक्त होना बतावे। वे जब नहीं मानते तो कांग्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं उन माँगों के अन्याय को सहन करने पर तैयार हो जाती है। इसका सीधा परिणाम यह होता है कि मुसलमान अपनी माँगों को न्याययुक्त समझने लगते हैं। जैसे एक गधे पर बोझा लादने वाला बोझ का परिणाम बोझे के तोल से नहीं निश्चय करता, प्रत्युत् गधे की सहनशक्ति से करता है, वैसे ही मुसलमानों की माँगों का परिमाण माँगों के न्याययुक्त अथवा अन्याययुक्त होने से नहीं लग रहा, प्रत्युत् कांग्रेसियों की सहनशक्ति से आँका जाता है।"

"मुसलमानों की माँगें तो ब्रिटिश सरकार के प्रोत्साहन से बढ़ रही हैं।"

"ब्रिटिश सरकार तो उनकी अयुक्तियुक्त माँगों को प्रोत्साहन देगी ही। सरकार अपने घर से तो कुछ देती नहीं। इन्कार तो उन लोगों को करना चाहिये जिनके घर से वे अन्यायपूर्ण माँगें पूरी होती हैं।"

"क्या आप राज-कार्य में नीति का अवलम्बन उचित नहीं समझते ? क्या आप मुसलमानों को साथ मिलाये रखने के लिए उनको कुछ नौकरियाँ इत्यादि अधिक दे देना बहुत हानिकर समझते हैं ?"

"नीति किसे कहते हैं ?"

"नीति का अर्थ, बिना साधनों की ओर ध्यान दिये, ध्येय की प्राप्ति का यत्न करना है।"

"ठीक है। साधन चाहे कुछ भी हों, ध्येय की प्राप्ति तो मुख्य है। जहाँ लोग ध्येय की प्राप्ति भी भूल जायें वहाँ नीति कुनीति नहीं हो जायेगी क्या ?"

"इस समय हमारा ध्येय हैं ब्रिटिश सरकार के पंजे से भारतवर्ष को मुक्त करना। ऐसा करने के लिए यदि मुसलमानों से समझौता करने में उनकी कोई अनुचित माँग भी स्वीकार कर ली जाय तो क्या हानि है ?"

"मेरा विचार है कि आप ध्येय को नहीं समझते। ध्येय ब्रिटिश सरकार से मुक्त होना नहीं, प्रत्युत् भारतवर्ष में भारतवासियों का राज्य स्थापित करना है। अंग्रेज़ी सरकार को हटाकर किसी अन्य जाति का अथवा अल्पसंख्यक जाति का राज्य स्थापित करना ध्येय नहीं है। मुसलमान बहुत कम संख्या में होते हुए भी अधिक संख्या वाली जाति पर राज्य करते रहे हैं। क्या ब्रिटिश सरकार को हटाकर पुनः उनके हाथ राज्य की बागडोर देना ध्येय है ?"

"क्या यह उचित नहीं कि पहले अंग्रेज़ी राज्य से स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली जाये, बाद में मुसलमानों से निपट लिया जाये ?"

"आपके कहने में और इस कथन में कुछ भी अन्तर नहीं कि अंग्रेज़ों से स्वतन्त्रता पाने के लिए जापानियों की अधीनता स्वीकार कर ली जाये और बाद में जापानियों से निपट लिया जाये। यह कितनी दूषित नीति है। हमें तो स्वतन्त्रता चाहिये, न कि मालिकों की अदला-बदली।"

"परन्तु जापानियों और मुसलमानों में भारी अन्तर है। जापानी विदेशी हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान हमारे देश के रहने वाले हैं ।"

"यह तो आप कहते हैं न, या यों कहिये कि यह बात हम लोग चाहते हैं । हम चाहते हैं कि मुसलमान और हिन्दू परस्पर एक देश में रहने वाले भाइयों की भाँति रहें । दोनों मत वाले एक-दूसरे के बराबर-बरावर अधिकार रखें । मुसलमान और हिन्दू के अधिकारों में अन्तर न रहे । परन्तु मुसलमान तो अपने-आपको ऐसा नहीं समझते । वे विशेष अधिकार माँगते हैं । वे अल्प संख्या में होने पर भी अधिक संख्या वालों से अधिक अधिकार चाहते हैं । कोई ऐसा अधिकार जो किसी हिन्दू को प्राप्त हो, किसी मुसलमान को प्राप्त नहीं ।"

"मान लीजिये कि मुसलमान कुछ विशेष अधिकार चाहते हैं । परन्तु इसका यह अर्थ कैसे हो गया कि वे हिन्दुस्तान में अपना राज्य स्थापित करना चाहते हैं ?"

"विशेष अधिकार क्या भाड़ झोंकने के लिए माँगे जाते हैं ? वे चाहते हैं कि खास-खास पदवियों पर, खास-खास महकमों में मुसलमान अवश्य रखे जायें, चाहे वे योग्य हों अथवा न हों ।"

सुरेश ने बीच में एक प्रश्न कर दिया । वह पूछने लगा, "क्या हिन्दू-मुस्लिम झगड़े हमारे पराधीन होने का एक बड़ा कारण नहीं हैं ?"

पथिक का स्पष्ट उत्तर था, "नहीं, हम पच्चीस करोड़ जन ब्रिटिश सरकार से वैमनस्य रखते हुए भी ब्रिटिश सरकार को हानि नहीं पहुँचा सकते । इसी प्रकार सात करोड़ मुसलमान भी हमसे झगड़ा कर हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे । यथार्थ में, यदि इस समय हम पराधीन हैं और मुसलमान हमें हानि पहुँचा सकते हैं तो केवल हमारे सुसंगठित न होने के कारण । हमारा कार्य करने का ढंग गलत है । यह तो अच्छा है कि हिन्दू और मुसलमान परस्पर मिलजुलकर रहें । परन्तु यदि वे हिन्दुओं से मिलकर नहीं रहना चाहते तो क्या किया जाये ? स्वराज्य तो प्राप्त करना ही होगा, चाहे मुसलमान इसमें सहयोग दें और चाहे न दें ।"

"स्वराज्य-प्राप्ति पर मुसलमानों के साथ कैसा वर्ताव होगा ?"

"स्वराज्य-प्राप्ति पर और स्वराज्य-प्राप्ति से पूर्व भी हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिये जिससे सब राजनैतिक अधिकार देश के सब लोगों के बराबर-बराबर और साझे में हों । देश के लोग वे हैं जो देश में देशवासियों के बराबर अधिकार प्राप्त कर संतुष्ट हों । वे लोग जो देश के किसी भी व्यक्ति अथवा मत वाले को अपने से छोटा अथवा कम अधिकार वाला समझते हैं अथवा बनाना चाहते हैं, वे देशवासियों के शत्रु समझे जाने चाहियें ।"

"तो आपका अभिप्राय यह है कि मुसलमान यदि अपने लिए कुछ विशेष अधिकार माँगते हैं तो वे विदेशी तथा देश के शत्रु हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"निःसन्देह। हिन्दू हो या मुसलमान, यदि वह देश के किसी भी व्यक्ति से बढ़कर अधिकार माँगता है तो वह देश का हितचिंतक कैसे हो सकता है?"

"तो आप सात करोड़ मुसलमानों को अपना शत्रु समझते हैं?"

"मैं तो ऐसा नहीं समझता। मैं तो देशवासियों को मुसलमान और हिन्दू कोटियों में बाँटना नहीं चाहता। मैं तो देशी और विदेशियों की कोटियाँ बनाना चाहता हूँ। देशी वे हैं जो इस देश की उन्नति को प्रथम स्थान देते हैं, जो सब देश-वासियों के बराबर होकर रहना चाहते हैं। विदेशी वे हैं जो किसी और वस्तु को देश से ऊँची मानते हैं और स्वयं के लिए देशवासियों से बढ़कर अधिकार चाहते हैं।"

अब फिर मिस्टर माथुर ने बातों को घुमाव देकर पूछा, "बात तो यह है साहब कि जैसे आप हिन्दुओं को मुसलमानों के अधीन नहीं देखना चाहते, वैसे ही वे भी हिन्दुओं के अधीन नहीं रहना चाहते।"

"ठीक है, परन्तु इसके साथ यह भी हो कि जैसे हम हिन्दू-मुसलमानों को अपने अधीन नहीं रखना चाहते, वैसे ही वे भी हमें अपने अधीन रखना न चाहें।"

"इन सब बातों का परिणाम तो यह होगा कि हिन्दू-मुसलमान लड़ते रहेंगे और अनन्तकाल तक हम स्वतन्त्रता से वंचित रहेंगे।"

"एक बात तो आपकी सर्वथा ठीक है। वह यह कि यदि हिन्दू और मुसलमान विशेष अधिकारों की माँग उपस्थित करते रहेंगे तो हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा रहेगा। परन्तु आपकी दूसरी बात ठीक नहीं। स्वतन्त्रता-प्राप्ति का इससे कोई सम्बन्ध नहीं। मुसलमानों के विरोध होने पर भी भारतवासी स्वतन्त्र हो जायेंगे।"

"भारतवासी से आपका क्या अभिप्राय है? क्या इसमें मुसलमान भी सम्मिलित हैं?"

"निःसन्देह। मैं तो इस समय भारतवर्ष में रहने वालों को दो कोटियों में बाँटता हूँ—भारतवासी और विदेशी। भारत में भारतवासियों का राज्य हो सकता है, चाहे विदेशियों की संख्या कितनी भी हो। भारतवासियों में हिन्दू-मतावलम्बी भी हो सकते हैं और मुसलमान भी। इसी प्रकार विदेशियों में भी हिन्दू और मुसलमान दोनों हो सकते हैं।"

"विदेशी और स्वदेशी में भेदभाव कैसे होगा? क्या भारतवर्ष में रहने वालों को आप भारतवासी नहीं मानते?"

"केवलमात्र भारत में रहना भारतवासी माने जाने के लिए पर्याप्त नहीं। भारतीय समाज में रहकर, भारतीय समाज के हित के लिए यत्न करना भारत-वासी माने जाने के लिए आवश्यक है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों तो किसी बात के लिए वाद-विवाद अनन्तकाल तक चल सकता है। हाँ, प्रत्येक बात का न्यूनाधिक प्रभाव सुनने वाले के और कहने वाले के मन पर हुए बिना नहीं रह सकता। मिस्टर माथुर के मन पर तो यह प्रभाव उत्पन्न हुआ कि हिन्दू-मुसलमानों की समस्या को वह सरल समझने लगे थे। उनके मन में यह बात स्पष्ट हो गई थी कि केवल समझौतों से यह समस्या हल नहीं होगी। समझौते से तो हठी का हठ पूरा करना पड़ता है। समझौते को पुष्ट करने के लिए और समझौते को न्याय तथा युक्तियुक्त रखने के लिए शक्ति की आवश्यकता है। दूसरी ओर पथिक एक देहात में निष्क्रिय पड़े रहना जीवन को व्यर्थ खोना मानने लगा था।

देवा में एक वर्ष से अधिक निवास से पथिक के स्वास्थ्य में बहुत सुधार हुआ था। ज्यों-ज्यों उसका स्वास्थ्य सुधरता जाता था त्यों-त्यों वह अपनी शक्ति का अनुमान पाता जाता था। साथ ही उसे देश की यथार्थ परिस्थिति का ज्ञान होता जाता था। अपने देश को विदेशियों के बन्धन में जकड़े हुए देख और उस बन्धन को अपने ही देशवासियों को, अनजाने अथवा जानबूझकर, दृढ़ करते हुए देखकर वह बेचैन हो उठता था। वह मन में सोचता था कि क्या यह भी किसी को बताने की आवश्यकता है कि भारतवर्ष में भारतवासियों का राज्य होना चाहिये? क्या यह भी किसी को बताने की जरूरत है कि राज्य की रीढ़ की हड्डी फौज और पुलिस है? बिना फौज और पुलिस को अपने अधीन किये क्या कभी स्वराज्य प्राप्त करना सम्भव हो सकता है? परन्तु यह भारतवर्ष है जहाँ गरम दल वाले सन् १९२१ के विधान को स्वराज्य मानते थे। यह भारतवर्ष है जहाँ बिना फौज-शक्ति उत्पन्न किये स्वराज्य के आन्दोलन चलाये जाते हैं। यह भारतवर्ष है जहाँ डेप्युटेशन ले जाकर, तारों द्वारा प्रार्थनाएँ कर अथवा सभाओं में प्रस्ताव पास कर स्वराज्य-प्राप्ति के लिए यत्न किया जाता है। पथिक समझता था, सत्य ही यह देश या तो मूर्खों से भरा है या धूर्तों से।

इन दिनों जब भी वह कथा, कीर्तन व भजन करने बैठता था, तो वह सोचा करता था कि क्या वह, समाज के रोग की ठीक चिकित्सा कर रहा है? आज मिस्टर माथुर ने बातों में उससे कहा था, "आप बातें बहुत बनाते हैं, परन्तु उनको कार्यरूप में कैसे लाया जाये, यह न तो आप बताते हैं और न स्वयं करके दिखाते हैं।"

इस बात ने उसके मन में भारी उथल-पुथल मचा दी थी। वह सोचने लगा था कि देवा के कूप-क्षेत्र में बैठकर देश को स्वतन्त्रता के पथ पर आरूढ़ करने की दिशा में वह कुछ भी नहीं कर सकेगा।

: ११ :

"नलिनी बहिन, मैं देवा से बाहर जा रहा हूँ।" पथिक संगीत की शिक्षा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात् अपना निर्णय नलिनी को सुना रहा था। नलिनी यह समाचार सुन भौचक्की हो उसका मुख देखने लगी। वह कितनी ही देर तक इसका आशय समझने का यत्न करती रही। वह समझी कि भूतनाथ का फिर लोगों से झगड़ा हो गया है। वह पूछने लगी, "अब किसने झगड़ा किया है?"

"झगड़ा किसी ने नहीं किया। माँ भारी कष्ट में है और वह मुझे बुला रही है।"

पथिक नलिनी की माँ को भी माँ कहकर पुकारता था। इस कारण उसने तुरन्त कह दिया, "नहीं, माँ अति प्रसन्न है। मैं अभी-अभी उसके पास से ही आ रही हूँ।"

"तुम नहीं समझ सकतीं, नलिनी। तुम अभी बहुत छोटी हो। माँ सत्य ही कष्ट में है। तुम्हारी माँ नहीं। मेरा अभिप्राय भारतमाता से है।"

"परन्तु तुम तो कहते थे कि भारतमाता सब जगह है। क्या उसकी सेवा यहाँ से नहीं हो सकती?"

"सेवा तो हो सकती है, परन्तु अब तो कष्ट-निवारण करने के लिए चिकित्सा करनी होगी। चिकित्सा यहाँ बैठे नहीं हो सकेगी।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।"

"तुम कैसे जा सकती हो? तुम्हारी माँ है, भाई है। उनको तुम्हारे जाने से दुःख होगा और फिर जाकर करोगी भी क्या?"

"मैं तो तुम्हारे साथ जाऊँगी। यहाँ कोई पढ़ाने वाला भी तो नहीं है। तुम तो कहते थे कि अब नाचना सिखाओगे।"

"अब कुछ दिन के लिए पढ़ाई बन्द करनी होगी।"

"कब जाओगे?"

"एक-दो दिन में।"

"और कब आओगे?"

"नहीं बता सकता। यों तो बीच-बीच में एक-आध दिन के लिए आता रहूँगा, परन्तु पक्का यहाँ रहने का नहीं बता सकता।"

नलिनी चुप थी। उसके मन में एक विशेष प्रकार की हलचल मच रही थी। वह इस हलचल का अर्थ नहीं समझ सकती थी, न ही इसे वर्णन कर सकती थी। उस दिन उसका चित्त बातचीत में अधिक नहीं लग सका। वह चुपचाप पथिक के सम्मुख हाथ पर ठुड्डी रखे बैठी रही।

पथिक के मन में एक विचार आया। वह उठा और भीतर से रंगों का डिब्बा और कागज़ उठा लाया। कागज़ को बोर्ड पर लगा नलिनी की तसवीर खींचने लगा। नलिनी कुछ सोच रही थी। उसके मन में भाँति-भाँति के विचार उठते थे। वह उन्हें पथिक को बताना चाहती थी, परन्तु उसके पास उन विचारों को प्रकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिए शब्द न होने से चुप रह जाती थी और फिर गहरे विचारों में डूब जाती थी।

धीरे-धीरे समय व्यतीत होने लगा। सूर्य पश्चिम की ओर चल पड़ा था। पथिक नलिनी का चित्र बनाने में लीन था। नलिनी अपने विचारों में लीन थी। दोनों सूर्य की पश्चिम यात्रा का अनुभव नहीं कर रहे थे।

तसवीर अभी समाप्त नहीं हुई थी कि बेनी आया और कहने लगा, "गुरुदेव, कथा का समय हो गया।"

पथिक का स्वप्न भंग हुआ। उसने अधूरी तसवीर पर से दृष्टि उठाई और सायंकाल हुआ जान नलिनी से कहने लगा, "बहिन, देर हो गई है। अब तुम जाओ।"

नलिनी ने उठते हुए कहा, "भूतनाथ, क्या माँ बहुत बीमार है?"

"हाँ, बहुत कष्ट में है।"

"तो मैं उसकी सेवा क्यों नहीं कर सकती?"

"तुम? हाँ, तुम भी कर सकती हो, परन्तु मेरे साथ जाकर नहीं। तुम यहीं रहकर माँ के स्वस्थ और सबल होने के लिए प्रार्थना कर सकती हो।"

"प्रार्थना?"

"हाँ, तुम्हारे घर तो भगवान् हैं न! प्रातः-सायं तुम उनके सम्मुख प्रार्थना किया करो।"

"क्या माँगा करूँ?"

"हाथ जोड़कर यह कहा करो, 'भगवान्, भारतमाता के कष्ट शीघ्र दूर करो। उसे बुद्धि दो, शक्ति दो और सुभीता दो कि वह पुनः पहले की भाँति स्वतन्त्र और सबल हो सके'।"

"तो तुम ऐसा क्यों नहीं करते? तुम भी हमारे घर आकर भगवान् से प्रार्थना कर लिया करो।"

"उसी ने तो मुझे कहा है कि मैं यहाँ से बाहर जाकर माँ के लिए यत्न करूँ।"

"अच्छी बात है। मैं भी भगवान् से कहूँगी कि मुझे भी तुम्हारे साथ जाने के लिए कहें।" इतना कह वह गम्भीर विचार में डूबी हुई घर की ओर चल पड़ी।

आज पथिक ने कथा के पश्चात् घोषणा कर दी कि वह कुछ काल के लिए देवा से बाहर जा रहा है। उसने अपने वहाँ से जाने का प्रयोजन भी बताया। लोग प्रयोजन को कितना समझे और कितना नहीं समझे, कहना कठिन है। हाँ, उस सायंकाल देवा में पथिक के जाने की बात के अतिरिक्त और कुछ भी चर्चा नहीं थी।

पथिक के देवा से जाने का समाचार सुरेश और राजमाता को भी मिला। सायंकाल सुरेश अपने मित्रों के साथ शतरंज खेल रहा था। विजयबहादुर प्रसन्न-वदन बाहर से बैठक में आया। आते ही उसने कहा, "दादा, लो मिठाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलाओ।"

सुरेश चौकन्ना हो पूछने लगा, "क्या तुम्हारे घर लड़का हुआ है ?"

सब मित्र खिलखिलाकर हँसने लगे। विजयबहादुर ने सफाई पेश करते हुए कहा, "शादी ही नहीं हुई, तो लड़का कैसे हो सकता है ?"

"क्या लड़का पैदा करने के लिए शादी आवश्यक है ?"

विजयबहादुर ने बात को पुनः ठीक मार्ग पर लाते हुए कहा, "दादा, छोड़ो इस बात को। एक बहुत बढ़िया समाचार लाया हूँ। मिठाई का प्रबन्ध करो तो बताऊँ।"

"हाँ, बताओ तो मिठाई भी मिलेगी।"

विजयबहादुर ने प्रसन्नता से उबलते हुए कहा, "वह पगला पथिक देवा छोड़ जा रहा है।"

"जा रहा है ?"

"हाँ, कहता है, 'मैं अपना कार्य-क्षेत्र विस्तृत करूँगा, मैं देश-भर में स्वदेश-प्रेम की प्रचण्ड अग्नि जला दूंगा, विदेशी राज्य-सत्ता को उस अग्नि में भस्म कर दूंगा,' इत्यादि।"

"तो इसमें मिठाई खाने की कौन-सी बात है ?"

"वाह, अब बदल गये न ! देवा से यह बला टली। क्या यह प्रसन्नता की बात नहीं ? और खुशी में मिठाई नहीं खाते क्या ?"

"तुम इसको खुशी की बात समझते हो, विजयबहादुर भैया। मैं एक बात आज तक नहीं समझ सका, वह यह कि तुम्हारा इस पथिक ने क्या बिगाड़ा है कि तुम सदैव उसके विरुद्ध रहते हो ?"

विजयबहादुर आज बहुत प्रसन्न था। इस कारण अपने मन के भावों को छिपाकर नहीं रख सका। वह बोल उठा, "तो तुम मेरी नाराज़गी का कारण नहीं जानते ? देखो, दादा, बात स्पष्ट है। उसने बेनी की स्त्री को मेरे खिलाफ कर दिया है। बेनी को उसे फिर घर रखने के लिए राज़ी कर दिया है। उसे इन बातों में हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं थी। जब दूसरों के मामले में वह दखल देता है तो दूसरों को भी उसकी बातों में दखल देने का अधिकार है।"

सुरेश के सब मित्र विजयबहादुर के कथन पर उसकी वाह-वाह करने लगे। केवल मोहन इस वाह-वाह में सम्मिलित नहीं हुआ। सुरेश को तो विजयबहादुर की बात बहुत घृणित प्रतीत हुई। उसने मस्तक पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "मुझे नहीं मालूम था कि तुम मन में इतना विष रखते हो। क्या बेनी की स्त्री से तुम्हारा इतना लगाव है कि तुम उसे भूल नहीं सकते ? तुम तो कहा करते थे कि स्त्रियाँ खिलौना हैं। एक टूट गया तो दूसरा मोल लिया जा सकता है।"

"मैं अब भी यही मानता हूँ। मेरी आपत्ति तो इस बात पर है कि पथिक को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा खिलौना छीन लेने का अधिकार नहीं है।"

"पर वह तुम्हारा था, यह कैसे सिद्ध हो गया?"

"मेरे पास था, इस कारण मेरा था।"

"तो अब दूसरे के पास है, इस कारण दूसरे का है?"

"मैं उसे दूसरे से छीन लेता यदि पगला बीच में न पड़ जाता।"

"वह बीच में क्यों न पड़ता? उसे बेनी की स्त्री पर तुम्हारा कोई अधिकार प्रतीत नहीं होता। तुम्हारा उसे अपने अधिकार में रखना उसे अन्याय प्रतीत होता है, और उसने अन्याय को रोका है।"

सुरेश और विजयबहादुर में कभी इतनी लम्बी तकरार नहीं हुई थी। सुरेश प्रायः विजयबहादुर से सहमत न होता हुआ भी उसके अनुकूल हो जाया करता था। धारा-सभा के चुनाव की घटनाओं से और पथिक की संगति में अधिक आने से उसे विजयबहादुर की युक्तियाँ साररहित प्रतीत होने लगी थीं। वह पथिक को अति विद्वान् और बुद्धिमान समझने लगा था। उसकी बहादुरी और न्यायपरायणता का वह पहले ही भक्त हो चुका था। ऐसी अवस्था में वह विजयबहादुर की बातों को सहन नहीं कर सका। विजयबहादुर को सुरेश की इस नवीन मनोवृत्ति से क्रोध आ गया। उसने पूछा, "तो, दादा, तुम भी ऐसा ही समझते हो?"

"क्या ऐसा समझता हूँ?"

"कि पथिक ने बेनी की स्त्री के मामले में ठीक किया है?"

"हाँ, बिलकुल ठीक किया है। पथिक के पास कोई पुलिस या फौज तो है नहीं जो जबरदस्ती अपनी बात मना ले। उसने बेनी और उसकी स्त्री को समझाया कि वे पति-पत्नी हैं, उनका विवाह हो चुका है और उन्हें परस्पर प्रेम से रहना चाहिये। वे मान गये। बेनी ने अपना पाँच सौ रुपया छोड़ दिया और उसकी स्त्री ने उसके पास रहना स्वीकार कर लिया। यदि वे दोनों अपनी इच्छा से ऐसा न करते तो पथिक उनको कैसे बाध्य कर सकता था? उसने केवल समझा दिया था। इसमें कुछ भी अनुचित नहीं।"

"दादा, अनुचित बात यह है कि जब मैं अपने बल से बेनी से प्रबल हूँ और बेनी की स्त्री को उठाकर ला सकता हूँ तो पथिक इसमें क्यों दखल देता है? यदि बेनी अपनी स्त्री की रक्षा नहीं कर सकता तो उसका अधिकार उस पर कैसे हो सकता है?"

"किसी बात में न्याय अथवा अन्याय बल से सिद्ध नहीं होता। यदि बलवान होने से अधिकार की तुम्हारी युक्ति मान भी ली जाये तब भी तो तुम झूठे हो। बेनी अपने मित्रों सहित तुमसे अधिक बलवान सिद्ध हुआ है।"

विजयबहादुर ने व्यंग्य से कह दिया, "हाँ, तुम्हारे जैसे दगाबाज़ मित्रों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखने से मैं दुर्बल हूँ।"

विजयबहादुर के ये मूर्खतापूर्ण वाक्य सुन सब लोग सन्न रह गये। यद्यपि बहुत-से मित्र विजयबहादुर के पक्ष में थे, तो भी सुरेश को दगाबाज़ कहे जाने पर प्रसन्न नहीं हुए। सुरेश को इस कथन से अत्यन्त दुःख हुआ। उसे इससे भारी सदमा पहुँचा। उसने विजयबहादुर के मनोरंजन पर हज़ारों रुपये व्यय कर दिये थे। उसकी मूर्खता के कारण वह धारा-सभा के चुनाव में बहुत बुरी तरह परास्त हुआ था। इस पर भी उसने कभी शिकायत नहीं की थी। अपनी माता से वह विजयबहादुर का पक्ष लेकर झगड़ा किया करता था। इस पर भी वह दगाबाज़ कहा गया।

उसे अब क्रोध नहीं था। क्रोध तो तब तक ही किया जाता है जब तक क्रोध करने से प्रयोजन-सिद्धि की आशा हो। परन्तु जब कुछ प्रयोजन ही न रहे तो क्रोध के लिए मन में स्थान नहीं रह जाता। मन में पश्चात्ताप आ विराजमान होता है। सुरेश ने आँखें नीची किये हुए कहा, "भैया, तो तुम अपने वफादार मित्रों के पास जाओ। दगाबाज़ों के पास आने की आवश्यकता नहीं है।"

सुरेश के कुछ मित्रों ने बीच में पड़कर सुलह करवाने का यत्न किया, परन्तु विजयबहादुर हवाई घोड़े पर सवार था। वह उठकर वहाँ से चला ही गया। सुरेश शतरंज पर से उठ पड़ा और बैठक से घर के भीतर चला गया।

कोई समय था कि मोहन और विजयबहादुर में बहुत मित्रता मानी जाती थी। इस कारण मित्र-मंडली ने मोहन को विजयबहादुर को समझाने के लिए भेजना चाहा, परन्तु मोहन ने स्पष्ट इनकार कर दिया। उसने कहा, "मैं उससे कुछ नहीं कहना चाहता। वह प्रकृति से उजड्ड और दुष्ट है। मेरी उससे सहानुभूति नहीं और मैं पथिक के अहसान में दबा हुआ हूँ।"

मोहन के आग लगाते हुए पकड़े जाने पर पथिक ने उसे छुड़ाया था, यह बात सबको स्मरण थी। सब चुप रह गये।

: १२ :

राजमाता सुरेश में परिवर्तन देख रही थी। वह समझती थी कि इस परिवर्तन में पथिक का भारी हाथ है। इस कारण वह पथिक को देवा से चले जाने से रोकना चाहती थी। उसने जब सुना कि पथिक जा रहा है तो उसे बुलाकर पूछा, "तुम देवा छोड़ रहे हो, बेटा?"

"छोड़ तो नहीं रहा, माँजी। केवल क्षेत्र को विस्तृत करना चाहता हूँ। इससे प्रायः बाहर रहना होगा। आशा करता हूँ कि कभी-कभी यहाँ रहने का अवसर मिल जाया करेगा।"

"बेटा, इतना झगड़ा मोल लेने की क्या आवश्यकता है? यहाँ सुख से जीवन व्यतीत हो रहा है। खाने, पहनने और रहने का तुमको कुछ भी कष्ट नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ सब लोग तुम्हारा मान करते हैं और तुम्हारी बातों को मानते हैं। क्या तुम्हें इतने में संतोष नहीं ?"

"माँजी, यह झगड़ा अपने लिए नहीं कर रहा। अपने पैंतीस करोड़ भाइयों के सुख, शांति और मानयुक्त जीवन के लिए कर रहा हूँ। इस देश में औसत आय एक आना रोज़ है और यहाँ के लोगों की औसत आयु पच्चीस वर्ष है। यहाँ पढ़े-लिखे एक या दो प्रतिशत हैं। यहाँ लोगों में चरित्र नहीं, ज्ञान नहीं, मान-अपमान को अनुभव करने की समझ नहीं है। यहाँ लोग हिंसक जन्तुओं की भाँति लड़ते-झगड़ते हैं। अभिप्राय यह कि संसार का कोई भी ऐसा दुर्गुण नहीं जो भारतवासियों में उपस्थित नहीं।

"इनको दूर कर भारतवासियों को उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए मैं अपनी शक्ति लगा देना चाहता हूँ।"

"परन्तु, महात्मा, इस झगड़े से तुम्हें क्या मिलेगा ? तुम्हें संसार के पतित जीवों के झगड़े में पड़कर अपना मुँह काला करना पड़ेगा। वे जैसा करते हैं वैसा भोग रहे हैं और भोगेंगे। तुम अपनी उन्नति और मुक्ति-प्राप्ति में बाधा क्यों डाल रहे हो ? देखिये, भगवान् की मूर्ति अथवा जिस इष्टदेव की मूर्ति आपके मन में भावे, इस मन्दिर में स्थापित करिये। जितना भी जीवन शेष है, भगवत्-भजन में लगा दीजिये। इससे आपका भला होगा और हमारी आत्माओं को भी शांति मिलेगी। अपनी आत्मा का हनन कर दूसरों के लिए यह करना कुछ ठीक नहीं जँचता और फिर इसमें सफलता की कुछ विशेष आशा भी नहीं।"

"आप अपने विचार से ठीक कहती हैं। आप हिन्दू हैं और आपके विचार तुलसी, कबीर, दादू इत्यादि भक्तों की शिक्षा से बने हैं। आपकी तमाम युक्तियों को तो कबीर के एक दोहे में कहा जा सकता है :

कबीरा तेरी झोंपड़ी गलकटियन के पास।
करन गे सो भरन गे, तू क्यों भया उदास॥

परन्तु मेरे विचार उन भक्तों के-से नहीं हैं। मैं उनको उलटे मार्ग की शिक्षा देने वाला समझता हूँ। यह उन भक्तों की उलटी शिक्षा का ही परिणाम है कि भारतवर्ष लगभग एक सहस्र वर्ष से दासता की बेड़ियों में बँधा है। भक्त लोग व्यक्तिगत उन्नति का मार्ग अंकित कर गये हैं। मैं समझता हूँ कि समाज की सामूहिक उन्नति ही वास्तविक उन्नति है। व्यक्तिगत उन्नति मृगतृष्णा है। यह उन्नति का भासमात्र है, उन्नति नहीं। मनुष्य को जिस वातावरण में रहना है, उसका सुधार किये बिना वह स्वस्थ और सुखी नहीं रह सकता। जहाँ झूठ, ठगी, चोरी, दुराचार, मूर्खता और अज्ञानता भरी पड़ी है, वहाँ रहता हुआ क्या कोई कभी आत्मोन्नति कर सकता है ?"

"यदि तुम्हारी बात ठीक भी मान ली जाये, तब भी यह तो स्पष्ट ही है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम इस जीवन में तो भारतवर्ष का सुधार करने से रहे, और अगले जन्म में तुम भारतवर्ष में जन्म लोगे अथवा किसी अन्य देश में, कौन बता सकता है? ऐसी अवस्था में पूर्ण देश के लोगों को उन्नत करने से क्या लाभ होगा? तुम अपने निकट रहने वालों का सुधार करो। यह तुम अपने जीवन-भर में कर लोगे। इससे तुम्हारा भी कल्याण होगा और हमारा भी।"

"परन्तु देश के लोगों के पतन का कारण भी तो देश की पराधीनता है। बिना देश को स्वाधीन किये देश-भर के अथवा देश के किसी भाग के भी लोग सुधर नहीं सकेंगे।"

"राज्य-सत्ता से लोगों के सुधार अथवा बिगाड़ का क्या सम्बन्ध है?"

"भारी सम्बन्ध है। 'यथा राजा तथा प्रजा' की कहावत सर्वथा सत्य है। स्वयं अपने देश में अंग्रेज़ कैसे हैं, इससे हमें कुछ भी वास्ता नहीं। हमारे देश में वे कैसा आचार-व्यवहार रखते हैं, उसके प्रभाव से हम बच नहीं सकते। ये भारतवर्ष में इस कारण नहीं आए हैं कि हम लोगों पर दया करके हमारी भलाई करेंगे। इनके यहाँ आने का केवल एक ही कारण है और वह कारण है स्वार्थ। प्रत्येक अंग्रेज़ जातीय-स्वार्थ से ओतप्रोत होकर ही भारत में आता है, रहता है और विचरता है। इसका प्रभाव हम लोगों पर भी पड़ता है और हम लोग भी दिन-प्रतिदिन स्वार्थ में लिप्त होते जा रहे हैं। शासक लोगों को सदैव यह शंका बनी रहती है कि वे यहाँ से निकाल दिये जायेंगे। इसलिए वे कुनीति से, प्रलोभनों से और विकृत मनोवृत्ति उत्पन्न कर देश के लोगों को पतित करते रहते हैं। पिछले एक सौ वर्ष में हमारी जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक अवनति हुई है वह इतने कम काल में किसी भी जाति की नहीं हुई। सात सौ वर्षों के मुसलमानों के शासन ने भी यहाँ के लोगों में इतना पतन पैदा नहीं किया था, जितना अंग्रेज़ों के एक सौ वर्ष के राज्य ने किया है। स्वार्थ, दगा, झूठ, फरेब, कामुकता, रिश्वत, देश और जाति से द्रोह ये सब बुरी बातें हममें अभी-अभी आई हैं और इनके आने का कारण यह है कि हम पर शासन करने वाले, अपने शासन को स्थिर रखने के लिए, नित्य यही करते रहते हैं। इन्होंने झूठ और फरेब को नीति का नाम दे रखा है। पूँजीपतियों के शासन को प्रजातन्त्र का नाम दे रखा है। काले लोगों को नीच कामों के लिए सीमित कर अपनी कार्यपटुता को सिद्ध किया है। अभिप्राय यह है कि संसार-भर के सब उलटे उपायों को प्रयोग करके हम लोगों पर शासन जमाये हुए हैं। शासकों की पतित करने वाली इस नीति का ही प्रभाव है कि हम भी अपने से छोटों को ऐसे ही अपने अधीन रखने का यत्न करते हैं जैसे वे हमें अधीन रखने का करते हैं।"

"मैं तो स्त्री हूँ और तुम जितना पढ़ी भी नहीं। इस पर भी यह तो मैं समझ ही सकती हूँ कि यदि हम सत्य, धर्म और न्याय का अवलम्बन करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहें तो हमें कोई रोक नहीं सकता। कोई ज़माना था जब मुसलमान ज़बरदस्ती हिन्दुओं को मुसलमान बनाते थे और उनका कहना न मानने वालों को मार डालते थे। अब तो वैसी बात नहीं है।"

"इन कामों की स्वतन्त्रता तो हमें है, परन्तु हममें यह शक्ति और भावना भी नहीं रहने दी गई, जिससे हम अच्छे काम कर सकें अथवा करने की इच्छा करें। यह सब कैसे किया जाता है, एक उदाहरण से स्पष्ट हो जायेगा :

विलायत से एक गोरा साधारण-सी शिक्षा प्राप्त कर यहाँ आ जाता है और उसे उच्च पद पर नियुक्त कर दिया जाता है। उसमें न तो काम करने की बुद्धि होती है और न ही योग्यता। फिर भी वह भारी वेतन लेता है। काम तो छोटे-छोटे वेतन लेने वाले हिन्दुस्तानी चलाते हैं। अब हम भी इसी बात का अनुकरण करते हैं। हम भी जहाँ हमारा बस चलता है अपने सम्बन्धियों अथवा मित्रों को, बिना उनकी योग्यता का अनुमान लगाये, अच्छे वेतन पर लगाने का यत्न करते हैं। इसे सिफारिश से काम प्राप्त करना कहते हैं। यह धोखाधड़ी सरकार से आरम्भ हुई है। सरकार ने गोरों के साथ रियायत की। बिना उनकी योग्यता देखे उन्हें ऊँचे पदों पर नियुक्त किया। हम भी ऐसा ही करते हैं। परिणाम यह है कि सरकार के प्रत्येक महकमे में चपरासी से लेकर सरकार के सेक्रेटरी तक की नियुक्ति और उन्नति सिफारिश के आधार पर हो गई है। सरकारी दफ्तर सिफारिशी टट्टुओं की मण्डी हो गई है। सिफारिश खुशामद करने से मिलती है, न कि भगवत्-भजन अथवा सत्य, न्याय और धर्मयुक्त आचरण रखने से। परिणाम यह है कि बड़े-बड़े ओहदों पर पहुँचने के लिए योग्यता, मेहनत, सत्य और धर्मपरायणता नहीं चाहिये, प्रत्युत् खुशामद और सिफारिश।

"और भी अनेक ढंग हैं जिनसे विदेशी सरकार भारतवर्ष के लोगों के पतन का कारण बन रही है। वायसराय और गवर्नर राजों-महाराजों से नज़राने लेते हैं। अफसर ठेकेदारों और दुकानदारों से कमीशन लेते हैं। बाबू चपरासी और अधीन क्लर्कों से निजी काम लेते हैं। चपरासी अफसरों से मिलने आने वालों से बख्शीश पाते हैं। ग्राहक दुकानदार से झूंगा माँगते हैं और दुकानदार कम तोलते हैं। यह एक ऐसा पापमय दौर चल गया है कि इससे कोई भी बचा हुआ प्रतीत नहीं होता। इस दौर का आरम्भ हुआ है सरकार के बड़े-से-बड़े अफसरों से और पहुँचा है छोटे-से-छोटे कर्मचारी और स्वतन्त्र पेशे वालों तक। हिन्दुस्तान में अपनी उचित आय से ऊपर की आय करने वालों, अर्थात् घूस खाने वालों की भरमार है। पतन इस हद तक हो गया है कि कोई भी काम रिश्वत के बिना नहीं हो सकता और रिश्वत से कोई भी काम हो सकता है।

"आप पूजा-पाठ, दान-धर्म की बात कहती हैं न। यह भी इसी प्रकार छूटा है जैसे चरित्र और नेक काम। बात यह है कि राज्य में मान, प्रतिष्ठा, उन्नति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी होती है जो सरकार को लाभ पहुँचायें, न कि जो सत्य और न्याय का आचरण रखें। शासक सप्ताह में एक घण्टे के लिए गिरजाघर जाते हैं और वह भी पूजा-पाठ अथवा आत्मोन्नति के लिए नहीं, प्रत्युत् केवल मित्र, सम्बन्धियों तथा प्रेमी-प्रेमिकाओं को एक नये आवरण और वातावरण में देखने के लिए। यही बात हममें भी घुसी आ रही है। जब शासक बिना दया, धर्म और चरित्र के शासक हैं तो शासित को भी इनकी आवश्यकता नहीं है।"

यथार्थ में राजमाता इन बातों को पहले ही समझती थी। यह सब तो पथिक को देवा छोड़ने से विचलित करने के लिए था। उसका यह सब प्रयास सुरेश को पथिक के प्रभावाधीन रखने के लिए था।

सुरेश भी पास बैठा यह वार्तालाप सुन रहा था। वह पथिक के सरकारी अफसरों और मुलाज़िमों के चरित्र-चित्रण से चकित था। वह इसे अपने अनुभव से सत्य समझता था। अभी तक तो वह रिश्वत की प्रथा को अच्छा समझता था। उसके पास रुपया था। इस कारण वह रुपये के बल से जो काम चाहे करवा सकता था। परन्तु आज उसे ज्ञात हुआ कि यह प्रथा कितनी घृणित और हानिकर है।

पथिक ने अपनी बात को समाप्त करने से पूर्व कहा, "माताजी, देवा भी उसी राज्य के अधीन है जो भारतवर्ष में दूसरे स्थानों पर है। देवा में सुधार, हिन्दुस्तान के पराधीन और पतित रहते हुए, असम्भव है। जो विष अन्य स्थानों पर फैल रहा है, वही विष देवा में भी विराजमान है। अन्यथा यह मसजिद और नमाज़ का झगड़ा यहाँ उत्पन्न ही न होता।"

: १३ :

पथिक का राजमाता और सुरेश से विदा लेना तो केवल मस्तिष्क का काम था। राजमाता युक्ति से उसे रोकने का प्रयत्न करती थी, परन्तु उसकी युक्ति निर्बल सिद्ध हुई। वह पथिक को रोक नहीं सकी। इसके विपरीत वह स्वयं पथिक की योजना में सहायक बन गई।

परन्तु नलिनी से विदा लेनी इतनी सुगम नहीं थी। वहाँ युक्तियों की आवश्यकता नहीं थी। युक्तियाँ कुँद थीं। एक वर्ष से ऊपर के मेल-मिलाप ने हृदय को बाँध लिया था।

उस दिन जब नलिनी अपना नित्य का पाठ पढ़ने आई तो एक छोटा-सा बिस्तर और सूटकेस बँधा देख निस्तब्ध वहीं-की-वहीं खड़ी रह गई। पथिक गाँव में किसी कार्यवश गया हुआ था। बिस्तर के पास करताल और तम्बूरा रखा था। नलिनी के मन में आया कि वह इस सब सामान को उठाकर नदी में फेंक दे, मानो यह सामान ही उसे परदेश लिये जा रहा है। उसने क्रोध में तम्बूरे को उठाया, परन्तु कुछ सोचकर पुनः उसे वहीं रख दिया। शायद वह यह सोच रही थी कि भूतनाथ नाराज़ हो गया तो ठीक न होगा। अभी तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी-कभी आने को कहता है। क्या जाने अप्रसन्न हो वह बिलकुल ही न आये। परन्तु पथिक को रोकने के लिए उसे और कोई उपाय भी तो नहीं सूझ पड़ता था। वह अपने रोष को प्रकट करना चाहती थी। अतएव उसने अब के दृढ़ निश्चय कर तम्बूरे को उठाया और भूमि पर पटककर तोड़ देने का विचार कर लिया। उसने उसे ऊपर उठाया ही था कि पथिक वहाँ आ पहुँचा। वह नलिनी को देख बोला, "तो तुम आ गई हो? बहुत अच्छा किया है।"

नलिनी झेंप गई। उसने तम्बूरा फिर भूमि पर रख दिया और चुपचाप पथिक की ओर देखमे लगी। पथिक एक खाट पर बैठ गया और उसने नलिनी को समीप बैठा लिया। नलिनी ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर पूछा, "तो तुम जा रहे हो?"

"हाँ, परन्तु सदा के लिए नहीं। फिर लौटकर आऊँगा।"

"कब आओगे?"

"यह नहीं बता सकता। एक मास में, दो मास में। सम्भव है, एक-दो वर्ष में। यह हो सकता है कि मेरे आने तक तुम बड़ी हो जाओ, मुझे भूल जाओ, और अपनी ससुराल चली जाओ, और तब यहाँ आने पर भी तुमको न मिल सकूँ।"

यह सुन नलिनी की आँखों में आँसू भर आये। पथिक ने, जो दूर पहाड़ की ऊँची-ऊँची चोटियों की ओर देख रहा था, कहना जारी रखा, "जानती हो, नलिनी, मैं क्यों जा रहा हूँ?"

"माँ के दुःख मिटाने के लिए," नलिनी ने रोते हुए कहा। उसकी रोनी आवाज़ को सुन पथिक ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखों से आँसुओं को धारा-प्रवाह बहते देख वह घबराकर बोला, "अरे! यह क्या करती हो? तुम तो रो रही हो। मेरी पगली बहिन, संसार में जो आते हैं, वे जाते भी हैं। आना-जाना तो बना ही है और फिर मैं तो लौट आऊँगा। देखो, माँ के मुख से कराहने की आवाज़ मेरे कानों में हो रही है। यह आर्तनाद असह्य हो रहा है। अब और नहीं सुना जाता। माँ को शान्त और प्रसन्न करना मेरा धर्म है। क्या तुम नहीं चाहतीं?"

"मैं क्या जानूँ, तुम्हारी माँ कहाँ है और कैसी है? मुझे तो उसके रोने का शब्द सुनाई नहीं देता। तुम कहते हो, वह दुःखी है। होगी। मेरा तो जी चाहता है कि मैं तुम्हारे साथ चली चलूँ। माँ जाने नहीं देती। वह कहती है कि तुम मुझे साथ नहीं ले जाओगे। मैंने माँ से कहा था कि तुम मुझे ले जाओगे। परन्तु तुम तो मुझे चलने को कहते ही नहीं।"

"नलिनी वहिन, माँ ठीक कहती है। मैं जहाँ जा रहा हूँ, वहाँ बहुत झगड़ा है, कष्ट है। वहाँ मुसीबतों का सामना करना होगा। क्या जाने जेलखाने में जाना पड़े या गोली मारकर इस जीवन की यंत्रणा से छुटकारा दिला दिया जाये। जन्म-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर कैद या फाँसी पाना तो सहज-सी बात है। भला ऐसे स्थान पर तुम्हें कैसे ले जा सकता हूँ ?"

नलिनी इतनी भयंकर बात सुनकर चुप रह गई। उसके आँसू तो थम गये, परन्तु क्रोध और भय से गाल विवर्ण हो गये, होंठ सूख गये और गले से आवाज़ नहीं निकल सकी। यत्न कर वह बोली, "तो ऐसे भय वाले स्थान पर तुम क्यों जाते हो ? तुम्हें मरने से डर नहीं लगता ?"

"लगता है। मैं मरना नहीं चाहता, परन्तु कभी मरने से भी अधिक दुःख वाली बात हो सकती है। ऐसी बात अब हो रही है। माँ, भारतमाता, जो तुम्हारी, मेरी, हम सब लोगों की माँ है, दुःख में है। आततायी दुःशासन उसके वस्त्र उतारकर उसे नग्न कर भिखारिन बनाना चाहता है। उसे संसार की अन्य समृद्धि-सम्पन्न जातियों के सम्मुख हाथ पसारकर भिक्षा माँगने के लिए बाध्य किया जा रहा है। यह अब नहीं देखा जाता। इस लज्जास्पद दृश्य को देखकर मरना कष्टप्रद नहीं रह जाता।"

नलिनी ने पथिक का हाथ पकड़ लिया और कहा, "तुम क्या कहते हो, मेरी समझ में नहीं आता। मैं तो एक बात जानती हूँ। वह यह कि तुम्हें मरने देना नहीं चाहती। मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगी। मैं तुम्हें पकड़े रखूँगी। नहीं छोड़ूँगी। जाना हो तो छुड़ाकर चले जाओ। देखूँ तो तुम कैसे छुड़ाकर जा सकते हो ?"

नलिनी ने ज़ोर से पथिक का हाथ पकड़ लिया।

पथिक इस युक्ति के सम्मुख निरुत्तर था। वह इस भोली बालिका के मन को दुःखी करना नहीं चाहता था और उसे समझाना तो अति कठिन था। उसने कहा, "तो तुमने मुझे पकड़ लिया है ?"

"हाँ।" नलिनी ने और भी ज़ोर से उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।

"इतने ज़ोर से ? यह तो मैं छुड़ा न सकूँगा। अच्छी बात, मैं नहीं जाऊँगा, पर तुम मुझे छोड़ना नहीं, पकड़े रखना।"

नलिनी ने और भी ज़ोर से पकड़ लिया। इस समय गाँव के लोग मिलने के लिए आने लगे थे। आज कथा न तो कहने को और न ही किसी को सुनने की रुचि थी। लोग आते थे और अपनी-अपनी श्रद्धा-भक्ति के फूल उसके सम्मुख चढ़ाते थे। प्रत्येक के मन में यह आशंका बनी थी कि पथिक पुनः लौट नहीं सकेगा। पथिक एक-एक को नाम ले बुला विदा ले रहा था।

"सुनाओ, भैया मनोहर !"

"हाँ, गुरुदेव !"

"देखो, भाई, भूलना नहीं।"

"राम, राम, गुरुदेव ! क्या कहते हो ? जब से जाने की बात सुनी है, आँखों में नींद नहीं। यह भजन, कीर्तन, कथा और हम गरीबों से सहानुभूति कहाँ पायेंगे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये भूलने की बातें नहीं, गुरुदेव । यदि बाल-बच्चों का झंझट न होता तो आपके चरण न छोड़ता।"

"ठीक है। ठीक है। यह भी बहुत आवश्यक है । अच्छा, भैया, मेरे लिए भगवान् से प्रार्थना करना। अब तुम जाओ। बहुत देर हो गई है तुम्हें।"

इसी प्रकार एक-एक कर सबको विदा कर दिया। यह विदा कभी-कभी तो अति हृदयविदारक हो उठती थी। बातें करते-करते लोग रोने लगते थे। जिन लोगों के झगड़े निपटाने में पथिक सहायक हुआ था, वे उसके चले जाने को बहुत अनुभव कर रहे थे। अपनी पहली अवस्था और उसको सुधारने में पथिक की सहायता का वर्णन करते थे और आँखें भर-भरकर रोते थे। कुछ लोग पथिक का देवा में आना शुभ मानते थे। वे समझते थे कि श्रापित बगिया के श्राप को मिटाने वाला वही है। अब उसके वहाँ से जाने को अपशकुन मानते थे। उन्हें भविष्य पूर्ण चन्द्रमा का काली घटाओं में छिप जाना-सा प्रतीत होता था ।

राजमाता के कहने पर पथिक को सुरेश ने गुप्त रूप से आर्थिक सहायता देने का वचन दिया। मोहन तो पथिक के साथ जाने के लिए बिलकुल तैयार था। बेनी और बेनी की स्त्री पहले से ही देवा से रवाना हो चुके थे। इस प्रकार पथिक को अपने भविष्य के काम की योजना बनाने में और उसे कार्यरूप में लाने के लिए कुछ रुपये का वचन और दो श्रद्धालु भक्त भी मिल गये।

इस तमाम विदाई के समय नलिनी पथिक का आँचल पकड़े बैठी रही। लोगों को वापस घर भेजते हुए रात बहुत गुज़र गई थी। नलिनी आँचल पकड़े-पकड़े सो गई। मोहन उसे उठाकर घर ले गया।

: १४ :

प्रान्तीय धारा-सभाओं के चुनाव में कांग्रेस ने भाग लिया और उसे आशातीत सफलता मिली। इस सफलता को देख सरकार भी घबराई। कांग्रेस की ओर से धारा-सभाओं में भेजे हुए सदस्यों का एक सम्मेलन दिल्ली में हुआ और उसमें यह निश्चित हुआ कि यदि सरकार यह आश्वासन दिलाये कि गवर्नर प्रांत के प्रबन्ध में मंत्रियों के कामों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तो कांग्रेस उन प्रांतों में, जहाँ उनका बहुमत है, मन्त्री-मण्डल बनायेगी, और यदि यह आश्वासन न मिला तो कांग्रेस धारा-सभाओं में बहुमत रखते हुए भी विरोधी दल बनायेगी।

यह परिस्थिति ऐसी थी कि प्रान्तीय धारा-सभायें बिना इस आश्वासन के चल नहीं सकती थीं। विवश हो वायसराय को यह आश्वासन देना पड़ा। यद्यपि सन् १९३५ के विधान में ऐसे आश्वासन देने की बात नहीं थी, तो भी धारा-सभाओं को बनने से पूर्व टूट जाने से बचाने के लिए यह आवश्यक हो गया। भारतवर्ष में ग्यारह प्रांत थे। इनमें से सात में तुरन्त कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल बन गये और काम आरम्भ हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन मन्त्री-मण्डलों ने सबसे पहला काम यह किया कि राजनैतिक कैदियों को छोड़ दिया। गवर्नर इस नीति का विरोध करते रहे, परन्तु मन्त्री लोग अपने इस कार्यक्रम पर डटे रहे। दो प्रांतों में तो मन्त्री-मण्डलों को त्यागपत्र तक देने की धमकी देनी पड़ी।

पश्चात् कृषकों के विषय में आर्थिक सुधार के साधारण कानून बनने लगे। इसके साथ शराबबन्दी के कार्यक्रम पर भी कानून बने।

वे लोग जो सन् पैंतीस के विधान को भारतवर्ष की वैधानिक उन्नति की अन्तिम अवस्था नहीं समझते थे, और यह समझते थे कि सरकार से अभी फिर एक भारी टक्कर होने वाली है, वे कांग्रेसी मन्त्री-मण्डलों के इन कानूनी कार्यक्रमों को बहुत ही घटिया समझते थे। यह पत्तों को पानी देने के समान था। कानून अच्छे-से-अच्छे भी केवल पुस्तकों में लिखे रह जाते हैं यदि कानून चलाने वाले घटिया आदमी हों। ये लोग कांग्रेसी मन्त्री-मण्डलों को महीनों और वर्षों इन व्यर्थ के कानूनों को बनाने में व्यय करते देख बेचैन हो रहे थे।

पथिक इन लोगों में से एक था। उसने कलकत्ते में एक अंग्रेज़ी मासिक में लेख छपवाया था, जिसने विचारशील लोगों में हलचल मचा दी थी।

लेख का शीर्षक था :

'कांग्रेसी मन्त्री-मण्डलों के सामने रचनात्मक कार्यक्रम'

कांग्रेस के रचनात्मक कार्यक्रम अर्थात् खद्दर, हिन्दू-मुस्लिम एकता, अछूतोद्धार और शराबखोरी बन्द करने का इस लेख में उल्लेख नहीं था। पथिक ने इनको एक समाज-सुधार का कार्यक्रम बताया था। यह राजनैतिक कार्यक्रम नहीं है। इसके स्थान पर पथिक का कार्यक्रम था : यह (१) स्कूलों और कॉलेजों की शिक्षा में सुधार किया जाये। (२) सरकार के वे कर्मचारी जो किसी प्रतियोगिता परीक्षा को पास किये बिना नौकरी पर लगाये गये हैं, तुरन्त प्रतियोगिता परीक्षा में भेजे जायें। जो रियायती, किसी सिफारिश से अथवा किसी विशेष बिरादरी से सम्बन्ध रखने से नौकर हुए हैं, उन्हें प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने को कहा जाये। (३) किसी भी आदमी को, जो स्वयं या जिसके परिवार के लोग कभी देशद्रोही रहे हैं, सरकारी नौकरी नहीं दी जाये। (४) उन परिवारों के लोगों को, जो कभी किसी भी देश को आज़ाद करने के आन्दोलन में सम्मिलित हो चुके हैं अथवा हानि उठा चुके हैं, ज़िम्मेदारी के पदों पर नियुक्त किया जाये। (५) उन अफसरों तथा सरकारी कर्मचारियों पर, जिन्होंने पहले किये गये स्वतन्त्रता के आन्दोलनों में सामयिक कानून से बढ़कर कठोरता का व्यवहार किया है, अथवा ऐसा करने का जिन पर सन्देह है, हाईकोर्ट जजों की एक तहकीकात कमेटी बैठाई जाये। (६) राष्ट्रीय रक्षक दल की नींव डाली जाये।

इस लेख के अन्त में लिखा था कि कांग्रेसी मन्त्री-मण्डलों को कांग्रेसी पार्टी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण्डल न बनकर इस कार्यक्रम में सहयोग देने वाले सदस्यों का मण्डल बन जाना चाहिए।

मिस्टर अवधबिहारी माथुर को कहीं से यह कार्यक्रम हाथ लग गया। वे इसे रद्दी की टोकरी में फेंकने ही वाले थे कि उनकी दृष्टि लेखक के नाम पर जा पड़ी। नाम था पथिक। पथिक से उन्हें देवा के पथिक का स्मरण हो आया।

अब उन्होंने इस लेख को अधिक ध्यानपूर्वक पढ़ा। पथिक ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम की व्याख्या भी की थी। मिस्टर माथुर इसे पढ़कर गम्भीर विचार में पड़ गये।

अगले दिन वे प्रधानमन्त्री से मिले और पथिक का लेख पढ़ने के लिए दिया। कई दिन पश्चात् मिस्टर माथुर को प्रधानमन्त्री से मिलने का अवसर मिला। मिस्टर माथुर ने पथिक के लेख के विषय में पूछा। उसने क्षमा माँगते हुए कहा, "मिस्टर माथुर, मुझे अवकाश नहीं मिला।"

"परन्तु वह तो आपको अवश्य पढ़ना चाहिए और शीघ्र ही।"

"अच्छी बात, आज पढ़ने का यत्न करूँगा।"

कई बार याद दिलाने पर प्रधानमन्त्री ने लेख पढ़ा। अगली बार जब वह मिस्टर माथुर से मिला तो कहने लगा, "इस लेख का लिखने वाला कौन है?"

"क्यों?"

"कोई पागल प्रतीत होता है।"

मिस्टर माथुर ने मुस्कराते हुए कहा, "हाँ, विशेष बात बताने वाले पागल ही तो होते हैं।"

"राजनीति में कोई नवीन पट्ठा है। इसने मनोविज्ञान का अध्ययन नहीं किया प्रतीत होता।"

मिस्टर माथुर ने कहा, "यह आदमी कौन है और कौन नहीं, इससे कोई मतलब नहीं। मैं तो आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि उसके कार्यक्रम में आपने कौन-सी बात गलत देखी है?"

"वह कार्यक्रम असम्भव है।"

"क्यों?"

"गवर्नर चलने नहीं देंगे। वायसराय बाधा डालेगा। सरकारी मुलाज़िम नाराज़ हो जायेंगे।"

"तो गवर्नर, वायसराय और सरकारी मुलाज़िमों को प्रसन्न करने के लिए आपने मन्त्री-मण्डल बनाये हैं?"

"सो तो नहीं। परन्तु इस व्यर्थ की बात के लिए उनसे झगड़ा करना ठीक नहीं।"

"ये बातें व्यर्थ की हैं या देशोन्नति का आधार?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं ऐसा नहीं समझता।"

"क्या पथिक का यह लिखना सर्वथा ठीक नहीं कि एक अफसर जो देश को बेचकर अफसर की पदवी पर पहुँचा है, वह सरकारी दफ्तर में रहकर सदैव राष्ट्रीयता के लिए हानिकर सिद्ध होगा ?"

"सिद्धान्त रूप से तो यह बात ठीक है, परन्तु अफसर लोग तो प्रायः सरकार की नीति के चलाने वाले हैं। जब हम नीति ही बदल देंगे तो सरकारी अफसर हमारी नीति चलायेंगे।"

"और जब आप मन्त्री-मण्डल से बाहर होंगे तो वही अफसर फिर इंगलैंड के हित के लिए जी तोड़ प्रयत्न करेंगे।"

"मगर हम कर ही क्या सकते हैं ? ज्योंही हम ऐसा करेंगे, गवर्नर हमें निकाल बाहर करेगा।"

"श्रीमान्जी, जब तक आप उन लोगों का बहिष्कार नहीं करते जिन्होंने देश-द्रोह किया है और उन लोगों को ज़िम्मेदार पदवियाँ नहीं देते जिन लोगों के रक्त से स्वाधीनता का पथ रंजित है, तब तक आप समय और शक्ति का अपव्यय कर रहे हैं।"

"मगर हमें यह करने कौन देगा ?"

"तो फिर मन्त्री-मण्डल बनाने का लाभ ही क्या है? ये किसान सम्बन्धी कानून और शराबबन्दी तो आपके त्यागपत्र देने के चौबीस घण्टे पश्चात् रद्द कर दिए जायेंगे। सरकार ने एक सौ वर्ष के राज्य में एक तो यह किया है कि स्कूल और कॉलेजों में अपने ढंग की शिक्षा चलाकर देशद्रोहियों की फौज तैयार कर ली है। ये पढ़े-लिखे नौजवान तीस रुपया मासिक की नौकरी के लिए देश को बेचने को तैयार हो जाते हैं। दूसरी बात जो सरकार ने की है, वह यह है कि देश-भर के गद्दारों को सरकारी महकमे में एकत्रित कर लिया है। यदि ये गद्दार किसी पदवी के योग्य नहीं होते तो इन्हें बिना योग्यता की परीक्षा के ही रख लिया जाता है। आखिर जब तक ये बातें हैं, आपका मन्त्री-मण्डल क्या कर सकता है और जो कुछ कानून आप बना रहे हैं, वे कब तक चालू रह सकते हैं ?"

"मगर हम तो महात्मा गांधी का रचनात्मक काम नहीं छोड़ सकते।"

मिस्टर माथुर को बहुत निराशा हुई। घर लौटते ही उन्होंने कांग्रेस कमेटी से, कांग्रेस पार्टी से और धारा-सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया।

देवा में फिर चुनाव हुआ, मगर इस बार सुरेश खड़ा नहीं हुआ। ज़िले के एक साधारण वकील मिस्टर श्रीवास्तव, कांग्रेस टिकट ले, बिना मुकाबले के सदस्य हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टूडेंट्स फैडरेशन

हज़रतगंज के एक रेस्टोरेंट में कुछ नवयुवक बैठे चाय पी रहे थे। एक नवयुवक, जो दुबले-पतले शरीर वाला था और बहुत ही फैशनेबल अंग्रेज़ी ढंग के कपड़े पहने हुए था, चाय की सुरकी लगाते हुए बोला, "वह नहीं आ रही।"

इस मण्डली में एक युवक मोटे खद्दर का कुर्ता और धोती तथा चप्पल पहने हुए बैठा था। वह पेस्टरी का एक टुकड़ा दाहिने हाथ में पकड़े हुए अपने विचार में मग्न देख रहा था। एकाएक बोल उठा, "वह कौन ?"

"सलीमा।" पहले बोलने वाले ने उत्तर दिया।

"भाई विनोद, तुम सदा उसकी ही चर्चा में क्यों लगे रहते हो ? वह यह नहीं कर रही और यह कर रही है। वह वहाँ जा रही है और वहाँ नहीं जा रही। आखिर क्या उसके बिना संसार चल नहीं सकता ?"

"दादा, तुम नहीं समझ सकते। संसार उसके बिना चले या न चले, मगर मैं उसके बिना नहीं चल सकता।"

"तो तुम भी मत जाओ। लखनऊ से तीन प्रतिनिधि क्या पर्याप्त नहीं होंगे ?"

एक और बोला, "वाह ! इतनी बड़ी यूनिवर्सिटी से केवल तीन प्रतिनिधि ? और फिर, दादा, हमारा पक्ष समर्थन करने के लिए किसी वक्ता की भी तो आवश्यकता है। मिस्टर विनोद को छोड़कर हममें से और बोल ही कौन सकता है ?"

"तो फिर मिस्टर विनोद चलें और अपनी धाराप्रवाह अंग्रेज़ी बोलने की योग्यता का प्रदर्शन करें। मैंने कब कहा कि वह न चलें ?"

"परन्तु बिना सलीमा के तो इनमें बोलने की स्फूर्ति ही नहीं आती। यदि वह न गई तो इनकी वक्तृता फीकी पड़ जायेगी।"

"तो फिर क्या किया जाये ?" खद्दरपोश दादा ने निराशा का भाव दिखाते हुए कहा।

विनोद ने कहा, "मेरी सम्मति है कि हममें से तीन व्यक्ति उसके पास डेपुटेशन लेकर चलें। शायद वह चलने के लिए मान जाये।"

विनोद का प्रस्ताव स्वीकार हो गया। यह निर्णय हुआ कि विनोद, दादा और एक युवक, जिसे श्यामकुमार के नाम से पुकारा जा रहा था, सलीमा के पास यह प्रार्थना करने के लिए जायें कि वह अखिल भारतवर्षीय विद्यार्थी-संघ के वार्षिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिवेशन पर लखनऊ के विद्यार्थी-मण्डल की प्रतिनिधि बनकर जाने से इनकार न करे। अधिवेशन देहली में होने वाला था।

सलीमा नवाब मुर्तज़ाअली खाँ बाराबंकी के एक ज़मींदार की लड़की थी। वह लखनऊ के मैडिकल कॉलेज के दूसरे वर्ष में पढ़ती थी। यों तो कितने ही विद्यार्थी अपनी प्रेम-सामग्री सलीमा के चरणों में स्वाहा किया करते थे, परन्तु विनोदकुमार इस भक्ति में सबसे आगे बढ़ा हुआ था। विनोद भी मैडिकल कॉलेज का विद्यार्थी था। वह चौथे वर्ष में पढ़ता था। लखनऊ के प्रसिद्ध वकील बाबू अवधबिहारी माथुर का लड़का था।

मिस्टर माथुर बहुत ही स्वतन्त्र विचारों के आदमी थे। यद्यपि वह कांग्रेस-आन्दोलन में कभी कैद नहीं हुए थे, इस पर भी कुछ मित्रों के आग्रह पर देवा से कांग्रेस-टिकट पर धारा-सभा की सदस्यता के लिए खड़े हो गये थे। परन्तु ज्योंही उन्हें कांग्रेस-कार्यक्रम का खोखलापन ज्ञात हुआ वह सदस्यता छोड़ बैठे।

व्यक्तिगत बातों में भी वह अति स्वतन्त्र विचार रखते थे। उनकी बैठक लखनऊ नगर-भर के स्वतन्त्र विचार वालों का अड्डा थी। राजनीति, समाज-सुधार, साहित्य, कला-कौशल सब ऐसे विषय बैठक में तीव्र वाद-विवाद और हँसी-मज़ाक के विषय होते थे। विवाह-बन्धन, जात-पाँत के बन्धन, धार्मिक प्रतिबन्ध और खान-पान के झगड़ों की इन बैठकों में कड़ी आलोचना हुआ करती थी।

एक बार इस बैठक में एकत्रित होने वाले लोगों में कई दिन तक विवाह-बन्धन के विषय पर वाद-विवाद चलता रहा। उस समय एक आविष्कारक प्रतिभा रखने वाले मित्र ने इस मण्डली को असन्तुष्ट पतियों की मण्डली का नाम दे दिया। मण्डली के प्रधान बाबू अवधबिहारी माथुर, एम० ए०, एलएल० बी० माने गये। ये विनोदकुमार के पिता थे।

ऐसे पिता का पुत्र होकर विनोदकुमार विचारों की विशालता में कुछ आगे ही बढ़ा था। आरम्भ से ही राजनैतिक सभाओं में जाना, वहाँ व्याख्यान देना, जलसे-जुलूसों का प्रबन्ध करना, कॉलेज में किंचित्मात्र भी असन्तोषजनक बात होने पर डेपुटेशन बनाना और हड़ताल कराना उसके बायें हाथ के खेल थे। भावुकता से भरपूर, उग्र विचार रखने वाला विनोद प्रोफ़ेसरों के लिए एक समस्या बना हुआ था। वह प्रतिभाशाली था। अपना बहुत-सा समय सार्वजनिक कामों में व्यय करने पर भी अपनी श्रेणी में सबसे अच्छे नम्बर लेकर पास हुआ करता था।

विनोद के लिए सार्वजनिक काम मनोरंजन थे। कुछ घण्टे ऐसे काम करके वह अपनी पढ़ाई में भली-भाँति मन लगा लेता था। उसके पढ़ने का समय प्रायः रात के ग्यारह बजे से रात के तीन बजे तक होता था। यह बात उसने अपने पिता से सीखी थी। वह भी रात के साढ़े दस बजे बैठक से उठ अपने मुकदमे देखने के लिए दफ्तर में चला जाता था और बैठक में आये हुए मित्र विदा हो जाते थे। वही समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद को शान्ति से घर पर पढ़ने के लिए मिल जाता था।

तीन बजे रात को सोकर विनोद प्रातः आठ बजे उठा करता था। स्नान और सुबह का नाश्ता करके दस बजे से पूर्व कॉलेज पहुँचता था। लंच कॉलेज में ही होता था। सायंकाल को चाय के पश्चात् सभा, समाज, मित्र-मण्डली, पब्लिक जलसों इत्यादि में सम्मिलित होना और फिर रात का खाना खाकर एक-दो घण्टे सोना, इस प्रकार काम चलता था।

पोशाक पहनने का ढंग उसे खूब आता था। घटिया कपड़े भी उसके शरीर पर सज जाते थे। वह चुस्त, परन्तु हलके शरीर वाला युवक था। छोटे-से मुख में बड़ी-बड़ी आँखें, विशाल मस्तक और सिर पर घुंघराले बाल उसकी पहचान थे।

जब से सलीमा मैडिकल कॉलेज में दाखिल हुई थी, विनोद का ध्यान उसकी ओर खिच गया था। उसका सौंदर्य तो सबको दिखाई देता था, परन्तु विनोद को उसके बाहरी सौंदर्य के भीतर, कुछ और अति उज्ज्वल, चमत्कारक और साधारण स्त्रियों में अनुपस्थित बात भी दिखाई देती थी। विनोद अपने इस छोटे-से जीवन में अनेक पुरुषों और स्त्रियों के सम्पर्क में आ चुका था। उसके परिचितों में अच्छे लोग भी थे और बुरे भी। सलीमा को वह इन दोनों श्रेणियों से विलक्षण समझता था। वह उसके लिए देवी थी।

एक दिन कॉलेज के विद्यार्थी-मण्डल के साप्ताहिक अधिवेशन में सलीमा व्याख्यान देने के लिए उठी। उसे कहना था कि पुरुष स्त्रियों को छोटा समझकर भूल करते हैं और इस प्रकार वे अपने परिवार की और जाति की हानि, अवनति और पतन का कारण होते हैं। परन्तु जब वह बोलने लगी तो एक-दो वाक्य बोलकर ही चुप रह गई। लड़कों ने तालियाँ पीट दीं और वह विना कुछ कहे बैठ गई। विनोद ने उठकर सलीमा के स्थान पर बोलना आरम्भ कर दिया। उस दिन उसका नाम कार्यक्रम में नहीं था। प्रधान ने सलीमा का समय उसको देने में आपत्ति नहीं की। उसने सलीमा के विषय पर ही कहा।

यों तो विनोद एक अच्छा-खासा वक्ता था, इस पर भी जिस सरलता, सरसता और विद्वत्ता से वह उस दिन बोला वह अतुलनीय थी। प्रोफेसर भी चकाचौंध हो उसका मुख देखते रह गये। सलीमा को दस मिनट तक बोलना था, परन्तु विनोद के भाषण में सब लोग इतने लीन हुए कि समय का प्रतिबन्ध नहीं रह सका। वह घण्टा-भर बोलता रहा। यह वक्तृता आग बरसाने वाली थी। कभी तो वह नारी जाति के मनुष्य जाति पर अहसानों का वर्णन करता था, कभी उसके उत्तरदायित्व का उल्लेख करता था। एक ओर सीता-सावित्री की स्वतन्त्रता का वर्णन था, दूसरी ओर यूरोपियन महिलाओं के कारनामों का उल्लेख था। अन्त में मनु को, जिसने स्त्रियों को सदा पुरुषों के अधीन रहने की व्यवस्था दी है, आधुनिक जगत् के सर्वमान्य मत की वेदी पर फाँसी चढ़ाने योग्य बताकर, कॉलेज को गुंजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने वाली करतल ध्वनि में, बैठ गया।

सभा के पश्चात् प्रिंसिपल ने उसकी बहुत बढ़िया वक्तृता पर उसे बधाई दी। विनोद ने सलीमा की ओर संकेत कर कहा, "यह सब इनकी कृपा है। इन्होंने ही मुझमें इसके लिए स्फूर्ति पैदा की है।"

सलीमा, जो व्याख्यान न दे सकने से लज्जा अनुभव कर रही थी, अपने ही पक्ष को अपने से अधिक बलपूर्वक और अधिक सुन्दर भाषा में प्रतिपादित होते देख प्रसन्न हो गई। अब वह आगे बढ़कर कहने लगी, "धन्यवाद, मिस्टर विनोद। मैं अपने पक्ष को इतनी सुन्दरता से उपस्थित नहीं कर सकती थी। आपने तो कमाल ही कर दिया है। आपका कहना, कि मनु उन्नति की वेदी पर फाँसी चढ़ाने योग्य है, कैसा सुन्दर है।"

यह विनोद का सलीमा से पहला परिचय था, जो धीरे-धीरे बढ़ता ही गया। यहाँ तक कि कॉलेज में प्रसिद्ध हो गया कि विनोद की वक्तृता देने की शक्ति को स्फूर्ति देने के लिए सलीमा का होना अत्यावश्यक है।

परिचय के परिपक्व होने पर विनोद और सलीमा का मिलना-जुलना बढ़ने लगा। प्रायः सभा-समाज में दोनों इकट्ठे जाते थे। घण्टों ही अनेकानेक विषयों पर बातें करते रहते और जिस दिन कोई काम न होता अथवा करने को कोई बात न होती तो दोनों कॉलेज के अन्य विद्यार्थियों के यहाँ अथवा बोर्डिंग हाउस में चले जाते।

धीरे-धीरे यह बात फैलने लगी कि विनोद और सलीमा का विवाह होगा और यह बात सलीमा के पिता नवाब साहब के कानों तक पहुँची। विनोद के पिता बाबू अवधबिहारी का नाम लखनऊ में बहुत मान से लिया जाता था। वे यद्यपि कोई ज़मींदार नहीं थे तो भी बड़े-बड़े ज़मींदारों की आय के बराबर वकालत से ही पैदा कर लेते थे। लाखों रुपये साल की आय थी और विनोद बाप का अकेला ही पुत्र था। नवाब साहब सलीमा का चुनाव सुन 'लाहौल विला' बोल उठे।

सलीमा रात देर से घर आई थी। यह उस रात की बात थी जिस रात विद्यार्थी-मण्डल की कार्यकारिणी की बैठक ने अखिल भारतवर्षीय विद्यार्थी-महा-मण्डल के लिए प्रतिनिधि चुने थे। सलीमा की माँ और बाप दोनों उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लम्बी-सी नाल वाले हुक्के से कश लगाते हुए नवाब साहब ने सलीमा को आया देख कहा, "बेटी, आज बहुत देर कर दी है। तुम्हारी माँ तुम्हें एक जगह ले जाना चाहती थी।"

"स्टूडैंट्स यूनियन की इन्तज़ामिया कमेटी की मीटिंग थी। अम्मी ने मुझे पहले तो बताया नहीं था।"

"तो तुम उसकी इन्तज़ामिया कमेटी में चली गई हो? बहुत खूब! बहुत जल्दी-जल्दी तरक्की कर रही हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, अब्बाजान, हमारे कॉलेज के दो प्रतिनिधि ही लिये गये हैं। उनमें एक मैं हूँ और दूसरे मिस्टर विनोद।"

"विनोद ? वही, बाबू अवधबिहारी माथुर का लड़का ?"

"हाँ, वही। गज़ब का बोलने वाला है। असल में तो उसकी ही कोशिश से मेरा चुनाव हुआ है। और, अब्बाजान, स्टूडैंट्स फैडरेशन के देहली में होने वाले इजलास के लिए लखनऊ-भर के तुलबा के नुमाइन्दे भी हम ही चुने गये हैं। विनोद ने तो आज गज़ब ही कर दिया। ऐसे ढंग से बात की कि पाँच डैलीगेटों में दो तो हम ही चुने गये और बाकी सब कॉलेजों में से तीन।"

इस बात ने नवाब साहब को गहरे विचार में डाल दिया। वह जल्दी-जल्दी हुक्के को गुड़गुड़ाने लगे। कुछ सोचकर फिर पूछने लगे, "यह फैडरेशन का जलसा कब होगा ?"

"अगले हफ्ते।"

"क्या और लड़कियाँ भी जा रही हैं ?"

"जहाँ तक मुझे मालूम है, नहीं।"

"तो तुम अकेली कैसे जाओगी ? वहाँ कहाँ ठहरोगी ?"

"इसका प्रबन्ध भी हो गया है। मिस्टर विनोद के एक सम्बन्धी वहाँ रहते हैं। उनकी बीवी है, लड़कियाँ हैं जो कॉलेज में पढ़ती हैं। वहीं ठहरने का इन्तज़ाम होगा।"

"उनको तो हम नहीं जानते।"

"तो फिर क्या हुआ ? मैं तो ऐसे ही जाकर होटल में ठहरने को तैयार थी।"

"होटल में ! अकेली ?"

"नहीं, अकेली नहीं। हम पाँच तो डैलीगेट बनकर जा रहे हैं और कुछ तुलबा 'विज़िटर्स' बनकर जायेंगे। वैसे अगर दो-चार होते तो होटल में ही ठीक रहता। मगर सबका होटल में खर्चा बहुत उठेगा। इसलिए प्राइवेट प्रबन्ध किया है। मैं और विनोद नई दिल्ली ठहरेंगे।"

"लेकिन, वेटी, तुम अकेली विनोद के साथ ?"

"तो क्या हुआ ? विनोद बहुत अच्छा लड़का है।"

"तो तुम उसे पसन्द करती हो ?"

इस प्रश्न का आशय सलीमा नहीं समझी। वह पसन्द शब्द को साधारण अर्थों में ही समझती थी। उसने तुरन्त ही कह दिया, "हाँ, वह बहुत ही लायक डॉक्टर बनेगा।"

"लेकिन क्या वह मुसलमान हो जायेगा ?"

सलीमा को अभी अपने पिता की बातों का अर्थ समझ में नहीं आया। वह इस प्रश्न पर अचम्भा प्रकट करते हुए बोली, "इसकी क्या ज़रूरत है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो फिर यह कैसे होगा ?"

"तो क्या मुसलमान के साथ मैं अकेली जा सकती हूँ और हिन्दू के साथ नहीं ?"

सलीमा की माँ ने बात साफ करने के लिए कह दिया, "दिल्ली जाने की बात नहीं। अब तो तेरे पसन्द करने की बात हो रही है।"

"तो क्या मैं मुसलमानों को पसन्द कर सकती हूँ ? क्या हिन्दू अच्छे नहीं हो सकते ?"

सलीमा की माँ ने बात को और स्पष्ट करने का यत्न किया, "बिटिया, तुम कैसे भोलेपन की बात करती हो ! क्या तुम यह भी नहीं समझ सकतीं कि तुम्हारे अब्बाजान तुम्हारे होने वाले शौहर की बात कर रहे हैं ?"

सलीमा शौहर का नाम सुनते ही सोफे पर से, जिस पर वह बैठी थी, कूदकर उठ खड़ी हुई और एकाएक अपने पिता के कहने का आशय समझ विस्मय, खुशी और अविश्वास का भाव बनाती हुई पूछने लगी, "शौहर, विनोद बाबू ? ओ, गुड गॉड, आपको यह किसने बताया है ?"

माँ और बाप इस खुशी के प्रदर्शन को समझ नहीं सके। सलीमा की माँ को याद था कि जब उसकी नवाब साहब से शादी की सूचना उसे पहले-पहल मालूम हुई थी तो वह लज्जा में डूब गई थी। नवाब साहब तो इस खुशी को व्यंग्य के भाव में समझ रहे थे। वह नहीं समझ सकते थे कि एक लड़की अपनी शादी के विषय में अपने माता-पिता के सम्मुख कैसे खुशी प्रकट कर सकती है। दोनों अचम्भे में सलीमा की ओर देख रहे थे। सलीमा ने फिर सोफे पर बैठते हुए कहा, "अब्बाजान, आपकी डिक्शनरी में पसन्द लफ्ज़ के सिर्फ एक ही मायने हैं, यानी शौहर पसन्द करना। मैं तो इस लफ्ज़ को ज्यादा वसीह मायनों में समझ रही थी।"

"तो तुम उसे बतौर शौहर पसन्द नहीं करतीं ?"

"मेरे शौहर, विनोद बाबू ? नहीं, मैं नहीं जानती। हकीकत यह है कि मैंने अभी तक इस विषय पर सोचा ही नहीं। इसके लिए मुझे फुर्सत ही कहाँ है ?"

इस पर नवाब साहब ने हुक्के की नली मुँह से निकाल एक तरफ कर दी और अपना दृढ़ निश्चय प्रकट करते हुए कहा, "इस मज़मून पर सोचने की मुझे फुर्सत है। लोग इस बात की चर्चा करने लगे हैं और मैं आज ही विनोद के बाप से मिलकर इसका फैसला कर लेना चाहता हूँ।"

सलीमा चुप रही। वह निश्चय नहीं कर सकी कि अपने पिता को वहाँ जाने से रोके या न रोके। वह जानती थी कि उसके पिता विनोद के पिता को जानते हैं और दोनों में पुरानी मुलाकात है। वह सोफे से उठ खड़ी हुई और यह कहकर कि उसे कल का पाठ तैयार करना है, अपने कमरे में चली गई।

अपने पिता की बात उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रही थी। पढ़ाई तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या हो सकती थी, वह पलंग पर लेट गई और मन में इस प्रस्ताव पर मनन करने लगी। उसने विनोद को अपने भावी पति के रूप में कभी नहीं देखा था। वह तो केवल कॉलेज का साथी था। पढ़ा-लिखा, बातें करने में अति चतुर, जलसे-जुलूसों के प्रबन्ध करने में सिद्धहस्त और पार्टियाँ देने में विशालहृदय। इस पर भी वह उसका पति हो सकता है, या यों कहो कि वह विनोद की पत्नी हो सकती है, यह एक विकट समस्या थी। आज वह मित्र, साथी और पति शब्दों के अर्थों में भेद और समानता पर विचार करने लगी।

मित्र से हम मिलते हैं, बराबरी का व्यवहार करते हैं और किये जाने की इच्छा करते हैं। मित्रों से हमारी विचार-समानता होती है। यदि किसी मित्र के साथ मतभेद बहुत गहरा हो जाये तो मित्रता शिथिल हो जाती है। पति-पत्नी का सम्बन्ध तो ऐसा नहीं होता। उसमें विचार-समानता का बन्धन नहीं होता। मतभेद होते हुए भी एक-दूसरे से सहयोग और व्यवहार रहता है। मतभेद सहन किया जाता है और इसे सहन करने में आनन्द अनुभव होता है।

तो पति क्या साथी है? कहने वाले पति को जीवनसाथी कहते हैं। साथी एक बहुत छोटा शब्द है। यह चिरस्थायी नहीं है। जब तक एक-दूसरे का साथ रहे अर्थात् एक-दूसरे के काम निकाल सकें, तब तक तो साथी, नहीं तो साथ बिछुड़ जाता है। जीवन के पग-पग पर नये साथी बनते हैं और बिछुड़ते हैं। बचपन के साथी, स्कूल और कॉलेज के साथी, सैर करने के साथी, शतरंज खेलने के साथी और कई तो गप-शप करने के साथी होते हैं। सब अपने-अपने समय और अवसर पर आते हैं और बिछुड़ जाते हैं। कभी मालिक का साथी नौकर भी होता है। कभी मनुष्य कुत्ते-बिल्ली को साथी बनाता है। अभिप्राय यह है कि साथी और पति-पत्नी के सम्बन्ध में भारी अन्तर है। पति-पत्नी के सम्बन्ध में केवल एक-दूसरे के आश्रय जीवन व्यतीत करने अथवा समय बिताने की बात नहीं है। इसमें तो परस्पर श्रद्धा और भक्ति का समावेश है।

पति-पत्नी मित्र नहीं, साथी नहीं, तो फिर क्या हैं, यह विचारते-विचारते बहुत रात चली गई। इन सब विचारों के तराजू पर विनोद तोला जा रहा था और वह तोल में कम ठहरता था।

: २ :

सलीमा के पिता ने इस विषय में तुरन्त ही निश्चय कर लेना ठीक समझा। वह अवधबिहारी माथुर से रिश्ता करना ठीक ही समझता था, परन्तु मुसलमान लड़की का पति मुसलमान ही होना चाहिये, ऐसी उसकी धारणा थी। यह ठीक था कि विनोद का पिता बहुत ही स्वतन्त्र विचार रखता था, परन्तु क्या वह अपने इकलौते बेटे को एक नवाब की लड़की से विवाह के लिए मुसलमान मत स्वीकार कर लेने देगा? यही जानने के लिए और पश्चात् कुछ दूसरी बातों का निर्णय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिए वह उसी शाम मिस्टर माथुर की बैठक में जा पहुँचा।

मित्र-मण्डली ब्रिज खेल रही थी। नवाब साहब की इत्तला होते ही मिस्टर माथुर उठे और नवाब साहब को एक बगल के कमरे में ले गये। आदर-सत्कार से हाथ मिलाकर एक सोफे पर बैठाकर कहने लगे, "नवाब साहब, बहुत अर्से के बाद दीदार नसीब हुए हैं। आपसे मिलकर बहुत खुशी हासिल हुई है। आप तो मेरे पुराने मेहरबानों में से हैं। बताइये, क्या नोश फरमाइयेगा, चाय या शर्बत?"

नवाब साहब ने जवाब में कहा, "शुक्रिया, बहुत शुक्रिया। शर्बत का तो मौसम नहीं और चाय मैं इस वक्त पीता नहीं। कुछ ज़रूरत भी नहीं है। आपने पुराने ताल्लुकात को याद रखा, आपकी इनायत है।"

मिस्टर माथुर ने अब सिगरेट केस खोलकर सिगरेट पेश करते हुए कहा, "खैर, इसमें तो एतराज़ नहीं हो सकता। आप इस नाचीज़ के घर तशरीफ लाये तो यही थोड़ी-सी खातिर कबूल कर ली जाये।"

इस पर दोनों ने सिगरेट सुलगाये। अब निश्चिन्त हो नवाब साहब ने मतलब की बात आरम्भ की। वह कहने लगे, "मैं एक निहायत ज़रूरी काम से आया हूँ। आपके साहबज़ादे मैडिकल कॉलेज में पढ़ते हैं न?"

"हाँ, इस साल फोर्थ इयर (चौथे वर्ष) में गया है।"

"उसकी शादी के मुताल्लिक आपका क्या ख्याल है?"

मिस्टर माथुर ने निश्चिन्तता प्रकट करते हुए कहा, "मेरे ख्याल में उसकी उम्र अभी शादी के लायक नहीं है। इस पर भी मैं इस मामले में दखल नहीं दूंगा। उसे इसमें पूरी आज़ादी है।"

"तो आप उसे अपनी शादी करने की इजाज़त दे देंगे चाहे वह कब, कहीं और किन्हीं शर्तों पर करे?"

"इजाज़त? मैं इजाज़त देने वाला कौन हूँ? देखिये नवाब साहब, लड़का पढ़-लिखकर होशियार हो गया है। स्कूल-कॉलेज की पढ़ाई के अलावा मैंने उसे दुनियादारी की भी तालीम दी है। उसके लिए मेरी बैठक, जो दुनियादारी की तालीमगाह है, हमेशा खुली रही है। इतना करने के बाद मैं समझता हूँ कि वह अपने भले-बुरे में तमीज़ कर सकता है। मेरा इजाज़त देना तो दूर रहा, मैं इसमें राय देना भी पसन्द नहीं करूँगा।"

नवाब साहब ने खाँसकर ज़रा गले को साफ कर और सिगरेट को ऐश-ट्रे में रखकर, सावधान हो, कहना शुरू किया, "मिस्टर माथुर, बात यह है कि आपके लड़के की दोस्ती मेरी लड़की से दिन-ब-दिन बढ़ रही है। वह भी उसी के कॉलेज में पढ़ती है। ऐसी हालत में हम लोगों को समझ लेना चाहिये कि एक लड़के-लड़की की दोस्ती का नतीजा क्या हो सकता है। मैं यही जानना चाहता था कि आपका इसकी बाबत क्या ख्याल है? भाई, हम हिन्दुस्तान में रहते हैं और इत्तफाक से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप हिन्दू हैं और मैं मुसलमान। सिर्फ इतना ही नहीं, हम चाहे कितने आज़ाद-ख्याल क्यों न हों, फिर भी मज़हब को एक ऊँचा रुतबा देते हैं और खाविन्द-बीवी जुदा मज़हब रख नहीं सकते।"

मिस्टर माथुर बातों के प्रभाव से नवाब साहब की इस भूमिका का आशय समझ गए। इस पर भी उन्होंने विशेष व्यग्रता प्रकट किये बिना कह दिया, "ये बातें मेरे से ताल्लुक नहीं रखतीं। मेरा मज़हब मेरा है। मेरा लड़का अपने लिए अपना मज़हब चुन सकता है। उसकी उमर अब बाईस साल की है। कानून की रू से भी वह अब बालिग है। मैं उसके मज़हब में दखल नहीं रखता।"

"क्या वह हर हालत में आपकी जायदाद का वारिस हो सकता है?"

"वारिस? मैं विरासत के उसूल को नहीं मानता। किसी लड़के या लड़की का हक नहीं कि वह अपने माँ-बाप की जायदाद पर नज़र रखे। मेरे वालिद साहब ने अपनी सब जायदाद मेरी सौतेली माँ को दे दी थी। मेरी जायदाद मेरी अपनी पैदा शुदा है, और मैं अभी नहीं बताना चाहता कि यह मैं किसको दूंगा।"

"तो आपका मतलब यह है कि लड़के को पढ़ने के बाद गरीबी की हालत में कारोबार शुरू करना होगा?"

"क्या डॉक्टरी की आला तालीम हासिल किया हुआ लड़का गरीब कहा जा सकता है?"

"काम चलाने में तो कुछ देरी लगेगी। और क्या जाने इस जद्दोजहद के ज़माने में कब तक हालत पतली रहे।"

"हर एक को अपना रास्ता खुद बनाना चाहिए। मैंने उसे आला तालीम दी है और मैं समझता हूँ, मैंने अपना फर्ज़ अदा कर दिया है।"

"यह तो कुछ भी नहीं।"

अब मिस्टर माथुर ने नवाब साहब पर जिरह आरम्भ कर दी, "लेकिन, नवाब साहब, एक बात तो मैं समझा ही नहीं। क्या मेरे लड़के की शादी आपकी लड़की से तय हो गई है?"

"तय तो नहीं समझिए; हां, तय होने वाली मालूम होती है।"

"क्या आपने अपनी लड़की से इसकी बाबत पूछा है?"

"बज़ाहिर उसे कोई एतराज़ मालूम नहीं होता।"

"क्या वह हिन्दू होने को तैयार है?"

"लाहौल विला! यह कैसे हो सकता है?"

"क्या मेरे लड़के ने मुसलमान होना कबूल कर लिया है?"

"उसे करना होगा, अगर वह मेरी लड़की से शादी करना चाहता है।"

"क्या आपने यह दरियाफ्त कर लिया है?"

"नहीं, अभी नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप दरियाफ्त कर लें। अगर वह सलीमा से शादी करना चाहता है और मुसलमान बनना कबूल करता है तो कर ले। रही कारोबार के शुरू में मदद, तो मेरा ख्याल है कि यह आप इन्तज़ाम कर देंगे। आप जागीरदार हैं। लाखों की आमदनी बिना मेहनत के होती है। दो-चार लाख आप अपने दामाद को दे दीजियेगा तो आपकी लड़की आपकी मशकूर होगी।"

"लेकिन आप भी तो कुछ करिएगा या नहीं ?"

"मैं ज़रूरत नहीं समझता।"

इतना कह मिस्टर माथुर ने बातों का विषय बदल दिया, "हाँ, तो आपकी रियासत का क्या हाल है ? मिस्टर दास अभी भी मैनेजर हैं क्या ? आपके साहबज़ादे अब क्या कर रहे हैं ?"

"वह तो विलायत में है। कल चिट्ठी आई थी कि जर्मनी जाने की सोच रहा है।"

"आप भी एक बार यूरोप की सैर कर आते तो ज़िन्दगी का लुत्फ पा जाते।"

इस प्रकार कुछ और इधर-उधर की बातों के बाद मुलाकात खत्म हुई। नवाब साहब को इस मुलाकात से सन्तोष नहीं हुआ। वह जो चाहते थे, उन्हें वह नहीं मिला।

: ३ :

नवाब साहब जब घर आए तो बेगम साहिबा, जो प्रतीक्षा कर रही थीं, उत्सुकता से पूछने लगीं, "क्या हुआ ?"

"बड़ा काँइयाँ है। आखिर वकील है न। बोला, 'लड़के से पूछ लो। मैं इस मामले में दखल नहीं दूंगा।' मगर उसके चेहरे से मालूम होता था कि रात ही लड़के को डाँट-फटकारकर सीधा कर देगा।"

"आजकल के लड़के वालदेन की नहीं मानते। मेरा ख्याल है, घबराने की कोई वजह नहीं। मुसलमान बनने की बाबत क्या कहा है ?"

"यही कि 'लड़का जाने, उसका मज़हब जाने। मेरा इस बात में कोई ताल्लुक नहीं'।"

"तो ठीक कहता है। शादी तो लड़के की होगी। बाप को इससे क्या मतलब ? हज़रत, लड़का मुसलमान हो जाएगा, यही बड़ी बात है। वकील साहब की लाखों की गैरमनकूला जायदाद तो कहीं जाएगी नहीं।"

"यही तो सब बात थी। वह कहता था, 'मेरी अपनी कमाई जायदाद है। मैं लड़के का इस पर हक नहीं समझता। यह जायदाद किसको दूंगा, अभी नहीं बताऊँगा'।"

बेगम साहिबा, नवाब साहब की भाँति, निराश होने वाली नहीं थीं। बोलीं, "घबराने की बात नहीं है। आखिर बाप-बेटे का रिश्ता तो है ही। कुछ अर्से के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद सब ठीक हो जाएगा। कौन बाप है जो अपने बेटे को सुखी नहीं देखना चाहता ?"

नवाब साहब ने अभी भी संशय प्रकट करते हुए कहा, "यह अवधबिहारी उस बाप का बेटा है जिसने अपनी सब जायदाद अपने लड़के को न देकर लड़के की सौतेली माँ को दे दी थी।"

"मगर विनोद की तो कोई सौतेली माँ नहीं है।"

नवाब साहब को यद्यपि सन्तोष नहीं हुआ था, तो भी रात ज़्यादा गुज़र जाने से सो जाना उचित समझ अपने कमरे में चले गए।

अगले दिन कॉलेज के समय से पूर्व सलीमा की माँ उसके कमरे में पहुँच गई। वह अभी गहरी नींद सो रही थी। माँ ने उसे जगाकर कहा, "आज कॉलेज नहीं जाना क्या ?"

सलीमा घबराकर उठी और घड़ी में वक्त देख जल्दी-जल्दी तैयार होने लगी। सलीमा की माँ ने अपने वहाँ पहुँचने का प्रयोजन बताने के लिए कहा, "बेटी, रात तुम्हारे वालिद शरीफ विनोद के बाप को मिलने गए थे।"

सलीमा इस समाचार से घबरा उठी। उसने सबकुछ छोड़ माँ की ओर देखते हुए पूछा, "क्यों गए थे ?"

"यही, तुम्हारी शादी का तय करने।"

"मेरी शादी ?" सलीमा ने, जो मेज़ के पास खड़ी कपड़े पहन रही थी, माँ के पास आ, कुर्सी के बाज़ू पर बैठते हुए पूछा, "मेरी शादी ? किससे ?"

"किससे ? किससे क्या ! वही, विनोद से। रात ही तुमसे बात हो रही थी न।"

"लेकिन मैंने कह दिया था कि मैंने अभी सोचा नहीं। मुझे सोचने की फुरसत नहीं है।"

"तुम्हें फुरसत न सही, पर तुम्हारे अब्बाजान को तो है। सुनो, वे वहाँ गए थे और तुम्हारी बाबत बातचीत भी हुई थी। विनोद के बाप को उससे तुम्हारी शादी में और विनोद के मुसलमान होने में कोई एतराज़ नहीं है।"

"ओह ! मगर………"

"मगर-वगर कुछ नहीं। अब तुम उससे सब तय कर लो। अगर तुम नहीं कर सकतीं तो मैं ही उसे बुलाकर बात कर लूँगी। देखो, बेटी, अगर यह फैसला हो जाय तो तुम्हारा उसके साथ घूमना ठीक है, वरना तुम्हें कोई भी उसके साथ घूमने नहीं देगा।"

"मगर, अम्मी, मैंने अभी शादी करने का फैसला नहीं किया।"

"शादी तो अभी एक-दो साल बाद हो सकती है, मगर फैसला अभी हो जाना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, अम्मी," सलीमा ने माँ के गले में बाँह डालते हुए कहा, "नहीं, अभी बात भी नहीं हो सकती। मैंने अभी फैसला नहीं किया कि विनोद से शादी करूँगी या नहीं। मुझे कुछ सोचने का मौका दो, अम्मी।"

सलीमा की माँ इस आग्रह से हैरान रह गई। उसने रात सलीमा के चुप रहने से यही समझा था कि वह इसके लिए राज़ी है। अब यह रात में क्या हो गया है। उसने फिर सलीमा को समझाया, "बेटी, तुम्हारे कॉलेज के प्रोफेसर और लड़के तुम्हारी ही चर्चा करते हैं और इसमें भारी बदनामी होती है। अगर उससे तुम्हारी शादी होनी हो तो बात कुछ नहीं, वरना यह ठीक नहीं है।"

"मेरी उससे शादी होनी तय न हुई तो क्या ठीक नहीं है?"

"तुम्हारा उसके साथ घूमना।"

"और अगर विनोद बाबू से शादी के लिए कहा गया और उसने मंज़ूर कर लिया तो?"

"तो यह बात लोगों में ज़ाहिर कर दी जायगी। विनोद बाबू से इस्लाम कबूल करने को कहा जायगा। इस पर तुम मिल-जुल सकोगे।"

"पहले तो मैं विनोद से शादी के लिए तैयार नहीं। दूसरे, किसी का मज़हब तबदील करवाकर मेरी कीमत मुकर्रर की जाय, मुझे मंज़ूर नहीं। साथ ही मेरा ख्याल है कि विनोद मेरी खातिर भी मज़हब तबदील करना मंज़ूर नहीं करेगा। वह मेरा दोस्त है, परन्तु एक बार भी तो उसने मुझसे मुहब्बत का इज़हार नहीं किया। अम्मी, आप लोगों को किसी ने बहका दिया है। हममें शादी का बिलकुल ख्याल नहीं है।"

"ठीक है। ज़बरदस्ती तो शादी हो नहीं सकेगी। मगर एक बार मैं और तुम्हारे अब्बा चाहते हैं कि विनोद से तुम बिलकुल ताल्लुक न रखो।"

"जब तक मैं कॉलेज में पढ़ती हूँ यह कैसे हो सकता है?"

"तो तुम्हारा कॉलेज में पढ़ना बन्द कर दिया जायगा।"

सलीमा बहुत हैरान थी कि क्या करे। उसने एक बार फिर माँ को मनाने के लिए कहा, "अम्मी!"

"बस, अम्मी-अम्मी कुछ नहीं। अगर तुम्हें कॉलेज जाना है तो विनोद से ताल्लुक छोड़ना होगा।"

सलीमा अपनी माँ को मन की बात समझा सकने में अशक्त थी। वह समझती थी कि माँ की शिक्षा बहुत कम थी और वह उन्नत समाज की बातों को समझ नहीं सकती। इस कारण बात टालने के लिए उसने कह दिया, "अच्छी बात। मगर यह आहिस्ता-आहिस्ता होगा। एकदम तो हो नहीं सकता।"

"एक बात तो एकदम हो सकती है कि तुम दिल्ली नहीं जा सकतीं।"

"क्या अब्बाजान का यह फरमान है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ," सलीमा का बाप, जो कमरे के बाहर खड़ा सब बातें सुन रहा था, भीतर आते हुए बोला, "हाँ, मैं भी चाहता हूँ।"

यथार्थ में वह रात-भर एक धनी-मानी हिन्दू के होनहार लड़के को मुसलमान बनाने के सुख-स्वप्न देख रहा था। उस स्वप्न को भंग करने वाली उसकी अपनी ही लड़की सिद्ध हो रही थी। वह सोचता था कि सलीमा ने शादी तो करनी ही है। विनोद धनी है, योग्य है, सुन्दर है, चतुर है, अभिप्राय यह है कि प्रत्येक प्रकार से सलीमा के योग्य है। इस पर तवलीग का काम, एक काफिर को मोमिन बनाने का वसीला! यह मौका बार-बार हाथ में नहीं आएगा। सलीमा ने बाप के मस्तक पर त्योरी चढ़ी देखी तो बोली, "अब्बाजान, आप नाराज़ क्यों हैं?"

"तुम्हारी बातों से खुश ही कैसे हो सकता हूँ?"

"मैंने क्या किया है?"

"तुम विनोद से शादी करने से इनकार जो कर रही हो।"

"मैंने तो रात ही आपसे कहा था कि मैंने इसके मुताल्लिक नहीं सोचा। मैं अब सोच रही हूँ कि मैं उससे शादी नहीं कर सकती। दो साल से मेरी उससे दोस्ती है ज़रूर, मगर एक बार भी न उसने मुझसे, न मैंने उससे इस मज़मून पर बातचीत की है। कैसे मैं समझूँ कि वह मुझसे शादी के लिए राज़ी होगा?"

"उसकी बात हम निपटा लेंगे। हम तो तुम्हारी मन्शा जानना चाहते हैं।"

"मेरी उससे शादी करने की मन्शा नहीं है।"

"तो फिर उसके साथ इतना घूमती क्यों रहती हो?"

"तो क्या जिनकी आपस में शादी होनी हो, वही इकट्ठे घूम सकते हैं?"

"और क्या? औरत और मर्द, जब भाई-बहिन या माँ-बेटे के रिश्ते से बँधे न हों, तो शादी करने के लिए ही घूमते हैं। आखिर तुम घण्टों क्या बातें करते रहते हो?"

"यह बात आपके ज़माने के लोगों के लिए ठीक हो तो हो। आपने चन्द शायरों के कलाम ही तो पढ़े हैं न। और आगे बस। शायर भी ऐसे जिन्हें दुनिया के मुताल्लिक इल्म नहीं था। यह हाली और ज़ौक सिवाय इश्किया नज़्मों के लिखने के और जानते ही क्या थे? यहाँ तो सैकड़ों मज़मून हैं जिनमें दिमाग चक्कर खाता रहता है। कहीं एनाटोमी है, तो कहीं फिज़ियोलोजी। कहीं पैथोलोजी, तो कहीं बैक्टीरियोलोजी। ज़िन्दगी की थ्योरियों की भरमार भी कुछ कम नहीं। इनको छोड़कर सोशियोलोजी, कम्युनिज़्म, कैपिटलिज़्म, डेमोक्रेसी वगैरह-वगैरह इतनी बातें हैं जो सोचने और बताने लगें तो उम्र-भर शादी की याद नहीं आती। बताइये, अब्बाजान, मुल्क की आज़ादी ही क्या कोई छोटा-सा मज़मून है? इस पर, घण्टों क्या, ज़िन्दगी-भर बातें हो सकती हैं।"

"लेकिन लोग तो ऐसा नहीं समझते। तुम्हें अपने बाप-दादा का नाम बदनाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते देख शरम नहीं आती ? तुम्हारा उसके साथ अकेले घूमना हमारे लिए शरम का बायस है।"

इस बात को सलीमा कोरा वहम समझती थी। इस पर भी बहस करना उचित न जान उसने वही बात, जो माँ से कही थी, बाप से भी कह दी, "आहिस्ता-आहिस्ता छोड़ दूंगी।"

"हाँ, और तुम दिल्ली नहीं जा सकतीं।"

"अच्छी बात।"

उस दिन सलीमा ने क्लास में बैठे-बैठे एक पर्चे पर लिखकर, कि वह दिल्ली नहीं जाएगी, चपरासी के हाथ विनोद के पास भेज दिया और पूर्व इसके कि वह आग्रह करे, घर चली आई।

उसी सायंकाल हज़रतगंज में एक रेस्टोरेंट में चाय पीते हुए विनोद और उसके साथियों में वह बातचीत हुई थी जो हम इस भाग के आरम्भ में लिख चुके हैं।

: ४ :

रेस्टोरेंट से वे लोग सीधे सलीमा के घर पहुँचे। विनोद के पहुंचने पर नौकर सलीमा को सूचना दिया करता था और वह तुरन्त नीचे आ खड़ी होती थी। इस दिन नौकर इत्तला करने गया, मगर सलीमा नहीं आई। नौकर ने आकर कहा, "आप भीतर तशरीफ ले आइए।"

नौकर सबको साथ लेकर नवाब साहब के कमरे में जा पहुँचा। नवाब साहब उनको बैठने का संकेत कर उनका मुख देखने लगे। विनोद एक क्षण के लिए घबराया। वह नवाब साहब से मिलने नहीं आया था। पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था। इस पर भी उसने सावधान हो कहा, "साहब, हम तो मिस सलीमा के पास एक डैप्युटेशन लेकर आए हैं। आप मेहरबानी कर उन्हें बुला दीजिए।"

नवाब साहब ने अकड़कर बैठे हुए पूछा, "आपकी तारीफ ?"

विनोद ने इसके उत्तर में कहा, "जनाब, यह पं० शेखरानन्द लॉ पढ़ते हैं। यह ज़िला रायबरेली के पं० बल्लभदास के सुपुत्र हैं।" इतना कह खद्दर पहने दादा की ओर संकेत कर दिया। इस पर दादा ने उठकर नवाब साहब से हाथ मिलाने के लिए हाथ आगे बढ़ा दिया। यद्यपि नवाब साहब इतनी बेतकल्लुफी नहीं चाहते थे, इस पर भी लड़के को मिलाने के लिए हाथ बढ़ाते देख हाथ मिलाने पर बाध्य हो गए। दादा ने दिल खोलकर हाथ मिलाया।

इसके पश्चात् विनोद ने श्यामकुमार का परिचय दिया, "मिस्टर श्यामकुमार, सीतापुर के बाबू मोहनसिंह के लड़के, एम० ए० फाइनल में पढ़ते हैं।

श्यामकुमार ने अपनी जगह पर ही खड़े होकर, कुछ झुककर, दाहिने हाथ को तीन बार हिलाकर, सलाम अर्ज़ कर दी। नवाब साहब ठीक यही चाहते थे।

अन्त में विनोद ने अपना परिचय दिया, "और मैं, हुज़ूर के पुराने खादिम,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बा० अवधबिहारी माथुर का हकीर लड़का हूँ।"

इतना कह विनोद कुर्सी पर बैठ गया और नवाब साहब के कहने की प्रतीक्षा करने लगा। नवाब साहब कुछ कहने पर मजबूर हो गए, "क्या मैं आपके आने का मकसद जान सकता हूँ?" उन्होंने पूछा।

विनोद ने कहा, "हाँ जनाब, बात यह है कि लखनऊ यूनिवर्सिटी की स्टूडैंट्स यूनियन ने मिस सलीमा को देहली में होने वाले स्टूडैंट्स फैडरेशन के लिए डैलीगेट चुना है। कल तो उन्होंने डैलीगेट बनना स्वीकार कर लिया था, मगर आज उन्होंने लिखा है कि वह देहली नहीं जा सकतीं। हम लोग उनसे दरख्वास्त करने आए हैं कि वह वहाँ जाना मंजूर कर लें।"

"जब उसने लिख दिया है कि वह नहीं जा सकती तो फिर उससे झगड़ा करने की क्या जरूरत है?"

"साहब, ज़रूरत यों हुई कि स्टूडैंट्स यूनियन की एक्ज़ीक्यूटिव की अब और बैठक नहीं हो सकती। अगर उन्होंने जाना मंज़ूर न किया तो कैसे उनकी जगह पूरी की जा सकेगी? उन्हें कल ही इनकार कर देना चाहिए था।"

"क्या वह तुम्हारी यूनियन की नौकर है जो उसके कहने को टाल नहीं सकती?"

"नौकर! नहीं, यहाँ नौकर और मालिक का सवाल नहीं। यहाँ तो इकरार करने की बात है।"

"वह अभी नाबालिग है। उसका इकरार कानून की निगाह में भी उस पर आयद नहीं होता।"

"जनाब, यहाँ कानून की बात नहीं हो रही। यहाँ तो सिर्फ इज़्ज़त का सवाल है।"

"मैं समझता हूँ कि उसकी इज़्ज़त तुम्हारे साथ दिल्ली न जाने में ज़्यादा महफ़ूज़ है। आप लोगों के साथ घूमने में उसकी ज़्यादा बेइज़्ज़ती और बदनामी होती है।"

विनोद अब समझा था कि काँटा कहाँ है और कैसा है। वह बहुत नम्रता से बोला, "आखिर हम लोगों में आपने क्या ऐब देखा है?"

नवाब साहब ने अब खड़े होकर कहा, "तुम सलीमा के साथ बहुत घूमते-फिरते रहते हो। दुनिया इसको पसन्द नहीं करती।"

अब विनोद इत्यादि भी खड़े हो गए। विनोद ने इसके उत्तर में केवल यह कहा, "चाँद पर थूकने वालों से बहस करना फिजूल है।"

यह कह विनोद-पार्टी वहाँ से बिना साहब-सलामत के बाहर निकल आई।

वे अभी कोठी के अहाते में ही थे कि विनोद ने शेखरानन्द से कहा, "शायद मैं भी दिल्ली न जा सकूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादा ने ऊँची हँसी हँसते हुए कहा, "बहुत खूब! माना उस्ताद! प्रेम अलापने के भी कई ढंग होते हैं।"

यह हँसी की आवाज़ सुन, मकान की ऊपर की छत से खिड़की खोल सलीमा ने देखा। श्यामकुमार, जो सबके आगे-आगे जा रहा था, पीछे घूमकर कुछ कहने ही वाला था कि उसने खिड़की को खुलते और सलीमा को झांकते हुए देख लिया। उसने विनोद के कथन पर टीका-टिप्पणी करने के स्थान पर कह दिया, "चाँद निकल आया।" वह खिड़की की ओर देख रहा था। विनोद और दादा दोनों घूम-कर खिड़की की ओर देखने लगे। सलीमा ने रूमाल हिलाकर सबका अभिवादन किया।

: ५ :

विनोद का सायंकाल का समय प्रायः सलीमा से बातें करने में, उसके साथ घूमने में, दोस्तों को मिलने जाने में, सभा-समाजों में हाज़िर होने में व्यतीत होता था। आज उसका मन उदास था। वह कहीं नहीं गया और सीधा घर की ओर चल पड़ा।

मिस्टर माथुर अपनी बैठक में बैठे नवाब साहब से पिछली रात वाली मुला-कात का वृत्तान्त मित्रों को बता रहे थे। "हज़रत कहने लगे, 'लाहौल विला, यह कैसे हो सकता है?'

"मैंने पूछा, 'तो क्या विनोद ने मुसलमान होना स्वीकार कर लिया है?' उत्तर दिया, 'वह तो होगा ही।' "

सब लोग खिलखिलाकर हँस पड़े। एक ने पूछा, "आपने बिनू से पूछा तो होगा।" यह विनोद का लाड़ला नाम था। घर के सब लोग उसे इसी नाम से पुकारा करते थे।

मिस्टर माथुर ने कहा, "नहीं, मौका नहीं मिला। जब वह रात आया था तो मैं दफ्तर में काम कर रहा था।"

ठीक इसी समय विनोद बैठक में आ पहुँचा। वह आज वहाँ ठहरना नहीं चाहता था, परन्तु उसके पिता के मित्रों ने जब उसे भीगी बिल्ली की भाँति चुपचाप सीढ़ियों की ओर जाते देखा तो सबके-सब ज़ोर से खिलखिलाकर हँस पड़े। विनोद उस हँसने का प्रयोजन नहीं समझा और घूमकर हँसने वालों को ध्यानपूर्वक और विस्मय में देखने लगा। उसे परेशान देख पिता ने बुला लिया, "बिनू, इधर आओ तो।"

विनोद लौट आया और मित्र-मण्डली के पास आकर खड़ा हो गया। पिता ने कहा, "बैठ जाओ।"

विनोद बैठ गया और पिता के कहने की प्रतीक्षा करने लगा। मिस्टर माथुर ने कहा, "आज अखबार में लखनऊ विद्यार्थी-संघ की ओर से दिल्ली जाने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिनिधियों के नाम छपे हैं।"

"जी, मेरा नाम उनमें है?"

"कुछ और नाम भी तो हैं।"

"पाँच डेलीगेट चुने गए हैं—एक मैं, दूसरे पण्डित शेखरानन्द लॉ स्टूडैण्ट, तीसरे मिस्टर श्यामकुमार, चौथे मिस्टर कृष्णकुमार और पाँचवीं मिस सलीमा।"

अब मित्र-मण्डली में से एक ने पूछा, "क्यों, साहब, यह सलीमा कौन है?"

विनोद को अब समझ पड़ा कि ये लोग सलीमा के विषय में कुछ जान गए हैं। वह सलीमा के बाप से फटकार खाकर आया था। वह अपने पिता को नवाब साहब की भाँति अविवेकी नहीं समझता था और उसे विश्वास था कि साफ-साफ सब बात बता देने से वह अपनी सफाई सफलतापूर्वक दे सकेगा। वह मुस्कराकर बोला, "तो आपके हँसने का यही कारण था?"

इस पर सब लोग फिर हँसने लगे। प्रश्नकर्ता ने फिर प्रश्न किया, "हाँ, भैया बिनू, यह सलीमा कौन है? सुना है, तुमसे उसकी बड़ी मित्रता है।"

विनोद ने हँसने वालों के साथ सम्मिलित हो हँसते हुए कहा, "नवाब मुर्तज़ाअली खाँ की लड़की है। हमारे कॉलेज में पढ़ती है।"

"बहुत उन्नत विचारों की मालूम होती है। परदा तो नहीं करती है?"

"परदा! अजी, बिलकुल नहीं करती। बौब्ड हेयर रखती है। साड़ी पहनती है, क्लबों और पार्टियों में जाती है, मगर······।" इतना कह वह ठहर गया। उसे नवाब साहब की बातें याद आ गई थीं।

मिस्टर माथुर ने पूछा, "हाँ, मगर क्या?"

"जी, यही मालूम होता है कि नवाब साहब ने उसे इस प्रकार स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने से मना कर दिया है।"

"कब से?"

"मालूम होता है, आज ही से। उसने दिल्ली जाने से इनकार कर दिया है। कल जब चुनाव हुआ था, वह स्वयं मीटिंग में उपस्थित थी और जाने को तैयार थी।"

"इसी कारण शायद तुम उदास हो। ठीक है न?"

"जी हाँ। बात यह है कि हम दिल्ली लिख चुके हैं। मैंने तो चाचाजी को सलीमा के ठहरने के लिए चिट्ठी भी लिख दी है। अब वह न गई तो सब बात बदमज़ा हो जायगी।"

"क्या सलीमा के न जाने से फैडरेशन का अधिवेशन तो स्थगित न हो जायगा?"

विनोद इस प्रश्न से चौंका। उसे विश्वास होता जा रहा था कि सलीमा के विषय में उसके पिता और दूसरे लोगों को कुछ मालूम है। इस पर भी उसने बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनावट के ही उत्तर देना उचित समझा, "जी नहीं। यह क्यों होगा ? इस समय जो हमारा प्रोग्राम है, वह एक सलीमा क्या, बीस सलीमा जैसी लड़कियाँ भी रोक नहीं सकतीं।"

"तो तुम उदास क्यों हो ? क्या उससे तुम्हारा निजी लगाव है ?"

विनोद ने अपने पिता से आँखें मिलाते हुए कहा, "हाँ, पिताजी, मगर आप मुझे बताते क्यों नहीं कि क्या बात है ?"

"शाबाश," मिस्टर माथुर ने कहा, "तुम मेरे बेटे हो, मैं तुमसे ऐसी ही आशा करता था। परन्तु क्या मैं जान सकता हूँ कि बात कहाँ तक पहुँच चुकी है ?"

विनोद ने वैसे ही अपने पिता के मुख पर देखते हुए कहा, "बात तो कुछ भी नहीं है। सलीमा से मेरी मित्रता लगभग दो वर्ष से है। वह अति सुन्दर लड़की है। उसका मन अति स्वच्छ और बुद्धि निर्मल है। वह स्वतन्त्र विचार रखती है। मैं उसे पसन्द करता हूँ और वह मेरे विचारों और कामों को पसन्द करती है। हमने कई बार अनेकानेक विषयों पर परस्पर वार्तालाप भी किया है और हममें विचार-ऐक्यता है।"

"तो तुमने उससे विवाह का फैसला कर लिया है ?"

"विवाह !" विनोद भौचक्का हो देखता रह गया। मुख की दृढ़ मुद्रा बना उसने कहा, "जी नहीं। इस विषय पर मेरी उससे कभी बातचीत नहीं हुई। मेरे मन में कई बार यह बात आई है, मगर इतनी बड़ी बात करने का मुझे साहस नहीं हुआ। आज मैं और दूसरे डैलीगेट उसके घर गये थे। मालूम होता है कि नवाब साहब ने उसे हमसे मिलने से मना कर दिया है।"

"तो तुम उससे विवाह करना चाहते हो ?"

"जी, मैं यही निवेदन कर रहा था कि सलीमा का स्वभाव, चरित्र, बुद्धि और सौन्दर्य ऐसा है कि उससे विवाह किया जा सकता है।"

एक साहब, विनोद के इस नवाबी ढंग से बातचीत करने पर, बोलने से नहीं रह सके। बोल उठे, "शाबाश, बिनू !"

विनोद अभी भी हैरान था। वह नहीं समझ सका था कि किस रहस्य के प्रकट होने की यह भूमिका बाँधी जा रही है। वह शाबाशी देने वाले की ओर कुछ अन्य-मनस्क भाव से देखने लगा। मिस्टर माथुर ने कहा, "बिनू, घबराओ नहीं। हाँ, तो वह ऐसी है कि हुज़ूर उससे विवाह करने की कृपा कर सकते हैं। और कुछ या बस ?"

विनोद को 'शाबाश' का अर्थ अब समझ में आया। अब उसने अपने कहने का अभिप्राय स्पष्ट करने के लिए कहा, "मेरा अभिप्राय यह था कि सलीमा तो विवाह करने के योग्य है, परन्तु नवाब साहब श्वसुर बनने के योग्य नहीं।"

इससे तो लोग हँसते-हँसते दुहरे होने लगे। उपस्थित लोगों ने समझ लिया था कि मज़ाक करने और ज़िन्दादिली में विनोद अपने पिता से कम नहीं होगा। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसी कुछ कम हुई तो मिस्टर माथुर ने पूछा, "हाँ, तो नवाब साहब तुम्हारे श्वसुर बनने के योग्य नहीं, मगर क्यों? क्या मैं जान सकता हूँ?"

"आज हम कुछ विद्यार्थी सलीमा को दिल्ली चलने के लिए राज़ी करने गये थे। सलीमा के स्थान पर नवाब साहब से भेंट हो गई। इस भेंट से मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि वह अपने को एक विशेष व्यक्ति समझते हैं। उन्होंने हमारा भारी अपमान किया है। हममें से एक ने उनके साथ हाथ मिलाने को बढ़ाया तो वह घबरा गए। वह हाथ मिलाना पसन्द नहीं करते थे। और फिर हाथ मिलाने के पश्चात् जेब से रूमाल निकाल हाथ साफ करने लगे। वह दरबारी ढंग की सलाम को बहुत पसन्द करते हैं। मुझ जैसे स्वतन्त्र, प्रजातन्त्रवादी और साम्यवादी के लिए ऐसा श्वसुर उपयुक्त नहीं हो सकता।"

"देखो, बिनू," मिस्टर माथुर ने एकदम गम्भीर होकर कहा, "तुम सलीमा से विवाह कर सकते हो। मेरी तरफ से तुम्हें खुली छुट्टी है। मगर तुम्हें इस मामले में और आगे बढ़ने से पूर्व इस विवाह की कीमत जान लेनी चाहिए। कल रात नवाब साहब मुझे मिले थे और वे बता गए हैं कि सलीमा का खाविन्द मुसलमान होगा। मैं इसमें तुम्हें कुछ नहीं कहूँगा। तुम्हारा मज़हब तुम्हारी वस्तु है। तुम और तुम्हारी औलाद का मुसलमान होना सलीमा की ठीक कीमत है या नहीं, यह तुम जानो, तुम्हारी आत्मा जाने। मेरे लिए तुम बिनू ही रहोगे। हाँ, एक बात नवाब साहब और कह गए हैं। इसका मेरे साथ सम्बन्ध है। वह चाहते हैं कि अपनी जायदाद का, कम-से-कम मुख्य भाग, तुम्हारे नाम करके मरूँ। यह तो तुम जानते हो कि यह जायदाद मेरी अपनी कमाई है। मैं इसे किसको दूँगा, मैंने निर्णय नहीं किया। यद्यपि सलीमा से तुम्हारे विवाह का मेरे निर्णय पर कुछ प्रभाव नहीं होगा, इस पर भी मैं चाहता हूँ कि यदि तुम इस आशा में हो कि तुम एक धनी बाप के बेटे हो और बिना मेहनत के धनी रहोगे तो झूठी आशा है। मैंने कल नवाब साहब को भी यही कह दिया था।"

नवाब साहब की धृष्टता, कि वह सलीमा के विवाह का प्रस्ताव लेकर उसके पिता के पास आवें और फिर इतना महँगा सौदा करने की बात करें, उसे हैरानी में डालने के लिए पर्याप्त थी। वह अवाक्-मुख पिता के कथन को सुनता रहा। मिस्टर माथुर के कहना समाप्त करने पर भी कितनी देर वह अचल बैठा रहा। मिस्टर माथुर और मित्र-मण्डली विनोद पर इस वक्तव्य का प्रभाव देखने के लिए चुपचाप उसके मुख पर देखते रहे। वे विनोद के उत्तर की प्रतीक्षा में थे। विनोद भी समझ रहा था कि उसे पिता की बात का उत्तर देना चाहिए। वह यथार्थ में सलीमा से प्रेम करता था। परन्तु यह प्रेम बच्चे के एक सुन्दर खिलौने के साथ प्रेम की भाँति नहीं था। सलीमा सुन्दर थी, अति सुन्दर थी; परन्तु वह बाह्य सौन्दर्य को चाहते हुए कुछ और चाहता था। वह सुंदर मन, विचार और भावनाओं का उपासक था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह समझता था कि ये बातें सलीमा में हैं। परन्तु अब वह अपने मन में सोच रहा था कि क्या सलीमा भी अपने पिता के साथ इस सौदे में सम्मिलित है ? यदि नहीं, तब तो ठीक है और यदि है तो उसके सुन्दर विचार और भावनाएं इस सौदे के आवरण में असत्य हो जाती हैं। यह भी हो सकता है कि मीठी-मीठी बातें, उदार विचार और उच्च आकांक्षाएँ केवल दिखाने के दाँत हों और यथार्थ में मन वैसा ही कलुषित हो, जैसा किसी भी अपढ़, अशिष्ट और मज़हबी दीवाने का हो सकता है। ये सब बातें विनोद के मन में भर रही थीं। अन्त में उसने मन कड़ा कर अपनी दृढ़ धारणा अपने पिता को बता दी। वह कहने लगा, "मेरा विचार है कि सलीमा की अनुमति के बिना ये प्रस्ताव किए गए हैं। यदि सलीमा का भी यही विचार है कि बिना मुसलमान हुए मैं उससे विवाह नहीं कर सकता तो उसे अपना पति कहीं अन्य स्थान पर ढूंढ़ना होगा। यह नहीं कि मैं कट्टर हिन्दू हूँ। मैं मज़हबी अर्थों में हिन्दू नहीं हूँ। मैं जब परमात्मा के अस्तित्व को नहीं मानता तो उसके रसूल हज़रत मुहम्मद को कैसे मान सकता हूँ ? मैं मन से, हृदय की सत्यता से कलमा 'ला इलाह लिललिल्लाह मुहम्मद रसूल अल्ला' उच्चारण नहीं कर सकता। मैं नास्तिक हूँ। यदि मैं अपनी आत्मा की वाणी के विरुद्ध कहूँगा तो अपनी दृष्टि में ही पतित हो जाऊँगा। धोखा देकर, झूठ बोलकर कि मैं परमात्मा को मानता हूँ, मैं सलीमा को पाना अपना अपमान समझता हूँ। रही, पिताजी, आपकी सम्पत्ति। इसकी मैंने कभी आशा नहीं लगाई। आपकी कृपा से उच्च शिक्षा पाई है। मैं इसे कम नहीं समझता।"

इतना कह वह उठ खड़ा हुआ और बिना किसी से कुछ और कहे अपने कमरे में चला गया। सब लोग चुपचाप उसे जाता देखते रहे।

: ६ :

दूसरे दिन कॉलेज जाकर चिट्ठी लिखने की बारी विनोद की थी। उसने लिखा :

प्रिय मिस सलीमा, आपकी कल की चिट्ठी मिली और कल शाम को आपसे मिलने के प्रयत्न में आपके वालिद शरीफ से भेंट हुई। परिणाम सन्तोषजनक नहीं निकला। यह तो हुआ आपके दिल्ली जाने का किस्सा। आपके पिताजी आपके वहाँ जाने के खिलाफ हैं।

एक बात और है। दो दिन हुए आपके पिताज़ी मेरे पिताजी से मिले थे और कह आए हैं कि तुम्हारा-मेरा विवाह तब हो सकता है जब मैं मुसलमान हो जाऊँ और जब मेरे पिताजी अपनी सम्पत्ति मुझे देनी स्वीकार कर लें। यह विवाह की बात किसने आपके पिताजी से कही है, मैं नहीं जानता। मेरे और आपके भीतर तो कभी इस विषय पर बात नहीं हुई। हाँ, मेरे मन में कई बार ऐसा विचार उत्पन्न होता रहा है। मेरी यह उत्कट इच्छा रही है कि हम अपने साथीपन को और विस्तृत कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लें। हो सके तो जीवनपर्यन्त के लिए सम्बन्ध उत्पन्न कर लें। मगर अभी, जब हम पढ़ रहे हैं, जब देश के लिए भी मेरा कुछ करने का विचार है, और आप भी चूड़ियाँ पहनकर घर बैठे रहने के स्थान पर अपने देश और जाति के प्रति ऋण चुकाने का विचार रखती हैं, विवाह का प्रस्ताव कुछ समय से पूर्व ही माना जाएगा।

मैं आपको बहुत पसन्द करता हूँ। आपके विचार और लगन के विषयों को पसन्द करता हूँ, परन्तु विवाह के सम्बन्ध में न तो मैंने आपको कभी कहा है, न अब कह रहा हूँ। हाँ, एक बात जानना चाहता हूँ कि क्या आपके पिताजी आपकी अनुमति से विवाह का प्रस्ताव लेकर गए थे और क्या यह भी आपकी राय से है कि विवाह के लिए मुझे दीनेइस्लाम स्वीकार करना पड़ेगा? मज़हब और परमात्मा के विषय में मेरे विचार आपको भली-भाँति विदित हैं। मैं जिसके अस्तित्व को नहीं मानता, फिर उसके रसूल को मानने की बात तो हो ही नहीं सकती। क्या मुझे अपनी आत्मा के विरुद्ध यह मानना पड़ेगा, ताकि आपसे विवाह के लिए इच्छा कर सकूं? मैं झूठ नहीं बोलूंगा। आपसे विवाह के लिए भी नहीं। मेरी दृष्टि में मज़हब एक ढोंग है। देश, जाति, मनुष्य जाति ही सबकुछ है। मैं उसका एक अंग हूँ। उसी की सुख-शान्ति के लिए यत्न करना मेरा मज़हब है। मैं इसको तबदील नहीं कर सकता।

मैं चाहता हूँ कि आपके और मेरे पुराने सम्बन्ध बने रहें। परन्तु यह मेरे अकेले के अधीन नहीं है। सम्बन्ध तो दोनों ओर से रखने से रहता है। क्या मैं आपकी इच्छा इस विषय में जान सकता हूँ?

—मित्र, विनोद

यह चिट्ठी विनोद ने स्वयं सलीमा को लाकर दी। वह इसे किसी दूसरे के हाथ भेजना उचित नहीं समझता था। सलीमा ने चिट्ठी हाथ में लेते हुए पूछा, "यह क्या है?"

"पढ़कर देख लीजिएगा। क्या आज आप क्लब चलेंगी?"

"नहीं।"

"तो क्या शाम को सैर करने चलना होगा या सिनेमा?"

"मिस्टर विनोद, मुझे वालिद साहब ने आपसे मिलने, बोलने और घूमने के लिए मना कर दिया है।"

"तो अब आप अकेली जाया करेंगी?"

"नहीं, नौकरानी साथ रहा करेगी।"

"खूब! उम्मीद है, मेरे साथ से उसका साथ आपके लिए अधिक पुरलुत्फ होगा।"

"ट्रायल ले रही हूँ।"

"मेरी दिली ख्वाहिश है कि आपका ट्रायल कामयाब रहे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद ने आदाबअर्ज़ कर जाने के लिए मुख मोड़ लिया, मगर सलीमा ने बुला लिया, "मिस्टर विनोद !"

विनोद ने घूमकर कहा, "मगर आपके वालिद साहब ने तो मना किया है न ?"

"हाँ, मगर चिट्ठी लिखकर बातचीत करने से मना नहीं किया ; सिर्फ मिलने, बोलने और घूमने से मना किया है ।"

"तो फिर ?"

"फिर यह कि इस चिट्ठी का जवाब कल दूंगी ।"

"जैसा मन करे ।"

: ७ :

सायंकाल शेखरानन्द ने स्टूडैंट्स फैडरेशन में जाने वाले डैलीगेटों को चाय-पार्टी दी थी। यह निमन्त्रण सलीमा को भी मिला था। वह वहाँ नहीं पहुँची। उसने लिख भेजा था, "चूंकि मैं दिल्ली नहीं जा रही, इस कारण मेरा इस पार्टी में सम्मिलित होना व्यर्थ है ।"

विनोद इस पार्टी में उपस्थित था। शेखरानन्द ने सलीमा की चिट्ठी सबको सुनाई। पश्चात् विनोद से पूछा, "अब बताइए कि जनाब दिल्ली जा रहे हैं या नहीं ?"

"जा रहा हूं ।" विनोद का उत्तर था।

"हुर्रे ! हुर्रे ! !" मिस्टर कृष्ण ने ताली पीटते हुए कहा, "क्या प्रेम की गम्भीरता की थाह मिल गई ?"

विनोद ने हलकी मुस्कराहट से कहा, "कृष्ण भैया, प्रेम की नहीं, प्रत्युत् हिन्दुस्तानी चरित्र की थाह मिल गई है ।"

शेखरानन्द, जो चाय का सामान मेज़ पर सजा रहा था, बोला, "क्या तुम इस छोकरी के चरित्र से हिन्दुस्तान-भर की थाह पा गए ?"

"हँडिया में से एक दाना देखने से सारी हँडिया की अवस्था प्रतीत हो जाती है ।"

श्यामकुमार शेखरानन्द को सम्बोधित कर बोला, "दादा, चोट गहरी है। ज्यादा मत छेड़ो, खून बहने लगेगा ।"

विनोद ने लम्बी साँस खींचकर कहा, "तुम सब घोंघा-वसन्त हो। तुम इस हृदय की जलती आग को नहीं समझ सकते। प्रेम का सार प्रेमी ही जानता है। तुम क्या समझते हो कि मैं सलीमा के वियोग में व्याकुल हो रहा हूँ ? मेरा प्रेम, मेरा मज़हब, मेरा धर्म-ईमान सबकुछ मेरा देश है। जो भी देश-सेवा में मेरा सहायक होता है, वह मेरा मित्र, प्रिय और प्रेम-भाजन है। जब कोई छोटे-मोटे मूर्खतापूर्ण रिवाजों को इस महान् आदर्श-प्राप्ति में बन्धन बनाता है तो उसे मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित्रहीन मानता हूँ।

"कल मैं अपने मन की अवस्था को ठीक-ठीक समझ नहीं सका था। मैं सलीमा को चाहता हूँ। मैं उसे देश-सेवा में अपना साथी समझकर ही प्रेम करने लगा था। मुझे कल ही विदित हुआ है कि बाहरी विचार-स्वतन्त्रता के ढोल में प्राचीन रूढ़ियों और विकारों का मैल भरा है।"

चाय का सामान तैयार हो गया था। चारों मित्र कुर्सियों पर मेज़ के चारों ओर बैठ गए। शेखरानन्द ने चाय बनानी आरम्भ कर दी। विनोद ने पेस्टरी के एक टुकड़े को उठा, हाथ में पकड़, मुख में डालने से पूर्व कहा, "हम जो प्रस्ताव यहाँ से ले जा रहे हैं, वह कौन उपस्थित करेगा ?"

"तुम और कौन ?" शेखरानन्द ने कहा।

"नहीं दादा, तुम रखोगे।"

"मगर मुझे तो इस बात में कुछ विशेष उत्साह नहीं।"

कृष्ण, जो चाय की सुरकियाँ लगा रहा था, अचम्भे में शेखरानन्द का मुख देखने लगा। शेखरानन्द ने आँखें नीची किये हुए चाय पीनी आरम्भ कर दी। कृष्ण ने बात स्पष्ट करने के लिए कहा, "दादा, तुम तो डैलीगेशन के मुखिया हो।"

इसका उत्तर विनोद ने दिया, "पूर्ण रूप से तो मैं भी इससे सहमत नहीं हूँ। मैं समझता हूँ, शिक्षा ग्रहण करने के लिए अभी विलायत जाने से कुछ लाभ नहीं है। मैं देश का रुपया ऐसे कामों के लिए व्यय करना व्यर्थ समझता हूँ।"

"परन्तु दूसरे देशों ने तो ऐसे ही उन्नति की है।"

"ठीक है। परन्तु एक बात हम भूल जाते हैं। किसी भी गुलाम देश ने अपने पर राज्य करने वालों से कोई गुण की बात नहीं सीखी। जब कुछ प्राप्त हुआ है तो मित्र-राष्ट्रों से प्राप्त हुआ है। गुलामों का मित्र संसार में कौन है ?"

शेखरानन्द ने कहा, "ठीक, मेरा भी यही विचार है। कुछ लोग आशा लगाए हुए हैं कि प्रान्तीय सरकारें हमारे प्रस्ताव को स्वीकार कर लेंगी और हममें से कुछ को विलायत जाकर घूमने का अवसर मिल जाएगा। मैं यह समझता हूँ कि मैं तो कुछ सीखने जाऊँगा नहीं। यदि दूसरों को यह अवसर मिले तो मैं बाधा क्यों डालूँ ?"

"यदि इस विषय में आप दोनों के विचार इतने ढीले हैं तो इस प्रस्ताव को लेकर वहाँ जाने की आवश्यकता ही क्या है ?"

इसके उत्तर में विनोद ने कहा, "क्या सरकार से विलायत जाने के लिए वज़ीफे माँगने के लिए फैडरेशन बनाई गई है ? मेरे मन में तो फैडरेशन बनाने और उसमें जाने का केवल एक ही प्रयोजन है—वह है देश को स्वतन्त्र करने में विद्यार्थियों का भाग।

"देखो, भैया कृष्ण, हम नौजवान हैं। हमारे बीवी-बच्चे नहीं। हमें किसी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ लेना-देना नहीं। हममें बल है, बुद्धि है, शिक्षा और साहस है। हम भारत-वर्ष की उच्चतम विभूति हैं। यदि हम देश की दासता की ज़ंजीर तोड़ने का यत्न नहीं करेंगे तो कौन करेगा? यह महान् कार्य बूढ़े, शिथिल, दुर्बल, बाल-बच्चों के बोझ से दबे हुए निर्वीर्य लोगों के हाथ में सौंप देने से कैसे हो सकेगा? मैं तो समझता हूँ कि यह हमारा काम है और स्टूडेंट्स फेडरेशन इस काम को करे।"

कृष्णकुमार के मन में फेडरेशन का यह उद्देश्य नहीं था। वह चाहता था कि व्यावहारिक राजनीति विद्यार्थी-मण्डल से बाहर रहे। उसने चाय पी ली थी और प्याली मेज़ पर रखते हुए पूछा, "क्या उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने में अधिकाधिक योग्यता उत्पन्न करना देश-सेवा नहीं है? क्या अपने को शिक्षा-प्राप्ति में संलग्न रखना देश को उन्नत करने में सर्वोत्तम साधन नहीं है?"

शेखरानन्द का उत्तर था, "देश को इस उन्नति से लाभ के स्थान पर हानि होती है। यदि हमारी योग्यता का प्रयोग करने वाला उसे हमारे देश के लाभ के लिए प्रयोग करे तब तो देश को लाभ होगा। वर्तमान परिस्थिति में पढ़े-लिखे योग्य हिन्दुस्तानी का प्रयोग तो सरकार ही करती है। किन्तु सरकार की नीति हिन्दुस्तान के लाभ के लिए नहीं है। परिणाम यह हो रहा है कि हिन्दुस्तानी नौजवानों की योग्यता उस तलवार की भाँति हो गई है जो दुश्मन के हाथ में चली गई है।"

विनोद ने कहा, "हमें पढ़ने और योग्यता प्राप्त करने में आपत्ति नहीं। हम तो ऐसा कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहते हैं कि जिससे कॉलेजों में पढ़ाई करते हुए भी विद्यार्थी देश को स्वतन्त्र करने में सहायक बन सकें।"

"तो आपका कार्यक्रम असहयोग अथवा कानून-भंग का नहीं होगा?"

"नहीं, नहीं। बिलकुल नहीं। हमारा कार्यक्रम तो रचनात्मक है।"

"खद्दर इत्यादि का प्रचार करना?"

"मिस्टर कृष्णकुमार, यह कूड़ा-करकट तुम्हारे दिमाग में कहाँ से आ गया है?"

"तो हिन्दू-मुसलमानों में एकता पैदा करना आपका कार्य है?"

"ओह, हो! मालूम होता है कांग्रेसी अखबारों को पढ़कर तुम्हारी भी विचार-शक्ति लोप हो गई है। देखो, मैं बताऊँ। यह अछूतोद्धार, हिन्दू-मुसलमान में एकता और खद्दर इत्यादि जो कार्यक्रम हैं ये बहुत अच्छे होते हुए भी देश को स्वतन्त्र नहीं कर सकेंगे। हम तो राजनैतिक कार्यक्रम का रचनात्मक अंग लेना चाहते हैं। यद्यपि विस्तार से कार्यक्रम तो वहीं बनेगा, फिर भी कुछ संकेतमात्र मैं यहाँ बता देता हूँ। कार्यक्रम का एक अंग प्रत्येक भारतवासी को अपनी राजनैतिक परिस्थिति से असन्तुष्ट कर देना है। दूसरा अंग है भारत में अंग्रेज़ी राज्य की जड़ों का लोगों को ज्ञान कराना। तीसरा अंग है भारतवासियों में लोगों को दो श्रेणियों में बाँटना और सबको दो श्रेणियों में देखना—देश-हितैषी और देश-द्रोही। चौथा अंग है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुशासन उत्पन्न करना।"

यद्यपि कृष्णकुमार को यह कार्यक्रम कुछ आकर्षक प्रतीत नहीं हुआ, फिर भी उसने पूछा, "किन्तु विद्यार्थी इसको कैसे करेंगे?"

"वह इस प्रकार कि हिन्दुस्तान-भर में सब कॉलेजों में तीन-तीन महीनों की लम्बी छुट्टियाँ होती हैं। हम चाहते हैं कि विद्यार्थियों का यह समय देश-सेवा के लिए प्रयोग में लाया जाय।"

उस दिन जब चाय-पार्टी समाप्त हुई तो सबके मन में यह योजना भर गई थी।

: ८ :

सलीमा ने घर पहुँचते ही विनोद की चिट्ठी पढ़ी और उसे यह जानकर बहुत खेद हुआ कि उसके पिता एक हिन्दू को मुसलमान बनाने के बदले में अपनी लड़की न्यौछावर करने को तैयार हैं। जब उसने बता दिया था कि वह विनोद से विवाह करना स्वीकार नहीं करती तो यह सब झगड़ा क्यों खड़ा किया गया? यदि वह विनोद से विवाह के लिए राज़ी भी होती तो भी वह उसे मुसलमान बनने के लिए बाध्य करने के लिए राज़ी न होती। मज़हब को वह मनुष्य की निज की बात मानती थी। वह सोचती थी कि एक घर में पति हिन्दू और पत्नी मुसलमान के रूप में क्यों नहीं हो सकते। हिन्दू मुसलमान को हिन्दू बनाने और मुसलमान हिन्दू को मुसलमान बनाने का हठ क्यों करते हैं? उसके मन में विद्रोह उठ रहा था। उसके मन में विनोद के साथ विवाह करने का किंचित्‌मात्र भी विचार होता तो वह माँ और बाप के इन पुराने, जर्जरभूत विचारों और भावों को पाँव तले रौंदकर विवाह कर लेती, परन्तु विनोद ने उसके मन में इस भाव को उत्पन्न ही नहीं किया था। वह उसे एक मित्र समझती थी, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं।

वह लिखने की मेज़ के समीप बैठ चिट्ठी का उत्तर लिखने लगी:

प्रिय विनोद,

आपकी चिट्ठी को पढ़कर बहुत अचम्भा हुआ। मेरे पिताजी आपके पिताजी से मिले और हमारे विवाह की शर्तें तय करने लगे। इससे आप परेशान और नाराज़ हो गए। मैं समझती हूँ, आपके नाराज़ होने की कोई वजह नहीं। विवाह तो, यदि होना होगा तो, मेरा और आपका होगा। शर्तें तो हमें तय करनी चाहिए, न कि आपके और मेरे पिता को। उनका विवाह तो होगा नहीं। आपको नाराज़ होने से पहले मेरे उत्तर की प्रतीक्षा करनी चाहिए थी।

मैं आपसे विवाह नहीं करना चाहती। वह भी सिर्फ इसलिए कि मुझे अभी विवाह नहीं करना है। जब विवाह ही नहीं होना तो उसके लिए शर्तों का सवाल ही पैदा नहीं होता। मैं सही मायने में मुसलमान नहीं हूँ। मैं खुदा को नहीं मानती। खुदा को रसूल की ज़रूरत होती है, यह मेरे दिमाग में नहीं आता। मशरक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगरब में मुझे कुछ फर्क मालूम नहीं होता। सूअर और बकरे के गोश्त में सिवाय स्वाद के और कोई फर्क नहीं है। जब मैं ऐसे विचार रखती हूँ तो आपको, भला, मैं मुसलमान होने के लिए कहूँ, यह कैसे हो सकता है?

मैं समझती हूँ कि इस सफाई के बाद मेरा-आपका मेल-जोल कायम रह सकता है। तब तक—

—आपकी मित्र, सलीमा

उसने चिट्ठी लिफाफे में बन्द कर, पता लिख, नौकर को दे दी कि जाकर डाक में डाल आए।

दूसरे दिन कॉलेज में सलीमा इस प्रतीक्षा में थी कि विनोद उससे मिलने आएगा, परन्तु वह नहीं आया। एक बार उसने कॉलेज-हॉल के एक कोने में विनोद और शेखरानन्द को गम्भीरता से बातचीत करते देखा था। वह बातें समाप्त होने के बाद विनोद उससे मिलने आने की आशा में था कि पढ़ाई की घण्टी बज गई। वह पढ़ने चली गई। जब पढ़ने के पश्चात् हॉल में आई तो विनोद वहाँ से चला गया था। यह समझकर कि विनोद का उत्तर डाक से आवेगा, वह घर लौट आई। उसके नाम की कोई चिट्ठी नहीं थी।

वह रात-भर दिन चढ़ने की प्रतीक्षा करती रही। दिन हुआ और वह समय से पूर्व ही कॉलेज जा पहुँची। विनोद अभी नहीं आया था। उसकी पढ़ाई पौने ग्यारह बजे आरम्भ होती थी, और वह ठीक समय पर पहुँचा। वह हॉल के बाहर अपनी बाइसिकल को ताला लगा रहा था कि घण्टा बज गया। सलीमा अपनी श्रेणी में जा बैठी।

उस दिन पढ़ाई समाप्त होते-होते वह विनोद से मिलने के लिए अधीर हो उठी। विनोद कमरे में खड़ा प्रिंसिपल के साथ बातें कर रहा था। कितनी ही देर तक सलीमा उसकी प्रतीक्षा में खड़ी रही। वह बाहर नहीं आया। धीरे-धीरे कॉलेज के सब विद्यार्थी चले गए। वह अकेली रह गई। अब उसे अपना वहाँ खड़ा होना अयुक्तिसंगत लगने लगा। अन्त में निराश हो वह घर की ओर चल पड़ी।

अगले दिन विनोद कॉलेज नहीं आया। तीन बजे की डाक-गाड़ी से देहली जाना था और इसी की तैयारी के कारण वह कॉलेज हाज़िर नहीं हुआ। सलीमा को यह दफ्तर में क्लर्क से पूछने पर ज्ञात हुआ। वह जब विनोद को नहीं पा सकी तो उसकी हाज़िरी लगी है अथवा ग़ैरहाज़िरी, यह जानने के लिए दफ्तर गई थी तो वहाँ क्लर्क से पता चला कि विनोद का पाँच दिन की छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र आया है।

इस बात ने उसके मन को भारी ठेस पहुँचाई। वह सोचती थी कि क्या विनोद इतना निष्ठुर हो सकता है कि जाने से पूर्व मिलकर भी न जाय। यह अच्छी मित्रता है। उस समय दो बजकर पच्चीस मिनट हो चुके थे। स्टेशन पर जाकर उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने को समय बहुत कम था। यह सोच कि गाड़ी देर से भी आ सकती है, वह कॉलेज से बाहर निकल आई। सौभाग्य से एक ताँगा खड़ा था। पूछा, "खाली है ?"

"हाँ, हुज़ूर" का उत्तर पाते ही कूदकर ताँगे में बैठ गई।

"बड़े स्टेशन पर ले चलो। अगर गाड़ी छूटने से पहले पहुँचा दोगे तो इनाम दूंगी।"

ताँगे वाले ने घोड़े के चाबुक लगाई और ताँगा हवा से बातें करने लगा। अन्तर बहुत अधिक था और मार्ग भी सर्वथा साफ नहीं था। इस पर भी ताँगे वाले ने कमाल की। जब ताँगा स्टेशन की ड्योढ़ी पर पहुँचा तो गार्ड सीटी बजा रहा था। सलीमा एक रुपया, जो पहले ही निकाल हाथ में पकड़े हुए थी, ताँगे वाले के सम्मुख फेंक प्लेटफार्म की तरफ भागी, मगर गाड़ी छूट गई थी और वह गाड़ी को वेग से गति पकड़ते देखती रह गई।

कई मिनट तक वह प्लेटफार्म पर भौचक्की-सी खड़ी रही। उसके मन में आया कि शायद विनोद भी गाड़ी से रह गया हो और रात की गाड़ी से जाने का विचार रखता हो। इसी प्रकार सोचते हुए स्टेशन से बाहर निकल आई। ताँगे में सवार हो, ताँगे वाले को हिवैट रोड, जहां विनोद का मकान था, चलने के लिए कह दिया। हिवैट रोड पर पहुँचने से पहले ही उसे अपने उन्माद का ज्ञान हो आया। लाटूश रोड से ही उसने ताँगे को अपने घर की तरफ लौटा लिया। मन में सोच रही थी कि यह क्या पागलपन था। आखिर वह मिलकर नहीं गया तो कौन-सी गज़ब की बात है। साधारण मित्रता ही तो है। कॉलेज के दो विद्यार्थियों की मित्रता एक रेल के डिब्बे में सफर करने वाले दो मुसाफिरों से अधिक क्या हो सकती है ?

वह पिछले चार दिन की घटनाओं को मन में स्मरण कर रही थी। उसके पिता की विनोद के पिता से उनके विवाह की चर्चा, फिर विनोद से बोलने और मिलने पर प्रतिबन्ध, विनोद की चिट्ठी और उसका उत्तर देना, पश्चात् विनोद की एकदम लापरवाही—ये सब घटनाएँ ऐसी थीं जिनमें वह अपना कुछ भी दोष नहीं समझती थी। वह सोचती थी कि विनोद को जब उसने पत्र में सफाई दे दी है तो फिर उसके नाराज़ होने का कोई कारण नहीं रहा।

इसी प्रकार के विचारों में वह ताँगे में घर पहुँची। ताँगे को विदा कर अपने मकान की ड्योढ़ी पर जा पहुँची। वहाँ एक नौकर खड़ा मुस्करा रहा था। वह केवल भासमात्र था अथवा यथार्थ, कहना कठिन है। सलीमा को ऐसा प्रतीत हुआ था और इससे उसके माथे पर त्योरी चढ़ गई। वह खड़ी हो गई और पूछने लगी, "क्या है ?"

"कुछ नहीं, हुज़ूर," ऐसा कहते हुए उसकी मुस्कराहट तो लोप हो गई, परन्तु सलीमा को ऐसा जान पड़ा कि उसकी आँखों की चमक बढ़ गई है। सलीमा कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं समझी और मकान के भीतर जाने ही वाली थी कि उसे स्मरण हो आया कि विनोद के नाम की चिट्ठी इसी नौकर को डाक में डालने को दी थी। वह फिर लौट आई और पूछने लगी, "वह चिट्ठी डाल दी थी?"

नौकर ने सतर्कता से उत्तर दिया, "डाली क्यों नहीं, हुज़ूर? कौन कहता है, नहीं डाली?"

इस उत्तर ने सलीमा को संशय में डाल दिया। उसने दोषारोपण तो किया नहीं था, फिर यह निर्दोषता सिद्ध करने का यत्न क्यों? उसने घूरकर नौकर की ओर देखते हुए कहा, "बेवकूफ, तेरी आँखें कह रही हैं।"

"नहीं, हुज़ूर! हम तो आपके गुलाम हैं। कैसे आपका हुक्म नहीं मानेंगे?"

सलीमा ने यह उत्तर आधा ही सुना था। वह मकान के भीतर चली गई। नौकर की सफाई ने उसके मन में विश्वास दिलाने के स्थान पर संशय ही उत्पन्न किया था। वह सोच रही थी कि उसकी मुस्कराहट, उसकी आँखों का बिलबिलाना और सबसे अधिक अकारण अपने-आपको निर्दोष सिद्ध करने का यत्न, क्या यह प्रकट नहीं करता कि चिट्ठी डाली नहीं गई। क्या इस नौकर का इतना साहस हो गया है कि उसके पत्र को रोक ले? इस बात की खोज करनी चाहिए। यह खोज तो विनोद के लौटने पर ही हो सकती थी। परन्तु उसे उसकी चिट्ठी रोकने में क्या प्रयोजन हो सकता है?

इस प्रश्न के मन में उठते ही इसका उत्तर भी आया और वह निर्णय करने के लिए बेचैन हो उठी। उसने नौकरानी से, जो उसके लिए चाय और नाश्ता लाई थी, पूछा, "अम्मी और अब्बाजान घर पर हैं?"

"नहीं, दोनों मोटर-गाड़ी में कहीं गए हैं।"

"कुछ कह गए हैं, कब लौटेंगे?"

"हाँ, हुज़ूर, कह गए हैं, शाम की चाय बाहर पिएँगे।"

चाय समाप्त हुई। नौकरानी बर्तन उठाकर चली गई। अब फिर चिट्ठी की बात उसके मन में आई और वह संशय की परीक्षा करने के लिए अपने पिता के लिखने-पढ़ने के कमरे में चली गई। मेज़ पर बहुत-से कागज़ बिखरे पड़े थे। उसने कागज़ों को उलट-पलटकर देखना आरम्भ किया। मेज़ पर एक-एक कागज़ देख डाला। उसकी चिट्ठी वहाँ नहीं थी। उसने मेज़ के दराजों की तलाशी ली, कुछ परिणाम नहीं निकला।

अब उसे अपने पिता पर सन्देह करने पर पश्चात्ताप होने लगा। अपने-आपको बहुत ओछे विचार की समझ अपने पर घृणा करने लगी। उसने मेज पर सब कागज वैसे ही बिखेर दिए जैसे पहले बिखरे पड़े थे और अपने पिता पर सन्देह करने पर सन्ताप करती हुई बाहर आने लगी कि उसकी साड़ी का किनारा रद्दी कागजों की टोकरी से उलझ गया। टोकरी उलट गई और रद्दी कागज फर्श पर बिखर गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह नहीं चाहती थी कि उसका पिता जान जाय कि किसी ने वहाँ की तलाशी ली है। अतएव वह वहीं बैठ गई और बिखरे कागज़ों को उठा-उठाकर टोकरी में भरने लगी। इन रद्दी कागज़ों में उसकी दृष्टि एक लिफाफे पर पड़ी जिसको फाड़कर चिट्ठी निकाल ली प्रतीत होती थी। यह वही लिफाफा था जिसमें उसने विनोद को चिट्ठी भेजी थी। उसकी अपनी लिखावट में लिफाफे पर पता लिखा था।

अपने पिता पर सन्देह करने पर जो सन्ताप हो रहा था वह अब क्रोध में बदल गया। मेरी चिट्ठी अब्बाजान ने मार्ग में रोक ली और मुझे बताया भी नहीं, इसी आवेश में वह खाली लिफाफे को हाथ में लिए हुए अपने कमरे में चली आई।

वह भली-भाँति जानती थी कि उसनें अभी तक कोई ऐसा काम नहीं किया जो किसी भाँति भी उसके अपने लिए अथवा उसके माता-पिता के लिए लज्जा का कारण हो सके। तो फिर उसकी स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध क्यों लगा दिया है, ऐसा सोचते हुए उसके दिमाग में चक्कर आने लगा। वह इस प्रतिबन्ध को सहन करने में अपने-आपको अशक्त पाती थी। उसके मन में विद्रोह उत्पन्न हो रहा था और वह अपने विद्रोह को सफल और प्रभावशाली बनाने की योजना सोचते हुए पलंग पर लेट गई। दिन-भर की परेशानी से उसका दिमाग थक गया था। उसे नींद आ गई और वह सो गई।

उसकी नींद तब खुली जब उसकी माँ ने ज़ोर से पुकारा, "सलीमा, सलीमा, कहाँ हो?"

उसने जागकर आवाज़ दी, "हाँ, अम्मीजान, सोने के कमरे में हूँ।"

सलीमा की माँ उसी कमरे में चली आई। पीछे-पीछे नवाब साहब थे।

"क्या बात है, बेटी, आज इस वक्त सो रही हो?"

"थक गई थी। नाश्ता किया और ज़रा आराम करने के लिए लेटी थी कि आँख लग गई। अम्मी, आप कहाँ गई थीं?"

इसका उत्तर नवाब साहब ने दिया, "तुम्हारे लिए कुछ खरीदने।"

"मुझसे राय लिए बिना?"

"यह तो एक तोहफा है। तोहफा देने वाले की मर्ज़ी का होता है, न कि लेने वाले की पसन्द का।"

"पर मेरी सालगिरह तो अभी दूर है। आज क्या खास बात है?"

दोनों सलीमा के पलंग पर बैठ गये थे। सलीमा की माँ बोली, "बेटी जब बड़ी हो जाती है तो माँ-बाप को एक भारी फिकर लग जाती है। उन पर एक फर्ज़ होता है और जब तक वे अपना फर्ज़ अदा नहीं कर लेते उन्हें सकूनत हासिल नहीं होती। यह काम वालदैन का है कि वे अपनी बेटी के लिए एक शरीफ, लायक, बा-रसूख और बसर-आबुर्दा शौहर तलाश करें। जब वे ऐसा करने में कामयाब हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते हैं तो उनकी खुशी की इन्तहा नहीं रहती। आज वही हालत हम दोनों की है। हम वहुत खुश हैं।"

सलीमा का माथा ठनका। इस पर भी जानने के लिए कि वह कौन महानुभाव हैं जिन्हें उसका पति वनने के योग्य समझा गया है, उसने पूछा, "और वह हज़रत, शरीफ, लायक, बा-रसूख और अमीर कौन हैं?"

अब नवाब साहब ने बताने का यत्न किया, "रियासत हैदराबाद में औरंगाबाद के करीब एक जागीर है। जागीर के मालिक हैं नवाब सर मुहम्मद असलम साहब बहादुर। दूर का शाही खानदान के साथ रिश्ता भी है। नवाब साहब की शादी लखनऊ में यहाँ के पुराने नवाबों के खानदान में हुई है। उनका साहबज़ादा अभी विलायत से तालीम हासिल करके लौटा है। उसी को हमने पसन्द किया है।"

"विलायत में क्या पढ़ते थे?"

"यह तो हमने पूछा नहीं। शायद वैरिस्टरी पास किये होंगे।"

"कितने साल विलायत में रहे हैं?"

"हाँ, बताते थे कि दस साल वहाँ रहे हैं और अस्सी हज़ार उनकी तालीम पर खर्च हुआ है।"

सलीमा इतनी बड़ी रकम सुन विस्मय में लीन हो गई। उसे विचार में लीन देख माँ-बाप ने समझा कि लज्जा के मारे चुप है। नवाब साहब ने बात को जारी रखते हुए कहा, "हमने लड़का देखा है। अच्छा-खासा जवान है। हम उसकी फोटो भी लाये हैं।"

सलीमा की माँ ने एक लिफाफे से फोटो निकालकर सलीमा के सामने कर दी। सलीमा ने सरसरी तौर से तसवीर देख ली। तसवीर से तो बाहरी रूप देखा जा सकता है और वह भी कुछ अंशों में ही। इसमें भी फोटोग्राफर बहुत कुछ चालाकी कर सकता है। इस सरसरी निगाह में भी जो कुछ उसने देखा वह अति भयानक था—लम्बी-लम्बी अकड़ी हुई मूँछें, चपटा नाक, रुखसार की हड्डी उभरी हुई, ठुड्डी दृढ़ और आगे को उभरी हुई। हाँ, यह ठीक था कि तसवीर में कमखाब की अचकन, बनारसी साफा और तिल्लेदार लखनवी जूता खूब चमक रहा था।

सलीमा ने नाक चढ़ा, मुख मोड़ लिया। सलीमा की माँ ने केवल यह नखरा समझा और कहने लगी, "उसने तुम्हें देखा है। अगरचे वह तुम्हें परदे में रखना पसन्द करेगा, मगर तुम्हारे परदा न करने से ही वह तुम्हें पसन्द कर सका है। कुछ दिन हुए तुम सिनेमा देखने गई थीं। वहाँ उसने तुम्हें देखा था। पीछे पता लगाकर आज उसने हमारे पास तजवीज़ भेजी थी। मैं और तुम्हारे वालिद शरीफ बातचीत करने गये थे। हमने सब तरह इतमीनान कर लिया है और बात पक्की हो गई है। अगले नये चांद के दिन तुम्हारी सगाई होगी। तुम्हारे वालिद साहब यह रस्म औरंगाबाद जाकर अदा करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सलीमा से न रहा गया। उसने पूछ ही लिया, "यह जानवर शरीफ है और लायक है, यह आपने कुछ मिनटों की मुलाकात से कैसे जान लिया?"

"जानवर?" नवाब साहब ने हैरानी में पूछा, "नवाब सर मुहम्मद असलम के० सी० आई० ई० के साहबज़ादे, नवाबज़ादा इफ्तिखार अहमद को तुम जानवर कहती हो?"

"तसवीर से तो इसके सिवा और कुछ मालूम नहीं हुआ। उसकी काबलियत, शराफत, इन्सानियत और दूसरे औसाफ तो मिलकर ही जाने जा सकते हैं। आपने ये सब बातें इतने कम अर्से में कैसे जान लीं?"

"इनके जानने की ज़रूरत ही क्या है? नवाब वाज़िदअली शाह के और फखरेदीन हुज़ूर के खानदान में होना क्या इन तमाम बातों की गारण्टी नहीं है? आखिर इससे ज़्यादा तुम क्या चाहती हो?"

"मैं क्या चाहती हूँ, यह आपने कभी जानने की कोशिश की है?"

"तुम क्या चाहती हो, बताओ?" नवाब साहब ने कुछ तेज़ी में पूछा।

"मैं इस जानवर की शक्ल के आदमी से शादी करना नहीं चाहती।"

"तो तुम किससे शादी करना चाहती हो?"

"मैंने फैसला नहीं किया। अभी तो मैं डॉक्टरी पढ़ना चाहती हूँ।"

इतना कह सलीमा वहाँ से उठ खड़ी हुई। वह बाहर अपने पढ़ने के कमरे में जाना चाहती थी कि नवाब साहब ने उसे रोकते हुए कहा, "ठहरो, कहाँ जा रही हो?"

सलीमा घूमकर माता-पिता की ओर, जो अभी पलंग पर बैठे थे, देखने लगी। नवाब साहब ने बैठे-बैठे ही कहा, "डॉक्टर बनकर क्या करोगी?"

"आप हाली का दीवान पढ़ते रहते हैं। इससे क्या होता है?"

"इसके पढ़ने में लुत्फ आता है।"

"बस, तो यही बात डॉक्टरी में है।"

"मगर हाली के दीवान ने मुझे शादी करने से रोका नहीं था।"

"वह इसलिए कि आपकी शादी ने भी हाली को पढ़ने से रोका नहीं होगा। मगर यहाँ तो शादी डॉक्टरी को रोक देगी।"

नवाब साहब निरुत्तर हो गये। अब उन्होंने डाँटकर काम निकालने के विचार से कहा, "हाँ, तुम्हें डॉक्टरी छोड़नी होगी। इतना अच्छा रिश्ता कहीं और मिलना मुश्किल है।"

"आपने कैसे जान लिया कि यह बन्दर की शक्ल का आदमी बहुत अच्छा है?"

"इनके खानदान, इनके रसूख और लड़के की आला तालीम से।"

"खानदान और रसूख की बात तो मैं जानती नहीं। हाँ, इसकी आला तालीम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अन्दाज़ तो इसी से मिलता है कि विलायत में दस साल रह आया है, हिन्दुस्तान का अस्सी हज़ार रुपया खर्च कर आया है और अभी तक कमखाब के कपड़े पहनता है, औरतों को परदे में रखना चाहता है और शायद खुद चूड़ियाँ और बालियाँ पहनेगा। अब्बाजान, मैं इससे शादी नहीं करूँगी।"

"तुम विनोद से शादी नहीं करोगी और इससे भी नहीं, तो आखिर तुम करोगी क्या?"

सलीमा ने केवल यह कहा, "मुझे अब कॉलेज का काम करना है।" और वह बाहर पढ़ने के कमरे में चली गई। वहाँ एक बड़ी-सी किताब निकाल अपने सामने रख पढ़ने का बहाना करने लगी। सलीमा के माता-पिता विचारमग्न नीचे उतर गये।

सलीमा किताब को सामने रखे हुए सोच रही थी कि अब विद्रोह किये बिना रहा नहीं जाएगा। वह विनोद से विवाह के लिए उत्सुक नहीं थी, परन्तु सोचती थी कि इस नवाब के बेटे से तो विनोद कितना ही अच्छा है। कम-से-कम उसके गुण-दोष वह जानती थी। इस नवाबज़ादे की जो बात वह अभी तक जान सकी थी उससे उसके प्रति घृणा ही उत्पन्न हुई थी। सबसे बढ़कर उसे अपनी माँ का यह कहना कि वह उसे परदे में रखना पसन्द करेगा, अत्यन्त मूर्खतापूर्ण प्रतीत हुआ था। एक लड़की, जो आज लड़कों के साथ बैठकर पढ़ती है, उनसे वाद-विवाद करती है, उनसे टैनिस, बैडमिंटन खेलती है, उनमें लेक्चर देती है और सिनेमा देखती है, वह परदे में डाल दी जाएगी। बेहूदा है। यह नहीं हो सकता।

सलीमा ने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया था कि अगर उसके माँ-बाप ने ज़बरदस्ती इस नवाबज़ादे से उसका विवाह करना चाहा तो वह फौरन विनोद से विवाह कर लेगी।

: ६ :

देहली में अखिल भारतवर्षीय विद्यार्थी-महामण्डल का अधिवेशन बड़े समारोह से हो रहा था। विद्यार्थी-प्रतिनिधियों के लिए ठहरने का प्रबन्ध कॉलेज-होस्टलों में किया गया था। लगभग एक सहस्र प्रतिनिधि बाहर से आये थे। कोचीन और त्रावणकोर से लेकर गोहाटी, कलकत्ता और दूसरी ओर कराची और पेशावर (उन दिनों कराची और पेशावर भारत में ही थे।) तक के विद्यार्थी उपस्थित थे। देहली के विद्यार्थियों की भारी संख्या स्वागतकारिणी में थी और नगर के रईस तथा अन्य पढ़े-लिखे विद्वान् भी दर्शकों के घेरे में आए हुए थे। अधिवेशन का प्रधान, एम० सी० सरकार, कलकत्ता प्रेज़िडेंसी कॉलेज का एक विद्यार्थी था।

देहली के इन्द्रप्रस्थ कॉलेज की लड़कियों ने बन्देमातरम् के गीत से सभा का आरम्भ किया। स्वागताध्यक्ष के भाषण के पश्चात् सभापति का भाषण हुआ। इसमें उसने विद्यार्थी-मण्डल की आवश्यकता और काम पर एक बहुत सुन्दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निबन्ध पढ़कर सुनाया। विद्यार्थियों के यूनिवर्सिटी-सिंडीकेट में आवाज़ पहुँचाने की आवश्यकता पर और कॉलेजों के प्रबन्ध में अपनी राय भेजने पर बहुत ज़ोर दिया था।

प्रधान के भाषण के पश्चात् सभा विसर्जित हुई और विषय-निर्धारिणी की बैठक आरम्भ हुई। बीसियों प्रस्ताव और सम्मतियाँ आई हुई थीं। इनमें शेखरानन्द की ओर से लड़कों को वज़ीफे देकर विलायत भेजने का प्रस्ताव भी था। अन्य प्रस्ताव जो वहाँ पहुँच चुके थे, विद्यार्थियों की पोशाक और खान-पान से लेकर नौकरियों तक की बातों पर थे।

जब प्रधानमन्त्री इन प्रस्तावों को श्रेणीबद्ध कर रहा था, विनोद, कुछ निवेदन करने के बहाने, प्रधान से आज्ञा लेकर, खड़ा हो, फैडरेशन के उद्देश्य के विषय में कहने लगा, "मिस्टर प्रेज़िडेंट, ये बच्चों की बातों को मण्डल के अन्तिम दिन के लिए स्थगित कर दीजिए। हम हज़ारों मीलों का सफर तय कर यूनिफार्मों या भोजन-व्यवस्था पर प्रस्ताव पास करने नहीं आये। हमें मण्डल को क्रियाशील संस्था बनाना चाहिए। इस कारण मैं यह प्रस्ताव करता हूँ :

"यह मण्डल भारतवर्ष के विद्यार्थियों से अनुरोध करता है कि वे अपने लम्बे अवकाश के दिनों को देश में रचनात्मक काम करने के लिए व्यय करें।"

इस प्रस्ताव को उपस्थित कर विनोद ने रचनात्मक काम की व्याख्या कर दी। उसने कहा, "देश में विदेशी राज्य, सभ्यता और रस्मो-रिवाज से असन्तोष उत्पन्न करना हमारा पहला काम होना चाहिए। देश में राष्ट्रीयता का भाव उत्पन्न करना दूसरा काम होना चाहिए। देश में साम्य का प्रचार करना हमारा तीसरा काम है। खान-पान, जात-पाँत के झगड़ों को दूर करना यह एक और काम है। और सबसे अन्तिम परन्तु सबसे आवश्यक काम यह है कि जनसाधारण को ज्ञान करा दिया जाए कि भारतवर्ष में विदेशी राज्य क्या है और इसको किस प्रकार उखाड़कर फेंका जा सकता है।"

इस पर प्रधान ने कहा, "विद्यार्थी-मण्डल एक अराजनैतिक संस्था है। इसमें राजनैतिक बातों पर विचार नहीं हो सकता।"

विनोद ने कहा, "क्या इस देश में कोई भी ऐसा काम है जो राजनीति से सम्बन्ध नहीं रखता? हम लोगों का सम्बन्ध शिक्षा से है न! क्या कोई भी ऐसा सज्जन उपस्थित है जो यह कहता है कि हम लोगों की शिक्षा पर हमारी राजनैतिक परिस्थिति का प्रभाव नहीं? क्या यह सत्य नहीं कि यूनिवर्सिटी में शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी भी राजनैतिक लक्ष्य से ही बना है? क्या यह सत्य नहीं कि दुनिया के सब दूसरे देश स्वतन्त्र होने से बड़े वेग से उन्नति कर रहे हैं और हमारे यहाँ वही बैलगाड़ियाँ चलती हैं?"

इस पर एक सदस्य बोल उठा, "हमारी शिक्षा में बाधा पड़ेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद ने उत्तर दिया, "सिनेमा, थियेटर, गप्पबाज़ी से बाधा नहीं पड़ती क्या ? केवल अवकाश के दिनों में लोगों को स्वतन्त्रता की शिक्षा देने से बाधा पड़ती है, भला क्यों ?"

प्रधान ने उठकर कहा, "मिस्टर विनोद का प्रस्ताव ऐसा है कि इससे फैडरेशन सरकार से संघर्ष में पड़ जाएगा और वह टूट जाएगा।"

विनोद ने पूछा, "फैडरेशन लक्ष्य है या साधन ? यदि साधन है तो लक्ष्य को छोड़कर साधन रखने की आवश्यकता ही क्या है ? क्या देश को विदेशियों के फन्दे से छुड़ाना देश का उपकार नहीं ? और क्या देश के उपकार के प्रयत्न को छोड़कर किसी संस्था के अस्तित्व के कुछ अर्थ हैं ?"

"देश के काम के अतिरिक्त और भी काम हैं। हमें वे करने चाहिए।"

"मेरा निवेदन है कि हम बिना देश को स्वतन्त्र किये कुछ भी नहीं कर सकते। यहाँ तक कि हम शिक्षा भी ठीक और उचित मात्रा में प्राप्त नहीं कर सकते। मैं पूछता हूँ, कौन काम है जो आप बिना विदेशी सरकार से बाधा डाले कर सकते हैं ?"

शेखरानन्द ने व्यंग्य से कह दिया, "हम प्रस्ताव पास कर सकते हैं।"

एक और सदस्य बोल उठा, "हम सरकार से नियुक्त किये गये प्रोफेसरों को अभिनन्दन-पत्र दे सकते हैं।"

सब हँसने लगे।

प्रधान को विवश होकर प्रस्ताव के समर्थन करने वाले को आमन्त्रित करना पड़ा। प्रस्ताव का समर्थन शेखरानन्द ने किया। अब प्रस्ताव के विरोध में एक मुसलमान सदस्य ने कहना आरम्भ किया, "मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूँ। राजनीति एक ऐसा विषय है जिसके भिन्न-भिन्न सिद्धान्त हैं और भिन्न-भिन्न साधन हैं। यही कारण है कि राजनीतिक क्षेत्र में पार्टियाँ बन जाती हैं। हम चाहते हैं कि हमारा फैडरेशन विवादास्पद बातों से दूर रहे। उदाहरण में, यदि आपने देश के लोगों को राजनैतिक शिक्षा देने का प्रस्ताव किया तो मैं उसमें यह प्रस्ताव करूँगा कि मुसलमानों के दृष्टिकोण का भी ध्यान रखा जावे। हम चाहते हैं, मुसलमानों के लिए हिन्दुस्तान का एक हिस्सा पृथक् देश बना दिया जाय। आप शायद यह पसन्द न करेंगे। इससे हम कम संख्या में होने से फैडरेशन के बाहर हो जायेंगे और एक पृथक् मुस्लिम स्टूडैंट्स फैडरेशन बना लेंगे। इससे दो फैडरेशन हो जायेंगे और झगड़ा बढ़ेगा। हमको चाहिए कि हम कोई ऐसा काम न करें जिससे परस्पर झगड़ा बढ़े।"

इस विरोध का समर्थन करने वाला एक ईसाई युवक था। उसका दृष्टिकोण दूसरा था। उसने कहा, "तीन-चौथाई स्वराज्य तो मिल गया है और कांग्रेस मंत्री-मण्डल बड़े मज़े में काम कर रहे हैं। शेष एक-चौथाई भी हम पा जायेंगे। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेज़ों को यह विश्वास हो जाएगा कि हम स्वराज्य पाकर इसकी रक्षा कर सकेंगे, तब वे हमें स्वराज्य दे देंगे।"

इस विरोध में सम्मिलित होने वाला एक और मुसलमान युवक था। वह बोला, "मैं नहीं चाहता कि विद्यार्थी-मण्डल में फूट पड़ जाय। यदि आपने राजनैतिक प्रोग्राम स्वीकार किया तो मुसलमान विद्यार्थी सब-के-सब इससे बाहर हो जाएँगे। बिना मुसलमानों के साथ समझौते के स्वराज्य प्राप्त करने का यत्न अथवा स्वराज्य-प्राप्ति हम संशय से देखते हैं।"

बहस को समाप्त करते समय विनोद ने विरोधी दल की युक्तियों का उत्तर दिया। उसने बताया, "हम विद्यार्थी कोई विधान नहीं बना रहे। विधान बनाते समय मुसलमानों के हक़-हकूकों का ध्यान रख लिया जायगा। विधान बनाने के लिए जो सभा बनेगी उसमें मुसलमान अपने लिए पृथक् देश का प्रश्न उपस्थित कर सकते हैं। हमने तो देश को स्वराज्य-प्राप्ति के यत्न के लिए तैयार करना है। इसमें तो किसी भी मुसलमान को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। मुसलमानों की यह चुनौती कि यदि कोई राजनैतिक प्रोग्राम बनाया गया तो वे मण्डल छोड़कर चले जायेंगे, निहायत ही शर्म की बात है। क्या देश को स्वतन्त्र होने से उनको लाभ नहीं होगा?"

एक विद्यार्थी बैठे-बैठे ही बोल पड़ा, "नहीं होगा।"

"मेरा भाई भूल रहा है।" विनोद ने कहा।

"भूल नहीं है। हमें कांग्रेसी वज़ारतों का तलख तजरुबा है।" उसी मुसलमान सदस्य ने फिर कहा।

विनोद का उत्तर था, "यद्यपि मैं कांग्रेस पार्टी की वकालत नहीं कर रहा, फिर भी कहने वाले साहब क्या एक भी ऐसा उदाहरण दे सकते हैं जिससे किसी मुसलमान से अन्याय हुआ है?"

"मुसलिम लीग की पीरपुर कमेटी की रिपोर्ट पढ़ो।"

"झूठी है।" शेखरानन्द ने कह दिया।

इस पर प्रधान खड़ा हुआ और उसने इस प्रस्ताव पर बहस बन्द करते हुए कहा, "मैं समझता हूँ, दोनों ओर से युक्तियाँ दी जा चुकी हैं। अब आप सम्मति देकर बतायें कि मिस्टर विनोद का प्रस्ताव स्वीकार किया जाय अथवा न। पूर्व इसके कि आप अपनी-अपनी राय दें, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि फैडरेशन में फूट पड़ने से बचायें।"

वोट लिये गए। विनोद के प्रस्ताव के पक्ष में बीस सम्मतियाँ थीं और उसके विरोध में चौबीस। इन चौबीस में लगभग बीस हिन्दू थे। उन्होंने वोट अपनी बुद्धि के विपरीत दिया था, ताकि फैडरेशन में फूट न पड़ जाय।

इस वोटिंग के पश्चात् विनोद को सबकुछ फीका प्रतीत होने लगा। उसकी दिलचस्पी फैडरेशन के अधिवेशन में सर्वथा लुप्त हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १० :

निराश हो विनोद विषय-निर्धारिणी सभा की बैठक से उठकर बाहर चला आया। वह अपने प्रस्ताव पर भारी योजना बनाकर लाया था। घण्टों ही इस पर वह शेखरानन्द से बहस कर चुका था। प्रस्ताव उपस्थित करते समय भी वह आशा से भरा था। उसे उपस्थित सदस्यों के मुख देखकर यह पूरी आशा हो रही थी कि उसकी योजना स्वीकार हो जाएगी। परन्तु मुसलमान सदस्यों की धमकी ने पासा पलट दिया और वह हार गया। उसकी महीनों लगाकर सोची हुई योजना मिट्टी में मिल गई। वह सोचता था कि यदि सलीमा वहाँ उन मुसलमानों का मुख-तोड़ जवाब देने को होती तो निश्चय ही उसका प्रस्ताव स्वीकार हो जाता।

यहाँ खुले मैदान में एक कोने में लड़कों की भीड़ खड़ी थी। विनोद अपने विचार में मग्न, अपनी हार से उदास, बिना किसी प्रयोजन के टहलता हुआ, उस भीड़ की तरफ चला आया। एक भव्य मूर्ति युवक बीस-पच्चीस युवकों में खड़ा बातें कर रहा था। वह कह रहा था, "मैं तेरह, बाबर लेन में ठहरा हूँ और आप सबको वहाँ पर आमन्त्रित करता हूँ।"

एक ने पूछा, "खाने को क्या मिलेगा?"

जवाब था, "कुछ बहुत उत्तेजक।"

"क्या लाल मिर्च?"

"नहीं, इससे भी अधिक, जो आपमें पुरुषत्व उत्पन्न कर दे।"

इस हाज़िरजवाबी पर सब हँसने लगे। श्यामकुमार, जो उस प्रभावशाली व्यक्ति के पास खड़ा था, पूछने लगा, "आप हमको पण्डाल में क्यों नहीं बताते?"

"आपके प्रधान से आज्ञा माँगी थी। उन्होंने स्वीकृति नहीं दी। कहते थे, केवल विद्यार्थी ही बोल सकते हैं।"

इस समय श्यामकुमार की दृष्टि विनोद पर पड़ गई। उसने कहा, "यदि आप चाहें तो आपके व्याख्यान के लिए हम यत्न करें।"

"हाँ, करिये।"

श्यामकुमार विनोद के पास आया और कहने लगा, "यह मिस्टर पथिक हैं, जिनके लेख आप बड़े शौक से पढ़ा करते हैं। इनके व्याख्यान का प्रबन्ध होना चाहिए।"

पथिक का नाम सुनते ही विनोद फड़क उठा। वह भीड़ चीरकर पथिक से हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ा, परन्तु पथिक को देख उसके हाथ, मिलाने के लिए आगे बढ़ने के स्थान पर, नमस्कार करने के लिए जुड़ गए।

विनोद के लिए यह एक विचित्र बात थी। उसने अपने पिता को भी कभी इस प्रकार हाथ जोड़कर प्रणाम नहीं किया था। वह अपनी इस कृति पर स्वयं हैरान था। वह विवश हो गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक ने भी हाथ जोड़ प्रणाम किया और पूछा, "आप कौन हैं?"

"विनोदकुमार, हिवेट रोड, लखनऊ।"

"ओह! याद आ गया है। आपके पत्र मुझे मिलते रहते हैं। क्या आप भी मण्डल के उत्सव पर पधारे हैं?"

"हाँ, मैं विषय-निर्धारिणी का सदस्य भी हूँ। क्या आप विद्यार्थियों को उपदेश देना चाहते हैं?"

"हाँ, यदि स्वीकृति मिल जाय तो।"

"मैं यत्न करूँगा।"

विनोद और शेखरानन्द ने बहुत यत्न कर यह प्रबन्ध कराया कि उस रात को फैडरेशन के पण्डाल में, विद्यार्थियों के लिए, पथिक का भाषण हो सके।

विनोद यद्यपि पथिक से उसी दिन पहली बार मिला था, फिर भी वह उसके विचारों से भली-भाँति परिचित था। वह उसके विचारों को पसन्द करता था और विषय-निर्धारिणी में उसका प्रस्ताव पथिक के विचारों का ही परिणाम था। अब पथिक को ऐसे अवसर पर देहली में देख वह चाहता था कि दूसरे प्रान्तों के विद्यार्थियों को उसके विचार सुनने का अवसर मिले। अतएव उसने लड़-झगड़कर पथिक के व्याख्यान का प्रबन्ध करवा ही लिया।

: ११ :

रात के अधिवेशन की कार्यवाही समाप्त होते ही विनोद ने उठकर लोगों को कुछ समय के लिए बैठे रहने को कहा। पथिक का परिचय देते हुए उसने कहा, "यह महापुरुष संयुक्त प्रान्त की महान् आत्माओं में से हैं। विद्यार्थियों को एक विशेष संदेश देने के लिए कलकत्ते से ही यहाँ आए हैं। अनुभवी लोगों की बातों को सुन उनसे लाभ उठाना ही तो विद्यार्थियों का कर्त्तव्य है। आप कुछ समय तक शान्ति से बैठे रहें।"

सरकार, विद्यार्थी-महामण्डल का प्रधान, अपने स्थान से उठकर एक तरफ खड़ा हो गया, और बिना प्रधान के ही पथिक मंच पर आ बोलने लगा।

भाषण अंग्रेज़ी में था। विषय था 'भारतवर्ष के मुख्य कार्य'। अत्यन्त सरल, सरस और भावपूर्ण भाषा में पथिक बोल रहा था। व्याख्यान के आरम्भ में तो कुछ गड़बड़ थी। प्रधान के उठ जाने से और लोगों को वक्ता का परिचय न होने से कुछ हलचल मच गयी थी, परन्तु व्याख्यान आरम्भ हुए अभी पाँच मिनट भी नहीं हुए थे कि पण्डाल में शान्ति छा गयी और उपस्थित जन रुचि से सुनने लगे। शान्ति से लोगों को सुनते देख वे लोग भी, जो उठकर पण्डाल से बाहर चले गए थे, भीतर चले आए। धीरे-धीरे व्याख्यान का विषय गम्भीर होने लगा। लोग विषय की आवश्यकता और महत्त्व को समझने लगे। यह प्रश्न सबके मन में था कि क्या विद्यार्थी-महामण्डल देश की क्रियात्मक सेवा न करे? विद्यार्थियों के लिए हिन्दू-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुस्लिम समस्या को देश से बाहर कर देने का काम बहुत महत्त्व रखता है, ऐसा पथिक कह रहा था।

व्याख्यान में श्रोतागण लीन हो अपने-आपको भूले हुए थे। वक्ता धाराप्रवाह वाणी में अपने भावों को व्यक्त कर रहा था। विनोद भी प्रसन्न-वदन अपने ही भावों को अपने से अच्छी भाषा में प्रकट किये जाते देख रहा था। पण्डाल में सर्वथा शान्ति थी। एकाएक विनोद की दृष्टि, पण्डाल के एक कोने में, एक लड़की पर पड़ी। वह अपने विचारों और भाषण सुनने में इतना लीन था कि उसे देखते हुए भी पहले नहीं पहचान सका। धीरे-धीरे उसे लड़की जानी हुई प्रतीत होने लगी। फिर एकाएक वह उसे पहचान गया। वह सलीमा थी। वह उसे वहाँ देख विस्मय में पड़ गया। पहले तो स्वयं उठकर जाने लगा। कुछ सोच वह स्वयं न जाकर शेखरानन्द से बोला, "दादा, सलीमा को मंच पर ले आओ। यदि आज वह विषय-निर्धारिणी में आई होती तो काम बन जाता।"

विनोद अब यह जानने को उत्सुक हो रहा था कि वह कैसे चुपचाप यहाँ आ पहुँची है। क्या नवाब साहब ने उसे यहाँ आने की स्वीकृति दे दी है? अब उसे याद आया कि सलीमा ने कहा था कि वह नौकरानी के साथ घूमा करेगी। इससे सलीमा का पृथक् आना स्पष्ट हो गया। इस पर भी वह हैरान था कि सलीमा ने न तो उसके पत्र का कुछ उत्तर दिया और न ही उसे दिल्ली आने के विषय में बताया। वह समझ रहा था कि वह दादा के साथ मंच पर नहीं आएगी। परन्तु उसके विस्मय का कुछ ठिकाना नहीं रहा जब उसने उसे दादा के साथ चुपचाप मंच पर आकर बैठते देखा। उस समय तो केवल नमस्ते ही हुई।

अब विनोद के मस्तिष्क में इतने विचार भर रहे थे कि वह व्याख्यान सुनता हुआ भी कुछ समझ नहीं रहा था। वह बाहरी परिस्थिति से सर्वथा पृथक् हो मन की दुनिया में विचर रहा था। व्याख्यान समाप्त होने पर जब पण्डाल करतल-ध्वनि से गूँज उठा तो उसका स्वप्न भंग हुआ।

लोग उठ-उठकर जाने लगे। बहुत-से विद्यार्थी पथिक को घेरकर खड़े हो गए थे। विनोद अब सलीमा की ओर घूमा और पूछने लगा, "कब आईं आप?"

"बस, अभी-अभी। सीधी स्टेशन से आ रही हूँ।"

"नौकरानी कहाँ है?"

सलीमा हँस पड़ी।

अब विनोद ने पथिक को धन्यवाद दिया और उससे अगले दिन मिलने की बात कर सलीमा को पण्डाल से लेकर बाहर चला आया।

"आपका असबाब कहाँ है?"

"आपके चाचाजी के घर जो ठहरना था। असबाब की क्या ज़रूरत थी?"

"ठीक है।" विनोद उसे ले बाहर सड़क पर चला आया। वह विद्यार्थियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीड़ में बहुत प्रश्न पूछना नहीं चाहता था। वहाँ उसने एक टैक्सी कर ली। टैक्सी वाले को पृथ्वीराज रोड पर चलने के लिए कह दोनों बीच में बैठ गए।

विनोद ने संतोष का भाव प्रकट करते हुए कहा, "खैर, आप आ तो गईं। बहुत अच्छा किया है।"

सलीमा ने धीरे से कह दिया, "घर से भाग आई हूँ।"

विनोद, जैसे बिच्छू काट जाता है, तमककर चौकन्ना हो उठा। "क्या भाग आई हैं?" उसने पूछा।

"हाँ, तो क्या आपको मुझे अपने चाचाजी के यहाँ रखने में एतराज़ है?"

विनोद के दिमाग में चक्कर आने लगा था। वह समझता था कि यह बहुत बुरा हुआ है। वह इस घटना से होने वाले परिणामों को सोच रहा था। सलीमा अपने भाग आने की सूचना का प्रभाव विनोद के मुख पर देख रही थी। मोटर सर्र-सर्र करती चली जाती थी। आखिर विनोद ने पूछा, "क्यों?"

"यह लम्बा किस्सा है। फिर बताऊँगी। तो क्या मोटर को रोककर लौटा लें?"

विनोद ने चौंककर कहा, "नहीं, नहीं। वहाँ ठहरने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। मैं तो यह सोच रहा था कि यदि आपको भागना ही था तो पिताजी से राय कर लेतीं।"

सलीमा ने मुस्कराते हुए कहा, "ऐसी बातें सोच-विचारकर तो की नहीं जातीं। मन में विचार आया और कर दिया।"

"खैर, कल बात करेंगे। हम लोग रॉयल होटल में ठहरे हैं।"

सलीमा ने कहा, "हाँ, एक बात बतानी भूल गयी हूँ। आपका नाम कॉलेज-रजिस्टर से निकाल दिया गया है।"

"मुझे इसकी आशा थी।"

"क्यों?"

"आने से पूर्व मुझे प्रिंसिपल साहब ने बुलाया था और कहा था कि स्टूडैंट्स फैडरेशन के जलसे में मैं हाज़िर नहीं हो सकता। मैंने जब कारण पूछा तो बोले कि वह राजनैतिक संस्था है। मैंने पहले तो कायदे-कानून से समझाने का यत्न किया। मैंने बतलाया कि कॉलेज के बाहर मैं कॉलेज डिसिप्लिन के अधीन नहीं हूँ। फिर मैंने यह कहा कि दूसरे कॉलेजों के अधिकारी अपने विद्यार्थियों को मना नहीं कर रहे। इस पर आप कहने लगे कि मैडिकल कॉलेज दूसरे कॉलेजों से भिन्न है। यहाँ डिसिप्लिन अधिक चाहिए। मैंने अपनी बात को समझाने की कोशिश की, परन्तु वह अपनी बात पर डटे रहे। इस पर भी मैं चला आया हूँ।"

सलीमा ने कहा, "कल जब मैं कॉलेज गयी तो लड़के आपका नाम कॉलेज-रजिस्टर से हटा दिये जाने की सूचना नोटिस बोर्ड पर पढ़ रहे थे। नोटिस में लिखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, 'विनोदकुमार माथुर, स्टूडैंट फोर्थ ईयर को सचेत कर दिया गया था कि वह देहली में होने वाले स्टूडैंट्स फैडरेशन के जलसे पर न जाए क्योंकि वह संस्था राजनैतिक है। उसने कहना नहीं माना और देहली चला गया है। इस कारण मैं उसे कॉलेज से निकाल रहा हूँ—प्रिंसिपल।'

"लड़कों में जोश भरा हुआ था। सबके विचार में यह हुक्म नावाजिब था। मैंने भी यही समझा। मैंने सब लड़कों के सम्मुख कह दिया कि मेरा देहली जाने का विचार नहीं था, मगर बतौर विरोध के मैं अब ज़रूर जाऊँगी। उस समय मैंने छुट्टी की दरखास्त लिख क्लर्क को दे दी और घर चली आई। मेरा दिल्ली आने का विचार नहीं था, परन्तु घर पर कुछ ऐसी बातें हुईं कि मैंने यहाँ चला आना ही उचित समझा। प्रातः नौ बजे लखनऊ से चल सायं आठ बजे देहली आ पहुँची हूँ। स्टेशन से सीधी पण्डाल में पहुँची। वहाँ यह व्याख्यान हो रहा था। वह कौन साहब हैं? गज़ब के बोलने वाले हैं।"

"यह मिस्टर पथिक हैं, जिनका एक लेख मैंने आपको सुनाया था।"

"ओह! मिस्टर पथिक! अब समझी। इनका यहाँ आना अच्छा ही हुआ।"

इस समय मोटर पृथ्वीराज रोड पर पहुँच गयी थी। घर वाले विनोद और सलीमा के आने की आशा छोड़ बैठे थे। एकाएक इनको आया देख वे बहुत प्रसन्न हुए। विनोद सलीमा को कहकर कि वह प्रातःकाल उसे लेने आवेगा, वापस होटल चला आया।

शेखरानन्द भी सलीमा के एकाएक दिल्ली पहुँच जाने पर विस्मय कर रहा था। विनोद के वापस आने पर उससे पूछने लगा, "यह कैसे आ गयी है? क्या नवाब साहब का दिमाग दुरुस्त हो गया है?"

"नहीं, वह भाग आई है।"

"भाग आई है?" शेखरानन्द ने घबराकर पूछा, "यह तो बहुत बुरा किया है। नवाब साहब नें कहीं पुलिस में रिपोर्ट कर दी तो बहुत बदनामी होगी।"

"तो, दादा, क्या किया जाय? मुझे तो जब मालूम हुआ कि नवाब साहब सलीमा का हमारे साथ रहना पसन्द नहीं करते, मैंने उससे बोलना भी बन्द कर दिया था। एक बात और है। मुझे कॉलेज से निकाल दिया गया है। सलीमा कहती थी कि मेरे कॉलेज से निकाल दिये जाने के कारण विरोधस्वरूप ही वह देहली आई है।"

"तो ठीक है। अब वह भी निकाल दी जाएगी। तुम अपने घर बैठना और वह अपने घर मौज उड़ाएगी। मगर अचम्भा तो इस बात का है कि कांग्रेस सरकार होते हुए भी ये गोरे अफसर अपने-आपको खुदा मानते हैं।"

"छीः! कांग्रेस सरकार का नाम न लो। यह तो अति दुर्बल सरकार है। इनको तो पिताजी ने मन्त्री-मण्डल बनाते समय ही बताया था कि उन सरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफसरों पर, जिन्होंने पिछले दस वर्षों में कानून से भी बढ़कर जुल्म किया था और गैरकानूनी तरीके से राष्ट्रीय आन्दोलन को दबाने का यत्न किया था, एक तहकीकाती कमेटी बैठा दी जाय और जो मुजरिम साबित हों उन्हें नौकरी छोड़ने पर विवश किया जाये। यह हमारे प्रिंसिपल तो कभी भी न रह सकते। नमक-कर-भंग आन्दोलन के दिनों में इन्होंने कई लड़कों को अकारण ही कॉलेज से निकाल दिया था।"

: १२ :

दूसरे दिन विनोद सलीमा को फेडरेशन के उत्सव में ले गया। उनकी रुचि उन प्रस्तावों में नहीं थी जो विषय-निर्धारिणी समिति की ओर से उपस्थित किये जा रहे थे। वे वहाँ से पार्क में चले आये। विनोद, सलीमा के घर से भाग आने का कारण जानने के लिए, बेचैन हो रहा था। पार्क में पहुँचते ही विनोद ने पूछा, "तो आप भागकर आई हैं; क्यों?"

"जब मैं कॉलेज से घर आई तो अब्बाजान हैदराबाद के एक जानवर को लंच पर बुलाये हुए थे। एक दिन पहले मैं उसकी तस्वीर देख चुकी थी और मुझे बताया जा चुका था कि वह हज़रत मेरे लिए खाविंद ढूँढ़े गये हैं। कुदरतन मुझे उसे देखकर क्रोध आ गया। माँ की मर्ज़ी थी कि मैं अपने कमरे में चली जाऊँ। मगर मैंने नौकर को वहीं नाश्ता लाने को कह दिया और मेज़ के एक कोने के पास बैठ गयी।

"वह बन्दर जैसी आँखों से मेरी तरफ घूरकर देखने लगा। मैंने पहले तो कुछ परवाह नहीं की, मगर जल्दी ही लापरवाही छोड़नी पड़ी। अब्बाजान ने उसका मुझसे परिचय कराया। जब उन्होंने बताया कि वह बदसूरत आदमी नवाब सर मुहम्मद असलम के० सी० आई० ई०, औरंगाबाद के एक बहुत बड़े जागीरदार का लड़का है, तो मैंने कह दिया, 'झूठ'।

"इससे अब्बाजान और उनके मेहमान भौचक्के हो मेरा मुख देखने लगे। मैंने अपने कहने का मतलब समझाने के लिए उनको कहा, 'मुझे तो यह चार सौ बीस मालूम होता है। इस किस्म का बदसूरत और बदतमीज़ आदमी इतने बड़े आदमी का लड़का हो सकता है, मुझे शक है।'

"इससे वह तो शरम से पानी-पानी हो गया, मगर अब्बाजान ने मुझे डाँटकर कहा, 'बक-बक मत करो।'

"मैंने तब ज़रा नरम होकर कहा, "अब्बाजान, आपको किसने कहा है कि यह किसी के०सी० आई० ई० के लड़के हैं? लखनवी ठग बहुत मशहूर हैं, क्या वही…?'

"अब्बाजान ने बीच में ही रोककर कहा, 'बकवास बन्द करो। लानत है तुम्हारे पढ़ने-लिखने पर। एक लफ्ज़ भी तो तहज़ीब व इखलाक का तुम नहीं जानतीं।'

"इस पर मेहमान बोला, 'आपका मतलब मैं नहीं समझा। क्या मैं अपने बाप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का बेटा नहीं हूँ ? आप मेरे अब्बाजान को जानती हैं क्या ? मेरी शक्ल उनसे मिलती नहीं है क्या ?'

'तो आपके वालिद शरीफ भी आप जैसे ही बदसूरत हैं क्या ? ज़रूर किसी नौकरानी के पेट से होंगे।'

'बस, हद हो गई।' इतना कह वह वहाँ से उठ खड़ा हुआ। इस पर भी मैंने उसे कहा, 'मुझसे शादी का ख्याल करने से पहले अपनी सूरत तो आईने में देख ली होती…।'

"मेरी बात खतम नहीं हुई थी कि अब्बाजान ने सट से एक चाँटा मेरे मुख पर रसीद किया। इसकी मुझे उम्मीद थी। मैंने जानबूझकर इतनी गुस्ताखी की बात उनके सामने की थी। मगर क्या करती ? कहावत है 'मरता क्या न करता।' मैं उससे शादी करना नहीं चाहती और अब्बाजान ज़बरदस्ती मेरा निकाह उससे करा रहे हैं।

"चाँटा खाकर मैंने उनसे कह दिया, 'मैं इससे शादी नहीं करूँगी। मैं इससे नफरत करती हूँ।' इतना कह मैं अपने कमरे में चली आई। कुछ देर बाद मेरे कमरे को ताला लगा दिया गया। रात को मुझे खाने को भी नहीं दिया गया। मैं भूखी ही सो गई। सुबह मेरी आँख खुली तो कोठी के फाटक पर शहनाई बजने की आवाज़ कान में पड़ी। मैं इसका मतलब समझ गई। यह कल की बात है। मेरा विवाह शायद कल ही होना तय हो गया था। अब मैं भागने की सोचने लगी।

"मेरा सोने का कमरा कोठी के पिछवाड़े में है। उस तरफ अब्बाजान ने सब्ज़ियाँ लगवा रखी हैं। कमरा ज़मीन से पन्द्रह फुट ऊँचा है। एक क्षण में मैंने फैसला कर लिया। मैं उठी और पिछवाड़े की खिड़की खोल दी। कपड़े पहन, रुपये, जो मेरे पास थे, अपने बैग में रख, खिड़की से लपक बाहर कानस पर आ खड़ी हुई। खिड़की के नीचे कद्दू की बेल लगी थी। मैं कानस से लटक गई। इस तरह कूदने के लिए सिर्फ दस फुट रह गए और मैं बेल में कूद पड़ी। चोट तो बिलकुल नहीं आई, मगर एक नौकर ने देख लिया। मैं फौरन उसके पास गई और पाँच रुपये का नोट उसके हाथ में देकर बोली, 'देखो, मेरी शादी के शादियाने बज रहे हैं न। तुम इससे बच्चों को मिठाई खिलाना।' वह नोट हाथ में लिए हैरानी में खड़ा कुछ समझ नहीं सका। वह सोचता हुआ खड़ा रह गया। जब तक समझकर वह कुछ करने का फैसला करता, मैं पिछवाड़े के दरवाज़े से कोठी के बाहर निकल आई। वहाँ से ताँगे में स्टेशन और स्टेशन से दिल्ली आने में दिक्कत नहीं हुई।"

"आप कुछ लिखकर पीछे छोड़ आई हैं ?"

"बिलकुल नहीं।"

"वहाँ तो बहुत घबराहट मची होगी, और शायद आपकी तलाश देहली तक पहुँचे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उम्मीद तो है।"

"तो फिर पकड़े जाने का इरादा है क्या ?"

"पकड़े जाने से तो भागी नहीं। मैं तो शादी से भागी हूँ। उम्मीद है कि इस भागने से नवाबज़ादा शादी का ख्याल छोड़ देगा।"

"उस दिन की बेइज़्ज़ती के बाद जब वह शादी के लिए तैयार हो गया था, बल्कि फौरन ही तो, अब तो वह मुल्ला को साथ लेकर ही दिल्ली आएगा। ऐसे आदमियों की ज्यों-ज्यों बेइज़्ज़ती बढ़ती है, त्यों-त्यों उनकी बेचैनी भी बढ़ती जाती है।"

"हो सकता है, मगर मेरी समझ में तो यह नहीं आया कि वह इतना बेसबर क्यों हो रहा है।"

"हाँ, आपके पास औरत की आँख है न, अगर आप भी मरद की आँख रखतीं तो अपनी कीमत समझ जातीं।"

"तो क्या उसके सिवा दुनिया में और मरद हैं ही नहीं ?"

"हैं तो, मगर उन्हें अपनी मरदानगी से कुछ और काम करने हैं।"

इतना कह विनोद मुस्कराने लगा। सलीमा इस कथन का आशय समझने में लीन थी। इस समय शेखरानन्द उनको ढूँढ़ता हुआ वहाँ पहुँच गया। कहने लगा, "भाई, चलो। फैडरेशन में यह प्रस्ताव हो रहा है कि इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं।"

विनोद ने उत्साहहीनता दिखाते हुए कहा, "भाई, मैं तो बोलूँगा नहीं।"

"तो सलीमा ही बोल लेगी। हम अपनी योजना इस ढंग से भी चला सकते हैं।"

तीनों पण्डाल में चले आए। एक मद्रासी युवक बोल रहा था। उसका आशय यह था कि हिन्दुस्तान के सब बड़े-बड़े विद्वान् यही चाहते हैं कि विद्यार्थियों को राजनीति से अलग रहना चाहिए। वह भिन्न-भिन्न शिक्षा-विशेषज्ञों के 'कन्वोकेशन' के भाषणों से तथा समाचार-पत्रों में छपे लेखों से उनके वक्तव्य सुना रहा था। अपने पक्ष में इतने प्रबल प्रमाण देकर अपना पक्ष निरुत्तर हुआ जान बैठ गया।

प्रधान ने खड़े होकर कहा, "मुझे पूर्ण आशा है कि इस विषय में दो मत नहीं हैं। सब इस प्रस्ताव के पक्ष में हैं। मैं···।"

इसी समय सलीमा उठ खड़ी हुई। उसने कहा, "मैं इसके विरुद्ध कहना चाहती हूँ।"

प्रधान ने सलीमा को समीप बुला धीरे-धीरे कहा, "मुसलमान सदस्य ऐसा चाहते हैं। उनको नाराज़ कर फैडरेशन में फूट पड़ जाने का डर है।"

सलीमा ने कहा, "मैं भी मुसलमान हूँ।"

प्रधान अवाक् मुख सलीमा को देखता रह गया। यह अवसर देख सलीमा ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माइक्रोफोन के समीप जा अपना कथन आरम्भ कर दिया। सलीमा ने सबसे पहले यह बताया कि "स्टूडेंट्स फैडरेशन का मुद्दा तुलबा में तन्ज़ीम (संगठन) पैदा करना है, मगर तन्ज़ीम बज़ाते खुद कोई मकसद नहीं हो सकती। तन्ज़ीम भी किसी मुद्दा से की जाती है। हमारे फैडरेशन का मकसद है हिन्दुस्तान के पढ़े-लिखे नौजवानों को मुल्क की तरक्की के काम में लगाना।" जब वह फैडरेशन का उद्देश्य बता चुकी तो उसने राजनीति की व्याख्या आरम्भ कर दी। उसने कहा, "सियासियात (राजनीति) का मतलब है मुल्क से ताल्लुक रखने वाली बातें। मुल्क का मतलब यह मिट्टी-पत्थर की ज़मीन से नहीं है। मुल्क से मुराद मुल्क में रहने वाले लोगों से है। अब मैं आपसे पूछती हूँ, क्या इस मुल्क में रहने वालों का कोई भी ऐसा काम है जो यहाँ के लोगों से ताल्लुक न रखता हो? रोटी, कपड़ा, तालीम, रिहायश, पूजा, नमाज़, मतलब यह कि कोई भी तो काम ऐसा नहीं जो मुल्क के लोगों में सुधार या बिगाड़ पैदा न करे और यह काम सियासियात से ताल्लुक ज़रूर रखेगा। हर हालत में आपका हर काम मुल्क के साथ ताल्लुक रखेगा। यह ज़रूर है कि कभी तो कोई काम सरकार को पसन्द होगा और कभी नहीं। लेकिन यह कैसे हो सकता है कि वह काम जो सरकार को पसन्द हो वह तो गैरसियासी है और जो सरकार को पसन्द न हो वह सियासी है। मैं पूछती हूँ, क्या तालीम खुद एक मुल्की काम नहीं है? यह कैसे हो सकता है कि अगर तालीम ऐसी हो जिसे पढ़कर लोग सरकार की नौकरी कर सरकार को अपनी हुकूमत कायम रखने में मदद दें तो वह तालीम गैर-सियासी है और अगर ऐसी तालीम हो जिसे पढ़कर तुलबा में अपने मुल्क को आज़ाद और तरक्कीयाफ्ता बनाने की ख्वाहिश पैदा हो जाय, तो वह तालीम सियासी हो जाय? मैं पूछती हूँ कि स्कूल, कॉलेज और उनके मास्टर, प्रोफेसर और प्रिंसिपल और इससे भी ज़्यादा उनमें पढ़ने वाले तुलबा, जब तक तो सरकार को मज़बूत करने के लिए और उसको मुल्क को अपने पंजे में रखने के लिए, शिक्षा देते या लेते हैं तब तक तो यह राजनीति नहीं है और ज्योंही कोई स्वदेशी सरकार क़ायम रखने के तरीकों को बताना चाहे वह सियासी तालीम और काम हो जाता है। मैं उन अपने-आपको माहरे-तालीम कहने वालों से पूछती हूँ कि जब तो वे हिन्दुस्तान के नौजवानों को उलटी तालीम देकर थानेदार, तहसीलदार, कलक्टर, क्लर्क और अफसर बनाते हैं, जो मुट्ठी-भर अंग्रेज़ों की हुकूमत यहाँ कायम किए हुए हैं, तब तो वे राजनीति में कोई हिस्सा नहीं लेते और जब कोई लोगों को यह बताए कि मुल्क में अपनी हुकूमत कायम करनी चाहिए और वह इस तरीके से कायम हो सकती है तो यह राजनीति हो जाती है। वे साफ क्यों नहीं कह देते कि वे सिर्फ ऐसी राजनीति में लड़कों को लगा रखना चाहते हैं जिससे उनके आकाओं के नेक कदम हिन्दुस्तान की ज़मीन पर कायम रहें। उन्हें इससे उलटी राजनीति में दखल देना पसन्द नहीं। राजनीति से तो हमारा वास्ता दिन-रात का है। हम इससे जुदा नहीं हो सकते। यह रिज़ोल्यूशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेमाने है, झूठ है। जो बात है नहीं, हो नहीं सकती; वह पास करने से क्या मतलब? इस घोंघे तालीम के माहिरों की बातें सरकारी असर से रँगी हुई हैं। इनकी आँखों पर सरकार ने अपने मतलब की ऐनक लगा दी है।"

अन्त में सलीमा ने कहा, "मुझे सदर साहब ने बताया है कि कुछ मुसलमान मैम्बरान इस रिज़ोल्यूशन के हक में हैं और वे धमकी दे रहे हैं कि अगर यह पास न किया गया तो वे मुकाबले पर मुस्लिम स्टूडैंट्स फैडरेशन बना लेंगे। मैं भी मुसलमान हूँ और मेरी समझ में नहीं आता कि सियासियात से ये लोग क्यों घबराते हैं? मुस्लिम-लीग भी आज मुल्की आज़ादी की राह में रोड़ा अटका रही है। क्या मुस्लिम विद्यार्थी भी इसी वजह से मुल्की काम को पसन्द नहीं करते? यह एक निहायत ही शर्मनाक हालत है। मैं आप लोगों से अपील करती हूँ कि आप मुल्क की बातों को हिन्दू-मुस्लिम निगाहों से न देखकर हिन्दी और गैर-हिन्दी की निगाहों से देखें। अगर हम मुल्क की कोई खिदमत सरंजाम दे सकते हैं तो इसमें मुसलमानों को दुःख क्यों होना चाहिए? हमारा काम तो उस बारिश की तरह होगा, जो सब जगह बरसती है। हम इल्म से हिन्द के चमन को सरसब्ज़ देखना चाहते हैं।"

व्याख्यान का प्रभाव बहुत गहरा हुआ था। इस व्याख्यान के पश्चात् प्रधान को इस प्रस्ताव पर वोट देने का साहस नहीं हुआ। उसने वोट लेने के लिए सब ओर से आग्रह होने पर भी मीटिंग को सायंकाल तक के लिए स्थगित कर दिया।

सब लोग उठ खड़े हुए। सलीमा अपने सफल भाषण पर श्रोताओं से बधाइयाँ ले रही थी कि शेखरानन्द कुछ घबराया हुआ वहाँ पहुँचा। विनोद उसकी सूरत देख समझ गया कि दाल में कुछ काला है। उसने प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। शेखरानन्द ने कहा, "विनोद भैया, नवाब साहब।"

विनोद समझ गया। उसने पूछा, "पुलिस भी?"

"नहीं, एक अकड़ी मूँछों वाला आदमी साथ है। शायद खुफिया का····।"

विनोद हैदराबाद के नवाबज़ादे की रूप-रेखा सुन चुका था। उसने बात बीच में ही रोककर कहा, "नहीं, वह सलीमा से विवाह करना चाहता है। वे लोग किस तरफ हैं?"

"इन्क्वायरी के दफ्तर में।"

एक क्षण विचार कर विनोद ने कहा, "ठीक है।"

वह लड़कों की भीड़ में खड़ी सलीमा के पास जाकर बोला, "सलीमा, चलो। नवाबज़ादे आ गए।"

सलीमा का रंग फीका पड़ गया। वह लड़कों की भीड़ से निकल तुरन्त विनोद के संग हो ली।

: १३ :

जिस नौकर को सलीमा ने भागते समय पाँच रुपये का नोट दिया था, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितनी ही देर तक सलीमा की घबराहट के विषय में सोचता रहा। अन्त में उसने निर्णय किया कि अपनी स्त्री से इस विषय में राय करे। वह अपने घर चला गया।

कोठी के पिछवाड़े पर एक दीवार के पीछे नौकरों के घर थे। वह भी उन्हीं घरों में से एक में रहता था। घर पहुँचते ही उसने आवाज़ दी, "जमाल की माँ, ज़रा आइयो।"

वह अभी बिस्तर में बैठी आँखें मल रही थी। बोली, "क्या है, मियाँ? इतनी सुबह कहाँ गए थे?"

"अरी, इधर आओ तो। देखो, क्या लाया हूँ?"

कुछ लाने की आवाज़ सुनते ही जमाल की माँ बिस्तर से कूदकर बाहर निकल आई। जमाल का बाप कोई तीस वर्ष की आयु का था। चपरासी का काम करता था। सात रुपये सूखी तनख्वाह मिलती थी। इसमें निर्वाह अति कठिनाई से होता था। इस कारण प्रतिदिन प्रातःकाल नवाब साहब के बाग से सब्ज़ियाँ उखाड़ लाया करता था। आज भी इसी काम के लिए कोठी में गया था।

बीवी जब बाहर आई तो उसने पाँच का नोट उसके हाथ में रख दिया। बीवी ने पूछा, "कहाँ से पाया है?"

"सलीमा बीबी से।"

"किसलिए?"

"बात यह हुई कि इस महीने की तनख्वाह तो अभी मिली नहीं और बैंगन खाने को तबीयत कर रही थी। कल मैंने बाग में कुछ बैंगन निकले हुए देखे तो ख्याल आया, उतार लाऊँ। अभी अँधेरा ही था कि वहाँ पहुँच गया। देखा तो सलीमा के कमरे की खिड़की खुली। वह उसमें से निकली और कानस से लटककर नीचे कूद पड़ी। मैं तो डर गया। मैंने समझा कि मुझे चोरी करते देख पकड़ने के लिए कूदी है। मैंने छिप जाने की कोशिश की, मगर उसने मुझे देख लिया। वह जल्दी-जल्दी मेरी तरफ आई। मैंने मुआफी माँगने का फैसला कर लिया था और हाथ जोड़ कहने ही वाला था कि उसने झट से अपने थैले से पाँच का नोट निकाल मेरे हाथ में दे दिया और बोली, 'मेरी शादी के शादियाने बज रहे हैं न! बच्चों को मिठाई खिलाना।' इतना कह वह पिछवाड़े के दरवाज़े से जल्दी-जल्दी बाहर निकल गई।"

जमाल की माँ ने पूछा, "हाँ, तो फिर?"

"पहले तो मैं डरा हुआ था, फिर कुछ घबराया, और अब मैं समझता हूँ कि यह तो चोर से चोर की मुलाकात हुई है।"

"मियाँ, ठीक कहते हो। रात फतहखाँ की बीवी कह रही थी कि सलीमा का प्रेम एक लड़के से है। कुछ दिन हुए उसका घर वाला सलीमा की एक चिट्ठी डाक में डालने जा रहा था कि नवाब साहब ने रोक लिया। नवाब साहब ने वह चिट्ठी पढ़कर अपनी जेब में रख ली। उसका कहना था कि उस वक्त उनके चेहरे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितना गुस्सा दिखाई दिया था, पहले कभी नहीं देखा गया।"

जमाल का बाप बोला, "सो तो ठीक है, मगर अब क्या किया जाय? नवाब साहब को इस बात की इत्तला करूँ या न करूँ, तुमसे राय लेने के लिए लौट आया हूँ।"

"मेरी राय तो यह है कि इस पाँच रुपये के नोट को तुड़ाकर बाज़ार से बैंगन खरीद लाओ और मन भरकर के खाओ।"

"तो यह तो नमकहरामी होगी।"

"नमकहरामी तो तब है जब नमक खाया जाय। जिसकी हण्डिया में साग ही नहीं तो उसने कहाँ और किसका नमक खाया है? ऐसी अवस्था में नमकहरामी कैसे हुई? और देखो, मियाँ, मालिक वही है जो पेट भर खाने को दे। क्या तुम भूल गए हो कि पिछले साल एक बार कई महीने से तनखाह नहीं मिली थी और नवाब साहब टालमटोल कर रहे थे, तब किसने तुम्हारे बच्चे के लिए दूध के लिए रुपये दिए थे? मुझे तो वह दिन भूल नहीं सकता, जब जमाल भूखे से बिलख-बिलखकर रो रहा था और मैं उसे बेगम साहिबा के पास ले गई थी। मैं चाहती थी कि उसका रोना देख, तरस खाकर हुज़ूर से तनखाह दिला दें। बेगम साहिबा ने धक्का दिलवाकर कोठी से बाहर निकलवा दिया था। अगर उसी वक्त सलीमा मदरसे से न आ जाती तो उस ज़लालत के बाद शायद मैं गले में फाँसी डाल मर गई होती। मैं दरवाज़े में से रोती हुई बाहर निकल रही थी तो उसने देख लिया। पूछने लगी, 'क्या है? क्यों रो रही हो?'

"मैंने उसे कहा, 'हुज़ूर, इस बच्चे के बाप को सात महीने से तनखाह नहीं मिली और अब तो इसको पिलाने को दूध तक को पैसा नहीं रहा।'

"वह पूछने लगी, 'रोती क्यों हो? अम्मी ने दिया नहीं कुछ?'

"मैंने कहा, 'हुज़ूर, जूतों से पिटवाया है। कहती हैं, भूखे-नंगे कहीं के, दो दिन तनखाह में देरी हुई तो हल्ला करने लगे हैं।'

"वह यह सुन कुछ सोचने लगी। फिर बोली, 'ठहरो।' इतना कह वह भीतर चली गई। दो ही मिनट के बाद आई और दस रुपये का नोट देकर बोली, 'जब तक तनखाह न मिले, मुझसे आकर ले जाया करना।'

"दो बार और दस-दस के नोट उससे मिले थे। जब तनखाह मिली तो मैं तीस रुपये लौटाने गई। वह पूछने लगी, 'कितने महीने की तनखाह मिली है?'

"मैंने जवाब दिया, 'दस महीने की।'

'क्या मिला है?'

'सत्तर रुपये।'

'किसी और से भी कर्ज़ लिया है?'

"मैंने सब हिसाब बता दिया। 'तीस बनिये के देने हैं। चार रुपये माली की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीवी से ले रखे हैं।'

"वह कुछ सोचकर बोली, 'तो अब तुम्हारे पास क्या बचेगा? तीस मेरे, तीस बनिये के, चार माली की बीवी के। बाकी छः रुपये। दस महीने की नौकरी के बाद; और कपड़े भी क्या बनिये से खरीदते हो?'

'नहीं, हुज़ूर। पिछले दस महीने में तो एक पैसे का कपड़ा नहीं खरीदा। अब एक-दो का कपड़ा मँगवाऊँगी और कुछ अन्न-रसद। इस तरह से काम चल जायगा।'

"वह बोली, 'यह तो कुछ न हुआ। मेरी राय में ये तीस रुपये तुम रख लो। इन्हें रख छोड़ो। अगर बच्चे के लिए फिर कुछ खरीदने की ज़रूरत पड़ गई तो क्या करोगी?'

"मैंने कहा, 'तो, हुज़ूर, आपका रुपया फिर कैसे अदा होगा?'

"बोली, 'वह हो गया है। जाओ, चली जाओ। फिर कभी ज़रूरत होगी तो आ जाना। हो सका तो मिल जायगा।'

"अब बताओ? मेरी मालिका तो वह है। मैं तुम्हें उसे फँसाने की राय नहीं दे सकती। उसका नमक तो तब खाया था जब भूख मौत बनकर सिर पर मंडरा रही थी।"

जमाल के बाप ने कहा, "मगर......।"

"मगर-वगर कुछ नहीं। अब जाओ, बाज़ार से बैंगन ले आओ। सलीमा जिससे मुहब्बत करती है, मैं कैसे उसे उससे जुदा करने में मदद दे सकती हूँ?"

"मगर मालिक की बदनामी होगी।"

"तो हम क्या कर सकते हैं? हमारी बदनामी और बेइज़्ज़ती का ख्याल भी कभी उन्हें आया है क्या? भला, लखनऊ जैसे शहर में सात रुपये महीने में क्या कोई कबीलदार गुज़र कर सकता है? और मालिक ने इतनी कम तनखाह क्यों कर रखी है? पल-पल में तो सैकड़ों रुपयों का पैट्रोल फूंक दिया जाता है और हम गरीबों के लिए महीने की नौकरी के बाद सात रुपये भी नहीं निकल सकते।

"मियाँ, तुम औरत के दिल की बात नहीं समझ सकते। यह एक चिराग की मानिन्द होता है। मुहब्बत का तेल जब तक इसमें रहता है यह जलता है और रोशनी देता है। तेल के निकल जाने पर यह बुझ जाता है। तो क्या मैं एक औरत के दिल से इस मुहब्बत के तेल को निकाल देने की राय दे सकती हूँ? इसी मुहब्बत ने तो एक बार मौत से हमारी हिफाज़त की थी। मियाँ, जाओ, अपना काम करो। बड़े आदमियों के झगड़े में अपना सिर न दो। कुचला जायगा।"

यह बात जमाल के बाप की समझ में आ गयी। वह थैला ले बैंगन खरीदने बाज़ार चला गया। इस प्रकार सलीमा का लखनऊ में ही पकड़ा जाना सफल न हो सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १४ :

हैदराबाद के नवाबज़ादे को पिछले दिन जब सलीमा ने फटकार बताई थी और उसका अपमान किया था तो वह उससे प्रतिकार के विचार से उसे विवाहने के लिए और भी उत्सुक हो उठा। उसने सलीमा के बाप से कहा, "नवाब साहब ! आपकी लड़की शोख है। लेकिन एक बार हरम में चली गयी तो फिर हिरनी की मानिन्द हलीम हो जायगी।"

बेगम साहिबा से राय ली गयी और विवाह अगले ही दिन सायंकाल निश्चित कर दिया गया। यथार्थ बात यह थी कि नवाब साहब के मन में यह सम्बन्ध बहुत जम गया था और वह इस शुभ अवसर को हाथ से निकलने नहीं देना चाहते थे। उन्हें सलीमा की भाँति उसके उच्च परिवार के होने का सन्देह नहीं था। वह अपनी ओर से पूरी जाँच-पड़ताल कर चुके थे।

विवाह के दिन प्रातःकाल ही शहनाई वाले कोठी के फाटक पर आ बैठे। शहनाई की आवाज़ से नवाब साहब और बेगम साहिबा की नींद खुल गयी। पिछली रात बहुत देर तक विवाह का प्रबन्ध करते और निमन्त्रण-पत्रों को लिखते हुए वे जागते रहे थे। उनके उठते ही कोठी में चहल-पहल होने लगी। सब नौकर-चाकर शादी के प्रबन्ध में लगे हुए थे। कोठी की सफाई हो रही थी। स्थान-स्थान पर झंडियाँ और फानूस लटकाये जा रहे थे। कालीन और कुर्सियाँ सजाकर बिछाई व लगाई जा रही थीं। अभिप्राय यह कि इतनी घमासान मची थी कि किसी को किसी की सुध नहीं थी।

सलीमा की माँ को ग्यारह बजे नहाने और खाने की फुरसत हुई। घर में आस-पड़ोस की बहुत औरतें जुट रही थीं। किसी को कुछ कहना और किसी को कुछ देना। खाना खाने के समय उसे सलीमा की याद आई। वह सलीमा को कुछ खिला-पिलाकर तैयार करने के लिए उसके कमरे में गई। कमरे को बाहर से ताला लगा रखा था। बेगम ने कमरबन्द से लटकते हुए चाबियों के गुच्छे से चाबी निकाल, ताला खोल, दरवाज़ा खोल दिया और आवाज़ दी, "सलीमा, ओ कम-बख्त, इधर आ।"

जब कुछ उत्तर नहीं मिला तो उसने कमरे के भीतर जाकर पुकारा, किन्तु तब भी कुछ उत्तर नहीं आया। अब उसे कुछ चिन्ता लगी। वह सोने के कमरे में गई। सलीमा वहाँ भी दिखाई नहीं दी। गुसलखाने में देखा। फिर बाहर पढ़ने के कमरे में देखा। अब तो उसने घबराकर, उतावलों की भाँति, मेज़-कुर्सियों के नीचे, अलमारियों के पीछे, बिस्तर-पलंगों के नीचे देखना आरम्भ कर दिया। जब वह कहीं नहीं मिली तो हताश हो एक कोच पर बैठकर सोचने लगी।

मकान के नीचे, भीतर और बाहर, कोठी में धूम मच रही थी। आने-जाने वालों का तांता बँधा हुआ था। हलवाई और दर्ज़ी पार्क में शामियाने के नीचे काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहे थे। नवाब साहब कभी एक से बातें करते थे, कभी दूसरे से। उनके कई रिश्तेदार भी अपनी-अपनी बंसी बजा रहे थे। अभिप्राय यह कि भारी भीड़ थी और वावैला था।

नवाब साहब हलवाई द्वारा बनाई गई मिठाई को चखकर कह रहे थे, "खूब, बहुत खूब! बहुत अच्छी बनी है।" इस समय भीतर से एक नौकरानी ने आकर कहा, "हुज़ूर, बेगम साहिबा ने बुलाया है।"

नवाब साहब ने झुंझलाकर कहा, "ओ जी, जाकर कह दो, अभी फुरसत नहीं है। देखो तो कितना काम है। यह रात तक कैसे निपटेगा?"

मगर नौकरानी ने अनुरोध किया, "हुज़ूर बहुत ज़रूरी काम है, और अभी, फौरन चलिये।"

विवश नवाब साहब नौकरानी के आगे-आगे हो लिए। वह उन्हें सलीमा के कमरे में ले गयी। बेगम का मुख देखते ही वह समझ गये कि कुछ अनिष्ट हुआ है। नौकरानी को वहाँ से बाहर भेज पूछा, "क्यों, क्या हुआ है? कुछ खो गया है क्या?"

"हाँ, सलीमा नहीं है।"

"यह ताला क्यों खोला था?"

"ताला खोलकर अभी खाने को कहने आई थी। देखा तो यहाँ कोई नहीं है। या खुदा! अब क्या होगा?"

"आखिर वह निकल किधर से गयी?"

"सोने के कमरे की खिड़की से कूद गयी मालूम होती है।"

"लाहौल विला! कैसी बातें करती हो? इतने ऊँचे से कैसे कोई कूद सकता है?" इतना कह नवाब साहब भागकर खिड़की में जा खड़े हुए। बहुत ध्यानपूर्वक खिड़की के बाहर और नीचे देखते रहे, पश्चात् धीरे-धीरे बेगम के पास आकर खड़े हो गये। कहने लगे, "खिड़की के बाहर कानस पर और नीचे कद्दू की बेल पर कूदने के निशान बने हैं।"

बेगम ने पूछा, "अब क्या होगा, हज़रत? मैंने तो आपको कल ही कहा था कि जल्दी करने की क्या ज़रूरत है?"

नवाब साहब ने चिढ़कर कहा, "तुम तो हमेशा ऐसा ही कहा करती हो। जब कोई बात खराब हुई तो अपनी वरीयत ही करने लगीं। कुछ तजवीज़ भी बताओगी क्या? एक तरफ तो शादी की तैयारियाँ बड़े ज़ोरों से हो रही हैं और दूसरी ओर लड़की ही गायब है। अगर यह बात लोगों में फैल गयी तो कितनी बदनामी होगी?"

बेगम ने मुख नीचे किये हुए कहा, "मैं क्या बताऊँ? पहले तो लड़की को इतनी खुली छुट्टी दे रखी थी और अब उसे ताले में बन्द करना चाहते थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवाब साहब ने क्रोध में कहा, "फिर वही बात ! आखिर इन बातों से हासिल क्या होगा ?"

"तो जाओ, दामाद साहब से पूछो कि वह अब क्या चाहेंगे ?"

नवाब साहब को यह बात मन लगी। वह बेगम को वहीं छोड़ बाहर चले आये और बिना किसी से कुछ कहे मोटर में सवार हो, चौक में, जहाँ नवाबज़ादा इफ्तिखार अहमद ठहरे हुए थे, जा पहुँचे। वहाँ भी बारात की तैयारियाँ हो रही थीं।

नवाब साहब ने इफ्तिखार अहमद को एक तरफ ले जाकर पूरी बात से परिचित करा दिया। उसे पहले तो बहुत क्रोध आया, मगर कुछ सोचकर बोला, "आज तो शादी नहीं हो सकती। इसे फिलहाल किसी-न-किसी बहाने से मुल्तवी करना चाहिये। पीछे देखेंगे। मैं अपनी तरफ से तो अब भी, वह मिल जाय तो, शादी के लिए तैयार हूँ।"

"मगर वह मिलेगी कहाँ ? मेरा दिमाग काम नहीं करता।"

"अगर वह मिल जाये, तो क्या आप फौरन उसका निकाह मुझसे पढ़ा देंगे ?"

"भाई, मुझे इसमें कोई एतराज़ नहीं। बल्कि मुझे तो निहायत खुशी होगी। मगर यह होगा कैसे ?"

इफ्तिखार अहमद ने कुछ सोचकर तजवीज़ की। कहने लगा, "आप घर जाकर शादी एक हफ्ते के लिए मुल्तवी करने का ऐलान कर दें। मशहूर कर दें कि सलीमा एकाएक बीमार हो गयी है। किसी डॉक्टर वगैरह को लाने और दिखाने का बहाना भी कर दें। इधर मैं उसका पता निकालने की कोशिश करूंगा।"

नवाब साहब तो घर लौट आये और रास्ते में से अपने एक दोस्त डॉक्टर को भी लेते आये। दूसरी ओर इफ्तिखार अहमद ने मोटर ले मैडिकल कॉलेज का रास्ता पकड़ा।

कॉलेज के लड़कों ने विनोद और सलीमा के नाम कॉलेज से खारिज किये जाने पर हड़ताल कर रखी थी। नवाबज़ादा वहाँ पहुँचा तो कॉलेज खाली पड़ा था। दफ्तर से उसे मालूम हुआ कि सलीमा दिल्ली जाने के लिए कॉलेज से छुट्टी ले चुकी है। उसे विश्वास हो गया कि वह दिल्ली गयी है।

: १५ :

नवाब साहब, इफ्तिखार अहमद और निकाह पढ़ाने के लिए एक मुल्ला रात की गाड़ी से चलकर अगले दिन दिल्ली जा पहुँचे। शहर में एक होटल में असबाब वगैरह रख, स्नान इत्यादि से छुट्टी पा, खाना खा, मुल्ला को वहीं छोड़, वे फैडरेशन के सभा-मंडप में पहुँच गये। इन्क्वायरी के दफ्तर में पहुँच पूछने लगे, "लखनऊ से कौन-कौन डेलीगेट आये हैं ?"

इन्क्वायरी वाले बताने से इन्कार करते थे। उन्होंने कहा, "पहले आप बतायें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि आपका क्या मतलब है और आप हैं कौन ?"

कुछ हील-हुज्जत के बाद इफ्तिखार अहमद बोला, "जनाब, बात यह है कि लखनऊ से एक लड़की के डैलीगेट बनकर आने की खबर थी। उसका नाम मिस सलीमा है। हम उसके रिश्तेदार हैं और देहली में रहते हैं। हम जानना चाहते हैं कि वह आई है या नहीं।"

अब दफ्तर वालों ने अपना रजिस्टर निकाला और बताया, "हाँ, मिस सलीमा रात तशरीफ लाई हैं। ठहरने का पता नहीं।"

"क्या हम पण्डाल में जाकर देख सकते हैं कि वह कहाँ है ?"

"आप यहीं तशरीफ रखें। मैं चिट लिखकर भीतर देता हूँ और वह बाहर आ जायेंगी।"

इतना कह वह लिखने लगा। इफ्तिखार अहमद बोला, "देखिये, यह लिखिये कि आपसे बाहर कोई मिलने आया है।"

इस पर लिखने वाला मुख देखने लगा। नवाब साहब ने कहा, "नाम लिखने की ज़रूरत नहीं। अचानक मिलने में ज़रा लुत्फ रहेगा।"

चिट लिखने वाले ने मुस्कराकर कहा, "बहुत खूब! आप तशरीफ रखें। मैं अभी उनको बुलाता हूँ।"

इसी वक्त शेखरानन्द, जो सलीमा का व्याख्यान बन्द होने पर बाहर चला आया था, इन्क्वायरी ऑफिस के पास से गुज़रा। वह नवाब साहब को वहाँ बैठा देख, सब समझ गया और तुरन्त पण्डाल में पहुँच विनोद को संकेत कर, वापस दफ्तर में चला आया। नवाब साहब ने उसे देख लिया। वह लपककर उसके पास पहुँचे और कहने लगे, "क्यों जी, सलीमा कहाँ है ?"

"सलीमा, ओह नवाब साहब !" उसने विस्मय में कहा, जैसे उसने उनको अभी देखा हो, "वह व्याख्यान दे रही है।"

"मगर लोग तो बाहर निकल रहे हैं।"

"तो व्याख्यान समाप्त हो गया होगा।"

"वह बाहर आयेगी क्या ?"

"उम्मीद तो है। शायद यहीं आयेगी।"

"तुम उसके पास हमें ले चलो।"

"मैं उससे नहीं बोलता।"

"क्यों ?"

"आपने जब से कहा है कि हमारे साथ घूमने से उसकी बदनामी होगी, मैंने उससे मिलना और बोलना बन्द कर दिया है।"

नवाब साहब के मुख से 'ओह' का शब्द ही निकला। वह पण्डाल से निकलती भीड़ को देखते रहे। सलीमा बाहर नहीं आई। अब उन्होंने भीतर जाकर ही देखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित समझा। वह वहाँ पर नहीं थी। इफ्तिखार अहमद ने एक से पूछा, "यह आखिर में किसकी तकरीर हो रही थी?"

"एक लड़की की।" जवाब मिला।

"क्या नाम था?"

"नाम नहीं जानता।"

"वह कहाँ है?"

"चली गई है।"

"इधर से तो नहीं निकली।"

"जी नहीं, वह दर्शकों के मार्ग से निकल गयी है।"

"कहाँ ठहरी है?"

"मैं नहीं जानता।"

बातों में और समय व्यर्थ खोने के स्थान वे दोनों दर्शकों के दरवाज़े की ओर भागते हुए गये। उधर से बाहर निकल उन्होंने चारों ओर देखा। वह वहाँ नहीं थी। वहाँ से निराश हो वे फिर पूछताछ के दफ्तर में पहुँचे और मिन्नत कर पूछने लगे, "क्यों, साहब, आप मिस्टर विनोदकुमार का पता बता सकते हैं?"

"रायल होटल नम्बर पाँच में।"

नवाब साहब इफ्तिखार अहमद को साथ ले वहाँ पहुँचे। विनोद अथवा सलीमा वहाँ नहीं थे। शेखरानन्द, कृष्णकुमार के साथ, खाना खा रहा था। नवाब साहब वहाँ पहुँच शेखरानन्द को डाँटकर बोले, "तुम्हारा दोस्त, वकील का लौंडा, कहाँ है?"

शेखरानन्द नवाब साहब की परेशानी को समझ रहा था। शिकारी पक्षी को नहीं पकड़ सका था। उसकी हँसी निकल गयी। उसको हँसता देख नवाब साहब क्रोध से लाल-पीले हो उठे। पूछने लगे, "क्यों, हँस क्यों रहे हो?"

शेखरानन्द ने कुछ अकड़कर कहा, "आपकी बदतमीज़ी पर। आपको नवाब किसने बनाया है?"

शेखरानन्द की उत्तर देने में तत्परता देख कृष्णकुमार की भी हँसी फूट पड़ी। उसके मुख में से ग्रास उछलकर बाहर निकल आया और वह अपने स्थान से उठ उगालदान के पास जा खड़ा हुआ। इफ्तिखार अहमद घूर-घूरकर शेखरानन्द की तरफ देख रहा था। शेखरानन्द ने गम्भीर मुद्रा मुख पर लाकर कहा, "मैं आपके वकील के लौंडे का बॉडीगार्ड नहीं हूँ। मगर क्या मैं पूछ सकता हूँ कि उससे आपको क्या काम है?"

इस पर इफ्तिखार अहमद बोल उठा, "उसे हवालात में भिजवाना है।"

शेखरानन्द अब कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। वह समझ रहा था कि नवाब साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का साथी लड़ने के लिए तैयार है। उसने इफ्तिखार अहमद के हाथ की पहुँच से ज़रा पीछे हटकर कहा, "तो आप पुलिस अफसर हैं ? ज़रा ठहरिये। मैं थाने में टेलीफोन कर पूछ लूं कि आप पुलिस के अफसर हैं या नहीं।"

इतना कह वह ज़ोर से पुकारने लगा, "मैंनेजर साहब, मैनेजर साहब ! !"

हल्ला सुन होटल का मैनेजर और कुछ और लोग भागे हुए शेखरानन्द के कमरे में चले आये। नवाब साहब और इफ्तिखार इस हल्ले का प्रयोजन नहीं समझ सके। मैनेजर हैरानी से उनकी ओर देखने लगा। शेखरानन्द ने कहा, "मैनेजर साहब, यह शख्स कहता है कि यह पुलिस का अफसर है। मुझे तो यह कोई चार सौ बीस मालूम होता है। क्या आप इसे जानते हैं ?"

होटल के मैनेजर ने उसे सिर से पाँव तक ध्यान से देखा और पूछा, "आप कौन हैं ?"

"मैं पुलिस का अफसर नहीं हूँ।"

"तो ठीक है। कमरे से बाहर निकल जाओ।"

"हम तो सिर्फ इनके एक दोस्त का पता पूछना चाहते हैं।"

"तो आपने यह क्यों कहा था कि आप उसे हवालात में ले जाना चाहते हैं ?" शेखरानन्द ने ज़ोर से कहा।

होटल के मैनेजर ने ज़रा डाँटकर कहा, "देखिये, साहब, आप होटल से एकदम बाहर हो जायें, वरना मुझे पुलिस बुलानी पड़ेगी।"

अब नवाब साहब का पारा नीचे उतर आया। वह अपनी लड़की की बाबत वहाँ ज़िक्र करना नहीं चाहते थे। अतएव उन्होंने बहुत नम्रता से कहा, "मैनेजर साहब, आपसे एक गुज़ारिश मैं अलहदा में करना चाहता हूँ।"

इस पर मैनेजर उनको अपने दफ्तर में ले गया। वहाँ पहुँच नवाब साहब ने कहा, "इस कमरे में एक मिस्टर विनोद ठहरा हुआ है। हम उससे मिलना चाहते हैं। यह लड़का उसका पता नहीं बताता।"

"वह क्यों बताये ? आखिर आप हैं कौन और क्यों उसका पता पूछते हैं ?"

"मैं कौन हूँ ?" नवाब साहब ने कुछ झिझकते हुए कहा, "मुझे लोग नवाब मुर्तज़ाअली कहते हैं। मैं बाराबंकी का एक बड़ा ज़मींदार हूँ। लखनऊ के रईसों में मेरा एक बड़ा रुतबा है।" इतना कहकर उन्होंने अपना एक छपा कार्ड निकालकर मैनेजर के सम्मुख रख दिया।

मैनेजर ने कार्ड पढ़कर कहा, "मगर आप धमकी देकर क्यों पूछते हैं ? जो बात शराफत से हो सकती है, उसमें झगड़ा करने की क्या ज़रूरत है ?"

अब नवाब साहब ने बहुत ही खुशामद से कहा, "तो आप हमारी मदद कर दें।"

मैनेजर ने कुछ सोचकर सहायता करने का वचन दिया। वह शेखरानन्द के पास पहुँचकर कहने लगा, "मिस्टर विनोद कहाँ गये हैं ? क्या आप बता सकते हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे मालूम नहीं।"

"देखिये, झगड़ा बढ़ाने से क्या मतलब? आप नवाब साहब को जानते हैं क्या?"

"हाँ, मगर उनके साथी को नहीं जानता। वही तो पुलिस अफसर बन रहा था।"

"उसको छोड़िये। वह तो शक्ल से ही बेवकूफ मालूम होता है। मैं नवाब साहब को बुलाऊँ। आप उनसे बात कर लें। झगड़ा नहीं करियेगा। इसमें हमारे होटल की बदनामी होती है।"

शेखरानन्द ने कुछ सोचकर कहा, "मगर जो कुछ मैं जानता हूँ, वही तो बता सकता हूँ। वह आ जायें, परन्तु उनसे कह दें कि ज़रा तमीज़ से बात करें। हम भी रईसों के लड़के हैं, आवारा नहीं।"

अब नवाब साहब फिर शेखरानन्द के कमरे में चले आये और कुर्सी पर बैठकर कहने लगे, "देखो, भाई, एक बूढ़े बाप के जज़्बात का ख्याल करो और मुझे सलीमा के ढूँढ़ने में मदद दो।"

शेखरानन्द ने अब अचम्भा प्रकट करते हुए कहा, "तो क्या सलीमा घर से भागकर आई है? मुझे मालूम नहीं था।"

"वह यहाँ कब आई है?"

"वह कल रात पहुँची थी; मगर हम लोग और विनोद तो वहाँ से बृहस्पत के दिन आ गये थे।"

"वह कहाँ ठहरी है?"

"कहीं नई दिल्ली में। मगर मुझे ठीक मालूम नहीं।"

"मेरा ख्याल है कि विनोद मिल जाय तो उसका पता चल जायगा।"

शेखरानन्द ने नवाब साहब को अब सभ्यता से बात करते देख कहा, "मैं आपसे एक बात पूछूं? आप नाराज़ तो न होंगे?"

"हाँ, कहो।"

"इस गँवार को आप अपने साथ किसलिए लाये हैं?"

"यह गँवार नहीं है। यह औरंगाबाद के एक बड़े जागीरदार का लड़का है। इंगलैंड रिटर्ण्ड है।"

"ओह! सच? शक्ल-सूरत से तो ऐसा मालूम नहीं होता। खैर, हो सकता है, मगर आपके साथ क्यों आया है?"

"सलीमा की इससे शादी होने वाली थी और...।"

शेखरानन्द ने बात बीच में ही काटकर कहा, "इससे? तभी वह घर से भाग आई है। अब मालूम हुआ है कि वह दिल्ली न आने का फैसला कर, फिर यहाँ क्यों आ गयी है। नवाब साहब, अगर गुस्ताखी न मानें तो कुछ अर्ज़ करूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या ?"

"इस नवाबज़ादे को वापस हैदराबाद भेज दीजिये।"

"फिर ?"

"सलीमा का उससे शादी का विचार छोड़ दें।"

"क्यों ?"

"मैं समझता हूँ, सलीमा उससे शादी नहीं करेगी। शायद खुदकुशी कर लेगी।"

"मगर इसमें भारी बदनामी होगी।"

"किसमें ?"

"इस रिश्ते को तोड़ने में।"

"और सलीमा के भागने से क्या नेकनामी हुई है? अगर वह खुदकुशी कर लेगी तो क्या आपका नाम रोशन होगा ?"

"मुझे तो आजकल के नौजवानों की बातें समझ में नहीं आतीं।"

"यही तो समझा रहा हूँ। आप इस नवाबज़ादे को बैरंग वापस कर दें और मुझे पूरा यकीन है कि सलीमा आपसे पहले घर पहुँच जायगी।"

"तो तुम जानते हो, वह कहाँ है ?"

"नहीं। मगर मैं उसकी रुचि को जानता हूँ। इस महापुरुष के आपके पास रहते वह आपके पास रहना पसन्द नहीं करेगी।"

"लेकिन उसको कैसे पता चलेगा कि साहब चले गये हैं? कौन उसको बतायेगा ?"

"बताने की क्या ज़रूरत है? उसने अवश्य ही कोई प्रबन्ध कर रखा होगा, जिससे वह अपने घर की बात जानती रहती होगी।"

"मैं उसका बाप हूँ। उसे मेरे कहने के मुताबिक करना चाहिये।"

"वह जाने, आप जानें। मुझे न आपसे, न उससे कोई सरोकार है। मैंने तो आपको अपनी समझ के मुताबिक राय दी थी। जो आपके मन में आवे करें।" इतना कह शेखरानंद ने उठकर, नवाब साहब को विदा करने के लिए, हाथ मिलाने को बढ़ा दिया।

नवाब साहब ने हाथ नहीं मिलाया और उठकर चल दिये। शेखरानन्द का हाथ बढ़ा हुआ रह गया। यह देख कृष्णकुमार की हँसी निकल गयी। हँसी सुन नवाब साहब क्रोध से लाल-पीले होते हुए वापस फिर कमरे में आ गये और कृष्ण-कुमार की ओर घूरकर देखते हुए बोले, "इसका मतलब ?"

कृष्णकुमार अब गम्भीर हो गया। वह कुर्सी से उठ, खड़ा हो, अकड़कर, घृणा का भाव दिखाते हुए बोला, "जिसमें इतनी भी तमीज़ नहीं कि मिलाने के लिए बढ़ाये गये हाथ से कैसा सलूक करना चाहिये, उसे यह जानने का भी हक नहीं कि कोई क्यों हँसता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवाब साहब अपना क्रोध मन-ही-मन पी और इफ्तिखार अहमद को साथ ले होटल से बाहर चले आये।

: १६ :

विनोद सलीमा को ले पण्डाल के पिछले दरवाज़े से बाहर निकल गया। वहाँ से वे ताँगे पर सवार हो टैक्सी स्टैंड पर पहुँचे। टैक्सी वाले ने पूछा, "कहाँ चलना होगा ?"

दोनों एक-दूसरे का मुख देखने लगे। उन्होंने अभी कुछ निश्चय नहीं किया था। टैक्सी वाले को कुछ बताना आवश्यक था। विनोद ने यह सोच कि शीघ्र वहाँ से दूर निकल जाना चाहिये, जो पता उसके मन में सबसे ऊपर था, बता दिया। बोला, "तेरह, बाबर लेन, नई दिल्ली।"

टैक्सी वाले ने मोटर छोड़ दी। सलीमा ने विनोद से कह दिया, "मैं अपने घर तब तक नहीं जाना चाहती, जब तक उस हैदराबाद वाले से मेरे विवाह की चर्चा बन्द न हो जाय।"

विनोद ने कहा, "मैं तुम्हारे फैसले को अपनी राय से बदलना नहीं चाहता। हाँ, जो कुछ बन पड़ेगा तुम्हें मदद देने के लिए तैयार हूँ।"

टैक्सी बताये पते पर पहुँच गयी। वह भाड़ा देकर चलती कर दी गई। मकान पर विद्यार्थियों की भीड़ लगी थी। विनोद पथिक से मिलने नहीं आया था। वह तो पण्डाल से कहीं दूर जाकर एकान्त में सोचना चाहता था कि क्या किया जाय। अब वहाँ पहुँच जाने से उसने सोचा कि पथिक से मुलाकात कर ली जाय। अतएव उसने अपना कार्ड पथिक के पास भेज दिया।

बहुत-से विद्यार्थी बाहर कोठी के लॉन में और बरामदे में बैठे परस्पर बातें कर रहे थे। पथिक भीतर था। विनोद का कार्ड भीतर जाते ही मोहन बाहर आया और उसको भीतर ले गया। वहाँ भी बहुत-से विद्यार्थी पथिक को घेरे बैठे थे। पथिक उनसे कह रहा था, "मैंने आपको समझा दिया है। देश को स्वतन्त्र कराने का बोझ आप लोगों पर है। यह सरकार की नीति है कि आपको ऐसे कामों में संलग्न रखे कि जिनसे या तो सरकार यहाँ पर दृढ़ता से अपना राज्य-कार्य चलाती रहे या कम-से-कम आप लोग निःसहाय, असंगठित भटकते रहें। यह ठीक है कि आप लोगों को पढ़ाई करनी है। मैं आपको कॉलेज छोड़ने के लिए नहीं कहता। मैं तो चाहता हूँ कि अवकाश के दिनों में आप देश का काम करें। सब कॉलेजों में वर्ष में एक बार लम्बी छुट्टियाँ होती हैं। आप उस अवकाश को देश-सेवा में लगा दें। यह बहुत भारी त्याग नहीं है। आपको कुछ भी जेब-खर्च करना नहीं होगा। केवल एक से दो मास तक का समय देना होगा। शेष सब प्रबन्ध मैं कर दूंगा।"

इस पर एक ने पूछा, "आप हमें क्या करने को कहते हैं ?"

पथिक ने कहा, "आप भारी संख्या में युवक-प्रचारक-दल के सदस्य बन जायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम आपको साहित्य देंगे। उस साहित्य में लोगों को क्या और कैसे बताना चाहिये, लिखा होगा। सदस्य उसको पढ़कर जब प्रचार करने योग्य हो जायेंगे तब उनको छोटी-छोटी मंडलियों में हम नगर-नगर और गाँव-गाँव में भेजेंगे। वहाँ लोगों को वे इन बातों का ज्ञान करायेंगे जिससे वे हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तानियों के राज्य के लिए यत्नशील हो सकें। पहली बात जो हम करना चाहते हैं, वह लोगों को अपनी परिस्थिति से परिचित करना है। हम चाहते हैं कि प्रत्येक हिन्दुस्तानी को यह ज्ञान हो जाय कि हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तानियों का राज्य न होने से उसे व्यक्तिगत रूप में और जाति को समष्टिगत रूप में क्या हानि हो रही है। सरकार स्कूलों में अंग्रेज़ी राज्य की अच्छाइयों का झूठा प्रचार करके और दूसरे उपायों से सरकार ने एक साधारण हिन्दुस्तानी के मन में यह विचार बना दिया है कि यदि हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी राज्य न होता तो हम कुत्ते-बिल्लियों की भाँति लड़कर मर गये होते। पहले तो हम इस झूठे विचार को दूर करना चाहते हैं।

"मैं चाहता हूँ कि यदि मुझे तमाम हिन्दुस्तान के कॉलेजों से दस हज़ार विद्यार्थी मिल जायें तो मैं हिन्दुस्तान को दो हज़ार हलकों में बाँट दूंगा और प्रत्येक हलके में पाँच-पाँच की मण्डली को दो मास तक काम करने के लिए भेज दूंगा। प्रत्येक मण्डली अपने हलके के कोने-कोने में विदेशी राज्य से असन्तोष की हवा चला देगी।"

एक युवक कहने लगा, "इससे क्या होगा? असन्तोष ही पाप का मूल है। असन्तुष्ट हिन्दुस्तानी बेचारे दुःख और सन्ताप में मर जायेंगे।"

"अपनी वर्तमान अवस्था से असन्तोष ही लोगों को अपनी उन्नति करने पर विवश करता है। ये असन्तुष्ट लोग क्या करें, यह अलग कदम होगा। पूर्व इसके कि हम स्वराज्य प्राप्त करें या हमें स्वराज्य मिले, हमें रचनात्मक काम करना होगा। उन असन्तुष्ट लोगों को आप रचनात्मक काम बताकर आशा का अमृत पिला दें। फिर वे नहीं मरेंगे। वे अमर हो जायेंगे। दुःख और सन्ताप झेलने के लिए आशा-रूपी संजीवनी सबको दे दो।"

"रचनात्मक काम से आपका क्या मतलब है? क्या क़ांग्रेस का रचनात्मक काम करना होगा?"

पथिक ने मुस्कराते हुए कहा, "नहीं। कांग्रेस के रचनात्मक काम को मैं खराब नहीं समझता। इसमें एक-दो बातें तो विशेष उपकार करने वाली हैं। परन्तु यह राजनैतिक रचनात्मक काम नहीं है। यह स्वराज्य मिलने के पश्चात् तो और भी भली भांति चलाया जा सकता है। परन्तु यह स्वराज्य-प्राप्ति में किसी भाँति भी सहायक नहीं हो सकता। मेरा रचनात्मक प्रोग्राम इससे भिन्न है। मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक नगर में, मुहल्ले में, गाँव में और कस्बे में युवकों को संगठित दलों में बाँध दिया जाय। इनमें शरीर में शक्ति, स्फूर्ति और मन को नियंत्रण में रखने का अभ्यास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराया जाय। लोगों का दृष्टिकोण हिन्दू और मुसलमान होने के स्थान हिन्दी और गैर-हिन्दी बनाया जाय। लोगों को बताया जाय कि हिन्दुस्तान में ब्रिटिश राज्य के स्तम्भ क्या हैं और उन स्तम्भों को कैसे गिराया जा सकता है।"

"परन्तु यह तो प्रारम्भिक प्रोग्राम है। क्या यह अन्तिम ध्येय तक ले जा सकेगा?" यह विनोद का, जो अब बातचीत में दिलचस्पी ले रहा था, प्रश्न था।

पथिक का उत्तर था, "अन्तिम प्रयत्न आप लोगों का काम नहीं। विद्यार्थियों का काम है ठीक ढंग की शिक्षा का प्रचार, लोगों के दृष्टिकोण को बदलना। शेष आप भगवान् पर छोड़ दें। अवसर आयेगा जब आप लोगों का तैयार किया हुआ क्षेत्र बहुत बढ़िया फल उत्पन्न करेगा।"

एक बिहारी युवक पूछने लगा, "कांग्रेस के अधीन रहकर आप यह सब क्यों नहीं करते?"

"केवल इसलिए कि कांग्रेस का कार्यक्रम और काम करने का ढंग घटिया है। उससे सफलता की आशा नहीं है।"

इस पर एक और उठकर कहने लगा, "आप अपनी राष्ट्रीय संस्था का अपमान करते हैं। जिस संस्था ने पन्द्रह-बीस वर्ष में देश के कोने-कोने में राष्ट्रीयता का बिगुल बजा दिया है, उसके कार्यक्रम को आप घटिया नहीं बता सकते।"

अब एक और विद्यार्थी क्रोध में कहने लगा, "आप कम्युनिस्ट प्रतीत होते हैं।"

एक बीच में ही बोल उठा, "नहीं, हिन्दू-सभाइट हैं।"

पथिक ने सबको शांत कर कहा, "मैं किसी भी पार्टी का आदमी नहीं हूँ। मैं कम्युनिस्ट इस कारण नहीं हूँ कि मैं कट्टर हिन्दुस्तानी हूँ। मैं हिन्दू-सभाइट भी नहीं हूँ, इस कारण कि मैं राजनीति में हिन्दू-मुसलमान में अन्तर नहीं समझता। मैं कांग्रेस-नीति का विरोधी इसलिए हूँ कि इस नीति ने पिछले पन्द्रह वर्षों में राजनीति से लोगों को दूर कर उन्हें उलटे मार्ग पर चलाया है। यदि कांग्रेस में सम्मिलित लोगों का विचार राजनीति की ओर होता तो कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल शराबखोरी बन्द करने को पहला स्थान न देकर राष्ट्रीय संरक्षण-दल निर्माण करने को पहला स्थान देते। वे हिन्दू और मुसलमानों के लिए नौकरियों की संख्या निश्चित करने में शक्ति और समय का अपव्यय न कर सब सरकारी नौकरियों को राष्ट्रीयता के विचारवालों को देने का यत्न करते। यदि कांग्रेस का दृष्टिकोण राजनीति का होता तो वे उन सब सरकारी मुलाज़िमों को, जिन्होंने पहले राष्ट्रीय आन्दोलनों को दबाने में न्याय और अन्याय को छोड़ सिर-तोड़ यत्न किया था, अब निष्पक्ष अदालतों के सम्मुख उपस्थित कर दण्ड दिलवाते। सबसे अधिक यह कि उस शिक्षा को, जिसने विदेशी राज्य चलाने वाले विदेशी सरकार के भक्त उत्पन्न किये हैं, जलाकर भस्मीभूत कर देते। मेरा दावा है कि कांग्रेस यथार्थ में समाज-सुधारक संस्था है, वह राजनैतिक संस्था नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद ने अब पूछा, "आपके युवक-संघ में कौन सम्मिलित हो सकेंगे ?"

"वे कॉलेज के विद्यार्थी जो आठ आना वार्षिक चन्दा देंगे । जो प्रतिज्ञा करेंगे कि प्रति वर्ष लम्बी छुट्टियों के दो मास संघ के आदेशानुसार देश की सेवा में लगायेंगे और अन्तिम जो प्रतिज्ञा करेंगे कि मन-वचन-कर्म से कोई ऐसी बात नहीं करेंगे जिससे युवक-संघ का अपमान हो ।

"यह संघ केवल प्रचारक-संघ होगा । हम क्रियात्मक राजनीति अर्थात् म्युनिसिपल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, कौंसिलों और असेम्बलियों के सदस्य बनने या बनाने में कोई भाग नहीं लेंगे। हम राज्य-विधान बनाने में भी भाग नहीं लेंगे । हाँ, ठीक राज्य-विधान क्या है उसका सर्व-साधारण में प्रचार करेंगे ।"

एक ने पूछा, "इस संघ का संचालन कौन करेगा ?"

"मैं करूँगा।"

"यदि किसी को आपकी बात पसन्द न आये तो ?"

"वह मुझे समझाने का यत्न करे। इस पर भी यदि मतभेद रहे तो वह संघ छोड़ने के लिए स्वतन्त्र होगा।"

"तो यह तो कुछ न हुआ । आप संघ की एक संचालन-समिति क्यों नहीं बना लेते ?"

"वह तो बनी है । उसमें सदस्य मेरी सम्मति से और मेरे निमन्त्रण से आते हैं । वे लोग मेरी योजना पर अपनी सम्मति देते हैं और युक्तियाँ देकर मुझे अपने मत के अनुकूल कर लेते हैं ।"

"यह तो डिक्टेटरशिप हुई।"

"कुछ भी समझो । मैंने अपनी योजना भारतवर्ष के विद्वानों के सम्मुख रखी है और उनकी मूल्यवान सम्मति से उसमें संशोधन किया है। मेरी इस संशोधित योजना को मेरे कुछ धनवान मित्रों ने स्वीकार कर इसके चलाने को धन दिया है । अब इस योजना को चलाने के लिए कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है । कार्यकर्ताओं के सम्मुख योजना रख दी है। जो इसमें सहयोग देना चाहें वे सम्मिलित हो सकते हैं।"

"तो हमें क्या मिला ?"

"आपको वही कुछ मिलेगा, जो मुझको या इस योजना को चलाने के लिए अतुल धन देने वालों को मिलेगा—भारतवर्ष को स्वतन्त्रता प्रदान करने का यश और फल ।"

"परन्तु यह काम जान-जोखिम का है। इसमें आँखें मूंदकर तो कोई सम्मिलित नहीं हो सकता ।"

"आँखें खोलकर तो साहस का काम कोई करता ही नहीं ।"

"इसका अर्थ यह है कि प्रधान काम तो आपने अपने पास रखा है और घटिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम हम लोगों को देना चाहते हैं।"

"प्रधान कार्य योजना बनाना नहीं, प्रत्युत् उसको कार्यरूप में लाना है।"

"संसार तो ऐसा नहीं मानता।"

"संसार मूर्ख है। संसार के पीछे चलकर मैं अपनी बुद्धि नहीं खो सकता। मेरा कहना स्पष्ट है। योजना तो बन चुकी है। अब यह न मेरे हाथ में है, न आपके। जिस योजना को जानकर लोगों ने लाखों रुपये मुझे दिये हैं, मैं उसमें परिवर्तन नहीं कर सकता। यह योजना बहुत विचार से बनाई गई है। मैं और आप तो अब इसे कार्यरूप में लाने वाले हैं। इसमें न कोई बड़ा है, न छोटा। प्रत्येक अपने-अपने स्थान पर ऐसे आयेगा जैसे किसी मशीन के पुर्ज़े। यह योजना मैंने आपको बताई है। यदि यह कार्य आपको पसन्द है और करना है तो आइये। आपमें से प्रत्येक के लिए इसमें स्थान है। यदि आप इसे पसन्द नहीं करते तो आप इसमें न आने के लिए स्वतन्त्र हैं। मैं आपको भड़काकर, जोश दिलाकर अथवा आपको किसी पदवी का प्रलोभन देकर इसमें खींचना नहीं चाहता। यह काम मेरा नहीं है, किसी एक का नहीं है। यह देश-भर के उत्थान का काम है। अगर आप समझते हैं कि इस योजना से देश का भला होगा तो आओ और देशसेवकों की पंक्ति में अपने स्थान पर खड़े हो जाओ।"

"आप देश में विप्लव उत्पन्न करना चाहते हैं। यह जान हथेली पर रखने के समान है। इसलिए बिना कार्यकर्ताओं की राय के आपका यह काम चल नहीं सकेगा।"

"यदि किसी ने इस संस्था में इसलिए सम्मिलित होना है कि उसकी राय मानी जायेगी तो उसे इस संस्था से बाहर रहना चाहिये। यदि आप सब कार्यक्रम को सुन यह समझते हैं कि इस योजना से देश को लाभ होगा तो फिर सम्मति लेने का प्रश्न व्यर्थ है।"

इस पर विनोद ने प्रश्नकर्ता से पूछा, "क्या आप इस योजना को खतरनाक समझकर इसमें परिवर्तन कराना चाहते हैं या इसको देश के लिए हानिकारक समझते हैं? यदि यह देश के हित में नहीं तो आप इसमें सम्मिलित न हों और यदि यह खतरनाक है तो आप इससे अलग रह जायें। सम्मति लेने और देने का प्रश्न तो तब है जब कोई योजना बन रही हो। यह तो बनकर तैयार है।"

"इसको किसने बनाया है?"

"तो आप योजना के योजक का नाम जानकर सम्मिलित होंगे, न कि इसके अच्छे और बुरे का विचार करके?"

इस पर सब हँसने लगे। यथार्थ में प्रश्नकर्ता के साथ बहुत कम सहमत थे। अब सलीमा ने पूछा, "आपकी योजना में स्त्रियों का क्या स्थान होगा?"

"देवियों-सा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मिट्टी और पत्थर की बनी देवियों-सा ?"

"मिट्टी और पत्थर की देवियाँ वहाँ बनाई जाती हैं जहाँ सजीव देवियाँ न हों। जब-जब और जहाँ-जहाँ सजीव देवियाँ होती हैं, लोग उनकी पूजा करते हैं, मिट्टी-पत्थर की नहीं।"

सलीमा को इस मूक प्रशंसा से सन्तोष नहीं हुआ। उसने फिर पूछा, "मेरा इस बात के जानने से अभिप्राय यह है कि आपकी योजना में लड़कियों के लिए स्थान है या नहीं ? यदि है तो किस प्रकार है ?"

"मैं लड़कियों और लड़कों में भेद नहीं समझता। केवल वही इस योजना में आ सकते हैं जिनका मन अनुशासन में बँधा है। मैं अनाचार की कोई बात सहन नहीं कर सकता।"

इसके पश्चात् उपस्थित जन मोहन बाबू को अपने नाम और पते लिखाने लगे।

विनोद ने अब सलीमा से पूछा, "अब ?"

"अब क्या ?" सलीमा ने तुरन्त उत्तर दिया, "इस संघ में शामिल हो जाना चाहिये।"

विनोद हँस पड़ा। उसने कहा, "मेरा मतलब नवाब साहब और नवाबज़ादे से है।"

"ओह ! वह तो मैं भूल ही गयी थी। हाँ, मुझे तुम कहीं ठहरा दो और स्वयं फैडरेशन के जलसे में चले जाओ। मैं तो तब तक घर नहीं जाऊँगी जब तक विवाह का विचार छोड़ न दिया जाये। देखो न, मैं इस संस्था की सदस्य बनने लगी हूँ, तो विवाह कैसे हो सकता है ? और फिर मैं उससे घृणा करती हूँ।"

इस समय विनोद को एक बात सूझी। वह पथिक को एक तरफ ले जाकर बताने लगा। बहुत देर तक दोनों परस्पर बातें करते रहे। पश्चात् दोनों सलीमा के पास आ गये। विनोद ने कहा, "मैंने इनको सब बातें बता दी हैं और मेरी राय है कि आप यहाँ ठहर जायें। तब तक मैं आपके पिताजी से मिलकर तय कर लेता हूँ।"

सलीमा ने अचम्भे में पूछा, "यहाँ ?" और वह अनिश्चित मन से पथिक का मुख देखने लगी।

पथिक ने कहा, "हाँ, बहिन, क्या तुम हम पर विश्वास नहीं करतीं ?"

इस पर सलीमा ने कुछ लज्जित होकर कहा, "नहीं, विश्वास अथवा अविश्वास की बात नहीं। आप मेरा मतलब नहीं समझे। मेरे कारण आप पर कोई बदनामी न आ जाये, और फिर यह काम जो आप शुरू कर रहे हैं, मेरे कारण कहीं रुक न जाये।"

"कौन जाने, क्या होगा ? मेरी नियत साफ है। मैं जो कुछ कर रहा हूँ, निःस्वार्थ भाव से कर रहा हूँ। भगवान् इसमें सहायता देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलीमा के मन पर पथिक की बातों का पहला प्रभाव यह हुआ था कि वह उसे विशेष प्रतिभा रखने वाला व्यक्ति समझने लगी। उसकी योजना सुन वह उसे एक सुलझा हुआ मस्तिष्क समझने लगी थी। अब जब वह समीप आकर बातें कर रहा था तो उसके पूर्ण शरीर में रोमांच हो उठा था, ऐसा जैसे सिर से पाँव तक एक हलका विद्युत् का बहाव हो रहा हो। उसके अंग फड़क रहे थे और वह अपने-आपको पृथ्वी से ऊपर उठती हुई प्रतीत होती थी। 'भगवान् सहायता करेंगे' के शब्द सुन विस्मय से उसने पथिक को देखने के लिए आँखें उठाईं। उसे उसके मुख से अवर्णनीय प्रकाश निकलता हुआ प्रतीत हुआ। वह आँखें फाड़-फाड़कर उसे देख रही थी कि पथिक ने धीमी-सी मुस्कराहट से उसको देखते हुए पूछा, "क्या देख रही हो, बीबी ?"

"नूर।" सलीमा के मुख से अनायास ही निकल गया।

"यह सब ईश्वार की माया है।"

बात तय हो गयी। पथिक ने मोहन बाबू को बुलाकर सलीमा के ठहरने का प्रबन्ध कर दिया। विनोद कुछ निश्चिंत हो होटल की ओर लौट गया।

वह अभी होटल में पहुँचा ही था कि नवाब साहब एक पुलिस अफसर को लिए हुए वहाँ पहुँच गये। शेखरानन्द और अन्य विद्यार्थी सभा में चले गये थे। नवाब साहब तो शेखरानन्द को धमकाने के लिए पुलिस लाये थे, ताकि विनोद का पता मिल जाये। परन्तु स्वयं विनोद को वहाँ देख बहुत प्रसन्न हुए।

विनोद कमरे में दाखिल हुआ ही था कि सब-इंस्पेक्टर ने अपना हाथ विनोद के कन्धे पर रखकर कहा, "तुम मेरे आदमी हो।" विनोद चौंककर घूमा और नवाब साहब और पुलिस अफसर को सम्मुख देख पहले तो घबराया, परन्तु तुरन्त ही सँभलकर बोला, "आपका मतलब ?"

"तुम विनोदकुमार हो ?"

"हाँ।"

"मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ।"

इस समय तक विनोद सचेत हो गया था। उसने कहा, "अच्छी बात, तशरीफ रखिये।"

नवाब साहब और इंस्पेक्टर कुर्सियों पर बैठ गये। विनोद पास रखी खाट पर बैठ गया और बोला, "हाँ, तो आप क्या चाहते हैं ?"

"हम तुम्हें बहुत देर से ढूँढ़ रहे थे।"

"किसलिए ?"

"तुम इनको जानते हो ?"

"हाँ, जानता हूँ। आप हमारे नगर के एक बड़े रईस हैं।"

"इनकी लड़की को भी जानते हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167931
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

"हाँ।"

"उसे तुमने देहली में देखा है ?"

"हाँ।"

"कहाँ ?"

"स्टूडेंट्स फैडरेशन के जलसे पर भाषण देते हुए।"

"अब कहाँ है ?"

"मैं क्या जानूं।"

इस पर नवाब साहब कहने लगे, "देखो, विनोद, वह एक नाबालिग लड़की है और तुम उसे छिपा रहे हो। यह एक संगीन जुर्म है।"

"मैं उसे छुपा नहीं रहा। न ही वह नाबालिग है।"

"खैर, यह अदालत तय करेगी कि वह नाबालिग है या बालिग। मैं उसका बाप हूँ और मैं तुमसे ज़्यादा अच्छी तरह जानता हूँ कि वह नाबालिग है या बालिग। उसका पता बता दो वरना मुआमला टेढ़ा है।"

"न मैं जानता हूँ न और ही आप उसके मुताल्लिक यह कह सकते हैं कि वह नाबालिग है। आप जानते हैं कि वह मैडिकल कॉलेज की दूसरी जमात में पढ़ती है। मैडिकल कॉलेज में अठारह साल से कम उमर के तुलबा दाखिल नहीं किये जाते। इसका मतलब यह है कि वह अब बीस साल से कम उमर की नहीं है।"

अब नवाब साहब चकराये। आखिर उन्होंने कुछ सोचकर कहा, "वह घर से ज़ेवरात चोरी कर लाई है।"

विनोद ने नवाब साहब को कहा, "क्यों अपनी बेइज़्ज़ती आप खुद ही कर रहे हैं। शर्म नहीं आती अपनी लड़की पर चोरी का इलज़ाम लगाते हुए? मेरी बात मानिये। इन पुलिस वालों को वापस कर दीजिये और उन हैदराबाद वालों को भी विदा कीजिये और फिर आपकी लड़की आपको मिल जायेगी।"

इस पर इंस्पेक्टर ने विनोद के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "तो तुम जानते हो कि वह कहाँ है? अच्छी बात है, मैं तुम्हें हिरासत में लेता हूँ।" इतना कह उसने विनोद को हथकड़ी लगा दी।

विनोद उठकर साथ चलने को तैयार हो गया। जाते समय उसने होटल के मैनेजर को घर का पता दे, तार देने को कह दिया। थाने ले जाकर विनोद को हवालात में डाल दिया गया।

: १७ :

सलीमा उस दिन और रात विनोद की प्रतीक्षा करती रही। वह नहीं आया। रात-भर वह सो नहीं सकी। उसे विनोद के मुसीबत में फँस जाने की आशंका हो रही थी। खाट पर करवटें बदलते-बदलते प्रभात हो गया। नींद न आने के कारण उसका सिर भारी हो रहा था। आँखें फूटकर बाहर निकल रही थीं। हाथ-पाँव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदना और चित्त में अत्यन्त घबराहट थी।

वह सोचती थी कि यदि विनोद पकड़ा गया या विनोद की राय उसके पिता ने नहीं मानी तो वह क्या करेगी? क्या उसे ऐसी अवस्था में अपने पिता के पास वापस चला जाना चाहिए? क्या वह विनोद को छुड़ाने के लिए कोर्ट में हाज़िर हो अपने बयान दे दे? क्या ऐसा करने से उसका अपने-आपको नवाबज़ादे के साथ विवाह के लिए हाज़िर करना तो न होगा? उसे किसी भी प्रकार इस नवाबज़ादे से विवाह करना स्वीकार न था।

विनोद के संसर्ग में आने से देश को स्वतन्त्र कराने की भावना उसके मन में बहुत उग्र रूप धारण किये हुए थी। इस कारण वह विवाह-बन्धन में, और फिर उस व्यक्ति से जिसे देश की स्वतन्त्रता का लेशमात्र भी ध्यान न हो, बँधने के लिए तैयार न थी।

इसी उधेड़बुन में पड़ी हुई वह किसी निश्चय पर नहीं पहुँच सकी। प्रभात का सन्देश उसे कोठी के किसी दूसरे भाग से तम्बूरे की मधुर झंकार ने दिया। फिर स्वर के साथ स्वर मिला और धीरे-धीरे आलाप आरम्भ हुआ। इस मीठे स्वर से वह अपने विचारों के सघन वन से निकल संगीत-माधुरी की छिटकी चाँदनी में आ गयी। वह बहुत ध्यान से सुनने लगी। गाने वाला गा रहा था:

प्रभु भयभंजन हो, दुःख टारन हारे।
अन्धकार से करो पार, दुःख हरो हमारे।।
करुणामय प्रभु दया करो, हम द्वार तिहारे।।
दुःख टारन हारे।।
अरुण उषामय प्रभात की छवि अति न्यारी।।
अगुआ विकसित कुसुम दलों की, जो अति प्यारे।।
दुःख टारन हारे।।

सलीमा विचारों में नास्तिक थी। ईश्वर का अस्तित्व मानना उसके लिए व्यर्थ का झंझट था। ईश्वर-स्तुति उसके मन में किसी प्रकार की श्रद्धा अथवा भक्ति उत्पन्न नहीं कर सकती थी। परन्तु प्रातःकाल चार बजे की निस्तब्धता में मधुर स्वर में गाया हुआ गीत उसके लिए इतना आकर्षणकारी था कि उसकी ईश्वर के प्रति अश्रद्धा भी उसे सुनने से नहीं रोक सकी। वह अपनी चिन्ताओं को भूल गयी। उसका मन मधुर-मधुर स्वरों की लहरों में हिलोरें लेने लगा। इस समय कौन गाता है, यह जानने की इच्छा उसके मन में हुई। वह इस आकर्षण से बँधी हुई अपनी खाट से उठी और कमरे से बाहर निकल आई। कोठी के पिछवाड़े, बरामदे में एक चौकी पर बैठा पथिक, तम्बूरे को एक हाथ में और करतालों को दूसरे हाथ में लिये भजन में मस्त था। सलीमा बरामदे के खम्भे से लग सुनने लगी।

पथिक अँधेरा होने और संगीत में लीन होने से नहीं जान सका कि सलीमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ी सुन रही है। सलीमा एक अलौकिक आनन्द अनुभव कर रही थी। वह वहीं बरामदे में खम्भे से पीठ टेक बैठ गयी। रात-भर चिन्ताओं के कारण सो नहीं सकी थी। अब प्रातः-समीर के शान्तिप्रद प्रभाव से अथवा सुखमय संगीत की तरंगों की थपकियों से उसे झपकी आ गयी। वह सोई तो ऐसी सोई कि वह अपनी सुध-बुध भूल गयी।

अभी प्रकाश पर्याप्त नहीं हुआ था कि पथिक संगीत के अभ्यास से उठा। उसने सलीमा को वहाँ बरामदे में सोये हुए, चन्द्रमुखी की भाँति देखा। वह समझ गया कि कमरे में न सो सकने के कारण बाहर बरामदे में आकर वह सो गयी है। जगाना उचित न समझ उसे वहीं छोड़ अपने स्नान-ध्यान में लग गया।

जब सूर्य ऊँचा चढ़ आया और उसकी किरणें सलीमा के मुख की ज्योति को द्विगुणित करने लगीं तो वह किरणों की उष्णता को अनुभव करती हुई जागी। आँखें खोलते ही उसने पथिक को समीप खड़े देखा। वह उसे जागती देख मुस्करा रहा था। सलीमा संकोच से सिकुड़ गयी। ऐसा संकोच उसे पहले कभी नहीं हुआ था।

वह फर्श पर से उठ खड़ी हुई। पथिक ने केवल कुछ बात करने के लिए कहा, "रात को सोईं नहीं क्या, सलीमा बीबी ?"

सलीमा ने पथिक के मुख की ओर देखते हुए कहा, "मिस्टर विनोद की खबर आयी क्या ?"

पथिक ने चिन्ता के भाव में कहा, "हाँ, वह हवालात में है। नवाब साहब ने उसे पकड़वा दिया है।"

यह समाचार सुन सलीमा का मुख विवर्ण हो गया। उसका शरीर काँपने लगा और कम्पित स्वर में उसने पूछा, "अब आप मुझे क्या करने की राय देते हैं ?"

"तुम्हारा विवाह के विषय में क्या विचार है ?"

"मैं विवाह नहीं करना चाहती, परन्तु मिस्टर विनोद और आप लोगों की बदनामी होगी। आपके काम में बाधा पड़ेगी।"

"मेरी राय तो यह है कि अभी आज का दिन यहीं रहो। विनोद के पिता को तार गया है। आशा है, आज आ जायेंगे। मिस्टर माथुर, विनोद के पिता, मेरे परिचित हैं। उनकी राय से तुम्हें चलना चाहिये। मोहन बाबू अभी विनोद से भेंट के लिए कोतवाली जा रहे हैं।"

सलीमा बहुत दुःखी थी। अनेकानेक प्रकार के विचारों के बोझ से दबी हुई वह कमरे में चली गयी और चुपचाप खाट पर लेट गयी।

पथिक ने मोहन को समझाकर विनोद का समाचार लेने के लिए भेज दिया।

: १८ :

मोहन जब विनोद से मुलाकात के लिए हवालात पहुँचा तो वहाँ शेखरानन्द,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णकुमार, श्यामकुमार तथा विनोद के पिता पहले से ही उपस्थित थे। मिस्टर माथुर ने विनोद से मुलाकात कर सब बात जान ली थी। उसके बाद वह सब-इंस्पेक्टर से मिले। अपना परिचय दिया और पूछा, "यह लड़का क्यों पकड़ा गया है?"

"एक लड़की को भगा लाने के जुर्म में।"

"मेरा ख्याल है कि आप यह साबित नहीं कर सकेंगे। मैं सिटी मैजिस्ट्रेट के सम्मुख ज़मानत की दरख्वास्त देने जा रहा हूँ। आप उसे वहीं पेश करियेगा न?"

"हाँ।"

"बहुत अच्छा।" कह मिस्टर माथुर थाने से बाहर की ओर चल पड़े। इस पर इंस्पेक्टर ने मिस्टर माथुर को फिर बुला लिया, "सुनिये।"

मिस्टर माथुर लौट आये। इंस्पेक्टर ने कहा, "इस केस में तो ज़मानत-मुचलका पर अभी मैं ही छोड़ दूंगा।"

"ओह, यह तो आपको कल ही करना चाहिये था। रात-भर आपने उसे व्यर्थ हवालात में रखा। मैं जानता हूँ, आपके पास उसके खिलाफ अभी कोई सबूत नहीं है। आप उसको ज़ामिन पैदा करने के लिए कह सकते थे।"

"उसका कोई ज़ामिन यहाँ हो सकता है?"

"क्यों नहीं? आपको पूछना तो चाहिए था।"

"मुआफ करें। मुझे मालूम नहीं था।"

"अच्छी बात। अब रिहा कर दें।"

बात यह थी कि सब-इंस्पेक्टर और दूसरे पुलिस के लोग नवाब साहब से कुछ पा चुके थे और इस आशा में थे कि रात-भर में विनोद बक जायेगा और सलीमा का पता दे देगा। रात-भर उन्होंने विनोद को बहुत तंग किया और उसे डाँटा-फटकारा भी। दो घण्टे के लगभग जिरह की। इसका आशय केवल विनोद को विवश कर सलीमा का पता पूछना था। इसके विपरीत जो कुछ मालूम हुआ, उससे सब-इंस्पेक्टर को विश्वास हो गया कि न तो यह लड़की भगा लाने का केस है, न ही सलीमा नाबालिग है। सब-इंस्पेक्टर अब किसी बहाने से विनोद को छोड़ मुआमला बन्द कर देना चाहता था। अब विनोद के पिता को आया देख, कुछ अफसोस प्रकट कर, विनोद को छोड़ने पर तैयार हो गया। मुचलके-ज़मानत का कागज़ ले उसे भरने लगा।

विनोद, उसके पिता और अन्य लोग थाने से चल होटल में पहुँचे। कमरे में पहुँच मिस्टर माथुर ने हँसते हुए पूछा, "क्यों, बिनू, नवाब की लड़की से प्रेम करने का मज़ा मिला या नहीं?"

विनोद ने लज्जा से आँखें नीची किये हुए कहा, "पिताजी, क्षमा करें। आपको भारी कष्ट करना पड़ा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर मिस्टर माथुर फिर ज़ोर से कहकहा मारकर हँसने लगे। शेखरानन्द इत्यादि भी हँस रहे थे। विनोद के गाल अभी भी लज्जा से लाल हो रहे थे। उसने साहस कर कहा, "मगर, पिताजी, मैंने प्रेम करने में भूल नहीं की। मेरी भूल तो यह हुई है कि पढ़ी थी डॉक्टरी और करने लगा था वकालत।"

"क्या मतलब ?"

"बात वही है जो मैंने आपसे कुछ दिन हुए लखनऊ में कही थी। मैंने सलीमा से विवाह का निश्चय नहीं किया। न ही वह मेरे साथ विवाह करने के लिए घर से भागकर आई है। वह तो एक कुरूप, बददिमाग, गँवार नवाबज़ादे के साथ ज़बर-दस्ती शादी कर दिये जाने के डर से घर से भागी है। मैंने तो केवल यह भूल की कि नवाब साहब के सम्मुख उसकी ओर से वकालत करने लगा था। इंस्पेक्टर-पुलिस को शक हो गया कि मैं उसका पता जानता हूँ। वह मुझे कष्ट देकर सलीमा के रहने का स्थान जानना चाहता था।"

"तो क्या तुम उसका पता नहीं जानते ?"

"जानता हूँ, परन्तु मैं बताने वाला नहीं था। उस इंस्पेक्टर ने भूल यह की कि वह मुझे कायर और दुर्बलात्मा समझता था।"

"वह है कहाँ ?"

इस पर मोहन बाबू ने बताया, "वह हमारे गुरुजी के पास नई दिल्ली में ठहरी है।"

मिस्टर माथुर ने मोहन को अब ध्यान से देख कहा, "मैंने आपको कहीं देखा है।"

"जी हाँ, ज़रूर देखा है। देवा में, श्रीमान् सुरेशकुमार के यहाँ। आप एक बार वहाँ गये थे न और गुरुदेव से आपकी बहुत बातचीत भी हुई थी।"

"पथिक !" बहुत अचम्भे में माथुर बाबू ने पूछा, "क्या दिल्ली में हैं ?"

"जी, मैं आजकल उनके साथ ही हूँ। सलीमा बीबी कल से वहीं हैं।"

अब मिस्टर माथुर ने विनोद से पूछा, "तो तुम क्या चाहते हो ?"

"पिताजी, मेरे चाहने, न चाहने का प्रश्न नहीं है। यह तो उसके चाहने का प्रश्न है। वह स्वयं घर से भाग निकली है। वह स्वयं मेरे पास आई है और अपनी स्वतन्त्र इच्छा से गुरुजी के पास ठहरी है।"

"तो उससे मालूम करना चाहिए न। यह मामला इतना सीधा नहीं जितना तुम समझते हो। वह बालिग ज़रूर है, मगर इस मामले पर हिन्दू-मुस्लिम फसाद तक हो सकता है। मालूम है, एक ऐसी बात पर स्वामी श्रद्धानन्दजी का कत्ल हो गया था। किसी मज़हबी दीवाने को यह जानने की फुरसत नहीं होती कि लड़की बालिग है या नाबालिग और वह अपनी इच्छा से घर से निकली है या भगाई गई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर क्या," मोहन बाबू का कहना था, "मज़हबी दीवानों से डरकर मनुष्यता और कर्त्तव्य को छोड़ दिया जाए ?"

"मैं यह नहीं कहता। मेरा अभिप्राय तो यह है कि साँप भी मर जाये और लाठी भी बच जाय।"

मिस्टर माथुर स्वयं पथिक को मिलने जाना चाहते थे। उन्होंने कहा, "पथिक के यहाँ चलकर ही निर्णय करेंगे।"

इसी समय नवाब साहब विनोद के कमरे के बाहर आ खड़े हुए। वह मिस्टर माथुर को वहाँ देख कुछ झेंप गये। दरवाज़े के बाहर से ही पूछने लगे, "क्या मैं भीतर आ सकता हूँ ?"

सब लोग चुप हो गये। वे चाहते थे कि विनोद के पिता उत्तर दें। मिस्टर माथुर को नवाब साहब पर भारी क्रोध आ रहा था। वह उनसे आशा करते थे कि विनोद को हवालात भिजवाने के पहले एक बार उनसे सहायता माँगते। नवाब साहब ने परदेश में उनके लड़के को कैद करवाने का यत्न किया। अतएव जब उन्होंने भीतर आने के लिए पूछा तो मिस्टर माथुर ने कुर्सी पर बैठे-बैठे ही पूछा, "तुम कौन हो और क्या चाहते हो ?"

नवाब साहब इस प्रश्न से बहुत ही जल उठे, परन्तु क्रोध को भीतर-ही-भीतर पी गये। उनको बहुत आशा थी कि पुलिस वाले विनोद को बका लेंगे। इस काम के लिए वह पुलिस को एक भारी रकम दे भी चुके थे। आज जब वह थाने पहुँचे तो सब-इंस्पेक्टर ने अपनी विवशता प्रकट की। वह यों तो बिना रिपोर्ट दिये विनोद को रात-भर भी नहीं रख सकता था, परन्तु अब तो उसे सिटी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश करना ही था। यह वह बिना रिपोर्ट और बिना किसी पक्के सबूत के कर नहीं सकता था। विनोद के पास से कोई सबूत प्राप्त नहीं हुआ था कि वह सलीमा की बाबत कुछ भी जानता है। नवाब साहब इंस्पेक्टर की यह युक्ति सुनकर चुप हो गर्दन झुकाये होटल में आये थे, ताकि विनोद की मिन्नत कर पता निकालें। मिस्टर माथुर के इस प्रश्न से तो वह पानी-पानी हो गये, परन्तु विवश थे। बोले, "एक बदकिस्मत बाप खैरात माँगने आया है।"

इस उत्तर में आह भरी हुई थी। यह मन के दुःख की हूक थी। इसने सब सुनने वालों के मन पर प्रभाव डाला। मिस्टर माथुर, इस उत्तर को सुन, उठकर नवाब साहब को हाथ से पकड़, सत्कार से भीतर ले आये। उन्हें कुर्सी पर बैठाकर बोले, "नवाब साहब, माफ करियेगा। मुझे आपके खिलाफ गिला था। वह फूटकर बाहर निकल गया। अब मैं अपने पर शर्मिन्दा हूँ। मैं एक बाप के जज़्बात को, जिसकी जवान लड़की गुम हो गयी हो, महसूस करता हूँ। बताइये, हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं ?"

मिस्टर माथुर के इस कथन को सुन नवाब साहब की जान-में-जान आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने आँखें नीची किये हुए कहा, "मुझसे कल भूल हो गयी थी। मेरा दिमाग खराब कर दिया गया था। मुझे अब अपनी गलती मालूम हुई है। मुझे लड़के को पकड़वाना नहीं चाहिए था। मुझे आपसे मदद माँगनी चाहिये थी।"

मिस्टर माथुर ने नवाब साहब की दुर्दशा देख सहानुभूति दिखाते हुए कहा, "बेशक, मैं अपनी पूरी शक्ति से आपकी मदद करने के लिए तैयार हूँ। बताइये, आप क्या चाहते हैं?"

"मैं सलीमा से मिलना चाहता हूँ और उसे घर ले जाना चाहता हूँ।"

"मिला तो मैं सकता हूँ, मगर एक शर्त पर कि आप उस पर ज़बरदस्ती नहीं करेंगे। वह बालिग है। उसे समझा-बुझाकर काम करिये।"

"मुझे मंजूर है।" नवाब साहब ने आँखें नीची किये हुए कहा।

इस पर शेखरानन्द ने कहा, "और वह हैदराबाद वाले कहाँ हैं?"

"वह हैदराबाद लौट गया है। कल रात वह कहने लगा कि चूँकि मेरी लड़की आवारा है, इसलिए वह उससे शादी नहीं करेगा। वही मुझे दिल्ली लाया था। वही मुझे पुलिस में ले गया था आर जब मामला विनोद के पकड़े जाने तक पहुँच गया तो वह भाग गया है। अब मेरे लिए और कोई चारा नहीं। मैं फौरन उसकी शादी, जहाँ वह चाहेगी, कर दूँगा।"

मिस्टर माथुर भली-भाँति समझते थे कि सन्तान की बदनामी कितने दुःख का कारण हो सकती है। उन्होंने सहानुभूति के भाव में कहा, "अगरचे मैं आपकी इस बात से इत्तफाक नहीं रखता कि उसे शादी कर ही लेनी चाहिये, फिर भी मैं आपसे उसे मिलाने की पूरी कोशिश करूँगा।"

मोहन बाबू को भेज सलीमा को होटल में बुला लिया गया। सलीमा यद्यपि प्रत्येक प्रकार से अपने पिता से क्षमा माँग लेने के लिए तैयार थी, इस पर भी वह विवाह न करने पर तुली हुई थी। मिस्टर माथुर ने लड़कों को दूसरे कमरे में भेज दिया और सलीमा से कहा, "देखो, बेटी, वालिद साहब से मुआफी माँग लो और फिर ऐसा न करना।"

सलीमा ने हाथ जोड़कर कहा, "अब्बाजान, मुआफ कर दो। आपको बहुत तकलीफ हुई है।"

नवाब साहब ने कहा, "बेटी, घर चलो। तुम्हारी माँ बहुत परेशान है।"

सलीमा ने आँखें नीची किये हुए कहा, "घर तो चल सकती हूँ, मगर शादी नहीं करूँगी।"

"मगर अब तो तुम जिससे कहो उसी से तुम्हारी शादी करने के लिए तैयार हूँ। विनोद के पिता यह बैठे हैं। अगर तुम चाहो तो सब बातें तुम्हारे सम्मुख तय कर ली जायें।"

"मगर मैं तो शादी के लिए आपसे नहीं कहती। मुझे शादी अभी नहीं करनी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारे घर से भाग जाने से हमारी सख्त बदनामी हो रही है। अगर तुम्हारी शादी फौरन न कर दी गयी तो···।"

"तो फिर मैं घर नहीं जाऊँगी। मुझे अभी शादी नहीं करनी।"

लाचार नवाब साहब को मानना पड़ा।

: १९ :

विद्यार्थी-मंडल में राजनीति का प्रस्ताव पास हो गया। बात यह हुई कि शेखरानन्द इत्यादि नवाब साहब से झगड़े के कारण पण्डाल में देरी से पहुँचे। विनोद और सलीमा भी अनुपस्थित थे। प्रधान ने इस प्रस्ताव के पक्ष के लोगों को मन भरकर बोलने दिया। पश्चात् वोट लिये और प्रस्ताव पास हो गया। प्रस्ताव यह था कि फैडरेशन का राजनैतिक कार्यों से कोई सम्बन्ध नहीं है।

सलीमा और विनोद को इससे अत्यन्त शोक हुआ और उन्होंने अपने प्रयत्न की असफलता को पथिक को बताया। पथिक ने कहा, "इसमें शोक करने की बात नहीं है। हम इस आयोजन को बिना फैडरेशन की सहायता से ही चला लेंगे। मेरा यहाँ आना सफल हुआ है। मेरा सम्बन्ध प्रायः सब बड़े-बड़े कॉलेजों के विद्यार्थियों से हो गया है। मैंने प्रत्येक स्थान के लिए एक-एक, दो-दो कार्यकर्ता नियत कर दिये हैं। अब इस काम को आगे चलाने के लिए चुपचाप कॉलेजों में काम करना है। मैं चाहता हूँ कि इस संस्था के शीघ्रातिशीघ्र दस हज़ार सदस्य बन जायें। काम न तो कानून के खिलाफ है, न ही बहुत कठिन। प्रचार करने की बातें सत्य-सत्य ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्ध रखने वाली होंगी। किसी देश के लोगों में स्वतन्त्र होने की भावना उत्पन्न करना कानून के विपरीत नहीं है। लोगों को यह बताना कि किन दोषों के कारण वे परतन्त्र हैं, पाप नहीं है। बस, यही बताने के लिए मेरी योजना है। खर्चे का सब प्रबन्ध है। किसी को कुछ भी खर्च नहीं करना होगा।"

सलीमा ने देहली छोड़ने से पूर्व एक बार पथिक से मिलकर अपने कई संशयों का निवारण करना चाहा। नवाब साहब यद्यपि उसका इस प्रकार लड़कों में घूमना पसन्द नहीं करते थे, परन्तु डरते थे कि कहीं फिर नाराज हो भाग न जाये। अतएव वह पथिक से मिलने गयी।

जब-जब भी वह पथिक के समीप गयी थी, उसे रोमाँच हो आया था। इस बार भी वह ऐसा अनुभव करती थी कि उसके पूर्ण शरीर से बिजली के शरारे निकल रहे हैं। वह इसका अभिप्राय नहीं समझती थी और अपनी अवस्था पर परेशान थी। जब भी वह पथिक के ओजस्वी मुख की ओर देखती थी, उसकी आँखों की टकटकी बँध जाती थी।

वह बहुत बातें पूछने का विचार रखती थी, परन्तु जब सामने आई तो भूल गयी और उसके मन के सब विचार अस्त-व्यस्त हो गये। जब कई मिनट तक वह कुछ नहीं कह सकी तो पथिक ने कुछ कहने के लिए कह दिया, "तो तुम अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लखनऊ जा रही हो ?"

सलीमा ने केवल यह कहा, "जी।"

"नवाब साहब अब सब बात मान गये हैं क्या ?"

"जी।"

"अब फिर मैडिकल कॉलेज में पढ़ोगी ?"

"जी।"

"बहुत अच्छा है। मेरी शुभकामना तुम्हारे साथ है।"

इसका अर्थ था कि वार्तालाप बन्द, परन्तु सलीमा तो बहुत कुछ पूछने आई थी। वह अवाक् मुख पथिक को देख रही थी। पथिक ने कुछ देर ठहरकर कहा, "क्या बात है, बीबी ? क्या देख रही हो ?"

इस प्रश्न ने सलीमा की चेतना को जगा दिया। वह अपने व्यवहार पर लज्जा अनुभव कर रही थी। उसने अपने अस्त-व्यस्त विचारों को एकत्रित करने का यत्न कर कहा, "मैंने···मैंने आपसे बहुत कुछ पूछना है।"

"हाँ, पूछो।"

"सब भूल गयी हूँ।"

"ओह !" पथिक ने मुस्कराते हुए कहा, "घबराओ नहीं। निश्चिन्त होकर पूछ सकती हो।"

सलीमा अपनी इस अवस्था पर हैरान थी। वह सभाओं में धाराप्रवाह व्याख्यान देते समय, जब हज़ारों श्रोतागण उसके एक-एक शब्द को नापने और तोलने के लिए सचेत बैठे होते थे, कभी नहीं झिझकती थी। परन्तु इस पुरुष के सामने वह एक निस्सहाय बालिका की भाँति अपने भावों को शब्दों में व्यक्त करने में असफल हो रही थी। उसने अतुल यत्न के पश्चात् यह पूछा, "आप हिन्दू-मुसलमानों के मुताल्लिक क्या समझते हैं ?"

"मेरे लिए हिन्दुस्तान में रहने वाले दो श्रेणियों में बँटे हैं। हिन्दुस्तानी और ग़ैर-हिन्दुस्तानी। हिन्दू और मुसलमानों का भेदभाव ऐसा ही है जैसा हिन्दुओं में एक मत और दूसरे मत का।"

"यदि यह फर्क बस इतना ही है तो दोनों फिरकों के लोग आपस में खाते-पीते और विवाह-शादियाँ क्यों नहीं करते ?"

"मुसलमानों के यहाँ आने से पूर्व ही हिन्दुओं में जात-पाँत और विवाह-शादियों के बन्धन बन चुके थे। एक जाति के लोग दूसरे के साथ खाते भी नहीं थे और विवाह भी नहीं करते थे। जब मुसलमान यहाँ आये या जो लोग मुसलमान बन गये उनके साथ भी वही व्यवहार किया गया जो एक जाति दूसरे के साथ करती है। अगर सरजूपारी ब्राह्मण कान्यकुब्ज ब्राह्मण के हाथ का पका खाना नहीं खाता तो उसका मतलब यह नहीं कि ये दो फिरके हैं। अगर माथुरों के विवाह माथुरों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही होते हैं और सक्सेनाओं से नहीं होते तो इसका यह मतलब नहीं कि सक्सेनाओं और माथुरों के राजनैतिक हकूक भिन्न-भिन्न हैं। मैं इन खाने-पीने के बन्धनों को ठीक नहीं समझता और न ही विवाह इत्यादि में जात-पाँत की अथवा हिन्दू-मुसलमान की हदबन्दी पसन्द करता हूँ। मेरे लिए तो हिन्दुस्तान में दो जातियाँ हैं, दो फिरके हैं—एक हिन्दुस्तानी और दूसरे गैर-हिन्दुस्तानी। दोनों फिरकों में हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी।"

सलीमा को अभी सन्तोष नहीं हुआ था। उसने फिर पूछा, "मान लो कि एक हिन्दू लड़के से मुसलमान लड़की शादी करती है या इससे उलटा होता है, तो किसको अपना मज़हब तबदील करना चाहिए?"

"किसी को भी नहीं। मज़हब का विवाह से या खाने-पीने से कोई ताल्लुक नहीं है।"

"जब बीवी एक मजहब की है और खाविन्द दूसरे मज़हब का, तब बच्चे किस मज़हब को स्वीकार करें और उनपर किसके मज़हब का असर पड़ने देना चाहिए?"

"अगर बीवी और खाविन्द एक-दूसरे को मज़हब तबदील करने के लिए मजबूर नहीं करते और वे इसे अपनी-अपनी निज की बात मानते हैं तो वे बच्चों को भी मजबूर नहीं करेंगे और उन्हें अपना-अपना मज़हब खुद तलाश करने का मौका देंगे।"

"मगर अमली ज़िन्दगी में तो ऐसा नहीं देखा जाता। देखने में तो यह आता है कि हिन्दू और मुसलमान हमेशा एक-दूसरे को अपने मजहब में लाने की कोशिश करते रहते हैं।"

"यह कोशिश अगर जायज़ तरीके से की जाये तो खराब नहीं है। हर एक को हक होना चाहिये कि वह अपने मज़हब को खुद चुने और दूसरों को उस मज़हब की खूबियाँ बताकर उन्हें उसमें मिलाने की कोशिश करे। नाजायज़ तरीके हैं रिश्वत देना, लालच देना, या कोई ऐसी सहूलियत देना जिसका आत्मा की तरक्की के साथ ताल्लुक न हो। किसी को डरा-धमकाकर मज़हब तबदील करने को कहना सख्त एतराज़ की बात है। मगर मैं जो कहता हूँ वह यह है कि मज़हब के आधार पर सियासी हक-हकूक का बँटवारा नहीं होना चाहिए। अगर एक मज़हब कबूल करने से किसी के शहरीयत के हक-हकूक बढ़-घट जाते हैं तो यह मज़हब एक राजनैतिक दल हो जाता है।"

"मत-मतान्तरों के आधार पर राजनैतिक दल क्यों न बना लिये जायें?"

"इसमें खराबी जानने के लिए कैथोलिक और प्रोटेस्टैण्ट मज़हबों के इतिहास को, खास तौर पर इंगलैंड और फ्रांस में, पढ़ो। मेरा इस पर कुछ कहना व्यर्थ है। इसके अलावा इस मुल्क में हिन्दुओं की तादाद सत्ताईस-अट्ठाईस करोड़ है। वे मज़हब को सियासियात से बाहर रखना चाहते हैं। उनके ख्याल में मज़हबी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज़ादी का अर्थ है कि मज़हब राज्य की ओर से न हो। इतनी बड़ी संख्या के लोगों की बात कैसे टाली जा सकती है।"

"आखिर यही तो पूछ रही हूँ कि हिन्दू क्यों मज़हब के आधार पर राजनैतिक दल नहीं बनाना चाहते ?"

"वजह बहुत साफ है। हिन्दू शब्द के अर्थ किसी खास मज़हब के नहीं हैं। हिन्दुओं में अनेक मत-मतान्तर हैं। आत्मा-परमात्मा, नज़ात(मुक्ति), पाप-पुण्य की बाबत इनमें मुख्तलिफ ख्याल रखने वाले लोग हैं। ये सब अपने ढंग से पूजा-पाठ करना पसन्द करते हैं और नहीं चाहते कि कोई भी ज़बरदस्ती अथवा लालच-लोभ देकर किसी को मज़हब बदलने को कहे। मज़हब को राज्य का आधार बना देने से राज्य अपने मज़हब रखने वालों की तादाद कम नहीं होने देगा बल्कि कोशिश करेगा कि बढ़े। यह दखल हिन्दू पसन्द नहीं करते।"

"अगर हिन्दू एक मज़हब नहीं तो हिन्दू क्या हैं ?"

"हिन्दू हिन्दुस्तान में रहने वाले हैं।"

"तो क्या मुसलमान हिन्दुस्तान के रहने वाले नहीं ?"

"हम तो मानते हैं और उन्हें एक हिन्दुस्तानी होने के सब हक-हकूक लेने को कहते हैं, मगर वे एक हिन्दुस्तानी से अधिक हक माँगते हैं।"

"एक हिन्दुस्तानी से अधिक ?"

"हाँ, जब मुसलमान यह कहते हैं कि एक मुसलमान को नौकरी प्राप्त करने में या दूसरी बातों में विशेष अधिकार मिलने चाहिये तो ये एक हिन्दुस्तानी से अधिक अधिकार ही तो हुए। मुसलमानों के अतिरिक्त दूसरे मत वालों को यदि कोई स्थान बी० ए० पास करने पर नहीं मिल सकता और वही स्थान मुसलमानों को कम शिक्षा प्राप्त करने पर मिल जाता है तो यह हक से अधिक मिलना नहीं है क्या ?"

"तो आपका मतलब है कि नौकरियों में अथवा कमेटियों में विशेष मताधिकार जो मुसलमानों को प्राप्त हो गया है यह उनको अपने हक से ज्यादा मिला है ?"

"हाँ, मैं तो यही समझता हूँ। सरकार ने ये अधिकार दे दिये हैं। देखो न, आम लोगों के लिए एक आदमी को प्रान्तीय धारा-सभा का सदस्य चुनने के लिए जो योग्यता चाहिए उससे कम योग्यता वाले मुसलमान को सदस्य चुनने का हक है। यह एक हिन्दुस्तानी से बढ़कर हक तो है ही। सरकार ने यह बेइन्साफी इसलिए की है ताकि मुसलमान मज़हब के नाम पर हक माँगने को इन्साफ समझने लगें और हिन्दुओं से उनकी न पटे।"

"मुसलमान तो यह समझते हैं कि वे तादाद में कम हैं। इससे उनको खास हक-हकूक मिलने चाहियें ताकि वे अपने मज़हब और तहज़ीब की हिफाज़त कर सकें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो खास नुमाइन्दगी (विशेष मताधिकार) वे माँगते हैं वह उनकी मज़हबी बातों की हिफाज़त नहीं कर सकती। ज़रा एक मिसाल लो। संयुक्त प्रान्त (पहले उ० प्र० इसी नाम से जाना जाता था।)में, जहाँ की तुम रहनेवाली हो, १९०९ में जब मुसलमानों को खास नुमाइन्दगी नहीं मिली थी तब प्रान्तीय कौंसिल में उनकी संख्या १९ प्रतिशत थी। सन् १९१९ के पश्चात् तीस प्रतिशत हो गयी और अब सन् १९३५ में २८ प्रतिशत हो गयी। शेष प्रायः हिन्दू हैं। अब तुम सोचो कि यदि वे चाहें तो २८ प्रतिशत या ३० प्रतिशत का वोट वैसे ही कुछ नहीं कर सकता जैसे १९ प्रतिशत का। जिन प्रान्तों में मुसलमानों की आबादी कम है वहाँ चाहे कितनी भी ज़्यादा नुमाइन्दगी मिल जाये, जब तक यह पचास प्रतिशत से ज़्यादा नहीं होती, वह कुछ भी असर नहीं रख सकती। मैं कहता हूँ कि मज़हब और तहज़ीब की हिफाज़त कौंसिलों में ज़्यादा नुमाइन्दगी से नहीं होगी। क्या मुसलमान उन प्रान्तों में, जहाँ उनकी आबादी पाँच-छः प्रतिशत भी है, पचास प्रतिशत से ऊपर नुमाइन्दगी माँगेंगे?"

"आप इस डर को दूर करने का क्या उपाय बताते हैं?"

"मज़हब को रखने, मज़हबी रसूमात को अदा करने और मज़हब को फैलाने का हक सबको मिलना चाहिए। यह स्पष्ट है कि कुछ हक हर एक हिन्दुस्तानी के जन्म से हैं। इनको मूल अधिकार कहते हैं। और ये मज़हबी हक इनमें रख लेने चाहियें। इसके पश्चात् हमारी राजनीतिक ज़िन्दगी में मज़हब का नाम नहीं आना चाहिए।

"मगर, सलीमा बहन, ये सब शंकायें तुम्हारे मन में क्यों उत्पन्न हुई हैं? मैंने तो अपनी योजना में इनको घुसने नहीं दिया। मैं तो हिन्दू-मुसलमानों को अलग नहीं मानता। यह फर्क तो अंग्रेज़ों ने ही पैदा किया है। कुछ अंग्रेज़ी राजनीतिज्ञों ने मुसलमानों को भ्रम में डालकर उनसे ये माँगें करवायी हैं। इन राजनीतिज्ञों में मिस्टर बैंक, जो सर सैयद अहमद के ज़माने में अलीगढ़ कॉलेज के प्रिन्सिपल थे, काबिले ज़िकर हैं। वह एक तालीमी माहिर समझे जाते थे, मगर हकीकत में वह सियासी दूत थे। उन्होंने सर सैयद अहमद को, जो पहले हिन्दुस्तानी कौमियत का हिमायती था, अंग्रेज़ी हुकूमत का हिमायती बना दिया और मुसलमानों के लिए खास रियायतें माँगने वाला बना दिया। एक कॉलेज के प्रिन्सिपल होने पर भी जब मिस्टर बैंक का देहान्त हुआ तो लंडन टाइम्स ने उनकी प्रशंसा करते हुए लिखा था कि 'वह सल्तनत को बनाने और मज़बूत करने के काम में लगे हुए थे। उनकी मौत एक सिपाही की मौत की तरह है जो अपनी सफह में खड़ा हुआ मरता है।' मुसलमान बहुत शक्की मिज़ाज होते हैं। पहले वह मिस्टर बैंक को अंग्रेज़ी भेदिया समझते रहे, मगर उनकी संजीदगी और बेखुदी ने जल्दी ही उनके विश्वास को जीत लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह एक कॉलेज का प्रिन्सिपल सल्तनत को बनाने और मज़बूत करने वाला सिर्फ इसीलिए लिखा गया है कि उसने मुसलमानों को, उस समय की राष्ट्रीय संस्था, कांग्रेस से बाहर रखा था।

"एक और राजनीतिज्ञ, इसी अलीगढ़ कॉलेज के प्रिन्सिपल, मिस्टर आर-किवाल्ड ही उस डैपुटेशन के बनाने वाले बने जो सर आगाखाँ की लीडरी में वायसराय साहब के पास मुसलमानों के लिए कौंसिलों में खास नुमाइन्दगी माँगने गया था। यह नहीं कि सब मुसलमान इन अंग्रेज़ी सल्तनत बनाने व मज़बूत करने वालों के चकमे में आ गये हों, मगर चूंकि सरकार उन्हीं मुसलमानों को, जो इन लोगों के इशारे पर चलते हैं, मुसलमानों के लीडर मानती है, कुदरती तौर पर हम मुगालते में फँस जाते हैं।"

सलीमा जिस बात को पूछने आई थी और जो अभी भी उसके मन में थी, मुख से नहीं निकाल सकी। कुछ सोचकर उसने कहा, "मैंने पूछना तो बहुत कुछ था, परन्तु समय हो गया है और अब्बाजान बाहर इन्तज़ार कर रहे हैं। क्या मैं आपको चिट्ठी लिखकर पूछ सकती हूँ?"

"हाँ, बहुत खुशी से।" इस पर पथिक ने अपना पक्का पता लिखा दिया।

सलीमा को कोठी के बाहर तक पथिक छोड़ने आया। जब सलीमा अपने बाप के पास मोटर में आ बैठी तो नवाब साहब ने पूछा, "यह कौन था?"

सलीमा ने बेपरवाही से कह दिया, "नवयुवक संघ के चलाने वाले।" सलीमा अपने विचारों में लीन थी और इस समय बातें करना नहीं चाहती थी। परन्तु नवाब साहब, जो तीन घण्टे की प्रतीक्षा करते-करते क्रोध से भरे बैंठे थे, इतनी सहज में ही सलीमा को छोड़ने वाले नहीं थे। उन्होंने फिर पूछा, "तुम्हारा इससे मतलब?"

"मेरी बदकिस्मती।"

"क्या?"

"आप कैसे समझ सकते हैं, अब्बाजान? आपने तो कभी इस तरफ ध्यान ही नहीं दिया।"

"आखिर बताओ भी तो।"

"इसमें बताने की क्या बात है? बदकिस्मती से मैं हिन्दुस्तान में पैदा हुई हूँ और मुझे इस संघ में शामिल होना पड़ा है।"

"तुम बदकिस्मत क्यों हो? एक नवाब के घर पैदा हुई हो। खाने-पहनने या रहने की तुम्हें कोई तकलीफ नहीं। मैं तो ऐसों को बदकिस्मत नहीं समझता।"

"ये सब तो जानवरों को भी मुहैया (प्राप्त) हैं।"

"इसके अलावा तुम आला तालीम भी पा रही हो। तुम्हारी खिदमत के लिए नौकर-नौकरानियाँ हैं। खुदा ने तुम्हें सूरत दी है और सीरत भी। तुम्हें किस बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कमी है ?"

"कमी ? सबसे बड़ी और अव्वल दर्जे की बात मुझे मिल नहीं रही है। मैं एक आज़ाद कौम की लड़की नहीं हूँ। मैं उस कौम में पैदा हुई हूँ जो दूसरों की गुलाम है। मैं किसी आज़ाद मुल्क के बाशिन्दे से निधड़क बात नहीं कर सकती। मेरा सिर शरम से झुक जाता है, आँखें ऊपर नहीं उठ सकतीं। इस संघ में मेरे जैसे बदकिस्मत शामिल हैं जो इस ज़लालत को अनुभव करते हैं।"

"ओह, तो यह एक पॉलिटिकल जमायत है ?"

"हाँ, मगर आपकी मुस्लिम लीग की तरह की नहीं।"

"मुस्लिम लीग कोई पॉलिटिकल जमायत थोड़े ही है। यह तो मुसलमानों को तंज़ीम (संगठन) करने के लिए है।"

"क्या मुस्लिम लीग में क़ुरान पढ़ाया जाता है, या क्या नमाज़ पढ़ने का तरीका बताया जाता है ?"

"क्या बेहूदा बातें करती हो ?"

"नहीं, अब्बाजान, बेहूदा नहीं। ठीक कह रही हूँ। मुस्लिम लीग भी एक सियासी जमायत है, मगर इसकी सियासियात मुल्क के फायदे के लिए नहीं, बल्कि यहाँ की हुक्मरान कौम के फायदे के लिए हैं।"

"मुल्क ? कौन मुल्क ?"

"हिन्दुस्तान।"

"हिन्दुस्तान एक मुल्क नहीं है।"

"कैसे ?"

"इसमें बीसियों कौमें बसती हैं, बीसियों जुबानें हैं और बीसियों किस्म के ख्यालात के लोग हैं।"

"अब्बाजान, आपने तवारीख नहीं पढ़ी है, तभी ऐसा कहते हैं।"

"पढ़ी क्यों नहीं ! खूब पढ़ी है।"

"तो अंग्रेज़ी चश्मा लगाकर पढ़ी होगी। मद्रास की ज़ुबान यू० पी० की ज़ुबान से कितनी मुख्तलिफ है, मगर दोनों सूबों में एक हिन्दू के विवाह पर वही मन्त्र पढ़े जाते हैं। हिन्दुओं के देवी-देवता, पूजा-पाठ के तरीके, धोती और चोटी, राम और कृष्ण, सीता और राधा, सब हिन्दुस्तान के एक कोने से दूसरे कोने तक एक जैसे हैं। ज़ुबान में फर्क और अंग्रेज़ी तवारीखदानों के कहने के मुताबिक बीसियों कौमों का होना भी इस एक किस्म के रहन-सहन को खराब नहीं कर सका। गज़ब की बात तो यह है कि पुराने ज़माने में जब रेल-तार भी नहीं थे, ज़ुबान समझने की मुश्किल तो थी ही, तब भी हिन्दू अपने रस्मो-रिवाज को कैसे एक जैसा रख सके। अगर यह मुल्क एक न होता तो कश्मीर के हिन्दू रामेश्वर पर और मद्रास के हिन्दू बद्रीनारायण पर तीर्थ-यात्रा के लिए न जाते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मालूम होता है कि इन हिन्दू छोकरों ने तुम्हारे दिमाग को खराब कर रखा है।"

इस समय मोटर उस होटल पर पहुँच गयी थी जहाँ नवाब साहब ठहरे हुए थे।

विवाह अथवा संघ-कार्य

"अम्मीजान ! आप समझ क्यों नहीं सकतीं ? मैंने कई बार समझाया है कि मैं आवारा नहीं हो गयी। मैं अपनी अस्मत खराब नहीं कर रही। इस पर भी आप वही रट लगाये हुए हैं कि आबरू बिगड़ गई है। क्या आबरू, इज़्ज़त मूर्ख लोगों के कहने से बनती-बिगड़ती है ?" सलीमा अपनी माँ को समझा रही थी।

मगर सलीमा की माँ उसकी युक्तियों को नहीं मान रही थी। कह रही थी, "और क्या ? जब सब लोग एक ही बात कहते हैं तो होकर ही रहती है। 'आवाज़े-खल्क को नक्कारा-ए-खुदा समझो' क्या यह कहावत गलत है ?"

"और यह ठीक हो ही कैसे सकती है ? खुदा भला इतना बेवकूफ है कि लोगों के कहने पर चलेगा या अपनी बात खुद न बताकर कमअक्ल लोगों की मार्फत बतायेगा ? मेरा अच्छा या खराब होना मेरे चलन से होगा, न कि लोगों के कहने से। चाँद-सूरज को कोई कहे, नहीं हैं, तो वे नहीं रहेंगे क्या ?"

"सलीमा, तुम अभी बच्ची हो। तुम इन बातों को नहीं समझ सकतीं।"

"अच्छी बात, अम्मी; मगर मैं अभी शादी नहीं करूँगी।"

"नहीं करोगी तो मैं भूखों मर जाऊँगी। मैं अभी अपना गला घोट लूँगी। मुझसे यह नहीं देखा जाता।" इतना कहते-कहते सलीमा की माँ ने अपना सिर दोनों हाथों से पीटना शुरू कर दिया। उसने अपना सिर दो-तीन बार दीवार पर पटका।

सलीमा इस पागलपन को देख घबराई। वह परेशान थी कि क्या करे। उसने भागकर अपनी माँ के सिर को अपने हाथों में ले लिया। बहुत मुश्किल से माँ को काबू में किया। माँ के माथे से लहू की धारा बहने लगी थी। सलीमा ने नौकरानी को बुलाया और अब्बाजान को बुलाने को भेज दिया। वह भागे-भागे आये। "अजी, यह क्या हो गया है ? यह क्या खून-खराबा मचा रखा है ?" वे चिल्लाये।

सलीमा अपनी माँ को बहुत मुश्किल से पकड़े हुए थी और माँ के खून से लथ-पथ हो रही थी। नवाब साहब इस हाथापाई को देख बहुत परेशान हुए। वह नहीं समझ सके कि क्या माजरा है। "क्या हुआ है, सलीमा ?" वे चिल्लाये।

सलीमा ने माँ को नवाब साहब के हाथ में पकड़ाते हुए कहा, "अब्बाजान, अम्मी खुदकुशी करना चाहती हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ?"

"इन्हीं से पूछ लो न।"

"क्यों जी, क्या बात है ? क्या हुआ है आज ?"

सलीमा की माँ का क्रोध अभी ठण्डा नहीं हुआ था। वह बोली, "इस घर में रहना अब कोरी ज़लालत है। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकती। आप मुझे छोड़ दें। मेरे जनाज़े की तैयारी करें। मैं अपना काला मुँह अब किसी को दिखाने के काबिल नहीं हूँ।"

"आखिर हुआ क्या है ? कुछ बताओगी भी या नहीं ?"

"क्या हुआ है, जैसे कुछ जानते ही नहीं। हटो, छोड़ो मुझे। मेरा जीना अब हराम है।"

नवाब साहब ने माथे के ज़ख्म पर हाथ रख, खून बन्द करने का यत्न करते हुए, सलीमा को पानी और पट्टी का सामान लाने के लिए कह दिया। सलीमा दूसरे कमरे से रूई, लोशन, पट्टी इत्यादि लेने चली गई।

जब सलीमा चली गई तो नवाब साहब ने बेगम को गोदी में बैठा, प्यार करते हुए कहा, "भला यह क्या नाटक कर रही हो ?"

बेगम ने मुस्कराकर नवाब साहब की ओर देखते हुए कहा, "ओह, हज़रत, आपने इस नाटक में विघ्न क्यों डाल दिया ? यह आज कामयाब होने ही वाला था।"

"ओह ! तो भूल हुई। मगर मुझे क्या मालूम था। पहले बता दिया होता तो मैं भी इस नाटक में अपना पार्ट अदा करता।"

"तो अभी कुछ सोच लो न। अगर माथा फोड़ने पर भी काम न बना तो सब फिज़ूल होगा न।"

"अच्छी बात, जब वह आए तो तुम छटपटाना। पट्टी मत बाँधने देना। फिर मैं अपना पार्ट दिखाऊँगा।"

सलीमा, सत्य ही, माँ की हालत देख अपने निश्चय से डगमगाने लगी थी। उसने सोच लिया था कि अगर उसे पति ढूंढ़ने की छुट्टी मिल गई तो शादी के लिए राज़ी हो जाएगी। वह अपनी माँ को अनपढ़ और बेसमझ समझती थी। इस पर भी माँ के आत्महत्या करने के यत्न ने उसे कम्पायमान कर दिया था।

वह मरहम-पट्टी का सामान लेकर आई तो अब्बाजान को अम्मी से बातें करते सुन कमरे के दरवाज़े के बाहर ही ठहर गई। अम्मी के कुछ बताने ने उसे चोरी-चोरी सुनने के लिए विवश कर दिया। वह सुनना चाहती थी कि माँ उसके विषय में क्या विचार रखती है। उसने कान दरवाज़े से लगाकर सुनना आरम्भ किया। जब उसे पता चला कि वे दोनों उसे शादी न करने के निश्चय से फुसलाने के लिए षड्यन्त्र रच रहे हैं तो उसके क्रोध की सीमा न रही। उसके हाथ काँपने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कई मिनट तक वहीं खड़ी रह गई। वह निश्चय नहीं कर सकी कि भीतर जाकर उनका भण्डा फोड़ दे अथवा मरहम-पट्टी का सामान वापस ले जाय और अपने कमरे में वापस चली जाय। एकाएक उसके मन में भी इस नाटक में अपना भाग लेने का विचार उठा। विद्युत् की भाँति उसने अपना पार्ट निश्चय कर लिया। वह सामान लिए भीतर पहुँच गई।

बेगम ने जब सलीमा को भीतर आया देखा तो ज़ोर से बोली, "तो आप लोग मुझे मरने भी नहीं देंगे? मरने वालों के लिए यह मरहम-पट्टी क्या होगी? मैं नहीं जियूँगी। मुझे इस बदनामी में नहीं रहना।"

नवाब साहब ने छटपटाती बेगम को पकड़ते हुए कहा, "क्यों पगली हुई जाती हो? आखिर कुछ पूछने भी देती हो या नहीं।"

मगर बेगम झटका दे नवाब साहब के हाथ से छूटकर दीवार की ओर भागी और अपना सिर दीवार पर पटकने ही वाली थी कि नवाब साहब ने भागकर उसे पकड़ लिया।

सलीमा ने रोनी-सी सूरत बनाकर कहा, "अम्मी, अम्मी, अच्छा, मानती हूँ। मुझे अब माफ कर दो। जो कहोगी मान लूँगी। मुझसे यह नहीं देखा जाता।"

नवाब साहब ने बेगम को पकड़ फिर कुर्सी पर बैठा दिया। पट्टी बाँधने से पहले बेगम ने सलीमा की तरफ देखकर पूछा, "तो तुम शादी कर लोगी?"

"हाँ, अम्मी, अब गुस्सा छोड़ो।"

"कब?"

"भाईजान के आ जाने पर।"

सलीमा के भाई की एक चिट्ठी बर्लिन से आई थी कि वह अब सीधा हिंदुस्तान आ रहा है। चिट्ठी हवाई डाक से आई थी और वह जर्मनी से इटली और वीनस से जहाज़ में सवार हो सीधा बम्बई आएगा। यह अनुमान था कि एक महीने में वह पहुँच जायगा। यह कोई लम्बा समय नहीं था। इससे सलीमा के माता-पिता दोनों को सन्तोष हुआ। इस पर नवाब साहब ने कहा, "शाबाश, बेटी, तुम बहुत अच्छी लड़की हो। यही तो मैं तुम्हारी माँ से कह रहा था। हाँ, तो अब तुम्हारे वास्ते शौहर की तलाश की जाय?"

शौहर के नाम पर सलीमा के गालों पर लाली दौड़ गई। उसने आँखें नीची किए हुए कहा, "इसकी आपको फिक्र करने की ज़रूरत नहीं है।"

इतना कह वह भागकर कमरे से बाहर चली गई। यह इतना स्वाभाविक था कि नवाब साहब और बेगम साहिबा धोखे में आ गए।

मगर इस नाटक के बाद सलीमा को विवाह के विषय पर फिर सोचना पड़ा। सलीमा में अब फर्क आ चुका था। वह दिल्ली जाने से पहले जो थी वह अब नहीं रही थी। उसके मन पर पथिक ने विशेष प्रभाव उत्पन्न कर दिया था। पहले तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अपने मन के भावों का विश्लेषण नहीं कर सकी थी। परन्तु दिल्ली से चले आने के पश्चात् वह इस प्रभाव की तह तक पहुँचने का यत्न करती रहती थी। जिस परिणाम पर वह पहुँची थी, उसको मुख से कह नहीं सकती थी। हाँ, उसका चिंतन कर अलौकिक आनन्द अनुभव करती रहती थी। अब प्रश्न यह था कि वह पथिक को कैसे इस विवाह के लिए राज़ी करे। और अब यह अनिवार्य था कि यह उसके भाई के आने से पूर्व हो।

इस पर चिट्ठियों का ताँता बँध गया। कलकत्ते में पथिक का पता सलीमा को मालूम था। अपना पता उसने विनोद की मार्फ़त दिया था। विनोद समझता था कि राजनीति और पथिक की योजना पर पत्र-व्यवहार हो रहा है। सलीमा ने विनोद के इस भ्रम को दूर नहीं किया, प्रत्युत् यह कहकर इसे पुष्टि दी कि राजनैतिक पत्र-व्यवहार उसके वालिद शरीफ पसन्द नहीं करेंगे।

: २ :

विनोद जब लखनऊ लौटा तो उसे विदित हुआ कि कॉलेज में लड़कों ने उसके निकाले जाने के विरोध में हड़ताल कर रखी है। सलीमा का छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र आने पर उसे भी निकाल दिया गया था। इससे हड़ताल ने कुछ ज़ोर ही पकड़ा था। लड़के डरे नहीं।

दूसरे प्रोफ़ेसरों ने प्रिंसिपल को बताया भी कि यह नहीं होना चाहिए था। परन्तु अब क्या हो सकता था। एक प्रोफ़ेसर थे डॉक्टर गनी। वह प्रिंसिपल साहब के अहसान में दबे हुए थे। बात यह थी कि वह कई हिन्दू उम्मीदवारों से कम लायक होने पर भी प्रिंसिपल की सिफारिश पर नियुक्त हुए थे। वह प्रिंसिपल साहब के पास अपनी सेवाएँ लेकर पहुँचे। उन्होंने कहा, "मैं विनोद और सलीमा को समझा दूंगा।"

प्रोफ़ेसर गनी विनोद को मिले और उससे कहने लगे, "देखो, मिस्टर विनोद, तुम फोर्थ इयर में पढ़ते हो और एक साल में तुम पूरे डॉक्टर हो जाओगे। अगर तुम्हें कॉलेज में वापस न लिया गया तो न सिर्फ पिछले चार साल की पढ़ाई ही फिज़ूल जायगी, बल्कि तुम्हारी अगली ज़िन्दगी भी बरबाद हो जायगी। मैं तुम्हारा फ़ैसला करवा देता हूँ। तुम प्रिंसिपल के सामने एक बार जाकर अफ़सोस ज़ाहिर कर दो। सब बात मुआफ हो जाएगी।"

विनोद बोला, "प्रोफ़ेसर साहब, मैंने कौन-सा अपराध किया है कि अफ़सोस प्रकट करूँ?"

"तुमने कॉलेज का डिसिप्लिन तोड़ा है।"

"प्रिंसिपल साहब के मनमाने हुक्म डिसिप्लिन हो गए? मैं नियमानुसार छुट्टी लेकर गया था।"

"मगर तुम्हारी छुट्टी मंजूर नहीं हुई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पहले तो छुट्टी अस्वीकार करने का कोई कारण नहीं था। इस पर भी मान लो कि छुट्टी अस्वीकार हो गई थी, तब भी तो सात दिन तक नाम नहीं कटता और प्रतिदिन एक रुपये के हिसाब से जुरमाना हो जाता है।"

"मगर तुम तो मना करने पर हुक्म तोड़कर गए थे न?"

"लेकिन मना ही क्यों किया गया? स्टूडेंट्स फेडरेशन का जलसा कानून के विरुद्ध तो था नहीं। यदि कानून के विरुद्ध होता तो वहाँ के डिप्टी कमिश्नर, चीफ कमिश्नर और दूसरे सरकारी अफसर इस जलसे को होने ही क्यों देते? क्या प्रिंसिपल साहब अपने-आपको चीफ कमिश्नर देहली से भी ज़्यादा कानून के जानने वाले मानते हैं? प्रोफेसर साहब, सुन लीजिए। एक तो प्रिंसिपल साहब का मुझे दिल्ली जाने से रोकना न्याययुक्त नहीं था। दूसरा, नियमानुकूल भेजे हुए प्रार्थना-पत्र को अस्वीकार करना अनुचित था और तीसरा, छुट्टी न देने पर भी मेरा नाम कॉलेज-रजिस्टर से निकाल देने में कोई युक्ति नहीं। प्रिंसिपल साहब के इन सब अनियमित कामों के लिए क्या मुझे क्षमा माँगनी चाहिए?"

"इसलिए कि न माँगने से हानि तुम्हें होगी।"

"मैं तो अपनी हानि का दावा कर दूंगा। कोर्ट फैसला करेगी कि प्रिंसिपल का हुक्म न्याययुक्त था या नहीं।"

प्रोफेसर गनी वहाँ से अपना-सा मुख लेकर सलीमा के घर पहुँचे। वहाँ नवाब साहब से उनकी भेंट हो गई। प्रोफेसर साहब ने सलीमा के कॉलेज से निकाले जाने की बात बताई और कहा, "अगर वह मुआफी माँग ले तो मैं उसे फिर दाखिल करवा सकता हूँ।"

नवाब साहब सलीमा का कॉलेज से निकाला जाना सुन मन-ही-मन अति प्रसन्न हुए। वे सोचते थे कि अब विनोद वगैरह लड़कों का प्रभाव सलीमा पर से हट जाएगा। उन्होंने प्रोफेसर साहब से कहा, "मेरा सलाम प्रिंसिपल साहब से कह देना, और कह देना कि मेरी लड़की को कॉलेज से निकालने पर मैं उनका शुक्रिया अदा करता हूँ। मुझे उसे मैडिकल कॉलेज में नहीं पढ़ाना।"

इस प्रकार प्रोफेसर गनी प्रिंसिपल साहब की सेवा न कर सके। प्रिंसिपल ने दूसरे प्रोफेसरों की मदद से लड़कों की हड़ताल तोड़ने की बहुत कोशिश की, परन्तु किंचित्मात्र भी सफलता नहीं हो सकी।

हड़ताल हुए एक सप्ताह से ऊपर हो चुका था और अब समाचार-पत्रों में भी चर्चा होने लगी थी। कांग्रेसी सरकार को बहुत फिक्र लग गई और उन्होंने इस झंझट से छुट्टी पाने का सहज उपाय यह सोचा कि प्रिंसिपल साहब से विद्यार्थियों की सुलह करा दी जाय। अतएव एक समझौता-कमेटी बना दी गई और वह कमेटी दोनों पक्षों को एक समझौते पर ले आई। यह निर्णय हो गया कि विनोद और सलीमा प्राइवेट में प्रिंसिपल साहब से मिलकर कहें कि आज्ञा-भंग करने में उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशय प्रिंसिपल साहब का अपमान करना नहीं था। यदि उससे उनको दुःख हुआ है तो उन्हें सख्त अफसोस है। दूसरी ओर प्रिंसिपल यह लिख दे कि विनोद और सलीमा के अफसोस प्रकट करने से वह सन्तुष्ट है। उसने केवल पढ़ाई के विचार से उनको छुट्टी लेने से मना किया था। वह स्टूडेंट्स फैडरेशन के विरुद्ध नहीं था।

इस निर्णय को दोनों पक्षों ने मान लिया और अगले दिन से हड़ताल खुल गई। नवाब साहब ने बिना किसी मुआफी वग़ैरह माँगे जब सलीमा को कॉलेज जाते देखा तो बहुत हैरान हुए। मगर वह कर ही क्या सकते थे।

: ३ :

कलकत्ते में रासबिहारी एविन्यू में एक विशाल मकान के एक कमरे में पथिक और मोहन बैठे डाक देख रहे थे। सामने चिट्ठियों का ढेर लगा था। एक-एक कर चिट्ठियाँ खोली जाती थीं। पथिक उनको पढ़ता जाता था और मोहन को उत्तर लिखाता जाता था।

यह पथिक और मोहन का नित्य का काम था। हिन्दुस्तान-भर के कॉलेजों में पथिक ने अपने नवयुवक संघ के सदस्य बना लिए थे और वहाँ पर सदस्य बढ़ाने का यत्न किया जाता था। पथिक कलकत्ते में बैठा, डाक द्वारा, अपने मुख्य-मुख्य कार्यकर्ताओं से अपना सम्बन्ध बनाए रखता था। उन्हें काम करने का ढंग बताने और सदस्यों को भर्ती करने के लिए लिखा करता था। प्रातःकाल एक थैला भर डाक आ जाती थी और वे दोनों ग्यारह बजे से पहले सारी डाक को पढ़, उत्तर देने लायक चिट्ठियों का उत्तर देते थे।

पश्चात् पथिक इन सदस्यों के पढ़ने योग्य साहित्य, जिसमें लोगों को क्या और किस भाँति शिक्षा देनी है, लिखता रहता था। इस प्रकार युवक-संघ की योजना को ये लोग अति वेग से चला रहे थे।

कुछ सदस्यों को विशेष बातें बताने के लिए कलकत्ते भी बुला लिया जाता था। उनको वे इसी मकान में ठहराते थे और उनके आने-जाने का खर्चा भी देते थे। इस प्रकार प्रान्तों में कार्यक्रम चलाने वाले और उनके अधीन प्रत्येक कॉलेज में सदस्यों को सूचनाएँ देने वाले नियुक्त कर दिए गए। सदस्य धड़ाधड़ भर्ती हो रहे थे और जो साहित्य छपवाया गया था, उनको बाँटा जा रहा था।

यह योजना का प्रारम्भिक कार्य था। आज जब पथिक डाक देख रहा था तो उसमें से एक भारी-सा लिफाफा निकला, जिस पर प्राइवेट लिखा था। पथिक ने कहा, "यह फिर सलीमा की चिट्ठी है।" कह चिट्ठी को एक तरफ रख दिया और शेष डाक का काम करने लगा। जब सब डाक समाप्त हो गई तो पथिक ने वह भारी लिफाफा खोला। चिट्ठी सचमुच ही सलीमा की थी। इस बार चिट्ठी चौदह पृष्ठ की थी। पथिक चिट्ठी की लम्बाई देख बोला, "यह लड़की कुछ पागल प्रतीत होती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन ने व्यंग्य के भाव से कहा, "यह हाथ धोकर आपके पीछे पड़ी है और आपको लेकर डूबेगी।"

पथिक ने मोहन के मुख पर गम्भीरता से देखते हुए कहा, "पर क्या किया जाय? पिछली चिट्ठी से तो कुछ ऐसा प्रतीत होता था कि वह किसी हिन्दू युवक से प्रम करती है। परन्तु उसके माता-पिता इसे पसन्द नहीं करते और मेरा अनुमान है कि वह हिन्दू युवक माथुर बाबू का लड़का विनोदकुमार है।"

मोहन ने सिर हिलाते हुए कहा, "मैं ऐसा नहीं समझता। मेरा अनुमान है कि यह पागल लड़की देवा के पागल गुरुदेव को अपने प्रेम का भाजन बनाए हुए है।"

"देवा का पागल? नहीं, मोहन, ऐसा कैसे हो सकता है? मेरे पास तो उसे सुखी रखने के लिए कुछ है ही नहीं। वह जानती है कि मैं फक्कड़ हूँ। फिर मेरी योजना तो इतनी लम्बी-चौड़ी है कि इस जीवन में समाप्त नहीं होगी और तब तक मुझे विवाह के लिए अवकाश ही कहाँ है।"

"गुरुदेव, आप मुझसे आयु में बड़े ज़रूर हैं, पर इन लड़कियों के विषय में मुझसे कम अनुभव रखते हैं। मेरा विचार है कि आज की चौदह पृष्ठों की चिट्ठी अवश्य कुछ रहस्य लेकर आई है। इसे पढ़ तो डालिए।"

पथिक ने चिट्ठी हाथ में लेकर पढ़नी आरम्भ कर दी। वह ज्यों-ज्यों चिट्ठी पढ़ता जाता था, गम्भीर होता जाता था। एक-एक पृष्ठ को पढ़ चिट्ठी समाप्त कर डाली। कई पृष्ठ उसने दुबारा पढ़े। मोहन पथिक के मुख पर उतार-चढ़ाव देख रहा था। जब चिट्ठी समाप्त कर ली तो पथिक गम्भीर विचार में डूबा हुआ सिर झुकाए बैठा रहा। मोहन ने पूछा, "गुरुदेव, क्या हुआ है?"

इसके उत्तर में पथिक ने कहा, "मोहन, सत्य ही तुम मुझसे अधिक अनुभवी हो। तुम्हारा अनुमान ही ठीक प्रतीत होता है। परन्तु मैं विवाह नहीं कर सकता। मुझे अभी अपनी मातृभूमि के लिए बहुत कुछ करना है।"

मोहन ने उत्सुकता से पूछा, "अब वह क्या चाहती है?"

पथिक ने उत्तर में चिट्ठी का एक अंश उठाया और पढ़ना आरम्भ कर दिया, "इस संसार में, एक निर्बल-निस्सहाय प्राणी बिना आश्रय के कैसे पार हो सकता है? आपने लिखा है, 'भगवान् का आश्रय लो।' कैसे उसका आश्रय लूँ? वह तो ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलता। भगवान्? यह धोखा है। उसके आश्रय बैठे रहना मुझे पसन्द नहीं। मुझे इसमें कुछ भी आशा दिखाई नहीं देती। यदि भगवान् के आश्रय बैठा रहना होता तो आप इतने बड़े प्रयत्न में क्यों संलग्न हैं? अगर एक व्यक्ति की मुक्ति के लिए भगवान् का आश्रय ही उपाय है तो एक जाति के उद्धार के लिए क्यों नहीं? जब आपकी योजना में पुरुषार्थ की आवश्यकता है तो मेरी समस्या में पुरुषार्थ का अवलम्बन क्यों नहीं?"

इसके बाद पथिक ने एक और स्थान में पढ़ना आरम्भ कर दिया, "पानी नाक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक पहुँच गया है। एक इंच का दसवाँ भाग पानी और चढ़ आने से मृत्यु निश्चित है। आपने मुझे लिखा था कि मिस्टर विनोद से राय कर लूं। मैंने उसे आपकी चिट्ठी सुनाई। उत्तर में उसने रुक्मिणी की कथा सुना दी। वह कहने लगा, 'रुक्मिणी का विवाह शिशुपाल से निश्चित हुआ था और वह चाहती थी कि श्रीकृष्ण से हो। उसने श्रीकृष्ण को पत्र लिखा और वह रुक्मिणी के प्रेम की वास्तविकता को जान उसे लेने वहाँ पहुँच गया। इसके लिए कृष्ण को घोर युद्ध करना पड़ा था। कृष्ण रुक्मिणी को छुड़ाकर ले गया और उससे विवाह कर लिया।' फिर मिस्टर विनोद ने कहा, 'रुक्मिणी के ज़माने में अनेक आर्य वीर भारतवर्ष में उपस्थित थे, परन्तु रुक्मिणी ने लिखा था केवल कृष्ण को। यदि वह भीष्म अथवा युधिष्ठिर को लिख देती तो वह भी उसकी सहायता को पहुँच जाते, परन्तु उसने उसे लिखा जिस पर उसके प्रेम ने उसे अधिकार दिया था।' मिस्टर विनोद ने कहा है कि मैं भी अपने कृष्ण को लिखूं और वह अवश्य मुझे शिशुपाल से बचा लेगा। मुझे विनोद बाबू की सम्मति पसन्द आई है और इस विपत्ति के समय मैं अपने कृष्ण को लिख रही हूँ। अब देखना यह है कि कृष्ण-कृष्ण की रट लगाने वाला स्वयं कृष्ण बनने में कितना तत्पर है।"

इतना पढ़ पथिक ने चिट्ठी रख दी और गम्भीर विचार में डूब गया। मोहन ने पूछा, "और इतना शेष क्या इसी सम्बन्ध में है?"

पथिक कुछ देर तक मोहन का मुख देखता रहा। मानो वह मोहन के कहने का अर्थ समझ रहा था। जैसे किसी को धीरे-धीरे चेतना होती है, वैसे ही पथिक को मोहन के कहने का अर्थ समझ में आने लगा। वह कहने लगा, "क्या शेष चिट्ठी की बाबत पूछते हो, मोहन? चिट्ठी आद्योपान्त इसी लय में लिखी गयी है।"

अब पथिक ने एक और पृष्ठ निकालकर पढ़ना आरम्भ किया, "मैं यूरोपियन सभ्यता में डूबी हुई थी। मैं स्त्री को स्वयं अपना मार्ग ढूंढ़ निकालने में सबल समझती थी। मैं अपने में उत्साह और साहस भरा पाती थी। आँखें ऊँची कर मैं अपने माता-पिता को मनमानी सुना सकती थी। कॉलेज में तीन सौ लड़कों में अकेली होते हुए भी निडर घूमा करती थी। कभी किसी को साहस नहीं होता था कि मेरी ओर आँख उठाकर भी देखे, परन्तु दिल्ली में एक भव्य मूर्ति की ओजस्वी प्रतिभा ने मुझे यूरोपियन बवंडर से निकालकर पुनः भारतीय महिलाओं की पुरुषों में श्रद्धा और निष्ठा भाव की ओर प्रेरित कर दिया है। सीता, सावित्री, द्रौपदी, गार्गी इत्यादि अनेकानेक प्रसिद्ध नारियों को पति-भक्ति करते हुए भी अब मैं किसी यूरोपियन स्त्री से घटिया नहीं समझती। जब मैं देखती हूँ कि ये महिलायें राम, सत्यवान, अर्जुन इत्यादि को अपने पीछे भागने पर विवश न कर स्वयं अपना सर्वस्व देने के लिए उनके चरणों में चली गयीं, तो मेरे मन में उनकी कीमत कम नहीं हो गयी। यद्यपि पहले तो मैं ऐसा ही समझती थी कि वे नारी जाति के लिए अपमान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप हैं। जब मुझे कोई बताता था कि भारतवर्ष में स्त्रियाँ पति चुनती थीं तो मैं हँस पड़ती थी। मैं समझती थी कि वह जंगलीपन है। यूरोपियन रिवाज, कि विवाह का प्रस्ताव पुरुष करे, मुझे भला मालूम होता था, परन्तु अब विचार बदल गये हैं। अब तो मुझे यूरोपियन रिवाज त्रुटिपूर्ण प्रतीत होता है। पुरुष को अपनी पत्नी चुनने के लिए अधिकार देना अब मुझे एक घृणायुक्त रिवाज प्रतीत होता है। कारण यह है कि इसके लिए स्त्रियों को अधिक और अधिक सुन्दर बनकर पुरुषों के सम्मुख आने की आवश्यकता पड़ती है। अनेकानेक प्रकार के कृत्रिम व्यवहार करने पर बाध्य होना पड़ता है। इसी रिवाज के फलस्वरूप ही लाखों रुपये के कौसमैटिक्स (श्रृंगार के सामान) यूरोपियन देशों में बनते और बिकते हैं। इसी रिवाज के कारण युवा लड़कियाँ आधी-आधी रात तक शराब से बदमस्त लड़कों के साथ भड़कीली पोशाकों में नाचने पर मजबूर होती हैं। प्राचीन भारतवर्ष का रिवाज कि लड़कियाँ प्रस्ताव करें, इन तमाम झंझटों से हमको मुक्त कर देता है। यह रिवाज कितना सुखद, सुलभ और बढ़िया है, इसका अनुभव मुझे अब हुआ है जब अपने को मुख्य रखकर ऐसी बातों पर विचार करने का अवसर आया है। परन्तु क्या दूसरे पक्ष के व्यक्ति अर्थात् पुरुष भी इसी विचार को मानने वाले हैं? यदि कृष्ण न होते तो रुक्मिणी की निष्ठा और श्रद्धा का क्या होता? सत्यवान न मानता तो सावित्री का उससे विवाह का हठ क्या कर लेता? आप स्त्रियों को सीता-सावित्री बनने को कहते हैं तो क्या आप राम-कृष्ण बनने को पसंद करते हैं?"

पथिक ने पत्र के अन्त की कुछ पंक्तियाँ भी पढ़कर सुनाईं, "औरंगाबाद से शिशुपाल दलबल सहित चला आ रहा है। क्या कलकत्ता-रूपी द्वारिका में बैठे मेरे कृष्ण केवल देखा करेंगे?"

मोहन इस चिट्ठी को सुन बहुत घबराया। वह पथिक के मुख पर गम्भीरता का भाव देख सोच रहा था कि वह कृष्ण बनने की सोच रहा है। उसने कलम रख दी और हाथ-पर-हाथ रख चिट्ठी लिखने से इन्कार करने का भाव प्रकट करने लगा।

एकाएक पथिक की आँखों में एक विशेष चमक उत्पन्न हो गयी। मोहन ने इसका प्रयोजन यह समझा कि गुरुदेव ने विवाह का निश्चय कर लिया है। ऐसा समझना कोई अयुक्तिसंगत बात भी नहीं थी। सलीमा की रूपरेखा, उसकी शिक्षा और उसके विचार ऐसे थे कि कोई भी पुरुष उसे लाख कठिनाइयों पर भी प्राप्त करने का यत्न करता। कितनी भोली सूरत रखती है वह। बड़ी-बड़ी आँखें, चौड़ा मस्तक, घुंघराले बाल, चंचल, चपल शरीर और फिर सुलझा हुआ मन सोने में सुगन्ध वाली बात थी।

इस पर भी मोहन उस महान् कार्य के लिए, जिसे पथिक और उसके साथियों ने आरम्भ किया था, अविवाहित पथिक की आवश्यकता अनुभव करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह के झंझटों में फँसा हुआ पथिक इतनी बड़ी योजना का संचालन कर सकेगा, इसमें उसे संदेह था। सलीमा बहुत अच्छी लड़की है, सुन्दर है और चरित्रवान है। वह भी जातीयता के भाव से ओत-प्रोत है, परन्तु देश को स्वतन्त्रता के पथ पर ले जाना इससे भी अधिक सुन्दर और लुभायमान कार्य है। मोहन मन-ही-मन पथिक के विवाह कर लेने के निर्णय का विरोध करने के लिए उपयुक्त शब्द ढूँढ़ रहा था।

एकाएक पथिक ने प्रफुल्लित मन से मोहन को कहा, "अच्छा, लिखो।"

मोहन ने कलम नहीं उठाई। केवल कह दिया, "नहीं लिखूंगा।"

पथिक ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछा, क्यों?"

"क्यों क्या, मैं नहीं चाहता कि आप हम लोगों को मँझधार में छोड़कर एक उज्ज्वलमुखी छोकरी के पीछे लग जावें।"

पथिक हँस पड़ा। बोला, "भाई मोहन, लिखो तो। यदि उत्तर पसन्द न आवे तो फाड़ देना। क्या तुम नहीं जानते कि मैं तुम लोगों की राय के बिना इतना बड़ा कदम कैसे उठा सकता हूँ।"

मोहन ने उत्साहहीनता से, असन्तोष का भाव प्रकट करते हुए कलम उठाई और कहा, "बहुत अच्छी बात, लिखाइये।"

पथिक ने आँखें मूंदकर कुछ सोचा और लिखाना आरम्भ कर दिया :

"प्रिय मिस सलीमा, मेरा विचार है कि मिस्टर विनोद ने तुम्हें जो कहानी सुनाई है वह तुम्हारी अवस्था से मेल नहीं खाती। उसने तुम्हारी परिस्थिति का गलत अनुमान लगाया है। देखो, मैं तुम्हें एक और घटना की बात लिखता हूँ और मैं समझता हूँ कि यह तुम्हारी अवस्था में तुम्हें अधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

कृष्ण की एक बहिन थी। उसका नाम था सुभद्रा। सुभद्रा बहुत ही पवित्र विचारों की लड़की थी। कृष्ण जैसे योगी की बहिन विचारों की विशालता में किसी लड़की से कम नहीं हो सकती थी। एक बार अर्जुन से उसकी भेंट हो गयी और वह उससे प्रेम करने लगी। कृष्ण के पिता को सुभद्रा का विवाह अर्जुन से पसन्द नहीं था। परन्तु सुभद्रा इस विवाह के लिए निश्चय कर चुकी थी। जब सुभद्रा के पिता ने अपनी लड़की का विवाह किसी अन्य से निश्चित करना चाहा तो वह अपने भाई कृष्ण के पास पहुंची और कहा, 'भैया, बहिन की रक्षा करो।' कृष्ण को जब सब मामला ज्ञात हुआ तो वह उसे रथ में बैठा इन्द्रप्रस्थ ले गया और वहाँ अर्जुन से उसका विवाह कर दिया। देखो, सलीमा, दो पैसे के रंगे सूत से तुम किसी भी हिन्दू भाई से रक्षा का हक माँग सकती हो। निश्चय जानो कि कोई भी हिन्दू इस नाते से तुम्हारी रक्षा में अपनी पूर्ण शक्ति लगाये बिना नहीं रहेगा। पत्र का उत्तर शीघ्रातिशीघ्र भेजना।"

अपने हस्ताक्षर के लिए पथिक ने चिट्ठी मोहन से माँगी। मोहन लज्जित था। इस उत्तर से भ्रमरहित हो गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब सब काम समाप्त कर दोनों उठे तो मोहन ने कहा, "गुरुदेव, क्षमा करना। मैंने आप पर अकारण संशय किया था। मगर भाई की ज़िम्मेदारी तो और भी अधिक होगी।"

"ठीक है, परन्तु यह निष्काम होगी। पति की ज़िम्मेदारी सकाम है।"

"परन्तु आप कहीं इस झमेले में फँस गये तो इस सब योजना का क्या होगा?"

"मैं नहीं फँसूंगा। मुझे अपनी शुद्ध भावनाओं पर और भगवान् के न्यास पर दृढ़ विश्वास है।"

: ४ :

नवाब साहब और बेगम साहिबा जब सलीमा से विवाह कर लेने का वचन ले चुके तो वे यह निश्चय करने पर बेचैन थे कि उनका दामाद कौन होगा। प्रायः नित्य बेगम सलीमा से पूछती, "बेटी, बता दो न। कौन है वह जिससे तुम शादी करना चाहती हो?"

सलीमा पहले तो टालमटोल करती रही। आखिर एक दिन उसने कह दिया, "मैंने जिसे पसन्द किया है उसको चिट्ठी लिख चुकी हूँ और जवाब के इन्तज़ार में हूँ।"

जब कई दिन तक कोई उत्तर न आया तो नवाब साहब ने नोटिस दे दिया और कहा, "यदि एक सप्ताह में तुमने यह फैसला न किया तो फैसला हमें करना पड़ेगा, और फिर तुम्हें हमारा फैसला मानना होगा।"

बात यह हुई कि इफ्तिखार अहमद के ननिहाल वालों को उसकी चिट्ठी पर चिट्ठी आ रही थी कि अगर अब भी सलीमा राज़ी हो तो वह तैयार है। वे लोग नवाब साहब के पास पहुँचते थे और कहते थे, "लड़की की शादी हमारे नवासे से तय हो चुकी थी और अगर यह न हुई तो लोग तो यही समझेंगे कि लड़की में कोई खराबी जान हमने इनकार कर दिया है। नवाब साहब, आपकी इज़्ज़त और हमारी इज़्ज़त एक है। हम इसमें फर्क नहीं समझते और हम चाहते हैं कि आपकी लड़की के भाग जाने से जो बदनामी हुई है, वह हम शादी करके मिटा दें। लोग समझेंगे कि शादी लड़की के भाग जाने से नहीं रुकी थी। कुछ और ही वजह थी।"

नवाब साहब को ये दलीलें बहुत मज़बूत मालूम होती थीं। वे फिर सलीमा को इस रिश्ते पर राज़ी कर लेना चाहते थे। एकाएक उन्हें मालूम हुआ कि सलीमा का चुनाव एक हिन्दू है। वे अब बहाना बनाकर उसके हिन्दू से शादी करने में विघ्न डालना चाहते थे। वे सलीमा की सब डाक की पड़ताल करते थे, मगर उन्हें शादी के विषय की कोई चिट्ठी नहीं मिलती थी। सलीमा को पथिक की चिट्ठियाँ विनोद के पते पर आती थीं।

पथिक की वह चिट्ठी, जिसका पहले उल्लेख आ चुका है, सलीमा को मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुकी थी, और वह इस चिट्ठी का अर्थ लगाने का यत्न कर रही थी। ऐसे अवसर पर नवाब साहब चिट्ठियों की जाँच-पड़ताल से निराश हो सलीमा के पास आकर कहने लगे, "कुछ पता चला, क्या फैसला हुआ है ?"

"अब्बाजान, अभी कुछ फैसला नहीं हुआ।"

"आखिर वह है कौन ?"

"जब तक मान न जायें तब तक कैसे बता दूं ?"

"तुम्हें नामंजूर किये जाने की भी उम्मीद है ?"

"सब दुनिया औरंगाबाद वालों की तरह नहीं है, अब्बाजान !"

"हाँ, मैं भी तो यही कहता हूँ। उनके मुकाबले का कोई नहीं है।"

"औरतों के पीछे भागने में न !"

"तुम्हारा दिमाग तो खराब हो रहा है। कुछ हो। आज अकरम (यह सलीमा के भाई का नाम था) की मिश्र से चिट्ठी आई है कि वह तीन-चार दिन में बम्बई पहुँचने वाला है। मैं यहाँ से परसों बम्बई के लिए रवाना होना चाहता हूँ और रवाना होने से पहले इस बात का फैसला करके जाना चाहता हूँ। देखो, औरंगाबाद वाले इतने खराब आदमी नहीं हैं जितना तुम समझती हो। हर एक में अच्छी-बुरी बातें मिली-जुली रहती हैं। जरा नजदीक से देखोगी तो पता चलेगा कि उनमें अच्छाइयाँ भी हैं। अगर मेरे रवाना होने तक तुम्हारे पसन्द किये साहब की मंजूरी न आयी तो मैं औरंगाबाद तार देकर तय करा दूंगा और अकरम के साथ बम्बई से ही वहाँ जाकर बाकी सब तय कर आऊँगा।"

सलीमा पथिक की चिट्ठी का आशय समझने में लीन थी। उसके लिए वह चिट्ठी ही एक आश्रय रह गयी थी। वह अपने पिता के पास से उठकर अपने सोने के कमरे में चली गयी। नवाब साहब ने समझा कि उसे उनके प्रस्ताव में कोई आपत्ति नहीं, इससे सन्तुष्ट हो वह नीचे अपने कमरे में चले गये।

सलीमा ने सोने के कमरे में जा पथिक की चिट्ठी निकाली और फिर पढ़नी शुरू की। पथिक की पहली चिट्ठी के अनुसार वह विनोद से राय करने गयी थी तो विनोद ने रुक्मिणी की कहानी सुना दी थी। विनोद का अभिप्राय यह था कि सलीमा उससे स्पष्ट रूप में कहे कि वह उससे विवाह करना चाहती है तो वह उसे औरंगाबाद वाले और उसके माता-पिता के षड्यन्त्र से छुड़ा सकता है। उसका आशय था कि वह उससे विवाह कर लेगा। वह बालिग तो है ही। सब झगड़ा तय हो जाएगा। मगर इस रुक्मिणी की कथा को सुन सलीमा ने यह समझा कि विनोद उसे पथिक से सहायता के लिए कह रहा है। वह समझती थी कि विनोद से तो उसके विवाह की कोई बात है ही नहीं। इससे उसने चौदह पृष्ठ की लम्बी चिट्ठी पथिक को लिख डाली। उसके जवाब में यह चिट्ठी आई थी।

सलीमा ने समझा कि पथिक अभी लखनऊ न आ सकने के कारण लिख रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि वह विनोद को राखी बाँध दे ताकि वह भाई बनकर उसकी सहायता कर सके। यह समझ में आते ही उसने जमाल की माँ को बुलवा लिया। अपने घर की नौकरानियों और नौकरों पर विनोद की चिट्ठी के मामले के पश्चात् वह विश्वास खो चुकी थी। जमाल की माँ से बाज़ार से लाल रंग का रेशम मँगवा लिया। इस रेशम को अपने ब्लाउज़ में छिपा वह कॉलेज चली गयी।

कॉलेज की पढ़ाई के पश्चात् वह विनोद से मिली और बोली, "मिस्टर विनोद, आज आपका क्या प्रोग्राम है ?"

"प्रोग्राम तो कुछ भी नहीं। क्यों, क्या है ?"

"आज कहीं बाहर घूमने को मन करता है।"

तुरन्त विनोद के मन में विचार आया कि रुक्मिणी की कथा सुनाने का फल निकलने वाला है। उसने अपनी किताबें होस्टल में एक लड़के के पास रख दीं और दोनों कहीं घूमने के लिए कॉलेज से बाहर निकल आये।

"हाँ, किधर चलें ?"

"कहीं, जहाँ इच्छा हो। किसी ऐसे स्थान पर, जहाँ एकांत हो और हम एक-दो घंटे इस गन्दगी से दूर रह सकें।"

"गन्दगी ?"

"यही समाज, संसार और इनकी बनायी बनावटी ज़िन्दगी से।"

"बनावटी ज़िन्दगी से ?"

"हाँ, हाँ, कुदरती खसलत, जहाँ एटिकेट के बन्धन से मुक्त हो। मैं तो इस बनावटी रहन-सहन से ऊब गयी हूँ। ये हम लोगों की अपनी बनाई बेड़ियाँ हैं, जो हम लोगों को ही जकड़े हुए हैं।"

विनोद को विश्वास हो गया कि आज वह अपने मन में दबे प्रेम को प्रकट करने के लिए उतावली हो उठी है। वह सलीमा को बहुत चाहता था, परन्तु सलीमा ने उसे कभी भी प्रोत्साहित नहीं किया था। सलीमा का व्यवहार अति सरल, सुलभ और स्वाभाविक होता था। ऐसी अवस्था में विनोद अपना प्रेम प्रकट करने का कभी साहस नहीं कर सका था।

जब से नवाब साहब और उसके पिता में इस विषय पर बातचीत हुई थी और उस बातचीत का ज्ञान उसे हुआ था तब से उसे अपने और सलीमा के बीच एक ऊँची भीत खड़ी प्रतीत होती थी। यह भीत थी मजहब की, समाज में दोनों की स्थिति की और नवाब साहब से उसके विचारों की भिन्नता की। आज उसे सलीमा की बातों से ऐसा प्रतीत होता था कि वह इस दीवार को कूदकर लाँघ आना चाहती है। वह उसे इस प्रयत्न में सहायता देना चाहता था।

वे गोमती के किनारे चले जा रहे थे। विनोद चुप था। सलीमा जब कोई बात करती तो वह अति संक्षेप में उत्तर दे फिर अपने मन के विचारों के मन्थन में लग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता था। वह आज अपने मन में एक नया संसार बना रहा था। इस संसार की रूपरेखा धुंधली-सी बनती थी। वह स्पष्ट नहीं हो पाती थी। सलीमा की ओर से आशा होकर भी वह इस विवाह को अभी बाधारहित नहीं समझता था। सबसे बड़ी बाधा तो उसके मन में पथिक की योजना ही थी जिसमें वह तन और मन से लगा हुआ था। यह योजना थी तो साधारण-सी। उसमें कानून के विपरीत कुछ नहीं था। तो भी देश को स्वतन्त्रता की ओर ले जाने के लिए वह अपना जोड़ नहीं रखती थी। सरकार उसे पसन्द नहीं करेगी, यह उसे विश्वास था; मगर कांग्रेसी मन्त्री-मण्डलों की उपस्थिति में सरकार इस योजना का विरोध कैसे करेगी, वह समझ नहीं सकता था। यह अनिश्चित अवस्था थी जो उसके नये संसार की रूप-रेखा को स्पष्ट नहीं होने देती थी।

सलीमा विनोद को आज विशेष रूप से चुप देख इसका कारण सोच रही थी। वह अपने वहाँ एकान्त में आने का आशय प्रकट करने से पूर्व उसके चुप रहने का कारण जानना चाहती थी। उसने कई प्रश्न पूछे और उनका उत्तर अधूरा और अस्पष्ट मिलता रहा। आखिर उससे नहीं रहा गया और वह खड़ी हो विनोद का मुख देखने लगी। विनोद भी खड़ा हो गया। सलीमा ने पूछा, "क्या बात है?"

विनोद, मानो नींद से चौंक उठा हो, घबरा गया। उसने कहा, "क्या बात है? कुछ भी तो नहीं।"

"आज तुम खास तौर पर भूले हुए मालूम होते हो।"

विनोद अपने मन की बात कहने का यत्न करते हुए बोला, "मैं? हाँ, भूला हुआ हूँ। आज तुमने कहा है न कि समाज के बनावटी बन्धनों से मुक्त होना चाहती हो। इसी ने मुझे भुला दिया है। अब से पहले मैं भी सड़क के किनारे लगे जँगले के सहारे चला जाता था। तुम जब मुझे इस जँगले के बाहर ले आई हो तो मैं उस अन्धे की भाँति हो रहा हूँ जो खुले मैदान में दिशा-शून्य हो जाता है। मैं अब नहीं जानता किधर जाऊँ।"

"तो तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि समाज के रिवाज उस जँगले की तरह हैं जो किसी सड़क के किनारे लगा है और जिससे मुसाफिर राह छोड़कर इधर-उधर नहीं हो सकता?"

"हाँ।"

"तो वह जँगला निहायत ज़रूरी है। उसे उखाड़ फेंकना मुनासिब नहीं।"

"हाँ।"

"तब तो हमारा इस ओर आना फिजूल हुआ!"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। जँगला तो आम लोगों की हिफाज़त के लिए लगाया गया है, और उनके लिए यह रहना ही चाहिए। मगर जब कोई इंजीनियर नया पथ तैयार करता है तो उसे जँगला कूदकर पार करना ही होगा। उसे तो मार्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढूँढ़ने के लिए अपनी बुद्धि और शिक्षा का आश्रय लेना होगा। उसके लिए तो पहले से बने जँगले और रास्ते दिखाने के निशान भ्रम में डालने वाले होंगे। हम तो नया मार्ग ढूँढ़ने जा रहे हैं न?"

"हाँ, बिलकुल नया मार्ग। बताओ, अब किधर चलें?"

"जिधर मन करे।"

"यदि मेरा मन तुम्हारे मन से उलटी ओर जाने को कहे तो?"

"देखो, सलीमा, हमारे परस्पर परिचय को दो वर्ष से ऊपर हो चुके हैं और तब से लेकर परिचय ज़्यादा बढ़ता गया है। यह बात तब ही हो सकती है जब दो दिल एक सुर में बज रहे हों। तुम कैसे यह समझती हो कि जो तुम्हारी आत्मा की माँग है वह मेरी आत्मा की पुकार नहीं है? तुम्हारे होंठों से बात निकलने ही वाली होती है कि मेरे मन में उसका अक्स खिंच जाता है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि जो तुम चाहती हो वही मैं चाहता हूँ।"

सलीमा के मन में कुछ शरारत सूझी। वह बोली, "ठीक वही? तब तो बहुत अच्छी बात है। मुझे बताने की आवश्यकता नहीं रही न। तुम तो समझ ही गये हो। अच्छा, बताओ तो कि हम यहाँ किसलिए आये हैं?"

इस समय दोनों एक ऐसे स्थान पर पहुँच गये थे, जहाँ नदी के किनारे एक पेड़ गिरकर ज़मीन पर पड़ा हुआ था। स्थान सर्वथा निर्जन था। गिरे पेड़ की डालियाँ धीरे-धीरे चलते पानी में पहुँची हुई थीं। सलीमा इस प्राकृतिक स्थान को देखकर वहाँ बैठ गई और विनोद को समीप ही बैठ जाने का संकेत किया। जब वह बैठ गया तो उसने वार्तालाप जारी रखते हुए कहा, "हाँ, तो बताओ, हम यहाँ क्यों आये हैं?"

विनोद को आज अपनी चिर-संचित आशाओं की पूर्ति का विश्वास हो रहा था। वह समझता था कि जीवन के परम सुख की ड्योढ़ी पर वह खड़ा है। दरवाज़े पर केवल हाथ लगाने की आवश्यकता है। वह खुल जायेगा। इस कारण उसने आज अपने मन की भावनाओं का निचोड़ एक साफ शीशी में भरकर सलीमा के सम्मुख रखने का निश्चय कर लिया और वह कहने लगा, "कभी तुमने चिड़ियों को घोंसला बनाते देखा है?"

"हाँ, मेरे कमरे के क्लॉक के ऊपर हर साल वे घोंसला बनाती हैं।"

"जानती हो, उस समय उनके मन में क्या भावना काम करती है?"

"भावना तो नहीं बता सकती। अगर कोई ख्याल उनके मन में होता होगा तो मैं उनकी बोली न समझ सकने से नहीं जान सकती। हाँ, उनमें विलासिता की बू आती है। इसी से मजबूर होकर एक-एक तिनका इकट्ठा कर वे घर बनाने में लग जाती हैं।"

"विलासिता! उसके लिए घर की क्या ज़रूरत है? कड़कते जाड़े में तो उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोंसले की ज़रूरत नहीं रहती और वसन्त के सुखदायक, मज़ेदार मौसम में घर की ज़रूरत हो गयी। विलासिता मकसद नहीं है, सलीमा। ध्येय कुछ और ही है। इस मकसद से ही संसार का हर एक प्राणी भरा पड़ा है। यह एक छोटी बात भी नहीं। दलील और इल्म भी इस प्राणी को इस मकसद से दूर नहीं रख सकते। यही ज़िन्दगी का सार है। प्राणी पैदा होता है और इसी मकसद को कमोबेश पूरा कर ज़िन्दगी छोड़ जाता है।"

"मैं तो इस मकसद को न मानती हूँ, न समझती हूँ।"

ज्यों-ज्यों विनोद आशय को स्पष्ट करने का यत्न करता था त्यों-त्यों उसके मस्तिष्क में रक्त-प्रवाह बढ़ता जाता था। इस कारण उसके मुख की लाली बढ़ती जाती थी। कान और गालों पर तो ऐसा प्रतीत होता था कि भिड़ों ने काट खाया है। रक्त-वेग के बढ़ जाने से विचारों की स्पष्टता बिगड़ती जाती थी और भावों की जिस प्रचुरता से उसने बात आरम्भ की थी वह प्रतिक्षण क्षीण होती जाती थी। अन्त में वह विवश हो गया और अपनी बात को नग्न रूप में उपस्थित करने के लिए उसने सलीमा का हाथ पकड़ लिया। सलीमा ने हाथ छुड़ाया नहीं। वह उस हाथ को अति कोमलता से प्यार देते हुए कहने लगा, "क्या तुम अब भी नहीं समझीं? मेरे हृदय की रानी, मेरे स्वप्नों की प्रकाश, मेरे जीवन की लक्ष्य, मेरे मस्तिष्क की प्रतिभा, मेरी आँखों की ज्योति, मेरी वाणी की सरस्वती, मेरे हाथों की कला, और क्या? मैं वर्णन नहीं कर सकता।"

इतना कह वह चुप कर गया और अति प्रेम-भरी दृष्टि से सलीमा की आँखों में देखने लगा। विनोद का मुख सलीमा के इतना समीप था कि वह उसके उष्ण निःश्वासों को अपने गालों पर गरम-गरम अनुभव कर रही थी। विनोद ने एक हाथ सलीमा की कमर में डाल दिया। इस समय सलीमा को चेतना हो आई। वह उठकर खड़ी हो गयी और कुछ दूर हटकर बोली, "ठहरो, ज़रा अपना दाहिना हाथ निकालो तो।"

विनोद समझा कि वह अपने भावों को ठीक रूप में प्रकट नहीं कर सका। वह कहने लगा, "सुनो तो।"

सलीमा ने सिर हिलाते हुए कहा, "ऊँ हूँ। पहले हाथ निकालो।"

विनोद ने दाहिना हाथ आगे बढ़ाया। सलीमा ने तुरन्त रेशम का धागा निकाल उसकी कलाई पर बाँध दिया और कहा, "देखो, बहिन भाई से अपनी रक्षा करने की भिक्षा माँगने आई है। तुम मेरे यहाँ आने का मकसद गलत समझे थे।"

विनोद यह देखकर अवाक् रह गया। उसका मुख पीला पड़ गया। उसका सिर चक्कर खाने लगा और पेड़ पर बैठा न रह सकने से पीछे लुढ़ककर ज़मीन पर बैठ गया।

उसे अपने पर घृणा और लज्जा उत्पन्न हो आई। अपनी सूझ पर उसे भारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास था और आज उस सूझ को धोखा खाते देख वह एकदम घबरा उठा। उसके माथे से पसीने की बूंदें टपकने लगीं और आँखों के सम्मुख अँधेरा छा गया। वह भूमि पर लेट ही जाने वाला था कि सलीमा, ने जो उसके मुख पर परिवर्तन देख रही थी, उसे अचेत हो लेटते देख भागकर पकड़ लिया और उसे हिलाकर चेतना में लाते हुए बोली, "भैया, क्या हुआ है ? क्या मुझसे भूल हुई है ?"

विनोद को 'भैया' शब्द ने वास्तविकता में ला बैठाया। उसने अपना सिर हिलाकर मस्तिष्क को ठीक करने का यत्न किया। वह बोला, "कुछ नहीं, छोड़ दो। अब मैं ठीक हूँ।"

सलीमा ने विनोद के दाहिने हाथ को अपने दोनों हाथों में पकड़कर कहा, "विनोद भैया, क्या मैंने भूल की है ?"

"भूल ! नहीं, तुमने भूल नहीं की। मैं भूल कर रहा था। तुमने मुझे कान पकड़कर सीधे मार्ग पर कर दिया है। भला, इसमें क्या भूल हो सकती है ?"

"तो मैंने तुम्हारा सहारा ढूंढ़ने में भूल नहीं की। तुम मुझे सहारा दोगे ? एक बार सुभद्रा, कृष्ण की बहिन, ने कृष्ण से सहायता माँगी थी और उसने अपने माता-पिता से झगड़ा करके भी बहिन की सहायता की थी। क्या मैं गलत कह रही हूँ ?"

इस समय तक विनोद पूर्ण चेतना प्राप्त कर चुका था। वह भूमि से उठकर खड़ा हो गया और पुनः पेड़ पर बैठ गया। सलीमा उसके सम्मुख खड़ी थी। उसने अपनी दाहिनी कलाई पर बंधे लाल रेशम के धागे की ओर देखते हुए कहा, "बहिन सलीमा, क्षमा करना। मैं अभी तक तुम्हें नहीं समझा था। हाँ, तो तुम मुझे क्या करने को कहती हो ?"

सलीमा ने पथिक के विषय की बात को छोड़कर शेष सब बात बता दी। पीछे बताया, "भाई अकरम चार-पांच दिन में बम्बई पहुँच जावेंगे और उनके आते ही मेरी सगाई और फिर विवाह औरंगाबाद में कर दिया जायेगा। मैं स्वयं नहीं जानती कि मुझे क्या और कैसे करना चाहिए। मैं तुमसे ही इस बात में राय चाहती हूँ।"

विनोद इस समस्या को बहुत गम्भीरता से सोच रहा था। वह पेड़ पर बैठा था। सलीमा उसके सम्मुख खड़ी थी। विनोद का दाहिना हाथ उसके दोनों हाथों में था। वे परस्पर बहुत समीप थे और उनके मन और भी समीप हो गये थे। इस पर भी विनोद में अब वह उतावलापन नहीं था। तब वासना ने उसे विचारशून्य बना दिया था। अब विनोद सब बात को बहुत गहराई से विचार रहा था।

सलीमा सोच रही थी कि विनोद ने अकारण यह समझ लिया था कि वह उससे विवाह-प्रस्ताव करने आई है। इस घटना में वह अपना दोष नहीं समझती थी। उसने इस विषय में कभी भी विनोद को प्रोत्साहन नहीं दिया था। अब उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंका होने लगी थी कि कहीं पहली मित्रता भी ढीली न पड़ जाए। उसका अनुमान ठीक नहीं था।

विनोद ने एक लम्बी साँस खींची और बोला, "मैं अभी अनुभवहीन हूँ। इस मामले में मेरी सम्मति तुम्हें कुछ अधिक लाभ नहीं दे सकती। हाँ, यदि तुम कहो तो हम पिताजी के पास चलें और सब बात उन्हें बता दें। मुझे विश्वास है कि वह मेरी बहिन की सहायता करेंगे।"

सलीमा, जो अभी भी विनोद का हाथ पकड़े हुए थी, बोली, "मैंने भाई का हाथ पकड़ लिया है। अब मैं चिन्ता करने का कोई कारण नहीं पाती।"

"तो फिर अभी चलना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि समय कम होने से कुछ न हो सके।"

: ५ :

मिस्टर माथुर क्लब से आ, रात का खाना खा, बैठक में बैठे अपने मित्रों से बातचीत कर रहे थे कि विनोद चुपचाप समीप आ खड़ा हुआ। विनोद के मुख पर चिन्ता का भाव देख पिता ने प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी तरफ देखा। विनोद ने आँखें नीची किये हुए कहा, "पिताजी, आपसे स्टडीरूम में कोई मिलने आया है। ज़रा चलकर मिल लीजिये।"

"कौन है?"

"आप चलें। वहीं पता चल जायेगा।"

मिस्टर माथुर लड़के की आँखों में व्यग्रता देख उठ खड़े हुए और उसी कमरे में जा पहुँचे जहाँ नवाब साहब से भेंट हुई थी। इस कमरे में कोठी के पिछवाड़े से एक दरवाज़ा था। विनोद सलीमा को उधर से ही वहाँ लाया था। वह मित्र-मंडली में उसकी चर्चा होने नहीं देना चाहता था। माथुर साहब सलीमा को देख पहचान गये। उनके मुख से अचम्भे में निकल गया, "ओह, सलीमा है!"

सलीमा ने उठकर हाथ जोड़कर आदाब अर्ज़ की।

"बैठो, बैठो, बेटी," मिस्टर माथुर ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा। विनोद, जो अभी तक पिता के पीछे खड़ा था, अब सामने आ खड़ा हुआ। पिता ने पुत्र को बैठ जाने का संकेत किया। वह एक ओर कुर्सी पर बैठ गया। पिता को अपनी ओर देखते हुए विनोद ने कहा, "पिताजी, सलीमा ने आज मेरे राखी बाँधी है।"

मिस्टर माथुर इस सूचना से विस्मय में पड़ गये। वह सलीमा को वहाँ देख कुछ दूसरी बात सोच रहे थे। अब इस सूचना से वह पहले तो घबराये, परन्तु शीघ्र ही अपने को काबू में कर कहने लगे, "बहुत अच्छा किया है। मुझे पसन्द है। मैं तुम्हें बहिन पाने पर बधाई देता हूँ।"

"और आपको मुझे लड़की बनाना पसन्द नहीं है?" सलीमा ने आँखें नीची किए हुए कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत पसन्द है। मेरे कोई लड़की नहीं। यह कमी अब तुमने पूरी कर दी। बिनू, जाओ, अपनी माता को बुलाओ तो।"

विनोद ऊपर की छत से माताजी को बुलाने चला गया। मिस्टर माथुर ने सलीमा से पूछा, "क्या हुआ है?"

सलीमा बिना छिपाये ही सब बता देना चाहती थी। उसने कहा, "मैं बहुत मुसीबत में फँस गयी हूँ और घर पर मेरा कोई मददगार नहीं। मिस्टर विनोद मेरे गहरे दोस्त हैं और इनके सिवाय मुझे कोई मददगार नहीं सूझता। मुझे विश्वास था और है कि इनसे मदद माँगूंगी तो यह इनकार नहीं करेंगे। इनसे मदद लेते समय लोग और विनोद खुद भी मन में कोई उलटी बात समझने न लगे, मैं इनसे बहिन का रिश्ता साफ तौर पर कायम कर लेना चाहती थी। आपसे भी मुझे भारी मदद की ज़रूरत है और लड़की बनकर मुँहमाँगी मुराद पा सकूँगी।"

मिस्टर माथुर ने केवल 'हूँ' ही कहा और चुपचाप सलीमा की बात सुनते रहे। इस समय विनोद की माता नीचे आ गयी। मिस्टर माथुर बोले, "देखो, तुम्हारा बिनू एक बहिन लाया है। इसे ऊपर ले जाओ और कुछ खिलाओ-पिलाओ।"

विनोद की माता का स्वभाव बहुत पूछने का नहीं था। वह आज्ञापालन करना जानती थी। वह बैठी नहीं। खड़ी-खड़ी ही बोली, "आओ, बेटी, चलो" और सलीमा को ऊपर ले गयी।

विनोद सलीमा के पीछे-पीछे ऊपर जाने ही वाला था कि उसके पिता ने रोक लिया, "बिनू, तनिक ठहरो।"

विनोद वहीं पर ठहर गया। जब सलीमा और विनोद की माता ऊपर चली गयीं तो पिता ने लड़के से जिरह करनी शुरू की। पूछा, "यह कैसे हुआ है? मैं तो आशा करता था कि तुम इसे पत्नी बनाकर लाओगे।"

विनोद ने समझा कि पिताजी उसे डाँट रहे हैं। उसका मुख फीका पड़ गया और निरुत्तर हो ज़मीन की तरफ देखने लगा। मिस्टर माथुर लड़के को दोषी की भाँति सम्मुख खड़ा देख कहकहा मारकर हँस पड़े और बोले, "क्यों, घबरा गये न?"

विनोद ने क्षमा माँगने का भाव दिखाते हुए कहा, "ठीक है। मैं दोषी हूँ।"

"दोषी! क्यों?"

"मुझे अपनी बहिन बनाने का अधिकार हो तो हो, मगर आपकी लड़की बनाने का नहीं था।"

मिस्टर माथुर हँसते हुए बोले, "आखिर वकील के बेटे हो न। दलील खूब करते हो। अच्छा बताओ, वह तुमसे और मुझसे क्या मदद चाहती है?"

"नवाब साहब विवाह पर ज़ोर दे रहे हैं। सिवाय घर से भाग जाने के और चारा दिखाई नहीं देता। आपसे राय करके वह जो उचित हो करना चाहती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो वह किससे विवाह करना चाहती है ?"

"मैं नहीं जानता। कम-से-कम मुझसे तो नहीं।" यह कहते हुए उसकी दृष्टि कलाई पर बँधे रेशम के धागे पर चली गयी।

"और इस झंझट से तुम्हें क्या मिलेगा ?"

"एक अबला का धन्यवाद।"

"जानते हो, इस यश-प्राप्ति का परिणाम नवाब साहब से झगड़ा होगा।"

"नवाब साहब हमारे पालनकर्ता नहीं, जो उनसे डरकर हम नेक काम करने में संकोच करें।"

"केवल इतना ही नहीं। इस मामले में हिन्दू-मुस्लिम फसाद भी हो सकता है।"

"मुझे अफसोस है कि मैंने आपको व्यर्थ ही इस झगड़े में खींच लिया है। अब भी यदि आप आपत्ति न करें तो मैं इस मामले से आपको बाहर रखूँगा।"

"मगर जब तक तुम इसमें हो तब तक मैं कैसे बाहर रह सकता हूँ ?"

विनोद ने इस पर कृतज्ञता की दृष्टि से अपने पिता की ओर देखकर कहा, "मेरे लिए अब इससे बाहर रहना कठिन है।"

"अच्छी बात। मैं भी फिर इसमें रहूँगा। बिनू, तुम अभी मेरी प्रकृति को नहीं समझे। मगर यह जानना ज़रूरी है कि वह किससे विवाह करना चाहती है ? जाओ तो, उसे नीचे ले आओ।"

विनोद इस वार्तालाप से बहुत प्रसन्न था। वह एक-एक छलाँग में दो-दो सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ सलीमा के पास पहुँचा। उसकी माता उसे मिठाई खिला रही थी। सलीमा विनोद की माँ के व्यवहार से बहुत प्रसन्न थी। उसने बड़े आदर-सत्कार से उसे बैठाया, जलपान कराया और परिचय पूछा था। हाँ, सलीमा को विनोद के पिता से अभी शंका बनी थी।

जब वह विनोद के साथ नीचे आ रही थी तो कुछ सहमी हुई थी। विनोद ने उसे कान में कह दिया, "सब ठीक है। डरो नहीं और सारी बात ज्यों-की-त्यों बता देना।"

मिस्टर माथुर ने, सलीमा को बैठ जाने को कह, कहना आरम्भ किया, "मैंने विनोद से तुम्हारी कठिनाई जान ली है। यह नहीं हो सकता कि विनोद की बहिन की मैं सहायता न करूँ। मगर क्या तुम बता सकती हो कि वह कौन भाग्यवान है जिससे तुम विवाह करना चाहती हो ?"

सलीमा ने आँखें नीची किये हुए कह दिया, "छिपाने की कोई बात नहीं और फिर बेटी बाप से छिपा ही क्या सकती है। मैं मिस्टर पथिक से प्रेम करती हूँ। उनको मेरे भावों का ज्ञान है। मगर उनके विचार मेरे लिए कैसे हैं, यह मैं नहीं जानती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलीमा का सारा किस्सा जानकर मिस्टर माथुर ने एक योजना अपने मन में बना ली। उन्होंने कहा, "मैं यह चाहता हूँ कि तुम अपने घर में ही रह सको और तुम्हारे पिता बिना तुम्हारी मर्ज़ी के तुम्हारा विवाह न कर सकें। मैं इसका प्रबन्ध कल कर दूंगा। तुम सुबह आठ बजे यहाँ आ जाना। तुम्हारे आने से पहले सब प्रबन्ध हो जायेगा।"

अगले दिन सलीमा कॉलेज जाने के बजाय विनोद के घर पहुँच गयी। वहाँ मिस्टर माथुर ने एक प्रार्थना-पत्र तैयार कर रखा था। इसमें सिटी मैजिस्ट्रेट से प्रार्थना की गयी थी कि वह उसके माँ-बाप और दूसरे रिश्तेदारों पर 'इंजकशन' जारी करा दें कि जब तक वह स्वयं कोर्ट में हाज़िर होकर मंज़ूर न करे, उसकी शादी वे किसी से न करें। इस प्रार्थना-पत्र में उन्होंने लिखा था कि उसका बाप ज़बरदस्ती उसकी शादी एक ऐसे आदमी से करना चाहता है जिसे वह पसन्द नहीं करती। वह अब बालिग है और अपनी मर्ज़ी से शादी करना चाहती है।

मिस्टर माथुर ने एक अन्य वृद्ध वकील को घर पर बुलाया हुआ था। वकालत-नामा उसके नाम लिखकर उसे सलीमा के साथ सिटी मैजिस्ट्रेट की अदालत में भेज दिया।

सिटी मैजिस्ट्रेट के कचहरी में आते ही सलीमा का प्रार्थना-पत्र पेश कर दिया गया और सलीमा के बयान हो गये। बयान देते हुए उसने कहा, "मैं मैडिकल कॉलेज के सैकण्ड इयर में पढ़ती हूँ। मेरी उम्र बीस साल से ऊपर है। जिससे मेरा विवाह मेरे माँ-बाप करना चाहते हैं, मैं उससे नफरत करती हूँ। मैंने अपनी माँ और बाप दोनों से ही कह दिया है। इस पर भी मुझे मालूम होता है कि मुझ पर जबरदस्ती की जायेगी।"

इस बयान के बाद सिटी मैजिस्ट्रेट ने नवाब साहब के नाम नोटिस जारी कर दिया कि वह अगले दिन अदालत में साढ़े दस बजे हाज़िर होकर बयान करें कि क्यों न उन पर, प्रार्थी की प्रार्थना के अनुकूल, 'इंजकशन' जारी कर दिया जाए?

: ६ :

सलीमा अभी कॉलेज से लौटी नहीं थी कि अदालत का नोटिस नवाब साहब को मिल गया। वह नोटिस और सलीमा का प्रार्थना-पत्र पढ़ आगबबूला हो गये। सबसे पहला विचार उन्हें यही हुआ कि यह विनोद और उसके बाप का काम है।

उन्होंने मोटर ली और मिस्टर माथुर के घर का रास्ता पकड़ा। जब नवाब साहब वहाँ पहुँचे तो मिस्टर माथुर कचहरी से लौट ही रहे थे। नवाब साहब हाथ में नोटिस लिए, माथे पर त्योरी चढ़ाये मिस्टर माथुर से बोले, "क्यों, साहब, यह कैसी शराफत है?"

मिस्टर माथुर ने सर्वथा अनभिज्ञता प्रकट करते हुए कहा, "क्या हुआ, साहब, चलिये, अन्दर चलिये न। आइये, यह क्या है हाथ में?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उन्हें ले भीतर ड्राइंगरूम में चले आये। नवाब साहब को आराम से बैठाकर उन्होंने कहा, "क्या चाय पीजियेगा ?"

नवाब साहब ने कहा, "इस वक्त हमें चाय की थोड़े ही सूझ रही है।"

"हाँ, तो क्या हुआ है ? क्या मैं जान सकता हूँ ?"

नवाब साहब ने बिना उत्तर दिये वह अदालत का नोटिस वकील साहब के सम्मुख रख दिया।

मिस्टर माथुर ने नोटिस और प्रार्थना-पत्र दोनों ऐसे पढ़े जैसे उनके सामने ये पहली ही बार आये हों।

नोटिस को पढ़कर मिस्टर माथुर ने कहा, "तो क्या यह झूठी दरख्वास्त है कि आप उसकी ज़बरदस्ती शादी कर रहे हैं ?"

"शादी तो करनी ही होगी। यदि वह स्वयं अपना शौहर तलाश कर लेती तो हमें दिक्कत न होती। मगर आप तो ऐसे बातें कर रहे हैं कि जैसे आपको इन बातों का पता ही नहीं।"

"आपका फरमाना बिलकुल ठीक है। मैं कुछ नहीं जानता।"

"अच्छी बात है, आप मेरी ओर से मुकदमा लड़िये।"

"मैं गलत मुकदमा नहीं लिया करता।"

"गलत ! इसमें गलत क्या है ?"

"बात साफ है। लड़की बालिग है। आप उस पर ज़बरदस्ती नहीं कर सकते। अदालत आप पर 'इंजकशन' जारी कर देगी।"

"तो ज़ाहिर हो गया है कि आपका भी हाथ इसमें है।"

इतना कह नवाब साहब मिस्टर माथुर के यहाँ से चल एक अपने दोस्त वकील के यहाँ पहुँचे। इन वकील साहब का नाम शेख अब्दुल अहमद था। शेख साहब ने जब अदालत का नोटिस और सलीमा का प्रार्थना-पत्र पढ़ा तो बहुत विस्मय से पूछने लगे, "नवाब साहब, यह क्या है ? यह क्यों हुआ ?"

नवाब साहब सब बातें नहीं बताना चाहते थे। उन्होंने कह दिया, "यह 'इंजंकशन' जारी नहीं होना चाहिये।"

"लड़की की उमर कितनी है ?"

"उसने दरख्वास्त में ठीक लिखी है।"

"तो कुछ नहीं हो सकता।"

"मगर, वकील साहब, अगर यह 'इंजकशन' जारी हो गया तो लड़की हिन्दुओं के पास चली जायेगी।"

"ओह ! तो यह बात है। आपने उसे उनकी सोहबत में आने ही क्यों दिया था ?"

"अब कोई तदबीर बताइये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा, सुनिये।" इतना कह वकील साहब ने नवाब साहब के कान में कुछ कह दिया। नवाब साहब का मुख गम्भीर हो गया। वकील साहब ने फिर कान में कहा। नवाब साहब ने कहा, "अच्छी बात, कोशिश करता हूँ। मगर आप कल मेरी तरफ से हाज़िर हो जाना।"

: ७ :

अगले दिन कचहरी में खासी चहल-पहल थी। बहुत-से वकील और कई दर्शक वहाँ हाज़िर थे। दोनों ओर से नगर के चोटी के वकील पेश हो रहे थे। कुछ हिंदू-मुस्लिम तनाव भी प्रतीत होता था। यद्यपि यह कोई नहीं कह सकता था कि लड़की का सम्बन्ध किसी हिन्दू लड़के से है और वह किसी हिन्दू के भड़काने से कचहरी की शरण में आई है। इस पर भी लोग कानोंकान अपना-अपना अनुमान बताते थे।

सिटी मैजिस्ट्रेट के आते ही मुकदमा पेश हो गया। नवाब साहब के वकील शेख अब्दुल समद ने नवाब साहब की ओर से एक तहरीरी बयान पेश कर दिया। बयान में लिखा था, "मुझे शक है कि मेरी लड़की की यह आज़ादाना दरख्वास्त नहीं है। उस पर किसी ने नाजायज़ दबाव डालकर उससे दरख्वास्त लिखवाई है। वह उस शादी से, जो मैंने उसके लिए तजवीज़ की है, परसों तक राज़ी थी। कल से वह घर में नहीं है। मेरी गुज़ारिश यह है कि जब तक लड़की कोर्ट में हाज़िर होकर अपना बयान न दे और उस पर जिरह न कर ली जाय, तब तक यह 'इंजकशन' जारी न किया जाय।"

मैजिस्ट्रेट ने बयान पढ़ा और पढ़कर कहा, "लड़की का हाज़िर न हो सकना 'इंजकशन' जारी किए जाने के खिलाफ नहीं जाता, बल्कि यह तो बिलकुल ज़रूरी हो जाता है कि 'इंजकशन' फौरन जारी कर दिया जाय, ताकि जब तक लड़की कोर्ट में हाज़िर होकर अपनी मंज़ूरी ज़ाहिर न करे, कोई भी उससे शादी न कर सके।"

मैजिस्ट्रेट ने इतना कहकर नवाब साहब के वकील से पूछा, "क्या आपको इसमें कोई एतराज़ है?"

"हाँ, हुज़ूर, भारी एतराज़ है। पहले तो यह बताना मुश्किल है कि जिसने कल दरख्वास्त दी थी, वह सलीमा ही थी। उसकी शिनाख्त और उस पर जिरह होनी चाहिए। दूसरे, नवाब साहब लड़की के वालिद होने से उसके जायज़ सरपरस्त हैं। उनको लड़की की शादी में सबसे ज़्यादा दखल होना चाहिए।"

"खुद लड़की से भी ज़्यादा?" मैजिस्ट्रेट ने मुस्कराते हुए पूछा।

इस पर सब हँसने लगे।

अब सलीमा के वकील ने बताया, "हुज़ूर, जो लड़की कल कोर्ट में हाज़िर थी, वह सलीमा ही थी, इसकी तसदीक तो नवाब साहब पर जिरह करने से हो जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी दरख्वास्त है कि नवाब साहब के बयान पर जिरह करने की इजाज़त दी जाय।"

मैजिस्ट्रेट ने नवाब साहब पर जिरह करने की इजाज़त दे दी। नवाब साहब अब 'डौक' में खड़े हो गए।

"आपकी कोई लड़की है?"

"जी।"

"नाम क्या है?"

"सलीमा।"

"क्या उमर है?"

"बीस साल के करीब।"

"मैडिकल कॉलेज में दाखिल करते वक्त क्या उमर लिखाई थी?"

"अठारह साल।"

"कितने साल से वहाँ दाखिल है?"

"दो साल से।"

"कद कितना होगा?"

"कह नहीं सकता।"

"क्या वह मोटे भारी जिस्म की है?"

"नहीं। पतला छिटका जिस्म है।"

"रंग काला है?"

"नहीं, गोरा है।"

"नाक चपटी है?"

"नहीं।"

इतने में विनोद हाथ में एक लिफाफा लिए कोर्टरूम में आया। वह लिफाफा उसने वकील के हाथ में दे दिया और खुद वहाँ से चला गया। लिफाफे में कॉलेज के एक ग्रुप की फोटो थी। वकील ने यह तस्वीर मैजिस्ट्रेट के सामने कर सलीमा की तस्वीर पर उँगली रखकर कहा, "हुज़ूर, यह लड़की कल यहाँ हाज़िर थी।"

मैजिस्ट्रेट ने पहचान लिया। अब नवाब साहब से पूछा, "क्यों, साहब, यह तस्वीर आपकी लड़की की है?"

नवाब साहब इनकार न कर सके।

वकील ने पूछा, "आप उसकी शादी करना चाहते हैं?"

"हाँ।"

"कहाँ?"

"औरंगाबाद के सर मुहम्मद असलम के० सी० आई० ई० के साहबज़ादे इफ्तिखार अहमद के साथ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपने लड़के को देखा है?"

"हाँ।"

"सलीमा ने भी देखा होगा?"

"हाँ, देखा है।"

"एक महीने से ऊपर हुआ है कि आपकी लड़की की शादी होने वाली थी?"

नवाब साहब घबरा गए और चुप हो गए।

इस पर वकील ने एक निमन्त्रण-पत्र, जो सलीमा की शादी का था और जिसमें लिखा था कि नवाबज़ादे इफ्तिखार अहमद से उनकी अज़ीज़ा सलीमा की शादी होनी करार पाई है, निकालकर नवाब साहब को दिखाते हुए पूछा, "यह आपकी लड़की की शादी का कार्ड है?"

नवाब साहब के माथे से पसीने की बूंदें टपकने लगी थीं। उन्होंने सिर हिलाकर स्वीकार किया।

"हाँ, तो फिर शादी हो नहीं सकी?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"मैं नहीं बता सकता।"

"देखिए, नवाब साहब, मैं आपको कुछ याद दिला दूं तो आपको जवाब देने में सहूलियत हो जायगी। अगर मैं यह कहूँ कि लड़की इस शादी से घबराकर दिल्ली भाग गई थी, तो क्या मैं ठीक नहीं कह रहा?"

"नहीं।"

"आप दूसरे दिन ही दिल्ली गए थे या नहीं?"

"हाँ, गया था।"

"वहाँ आपने थाने में रिपोर्ट लिखाई थी कि विनोदकुमार आपकी लड़की को भगा लाया है?"

नवाब साहब अब इस बात का भी प्रमाण उपस्थित किए जाने का शक कर रहे थे। इस कारण बोले, "लिखाई थी, मगर वह रिपोर्ट गलती में लिखाई गई थी।"

"तो आपका मतलब यह है कि लड़की भाग नहीं गई थी। वह लखनऊ में ही थी और आपने बगैर वजह के शादी बन्द कर दी और झूठमूठ दिल्ली में ढूंढ़ने चले गए और गलती से थाने में रिपोर्ट लिखा दी थी।"

"नहीं, लड़की स्टूडेंट्स फैडरेशन के जलसे पर गई थी। मैंने समझा, भाग गई है।"

"ठीक शादी के दिन बजाय घर रहने के लड़की ने दिल्ली में फैडरेशन के जलसे में जाना ज्यादा ज़रूरी समझा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो वही बता सकती है।"

"वह तो कोर्ट में बता गई है। आप बताएँ कि आपको लड़की के दिल्ली जाने की वजह से शादी मुल्तवी करनी पड़ी थी ?"

"हाँ।"

वकील ने जिरह बन्द कर दी और लड़की की दरख्वास्त की मंजूरी पर ज़ोर देते हुए कहा, "लड़की किसने गायब की है, मैं नहीं जानता। वह आज सुबह अदालत में हाज़िर होने को कह गई थी। वह नहीं आई। उसके गुम हो जाने का एक ही सबब हो सकता है और वह यह कि नवाब साहब को कल अदालत से नोटिस मिला था। नवाब साहब उसकी शादी ज़बरदस्ती कर देना चाहते हैं और उन्होंने उसे कहीं रोक रखा है। और क्या जाने कि इस वक्त जब यहाँ अदालत से 'इंजकशन' न जारी करने के लिए कोशिश हो रही है, दूसरी तरफ ज़बरदस्ती लड़की का निकाह पढ़ाया जा रहा हो। मैं यह इल्ज़ाम नहीं लगा रहा, मगर अपना डर बता रहा हूँ कि ऐसा हो सकता है। यह डर बिला वजह नहीं है। नवाब साहब के बयान से यह ज़ाहिर होता है। वह यह बात छिपाना चाहते थे कि एक बार पहले भी वह लड़की की ज़बरदस्ती शादी कर देना चाहते थे, मगर लड़की को मौका मिल गया और वह दिल्ली भाग गई थी। यह बात उन्होंने अब जिरह में मान ली है। क्या जो बात वह पहले नहीं कर सके, अब ज़्यादा इन्तज़ाम कर पूरा न कर रहे होंगे? मेरी अर्ज़ यह है कि 'इंजकशन' फौरन जारी कर दिया जाय और नवाब साहब से काफी बड़ी ज़मानत ले ली जाय कि वह अदालत के हुक्म के खिलाफ शादी न कर सकें।"

सिटी मैजिस्ट्रेट ने 'इंजकशन' जारी कर दिया और नवाब साहब से पचास-पचास हज़ार की दो ज़मानतें माँग लीं।

: ८ :

मुकदमे से दो दिन बाद की बात है। पथिक और मोहन रासबिहारी एविन्यू वाले मकान में अपनी रोज़ाना की डाक का जवाब देकर हटे ही थे कि सलीमा वहाँ पहुँच गई।

मोहन डाक में छोड़ने वाली चिट्ठियों को एकत्रित कर रहा था कि मकान के नीचे एक टैक्सी आकर ठहरने का शब्द हुआ। मोहन ने झाँककर देखा तो सलीमा टैक्सी वाले को भाड़ा दे रही थी। उसने घूमकर कहा, "गुरुदेव, सलीमा है।"

"आ गई, पगली-सी।" मानो वह उसकी प्रतीक्षा में ही था।

सलीमा ने भीतर आते ही प्रणाम किया। पथिक ने प्रणाम का उत्तर दे उसे बैठने को कहा और पूछा, "कब आई हैं यहाँ आप ?"

"अभी-अभी। सीधी स्टेशन से आ रही हूँ।"

"साथ नवाब साहब भी आए हैं क्या ?"

सलीमा हँस पड़ी। परन्तु इस समय हँसी में कुछ रस नहीं था। हँसी रूखी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक ने उसके मुख को अचम्भे से देखते हुए पूछा, "क्या बात है, सलीमा?"

"बात यह है कि मैं फिर घर से भाग आई हूँ।"

"ओह!"

"परन्तु अब वापस नहीं जाऊँगी।"

"आखिर हुआ क्या है?"

सलीमा ने पथिक की दूसरी चिट्ठी पहुँचने से लेकर सब बातें बता दीं। उसने कहा, "मैजिस्ट्रेट के सम्मुख बयान देने के पश्चात् मैं कॉलेज चली गई। वहाँ से मैं विनोद के साथ वकील साहब के घर पहुँची। उनसे यह तय करके कि अगले दिन मैं कचहरी में हाज़िर होऊँगी, मैं अपने घर चली गई। मैं यह आशा लगाए हुए थी कि घर में भारी झगड़ा होगा। मैं झगड़े में अपना पक्ष पेश करने के लिए तैयार थी और अब घर से तब तक निकलना नहीं चाहती थी जब तक वालिद साहब घर से निकाल ही न दें।

"मैं अभी कोठी के फाटक पर ही पहुँची थी कि नसीर चौकीदार एक कागज़ हाथ में लिए कोठी से निकला। यह वही चौकीदार था जिसको मैंने पहली मर्तबा भागते वक्त पाँच रुपये का नोट दिया था। मैंने पूछा, 'कहाँ जा रहे हो?'

"उसने सलाम कर जवाब दिया, 'हुज़ूर, तार-घर।'

"मैंने बिना विचार किए तार लेकर पढ़ लिया। तार औरंगाबाद के लिए था। लिखा था, 'फौरन बाराबंकी नवाबगंज शादी के लिए तैयार पहुँचो।'

"मैं इस तार को पढ़कर सन्न रह गई। मैंने तार का फार्म वापस चौकीदार को दे दिया। उस समय मेरा हाथ काँप रहा था। चौकीदार हैरानी से मेरा मुख देखने लगा। मेरी आँखों में आँसू भर रहे थे। मैं मुँह मोड़कर चल पड़ी। चौकीदार ने धीरे से कहा, 'हुज़ूर!'

"मैंने घूमकर देखा तो उसने आँखें नीची किए हुए कहा, 'हुज़ूर ने एक बार हमारे बच्चे पर तरस खाकर हमारी मदद की थी। अब मेरे लायक कोई सेवा हो तो हुक्म करें।'

"उस समय मेरा सिर चक्कर खा रहा था और मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था। मैंने बिना सोचे कह दिया, 'जमाल की माँ को मेरे पास भेजना।'

"मैंने सोचा कि शायद अब्बाजान को अदालत का नोटिस नहीं मिला और अभी तक उनके दिमाग में शादी कर देने का भूत सवार है। मेरा विचार था कि एक बार इंजकशन जारी हो गया तो मैं मुक्त हो जाऊँगी। इन्हीं विचारों में लीन मैं अपने कमरे में चली गई।

"मेरे कमरे में दाखिल होते ही किसी ने दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया। पीछे बाहर ताला लगाने की आवाज़ भी आई। इस बार मैंने देखा कि मेरे सोने के कमरे की खिड़की और दूसरी खिड़की भी ताले लगाकर पहले ही बन्द कर दी गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। मैं समझ गई कि मुझे कैद कर दिया गया है और औरंगाबाद वालों के आते ही ज़बरदस्ती मेरी शादी कर दी जायगी। मैं अपने माँ-बाप से इतनी ज़बरदस्ती की उम्मीद नहीं करती थी। अब जब मैं अपने विषय में सोचती थी तो अपना भविष्य काला देखती थी। रातभर मुझे नींद नहीं आई। मैं सोच रही थी कि दिन होने पर शायद कुछ हो।

"रात में बारह बजे मेरे कमरे का दरवाज़ा खुला। मैंने कपड़े उतारे नहीं थे। वही कॉलेज जाने के कपड़े पहन रखे थे। दरवाज़ा खुलते ही मैं झपटकर भागने ही वाली थी कि नवाब साहब और दो और आदमियों ने मुझे पकड़ लिया। मेरे मुख पर पट्टी बाँध दी गई और मुझे उठाकर कोठी के बाहर ले जाकर मोटर में बैठा दिया गया। मैं बहुत परेशान थी। उस समय विवश मैं किसी मददगार की तलाश में थी। कोठी की ड्योढ़ी में वही चौकीदार, जिसे मैंने तार ले जाते देखा था, हाथ में जलती हरीकेन लालटेन लिए खड़ा था। मैंने उसका ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए अपना एक हाथ मोटर से बाहर निकाला। उसने लालटेन को तीन मर्तबा हिलाया। मैं इसका मतलब उस वक्त नहीं समझी। अब मैं जानती हूँ कि उसने मुझे हौसला देने के लिए ऐसा किया था।

"मुझे इसी हालत में अपनी ज़मींदारी पर अपने महल में ले जाया गया। यह महल नवाबगंज स्टेशन से तीन मील के फासले पर है और आजकल सूना पड़ा है। जब से अकरम भैया विलायत गए हैं, हम लोग लखनऊ में रहते हैं। इसका ज़नानखाना तो पूरा एक कैदखाना है। ज़नानखाना ऊपर की मंज़िल पर है। किसी कमरे के बाहर को खिड़की नहीं। ऊँची-ऊँची दीवारें और मोटे-मोटे मज़बूत दरवाज़े। बाहर और नीचे आने को सिर्फ एक ही दरवाज़ा है और उस पर आधे दर्जन चौकीदार हर वक्त हाज़िर रहते हैं। आम हालत में भी अगर कोई औरत इसमें चली जाती तो बाहर की दुनिया से ऐसे छिप जाती जैसे कब्र में पड़ी हो।

"मुझे ज़नानखाने में एक कमरे में रखा गया। बाकी सब कमरे बाहर से बन्द थे। कमरे के बाहर खुली जगह थी जिसके चारों ओर कमरे बने हुए थे। वहाँ पर जाना तो आसान था, मगर शोर-गुल कर बाहर किसी को खबर करना नामुमकिन था।

"सुबह मेरे खाने के लिए दारोगा की औरत पका हुआ खाना लाई। मैंने कुछ खा लिया और वह बर्तन लेकर चली गई। इसके बाद दिनभर मैं अपने विचारों में भटकती रही।

"शाम हो गई। दीये जलने का वक्त हो गया था। दारोगा की औरत लैम्प जलाकर चली गई। मालूम होता था कि उसको मुझसे बोलने की मनाही कर दी गई थी।

"इस वक्त एक औरत बुर्के से ढकी हुई एक टोकरी में फल लेकर आ पहुँची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह मैंने बहुत थोड़ा खाया था। अब दीया जलाते वक्त फल आते देख मुझे गुस्सा आ गया। मैंने कहा, 'बेवकूफ, यह फल लाने का वक्त है ?'

"इस पर औरत ने बुर्का उठा अपना मुख दिखाया और साथ ही होंठों पर उँगली रख चुप रहने को कह दिया। यह नसीर चौकीदार की बीवी थी। अब वह नज़दीक आकर बोली, 'आपने जमाल के बाप के हाथ मुझे बुलवाया था। कल रात को बहुत कोशिश की थी, मगर मौका नहीं मिला। यहाँ इन फलों का बहाना बनाकर आने की कोशिश की। यहाँ तक तो कामयाब हो गई हूँ।'

"उसे वहाँ देख मेरे मन में एक तरकीब सूझी। मैंने उससे पूछा, 'तुम मेरे लिए क्या कुछ कर सकती हो ?'

'हुज़ूर, जान तक हाज़िर है।'

'नहीं, जान देने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। थोड़ी तकलीफ होगी। तुम मुझे अपने कपड़े दे दो। मैं पहनकर भाग जाना चाहती हूँ। तुम्हें हाथ-पाँव बाँधकर छोड़ जाऊँगी। पकड़े जाने पर कह देना कि मैंने तुमको धक्का देकर बेहोश कर दिया था। पीछे तुम्हें बाँधकर यहाँ से चली गई थी। फलों के लिए कह देना कि मैंने दो दिन हुए फल लाने को पाँच रुपये दिए थे। वही लेकर तुम यहाँ आई थीं।

'देखो घबराना नहीं। तुम्हें जान से नहीं मारेंगे। हाँ, तुम्हारे घर वाले की नौकरी छूट जायगी। और तुम हिवैट रोड के बाबू अवधबिहारी माथुर वकील के पास चली जाना। मेरा नाम और हाल बताना। वह तुम्हारी नौकरी का बन्दोबस्त कर देंगे। बताओ, है मंज़ूर ?'

"उस बहादुर औरत ने कहा, 'हम तो हुज़ूर के नौकर हैं। जान तक देने को तैयार हैं। मगर आप पकड़ी गईं तो भारी गड़बड़ होगी।'

'मेरी चिन्ता न करो। लाओ, अब बुर्का उतार दो।'

"उसने बिना और कुछ सोचे बुर्का उतार मेरे हवाले कर दिया। मैंने बिस्तर की चादर से उसके हाथ-पाँव बाँध दिए और उसे फर्श पर लिटा दिया। बटुआ मेरे पास था जिसमें सौ रुपये थे। उसमें से दस रुपये निकाल मैंने उसे दे दिए। अब मैंने बुर्का पहनकर फलों की टोकरी उठा ली। कुछ फल तो वहीं मेज़ पर रख दिए और शेष टोकरी में ही रहने दिए। बुर्के को अपने चारों ओर भली-भाँति लपेटकर, एक हाथ में टोकरी लटकाए और दूसरे हाथ में, जो बुर्के के भीतर था, अपना बैग लटकाए, मैं बाहर निकल आई। चौकीदारों के पास आकर खड़ी हो गई। टोकरी उनके पास रखकर बोली, 'शाहज़ादी साहिबा ने आप लोगों को खाने को दिए हैं।' इतना कह बिना घबराहट ज़ाहिर किए मैं वहाँ से बाहर निकल आई। मेरा कैमोइस लैदर का जूता बुर्के के नीचे से बाहर दिखाई देता था, मगर अन्धेरे में और फलों के देखने के लोभ में किसी की निगाह उधर नहीं गई। वहाँ से स्टेशन तक पैदल चली आई और स्टेशन से फैज़ाबाद और फैज़ाबाद से कलकत्ते पहुँचने में दो दिन लग गए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक यह सब सुन गम्भीर विचार में पड़ गया। एक ओर तो वह सोचता था कि यह लड़की बहुत ही बहादुर है। दूसरी ओर वह सोचता था कि जिस प्रश्न को वह टालता आ रहा था, उसे अब शीघ्र ही सुलझाना पड़ेगा।

सलीमा पथिक को चुपचाप सोचते देख मन में डर गई। वह सोचती थी कि पथिक पर विश्वास क्या निराधार सिद्ध होगा ? जब पथिक कुछ देर नहीं बोला तो उसने कहा, "तो क्या अब मैं यहाँ से चली जाऊँ ?"

पथिक का विचार भंग हुआ। उसने कहा, "चली जाओ ! कहाँ ?"

"जहाँ सींग समाएँ।"

इतना कहते-कहते सलीमा रोनी-सी हो गई। पथिक ने कहा, "विनोद की बहिन हो न तुम। क्या तुम्हारे लिए उचित प्रबन्ध नहीं कर सकूँगा मैं ?"

सलीमा ने रोनी आवाज़ में पूछा, "विनोद की बहिन और बस ! मैं तो कुछ और आशा लेकर यहाँ आई थी। अच्छी बात, मैं जाती हूँ।"

इतना कह वह उठकर नीचे उतरने को ज़ीने की तरफ चल दी। कुछ देर पथिक निस्तब्ध बैठा रहा। एकाएक वह उठा और भागकर सलीमा के मार्ग में जाकर खड़ा हो गया। वह बोला, "देखो, सलीमा, तुम यहाँ से ऐसे नहीं जा सकतीं। जो तुमने कहा है, क्या वह मैं समझता नहीं हूँ ? मगर क्या तुम उसका उत्तर पाए बिना चली जाओगी ?"

सलीमा की आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे थे। उसने पथिक के मुख की तरफ देखा। देखते ही वह सहम गई। उसे कुछ बहुत ही अजीब हालत दिखाई दी। पथिक का रोब इतना था कि वह अपने को उसके असर में दबी जाती महसूस करने लगी थी। उसने कुछ देर सोचकर कहा, "इसके मैं क्या मायने समझूँ ?"

"मैं जो कहता हूँ सो करो। क्या तुम्हें मेरा कहना नहीं मानना चाहिए ?"

उसे ऐसा अनुभव हुआ कि पथिक मुस्करा रहा है। वह अपनी भूल जान गई। उसने अपना कर्त्तव्य समझकर कहा, "हाँ, मानना चाहिए।"

"तो चलो ऊपर।"

वह आधी सीढ़ियाँ उतर चुकी थी। वापस ऊपर चढ़ आई। मोहन कमरे में खड़ा यह नाटक देख रहा था। सलीमा को भीगी बिल्ली की भाँति आँखें पोंछते हुए ऊपर आते देख चकित रह गया। कमरे में पहुँच पथिक ने मोहन से कहा, "मोहन, इन्हें तुम डॉक्टर घोष के यहाँ ले जाओ। माँजी से कहना कि यह हमारी मेहमान हैं। कुछ दिन आपके यहाँ रहेंगी।" अब सलीमा को सम्बोधन कर कहा, "सलीमा, मैं आज सायंकाल तुमसे मिलूँगा। तब तक तुम स्नान कर, खाना खा आराम कर लेना।"

: ६ :

उस दिन जब सलीमा का वकील कचहरी जाने के लिए सलीमा की प्रतीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहा था और वह नहीं आई तो वह बहुत घबराया। उसने मिस्टर माथुर को टेलीफोन पर बताया कि सलीमा हाज़िर नहीं हुई। मिस्टर माथुर बहुत घबराये। उन्हें सन्देह हो गया कि नवाब साहब ने उसे कैद कर रखा है। अब वह सोचने लगे कि इसका मुकदमे पर क्या असर होगा। एकाएक मिस्टर माथुर को सूझा कि नवाब साहब यह कह सकते हैं कि उनकी लड़की की वह दरख्वास्त ही नहीं। न जाने वह कौन लड़की थी और जब तक लड़की मिल न जाये, मुकदमे की कार्यवाही रोक दी जाये। ऐसी अवस्था में यह साबित करना सलीमा के वकील का काम होगा। इतना विचार कर मिस्टर माथुर ने विनोद से पूछा, "क्या उसका कोई फोटो तुम्हारे पास है ?"

उसने कहा, "मेरे पास तो नहीं है। मगर एक ग्रुप फोटो में सलीमा की तस्वीर है।"

"तो उसे जल्दी ही कहीं से लाकर वकील के पास पहुँचा दो। नहीं तो मुकदमा बिगड़ जायेगा।"

विनोद सलीमा के ग्रुप के एक लड़के के घर चला गया। वहाँ से फोटो लेकर कचहरी में पहुँचा आया।

सायंकाल तक विनोद और मिस्टर माथुर बहुत हैरान थे कि सलीमा का क्या हुआ। सायंकाल विनोद नवाब साहब की कोठी के बाहर चक्कर काटने लगा। वह किसी नौकर से मिलकर जानना चाहता था कि सलीमा के मुकदमे का क्या हुआ। अन्धेरा बहुत हो चुका था। इस समय एक नौकर कोठी से बाहर निकला। उसकी गोद में एक बच्चा था। नौकर बाज़ार की तरफ जा रहा था। विनोद उसके पीछे-पीछे हो लिया। कुछ दूर चलने के बाद विनोद ने कदम बढ़ाकर उसके साथ-साथ चलते हुए पूछा, "क्या तुम नवाब साहब के नौकर हो ?"

"हाँ, साहब।"

"क्या काम करते हो ?"

"चौकीदारी करता हूँ। क्यों ?"

"भाई, एक बात पूछनी है। अगर बता दो तो खुश कर दूंगा।"

"हाँ, साहब, पूछो। बताने वाली होगी तो बता दूंगा। इनाम की मुझे ज़रूरत नहीं।"

"नवाब साहब की लड़की सलीमा है न···?"

"जी।"

"उसे एक चिट्ठी भेजनी है। पहुँचा दोगे ?"

चौकीदार हँस पड़ा। विनोद ने उसका मुख देखते हुए पूछा, "क्यों, क्या बात है ?"

चौकीदार खड़ा हो गया और विनोद का मुख देखकर पूछने लगा, "आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या काम है सलीमा से ?"

"मैं उसका दोस्त हूँ। आज उसको मुझसे मिलने आना था। वह नहीं आई। इसलिए चिट्ठी पहुँचाना चाहता हूँ।"

"तो चिट्ठी लेकर सीधे भीतर क्यों नहीं चले जाते ? पहले तो आप कोठी में आया करते थे।"

विनोद पहचाने जाने पर झेंप गया। आँखें नीची किए हुए बोला, "नवाब साहब मुझसे नाराज़ हैं। अगर मेरी चिट्ठी का जवाब ला दो तो पाँच रुपये इनाम दूंगा।"

चौकीदार ने कहा, "हुज़ूर, रुपये मैं कमा नहीं सकता। सलीमा बीबी यहाँ नहीं हैं। वह नवाबगंज ले जायी गयी हैं। वहाँ ख्याल है, कैद हैं।"

विनोद यह सुनकर खड़ा हो गया और जेब से पाँच रुपये का नोट निकालकर चौकीदार को देते हुए बोला, "यह पाँच रुपये तुम ले लो। तुमने मेरी कुछ तो मदद की है।"

चौकीदार ने रुपये हाथ में पकड़ते हुए कहा, "पाँच तब मिले थे और पाँच अब। शुक्रिया।"

"कब मिले थे ?"

"जब वह घर से पहले भागी थीं।"

विनोद को किस्सा याद आ गया। वे दोनों हलवाई की दुकान पर पहुँच गये थे। चौकीदार बच्चे को दूध पिलाने लाया था। वह वहाँ खड़ा हो गया। विनोद ने भी खड़े होकर कहा; "मैं कल इसी वक्त यहाँ मिलूंगा। अगर और खबर लाओगे तो पाँच रुपये और दूंगा।"

मगर विनोद को इतनी देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। दूसरे दिन विनोद जब कॉलेज जाने के लिए अपनी कोठी से बाहर निकला तो चौकीदार, वही बच्चा गोदी में लिए, एक डोली के साथ-साथ आता दिखाई दिया। विनोद ने देखा कि वे कोठी में आ रहे हैं। विनोद हैरानी से चौकीदार के पास जाकर पूछने लगा, "क्या है ? यह कौन है ?"

"यह मेरी बीवी है। आप ज़रा एक तरफ चले चलें तो यह आपको सलीमा की खबर देगी।"

"सलीमा की ?"

"हाँ, साहब, बेचारी बहुत पीटी गई है और हमको अस्पताल भी जाना है।"

डोली के बीच में से आवाज़ आई, "बाबू अवधबिहारी को बताऊँगी।"

विनोद डोली वाले को बैठकखाने में ले जाने के लिए कह पिताजी को बुलाने चला गया।

बाप-बेटा दोनों आये तो नसीर ने डोली का परदा उठा अपनी औरत की ज़ख्मी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालत दिखाई। फिर कहने लगा, "सलीमा बीबी ने परसों शाम को मुझे कहा था कि मैं जमाल की माँ को उनके पास भेजूं। मगर ज्योंही सलीमा बीबी घर पहुँचीं, उनके कमरे में बाहर से ताला लगा दिया गया। यह उनसे मिल नहीं सकी। रात को सलीमा बीबी को नवाबगंज ले गये। मैंने सोचा, इसे वहाँ भेज दूं। मैंने कुछ फल देकर इसे वहाँ भेजा। वहाँ से सलीमा बीबी इसके हाथ-पाँव बाँध और इसका बुर्का पहन, चौकीदारों को धोखा दे, भाग गयीं। जब रात को दारोगा की औरत खाना लेकर आई तो इसके हाथ-पाँव बँधे देखकर इससे पूछने लगी कि सलीमा बीबी कहाँ गयी है। यह बेचारी क्या बता सकती थी। एक चौकीदार आज सुबह इसके हाथ-पाँव बाँध लखनऊ नवाब साहब के पास ले आया। नवाब साहब को चौकीदार ने झूठ बताया कि इसने भगा दिया है। नवाब साहब ने गुस्से में हण्टर से और पाँव की ठोकरों से इसे बुरी तरह पीटा। मुझे नौकरी से निकाल दिया है। सलमा बीबी ने जाते वक्त इसे बताया था कि आपसे मिलेंगे तो आप मदद करेंगे।"

मिस्टर माथुर ने नसीर की बीवी को अस्पताल भिजवा दिया और नसीर को नौकरी लगवाने की उम्मीद दिलवाई।

समस्या और भी विकट हो गयी थी। सलीमा किधर गयी होगी। विनोद को आशंका हो गयी थी कि वह कलकत्ते पथिक के पास गयी होगी। मिस्टर माथुर का भी यही विचार था। विनोद ने पथिक को चिट्ठी लिखी, जिसमें लिखा कि सलीमा के हक में 'इंजकशन' जारी हो गया है। यदि वह कलकत्ते हो तो उसे बता दिया जाए।

कलकत्ते से जवाब आया कि वह वहाँ है और अब अपने बाप के घर नहीं आना चाहती। उसे मैडिकल कॉलेज छोड़ने का भारी दुःख है, परन्तु विवश है। लखनऊ में वह शान्ति से नहीं रह सकेगी। साथ ही पथिक ने यह लिखा कि वह चाहती है कि उसके घर वालों को उसका पता न बताया जाये।

: १० :

अकरम गया तो था ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में इतिहास पढ़ने, मगर पढ़ाई के साथ वह सीख आया यूरोप की कौमों से नफरत करना। ऑक्सफोर्ड में बहुत-से हिन्दुस्तानी विद्यार्थी थे और यूरोप के दूसरे देशों के लोग भी थे। उसे यह देखकर बहुत अचम्भा हुआ कि अंग्रेज, फ्रांसीसी और जर्मन लड़कों से, हिन्दुस्तानी लड़कों की अपेक्षा, अच्छा व्यवहार करते हैं। एक मित्र के घर दावत पर यह फर्क उसे स्पष्ट प्रतीत हुआ। दस-बारह मेहमानों में दो हिन्दुस्तानी थे, और ये दोनों-के-दोनों, जैसे अछूत होते हैं, सबसे पृथक् बैठाये गये। एक लड़की भी आमन्त्रित थी। अकरम ने कई बार उसे बातों में लाने का यत्न किया, मगर जब भी अकरम कुछ बात करता था, तो वह सुनकर बिना जवाब दिये किसी और से बातें करने लगती थी। जब दो-तीन बार ऐसा हुआ तो अकरम समझ गया कि उससे भेद-भाव का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार किया जा रहा है। भिन्न-भिन्न यूरोपियन जातियों के कारनामों पर बातचीत हो रही थी। एक फ्रांसीसी नेपोलियन की कुछ बातें बता रहा था कि वही अंग्रेज़ लड़की कहने लगी, "हमारी कौम व्यक्तियों के कारनामों को नहीं गिना करती, अगरचे कहने योग्य व्यक्ति हमारे यहाँ कम नहीं हुए, परन्तु हमारी कौम सार्वजनिक रूप से कौमी कारनामों पर मान करती है। हमारी कौम का सबसे बड़ा कारनामा, जो आज तक किसी कौम ने नहीं किया, वह बत्तीस करोड़ की आबादी वाले मुल्क को डेढ़ सौ वर्षों से अपने मातहत रखना है। यह एक आदमी का काम नहीं। सारी-की-सारी कौम का यह चमत्कारक काम है।"

यह सुन सब उपस्थित लोग अकरम और उसके हिन्दुस्तानी साथी की ओर दया के भाव से देखने लगे। अकरम यह सहन नहीं कर सका और तुरन्त ही घर-वालों से छुट्टी पाकर अपने कॉलेज-होस्टल में चला आया।

एक बार एक प्रोफेसर से अकरम ने पूछा, "आपका बनिस्बत हिन्दुस्तानियों के जर्मनों से व्यवहार क्यों ज़्यादा अच्छा है?"

प्रोफेसर का जवाब था, "यह स्वाभाविक है। हिन्दुस्तानी एक गुलाम जाति जो है।"

अकरम ने कहा, "मगर जर्मनी की आपसे दुश्मनी रही है और शायद अब भी एक-दो साल में फिर जंग छिड़ जाए।"

"युद्ध के समय हम लड़ेंगे, मगर बहादुर, आत्माभिमान रखने वाली जाति का हम मान किये बिना नहीं रह सकते।"

लंडन में तो कई बार उसको होटलों से सिर्फ इसलिए निकाल दिया गया था कि वह हिन्दुस्तानी है।

ऑक्सफोर्ड से एम० ए० करने के बाद वह यूरोप के दूसरे मुल्कों में घूमता रहा। वह अमेरिका भी गया और दक्षिणी अफ्रीका के बड़े-बड़े नगरों में भी घूमा। हिन्दुस्तानियों से घृणा का व्यवहार दक्षिणी अफ्रीका में सबसे ज़्यादा था। एक घटना तो ऐसी हुई कि उसे याद कर उसका खून उबल पड़ता था।

प्रिटोरिया में वह घूम रहा था। एक अंग्रेज़ लड़की ने, जो अपना रास्ता भूल गई थी, बहुत मिन्नत के साथ अकरम से रास्ता पूछा। अकरम ने रास्ता समझाया। वह अपना मार्ग छोड़कर उसे रास्ता दिखाने के लिए आधा घण्टा व्यय कर जब उससे विदा होने लगा तो लड़की ने धन्यवाद किया और हाथ मिलाते समय उससे कहा, "क्या मैं जान सकती हूँ कि आप किस मुल्क के रहने वाले हैं? आपका अंग्रेज़ी बोलने का ढंग विदेशी प्रतीत होता है।"

अकरम ने जवाब में कहा, "मैं हिन्दुस्तानी हूँ। यहाँ सैर के लिए आया हूं।"

इतना सुनते ही उस लड़की का रंग तांबे की तरह लाल हो गया। उसके होंठ कांपने लगे। उसने वह हाथ, जो अकरम से मिला रखा था, झटके से छुड़ाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकरम के मुख पर चाँटा लगा दिया और क्रोध में बोली, "यू रास्कल ब्लडी इण्डियन, तुमने मुझको पहले क्यों नहीं बताया? भाग जाओ, वरना पुलिस के हवाले कर दूंगी।"

अकरम के मन में आया कि इसको खूब पीटे, परन्तु उसे स्मरण हो आया कि वह दक्षिण अफ्रीका में है। वहाँ पर तो उसकी वायसराय-हिन्द भी रक्षा नहीं कर सकता। वह चुपचाप अपना क्रोध मन-ही-मन पी गया।

बर्लिन में उसे एक बंगाली नौजवान से मिलने का मौका मिला। वह नौजवान किसी ज़माने में हिन्दुस्तान में एक क्रान्तिकारी दल का संचालन कर चुका था। नाम था धीरेन्द्र। अकरम ने जब यूरोप के भिन्न-भिन्न देशों में अपने अपमान की कहानी सुनाई तो धीरेन्द्र हँस पड़ा और कहने लगा, "तो आप यूरोप में बराबरी के व्यवहार की आशा लेकर आये हैं! भला, क्यों? आप इन कौमों के बराबर हैं भी तो नहीं।"

अकरम ने कुछ अभिमान से कहा, "हम किस बात में इनसे कम हैं?"

धीरेन्द्र का उत्तर था, "मनुष्य के अन्दर जितनी अच्छी बातें होनी चाहियें, उन सबमें कम हैं और इसका प्रमाण है हमारा मुट्ठी-भर अंग्रेज़ों की अधीनता में मज़े से रहना। हम डरपोक, कामचोर, मज़हबी दीवाने, परस्पर झगड़ने वाले और स्वार्थी हैं। देश, जाति और अन्य बातों की ओर, जिनमें हमारी दिलचस्पी होनी चाहिए, हम न तो ध्यान देते हैं और न ही हम जानते हैं कि इनके विषय में हमें क्या करना चाहिए।"

धीरेन्द्र ने अपना कहना जारी रखते हुए कहा, "डेढ़ सौ वर्ष से अंग्रेज़ हिन्दुस्तान में राज्य स्थापित किये हुए हैं। इतने लम्बे काल में हिन्दुस्तानियों ने कौन-सा यत्न किया है जिससे हिन्दुस्तान विदेशी शिकंजे से निकल सके। सन् १८५७ के विद्रोह की बात छोड़ दो। उस समय बहुत-सी बातें थीं, जिससे विद्रोह असफल होना ही चाहिये था। परन्तु उसके पीछे जो कुछ हुआ, वह एक काली कहानी है। सबसे पहली बात तो यह हुई कि सन् १८५८ से लेकर सन् १९०७ तक तो किसी ऐसे आदमी का नाम सुनाई नहीं पड़ता जो हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र करने की बात करता हो। अगर कोई ऐसी बात करता भी था तो उसे बेवकूफ समझा जाता था। उस समय की राजनैतिक संस्था हिन्दुस्तानियों के लिए ब्रिटिश राज्य के अधीन बड़ी-बड़ी नौकरियाँ पाने की कोशिश करती रही। स्वराज्य-प्राप्ति का प्रश्न तो किसी पढ़े-लिखे के मन में आता ही नहीं था। इस पर भी मज़ेदार बात यह थी कि मुसलमान अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग पका रहे थे। कांग्रेस जो कुछ माँगती थी, सर सैयद अहमद और उनके मित्रवर्ग उस माँग का विरोध करते थे। मसलन, कांग्रेस ने नमक-कर का विरोध किया तो सर सैयद अहमद ने कांग्रेस का विरोध किया, मानो नमक-कर के छूट जाने से मुसलमानों को हानि होने वाली थी। इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार जब एक्ज़ीक्यूटिव और जुडिशियल पदों को पृथक्-पृथक् करने की माँग की गई तो अलीगढ़ से इसका विरोध किया गया। जब यू० पी० में सर्व-साधारण की भाषा हिन्दी लिपि को कचहरी की लिपि बनाने के लिए कहा गया तो फारसी लिपि की हिमायत के लिए अलीगढ़ केन्द्र बन गया। फारसी लिपि का मुगलों से तो सम्बन्ध था क्योंकि वे ईरान के रहने वाले थे, मगर हिन्दुस्तान के मुसलमानों का कोई सम्बन्ध हो सकता है, समझ में नहीं आता। ये बेतुकी बातें मुसलमानों की राजनीति में अब तक चली आती हैं। अभी एक समाचार हिन्दुस्तान से आया है कि बम्बई की कांग्रेसी सरकार ने बम्बई में जायदाद पर टैक्स लगाया है। मुस्लिम-लीग इस टैक्स का विरोध कर रही है और बम्बई में बड़े-बड़े जलसे-जुलूस निकाल रही है। क्या बम्बई में सब जायदाद मुसलमानों की है या बम्बई में मुसलमानों की जायदाद हिन्दुओं की जायदाद से अधिक है? यह अयुक्तिसंगत विरोध ऐसे ढंग से हो रहा है। हिन्दू कोई भी बात करेंगे तो मुसलमान उस बात की अच्छाई-बुराई का विचार न कर अवश्य विरोध करेंगे। ऐसी अवस्था क्या शोचनीय नहीं है? कुछ अलीगढ़ कॉलिज के अंग्रेज़ प्रिंसिपल इतने चतुर निकले कि सर सैयद अहमद जैसे बुद्धिमान व्यक्ति को भी बरगला ले गये।"

अकरम ने कुछ चिढ़कर कहा, "क्या आपका यह मतलब है कि हिन्दुस्तान के गुलाम होने का सारा दोष मुसलमानों पर है?"

"नहीं, मैंने तो यह नहीं कहा। मैंने हिन्दुस्तान की राजनीति का एक ही अंग बताया है। हिन्दू लोग सबसे बड़े दोषी हैं। सन् १८५७ के विद्रोह के पश्चात् जब सरकार ने हिन्दुओं को नौकरियाँ देनी आरम्भ कीं तो ये लोग इन छोटी-मोटी रियायतों से इतने प्रसन्न हुए कि न केवल सरकार की राज्य स्थापित करने में सहायता करते रहे, प्रत्युत् सरकार के विरोधियों को कुचल डालने का भी यत्न करते रहे। यहाँ तक कि १९०७ तक इक्के-दुक्के स्वतन्त्रता के लिए आवाज़ उठाने वाले को वे उलटा नाम देकर दोषी साबित करते रहे। सबसे अधिक दोष वाली बात हिन्दू राजनीतिज्ञों ने विचारों की कीमत लगाने में की। वे यह समझते थे कि अंग्रेज़ी सरकार से माँगने पर अधिकार मिल जायेंगे। वे समझते थे कि एक हिन्दुस्तानी के डिप्टी कमिश्नर बन जाने से हिन्दुस्तान की माँगें पूरी हो जायेंगी। वे समझते थे कि नमक-कर मुआफ करा लेने से हिन्दुस्तान की आर्थिक दशा सुधर जायेगी। अधिक आवश्यक बातों की ओर उनका ध्यान ही नहीं गया। लॉर्ड कर्ज़न का यह कहना कि कांग्रेस बंगाली वकीलों की संस्था है, कुछ झूठ नहीं था। कांग्रेस वकीलों की भाँति वाद-विवाद करने और प्रस्ताव पास करने के अतिरिक्त कुछ नहीं करती थी। राज्य की शक्ति का स्रोत है फौज और पुलिस। इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया।

"अब भी हिन्दुस्तान में यही हो रहा है। कांग्रेस अब पहले से अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभावशाली संस्था बन गयी है। दो-तिहाई भारत में उसके मन्त्रिमण्डल प्रबन्ध करते हैं और उन्होंने इस समय के लिए भी कोई राजनैतिक प्रोग्राम नहीं बनाया। खद्दर-प्रचार, शराबबन्दी और किसानों के कर्जे मुआफ करना बहुत आवश्यक और ज़रूरी काम होते हुए भी राजनैतिक काम नहीं। राजनैतिक कार्यक्रम तो ऐसा होना चाहिये था कि जो कुछ मिला था उससे अधिक राजनैतिक शक्ति प्राप्त करने का यत्न किया जाता। हिन्दू वकील महात्माओं के प्रभाव में पड़कर राजनीति के अर्थ भूल गये हैं।

'हिन्दुओं और मुसलमानों की त्रुटियों को छोड़कर एक और दोष जो प्रायः सब हिन्दुस्तानियों में है, वह यह है कि हम व्यक्तिगत उन्नति को सामाजिक उन्नति से ऊँचा समझते हैं। ऐसा समझने में स्वार्थ बहुत भारी अंश में भाग लेता है। परन्तु बुरी बात यह है कि व्यक्तिगत लाभ को हम जातीय लाभ बताने में लज्जा अनुभव नहीं करते।"

अकरम के लिए ये सब सिद्धान्त नवीन थे। उसने इतिहास ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ा था। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर बहुत ईमानदार होने पर भी हिन्दुस्तान से सात हज़ार मील के अन्तर पर थे। उनके ज्ञान का आधार वे राजा-महाराजाओं की कथायें थीं जो लिपिबद्ध हो चुकी थीं। हिन्दुस्तान में जन-साधारण के आचार-व्यवहार में पतन क्या हुआ है और कैसे हुआ है, यह वे नहीं जान सकते थे। अब धीरेन्द्र से हिन्दुस्तानी राजनीति को उलटे मार्ग पर जा रही सुनकर वह प्रभावित तो हुआ, परन्तु उसे इन बातों पर विश्वास नहीं हुआ। दो बातें वह जान गया था। एक यह कि दुनिया-भर के लोग यह जानते हैं कि हिन्दुस्तान गुलाम देश है और इस पर एक छोटी-सी कौम अंग्रेज़ राज्य करती है। दूसरी बात वह यह समझा था कि हिन्दुस्तानी स्वयं ही अंग्रेज़ों की हुकूमत हिन्दुस्तान में स्थापित किये हुए हैं। एक चपरासी से लेकर बड़े-से-बड़े अफसर तक सिविल, पुलिस और फौज में सब हिन्दुस्तानी हैं। ये सब राज्य-कार्य को चलाते हैं, परन्तु नीति चलती है विलायत में बैठे सेक्रेटरी ऑफ स्टेट की, जो इंग्लिस्तान के महा-मन्त्री की आज्ञा से काम करता है। हिन्दुस्तान में लगभग तमाम नौकरियाँ हिन्दुस्तानी हैं। सेक्रेटरी ऑफ स्टेट नौकरियों का एक बड़ा संगठन और नियन्त्रण-कर्ता है।

ये दो बातें सीखकर अकरम हिन्दुस्तान लौटा। वह बम्बई में पिताजी और सलीमा से मिलने की आशा करता था। परन्तु वहाँ कोई नहीं था। लाचार बम्बई पहुँचते ही वह लखनऊ के लिए रवाना हो गया।

: ११ :

"आखिर उसने ऐसा किया ही क्यों? क्या उसका दिमाग खराब हो गया है?" लखनऊ में अकरम अपने पिता से पूछ रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं क्या जानूं ? पहली बार भागी तो दिल्ली गयी थी। अब के पता नहीं। सिर्फ उसकी शादी की बात हो रही थी। उसने एक हिन्दू वकील के लौंडे के भड़काने पर अदालत में दरख्वास्त दे दी कि हम उसकी शादी ज़बरदस्ती कर रहे हैं और अदालत ने हम पर 'इंजकशन' जारी कर दिया।"

अकरम यह जानता था कि उसके पिता कुछ हठी प्रकृति के हैं। इस कारण वह समझ गया कि ज़रूर ज़बरदस्ती हुई होगी। उसने कहा, "आखिर शादी की इतनी जल्दी क्या पड़ी थी ? अभी तो वह कॉलेज में पढ़ती थी। पढ़ाई तो खत्म होने देते।"

"अकरम, बात यूं हुई कि सलीमा को डॉक्टर बनकर कुछ लेना नहीं था। उसकी दोस्ती हिन्दू लड़कों से बढ़ रही थी। दिन-रात लोग हमें कह रहे थे कि वह किसी हिन्दू से शादी कर लेगी। इसलिए मैंने बहुत कोशिश से एक रिश्ता ढूंढ़ा। बस, वह घर से भाग खड़ी हुई।"

"कौन रिश्ता ढूंढ़ा है आपने, जो उसे पसन्द नहीं ?"

नवाब साहब ने औरंगाबाद वालों का परिचय दिया। अकरम इफ्तिखार अहमद का नाम सुनते ही चौंक उठा और कहने लगा, "वह तो निहायत ही बद-चलन आदमी है।"

"तुम उसे कैसे जानते हो ?"

"विलायत में उससे मिला था।"

"मगर एक हिन्दू से शादी कर लेने से खराब नहीं था।"

अकरम पांच साल विलायत रह आने के कारण और विदेशों में अपने-आपको भी हिन्दू या हिन्दुस्तानी कहे जाने से भूल गया था कि वह मुसलमान है। पिता के कहने से उसे यह बात कुछ अखरी कि हिन्दू से शादी कर लेनी खराब है। कुछ सोचकर पूछने लगा, "आपने पता तो किया होगा कि वह किससे शादी करना चाहती है ?"

"उसने बताया ही नहीं। पहले हमें ख्याल था कि बाबू अवधबिहारी माथुर के लड़के विनोद से इरादा है। मगर यह ख्याल गलत निकला। अब भागने से कुछ पहले वह कहती थी कि वह किसी से तय कर रही है। मगर आखिरी फैसला होने से पहले ही चली गयी है।"

अकरम की समझ में तो यह आया कि इस मामले को अक्लमन्दी से सुलझाने के स्थान में हठ और जल्दबाज़ी से बिगाड़ दिया गया है।

"यहाँ उसकी किस-किससे ज़्यादा मेल-मुलाकात थी ?"

"विनोदकुमार से। वह भी उसी के कॉलेज में पढ़ता है।"

उसी दिन दोपहर को अकरम मैडिकल कॉलिज में जा पहुँचा। विनोद को ढूंढ़-कर उसके सामने जा खड़ा हुआ। विनोद कॉलिज-लॉन में खड़ा मित्रों से बातें कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था। चपरासी अकरम को विनोद के पास खड़ा कर चला गया। अकरम ने पूछा, "आपका नाम विनोदकुमार है ?"

"जी हाँ। मुझे लोग इसी नाम से पुकारते हैं।"

"मैं आपसे कुछ अलहदा में बातचीत करना चाहता हूँ।"

जब से सलीमा भागी थी, कई बार पुलिस अफसर उससे आकर पूछताछ कर गये थे। आज भी उसने यही समझा कि कोई पुलिस अफसर है। वह तुरन्त, साथियों को छोड़, एक तरफ दूर लॉन में चला गया। अकरम ने कहा, "मैंने सुना है कि आपकी सलीमा से गहरी दोस्ती थी ?"

"हाँ, मगर क्या मैं जान सकता हूँ कि मैं किससे बातें कर रहा हूँ ?"

"आप क्या समझते हैं कि मैं कौन हूँ ?"

विनोद ने ध्यान से अकरम का मुख देखा तो उसे सलीमा की रूप-रेखा के कुछ चिह्न उसमें भी दिखाई दिये। विनोद कुछ मुस्कराया और हाथ बढ़ाकर बोला, "क्या मैं मिस्टर अकरम से बात कर रहा हूँ ?"

अकरम ने हाथ मिलाते हुए कहा, "अन्दाज़ा बिलकुल ठीक है। तो उसने मेरे बारे में आपसे ज़िक्र किया होगा ?"

"हाँ, वह आपकी बातचीत अक्सर किया करती थी और मेरा विचार है कि घर-भर में केवल आपसे ही उसको स्नेह था।"

अकरम ने इस बात का कुछ उत्तर नहीं दिया और विनोद को और कुछ कहने का अवसर देने के लिए उसका मुख देखता रहा।

विनोद ने कहा, "वह बहुत चाहती थी कि आप पन्द्रह दिन पहले पहुँच जाते तो कम-से-कम कचहरी वाली बात न हो पाती। उसे आप पर बहुत विश्वास था।"

अकरम ने कहा, "मालूम होता है कि आपके उससे बहुत गहरे ताल्लुकात थे।"

"वह मेरी बहिन बन चुकी है।"

"बहिन ?"

"हाँ, आपको मालूम होगा कि हिन्दुओं में एक रस्म रक्षा-बन्धन की होती है। इस रस्म के अनुसार अगर कोई लड़की किसी लड़के के हाथ में राखी बांध दे तो उनका बहिन-भाई का रिश्ता पक्का हो जाता है।"

"ओह, तब तो वह आपको अवश्य बता गयी होगी कि वह कहाँ भागकर जा रही है ?"

"अगर भागने से पहले वह मुझे मिल सकती तो भागने की ज़रूरत ही न रहती। हकीकत यह है कि दोनों बार नवाब साहब ने उसे कमरे में कैद कर दिया था। एक बार लखनऊ कोठी में ही और दूसरी बार नवाबगंज कोर्ट में। दोनों बार भागने में उसे बहुत साहस का काम करना पड़ा है। अभी तक जो कुछ पता चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, वह यह कि एक औरत ने बुर्का पहने हुए तीसरे दर्जे का फैज़ाबाद का टिकट खरीदा था। उसके पश्चात् पुलिस को उसका कुछ पता नहीं मिला।"

"आपने उसको ढूंढ़ने की कोशिश की है?"

"हां।"

"क्या नतीजा निकला है?"

"परिणाम सन्तोषजनक है, परन्तु अभी आपको मैं ठीक-ठीक बताने में असमर्थ हूँ कि शायद कुछ दिन बाद मैं आपकी सहायता अच्छी तरह कर सकूंगा।"

विनोद ने इससे अधिक बताना उचित नहीं समझा। वह पहले अकरम के विचार जान लेना चाहता था। साथ ही बिना सलीमा से पूछे वह उसका पता बताने का अधिकार भी नहीं रखता था।

"वह है तो ठीक तरह से?"

"जहां तक मुझे मालूम हुआ है, वह भली-भांति है।"

"आप मुझे वहाँ ले क्यों नहीं चलते?"

"इस कारण कि बिना सलीमा की इच्छा के ऐसा नहीं हो सकता।"

"आप तो कहते हैं कि वह मुझसे खास मुहब्बत रखती है। फिर वह मुझसे मिलना क्यों नहीं चाहेगी?"

"वह मेरा अनुमान था। निश्चय करना चाहता हूँ।"

"किससे?"

"आप दोनों से।"

"मुझसे क्या जानना चाहते हैं?"

"यही कि आपकी मुहब्बत उससे कितनी है और किस किस्म की है?"

"इसका मतलब?"

"देखो, भैया अकरम, मैं आपसे उम्र में छोटा हूँ और मैं आपको आदेश देने का अधिकार नहीं रखता। हाँ, आपके विचार जानने में मैं पाप नहीं समझता। किस्सा यह है कि वह एक हिन्दू युवक से प्रेम करती है। वह युवक उसको प्रेम करता है या नहीं, मैं नहीं जानता। सलीमा भागकर उसी के पास गयी है। अब आप इसको अच्छा समझते हैं या खराब, यह मैं आपसे जानकर उसको लिखना चाहता हूँ।"

"परन्तु वह कौन साहब हैं? बिना उनको देखे और जाने मैं क्या कह सकता हूँ?"

"परन्तु आपके वालिद साहब ने तो बिना देखे-जाने ही इनकार कर दिया था। एक और बात हुई कि उनको एक वक्त वहम हो गया था कि वह मुझसे विवाह करना चाहती है। वह मेरे पिता के पास गये और कह आये कि इस विवाह के लिए मुझे मुसलमान होना पड़ेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकरम के लिए यह बात कोई अचम्भे में डालने वाली नहीं थी । इस कारण उसने पूछा, "तो क्या अब सलीमा को हिन्दू होना होगा ?"

"यह मैं नहीं जानता । एक दफा सलीमा ने यह कहा था कि वह उसे प्रेम करती है। अब मुझे मालम हुआ है कि वह उसके ही पास है।"

"मिस्टर विनोद, मैं आपका बहुत मशकूर हूँ कि आपने इतने खुले दिल से बातें की हैं। मैं शादी के मसले में दखल देना नहीं चाहता, लेकिन मेरा हक है कि मैं जानूं कि वह कौन साहब हैं, जो मेरे बहनोई बनना चाहते हैं या बनाये जाने वाले हैं। क्या मैं गलत कह रहा हूँ ?"

"मैं आपकी अवस्था को समझता हूँ। अगर मैं आपके स्थान पर होता तो यही बात कहता। मगर यह मेरी बात नहीं है। मैं इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता।"

"अगर मैं चिट्ठी लिखूं तो आप उसे भेज देंगे ?"

"मैं इसमें कोई आपत्ति नहीं देखता।"

इस पर दोनों कॉलेज-हॉल में चले आये। अकरम ने एक कागज़ ले चिट्ठी लिख दी। चिट्ठी अंग्रेज़ी में थी;

प्रिय बहन,

मैं आज लखनऊ पहुँच गया हूँ। पाँच साल के बाद तुम्हें मिलने की बड़ी चाह थी और तुम्हें यहाँ न देखकर बहुत दुःख हुआ। किस्मत से मिस्टर विनोद से मुलाकात हुई है और उन्होंने वायदा किया है कि वह चिट्ठी तुम्हें पहुँचा देंगे। मुझे तुम्हारे यहाँ से चले जाने के सब कारण मालूम नहीं, इसलिए मैं नहीं कह सकता कि तुमने अच्छा किया है या बुरा। हाँ, तुम्हारे कचहरी में इंजकशन की अर्ज़ी करने से अम्मी और अब्बाजान के दिल को बहुत दुःख पहुँचा है। बहुत अच्छा होता, अगर मेरे आने तक तुम ऐसा न करतीं।

इस पर भी क्या मैं तुमसे मिल सकता हूँ ? कहाँ ? चाहे कुछ हो, भाई के लिए बहिन बहिन ही रहेगी। —तुम्हारा भाई, अकरम

पाँच दिन के बाद चिट्ठी का उत्तर आया और विनोद ने उत्तर अकरम को पहुँचा दिया। लिखा था :

भाईजान, आपकी छोटी बहिन का आदाब क़बूल हो। मैं आपके वापस आने की घड़ियाँ गिन रही थी। मुझे विश्वास था कि आप अगर होते तो यह सब खटपट न होती। मगर हालात ऐसे हो गये थे कि मैं वह करने पर मजबूर हो गयी, जो मैंने किया। मैं अब भी अमझती हूँ कि उस अवस्था में मुझे वही करना चाहिए था। इस पर भी मुझे सख्त अफ़सोस है कि अब्बाजान को मेरे कामों से रंज हुआ है। मैं तो अब भी हाज़िर होकर मुआफी माँगने के लिए तैयार हूँ। मगर भाईजान, इन पाँच सालों में मेरे ख्यालों में बहुत फर्क पड़ गया है। यूँ तो मैं उम्मीद करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ कि आप भी बहुत कुछ बदल गये होंगे। आप दुनिया-भर में घूमे हैं। हज़ारों लोगों से वास्ता पड़ा होगा और उनके विचारों से आपमें भी कुछ तो तबदीली अवश्य हुई होगी। हाँ, मैं यह नहीं जानती कि आपमें और मुझमें तबदीली का बहाव एक ही ओर को हुआ है या दूसरी ओर को।

मैं आपसे मिलने के लिए बेताब हो रही हूँ और चिट्ठी मिलते ही लखनऊ के लिए रवाना होती, मगर यहाँ एक लगाव है। मैं उस लगाव में उलझ गई हूँ। मुझे डर लगा रहता है कि लखनऊ मुझसे वह छीन न ले। औरंगाबाद वाला क्या कुछ नहीं कर सकता। उसकी तो सूरत से ही खूँखारपन टपकता है।

और यहाँ एक काम भी है जिसके लिए मैं क्या कुछ नहीं कर सकती। उस काम को पूरा करने के लिए बहुत कम समय रह गया है। और यहाँ से एक काम करने वाले का चला जाना निश्चय ही अच्छा न होगा। यह काम क्या है, आप विनोद भैया से जान सकते हैं।

इस पर भी एक-दो दिन के लिए तो लखनऊ आ ही सकती हूँ। मगर क्या मेरी ज़िन्दगी को आप पसन्द करेंगे? यहाँ मैं एक नवाब की लड़की नहीं हूँ। एक मामूली लड़की हूँ और अपनी रोटी आप कमाने के लिए तैयार हूँ। क्या मैं मिलने आ सकती हूँ?

—सलीमा

अकरम लिखने के ढंग से चकित था। चिट्ठी में संक्षेप से बहुत कुछ लिख दिया गया था। वह सोचता था, यह काम क्या है जिसमें वह लगी है। विनोद इस काम को जानता है, और चिट्ठी में अपने प्रेम का परिचय भी दिया है। अकरम जवाब पाकर खुश था। वह आने के लिए लिखने वाला था कि कुछ सोचकर चिट्ठी लिये हुए वह नवाब साहब के पास पहुँच गया। बेगम साहिबा भी वहीं बैठी थीं।

"अब्बाजान, सलीमा की चिट्ठी आई है।" अकरम ने कहा।

नवाब साहब ने चौंककर कहा, "कहाँ से?"

"सो तो नहीं लिखा, मगर यहाँ आने के लिए पूछा है।"

"तुम्हें कहाँ से मिली है?"

"विनोद ने भेजी है।"

"यह सब उसी बदमाश की शरारत है। हाँ, तो क्या लिखती है?"

अकरम ने चिट्ठी पढ़कर सुनाई। बेगम की आँखें भर आई थीं। नवाब साहब ने सुनकर कुछ अकड़कर कहा, "लिख दो, यहाँ न आये।"

"न आये?" अकरम ने हैरानी मे पूछा।

"नहीं। न जाने किस आवारा से शादी कर ली है। मैं उसका मुँह देखना नहीं चाहता।"

"मगर उसने तो नहीं लिखा कि शादी कर ली है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो इसके क्या मायने हैं कि मेरा लगाव हो गया है ? वह कोई हिन्दू काफिर है जिससे उसकी शादी हो गई है।"

अकरम ने अभी भी बहुत नरमी से कहा, "अब्बाजान, इसके अर्थ यह नहीं हैं। अगर मान भी लें कि उसने शादी कर ली है तो फिर क्या हुआ ? हमारा रिश्ता तो उससे टूट नहीं सकता।"

"मैं किसी गैर-मुस्लिम से रिश्ता रखना नहीं चाहता।"

"मगर हमारे बुज़ुर्ग भी तो एक वक्त हिन्दू थे। मेरे नगड़दादा हिन्दू थे। एक औरत के इश्क में मुसलमान हो गये। मुसलमान हो जाने पर भी वह अपने बाप-दादाओं की जागीर के मालिक बने रहे। यह ताल्लुकेदारी हमारे मुसलमान होने से हमसे छिन नहीं गई। अगर एक लड़की फिर हिन्दू हो गई तो क्या फर्क पड़ जायेगा ? रिश्तेदारी तो जुदा चीज़ है। मज़हब से खून ऊँचा है।"

"तुम आजकल के हिन्दुस्तान की हालत नहीं समझते। पहले मज़हब एक मामूली बात थी। कभी किसी हिन्दू ने किसी को मज़हब तबदील कर मुसलमान होते देख परवाह नहीं की थी। जब मेरे दादा मुसलमान हुए थे तो किसी ने कोई झगड़ा नहीं किया। बल्कि हिन्दू इससे खुश थे। मगर अब हालत दूसरी है। जब से आर्य-समाज ने मुसलमानों को हिन्दू बनाना शुरू किया है, हालत बदल गई है। अब किसी हिन्दू का मुसलमान होना गवारा नहीं किया जाता। बस, यह कोशिश की जाती है कि वह हिन्दू हो जाये। इन हालात में मैं एक मुसलमान का हिन्दू होना कैसे मान सकता हूँ और वह भी खुद अपनी लड़की का ? पहले तो चाहे मुसलमान औरत हिन्दू मर्द से शादी करे और चाहे मुसलमान मर्द हिन्दू औरत से शादी करे, दोनों हालतों में नतीजा एक ही होता था—इस्लाम फैलता था। अब तो लोग हिन्दू भी हो जाते हैं।"

अकरम नवाब साहब की दलील पर मन-ही-मन हँसता था। उसने समझा कि इस युक्ति में दोष है। उसने इस दोष को बताने के लिए कहा, "अब्बाजान, अगर कुछ मुसलमान हिन्दू हो जाते हैं या कुछ हिन्दू मुसलमान हो जाते हैं, तब क्या हो जायेगा ? अगर इस्लाम में कुछ खूबी है तो आपको उसकी चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं। उसकी खूबियाँ उसको फैलायेंगी।"

"मियाँ, तुम नहीं जानते। आज हिन्दुस्तान में यह खींचातानी चल रही है कि किस मज़हब के लोग अधिक हैं। जिस मज़हब के मानने वाले ज़्यादा होंगे उसी का बोलबाला होगा।"

"बोलबाला का क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि हुकूमत उस मज़हब वालों के हाथ में होगी जिसके मानने वाले ज़्यादा होंगे।"

"तो आप हिन्दुस्तान में मज़हबी हुकूमत के ख्वाब देख रहे हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मुस्लिम तन्ज़ीम के मायने ही क्या हैं ? देखो, कांग्रेस हिन्दुओं की जमात है और मुस्लिम लीग मुसलमानों की। हिन्दुस्तान में हिन्दुओं की तादाद ज्यादा है इसलिए कांग्रेस सात सूबों में वज़ारतें बना सकी है। हम चाहते हैं कि ऐसा न हो।"

"मगर कांग्रेस-वज़ारतों में मुसलमान वज़ीर भी तो हैं।"

"यह सिर्फ धोखा देने के लिए है। हकीकत में ये लोग मुसलमान नहीं हैं।"

"क्यों ?"

"मुसलमानों की नुमाइन्दा जमात मुस्लिम लीग है। उससे बाहर मुसलमानों को नहीं जाना चाहिये।"

"चाहे वह मुसलमानों के हकीकी मफाद की परवाह न भी करे ?"

"यह कैसे हो सकता है ? मुसलमानों की जमात मुसलमानों की हिमायत करेगी।"

अकरम के लिए यह राजनीति कुछ अर्थ नहीं रखती थी। उसने इस व्यर्थ की बहस में न पड़ते हुए कहा, "तो सलीमा के लिए इस घर में जगह नहीं है ?"

"तब तक नहीं है जब तक कि वह किसी मुसलमान से शादी करने पर तैयार न हो या जब तक वह, जिससे उसकी शादी होनी है, मुसलमान बनने के लिए तैयार न हो जाये।"

अकरम निराश अपने कमरे में लौट आया।

: १२ :

अगले दिन अकरम विनोद से मिलने उसके घर गया। विनोद ने उसे बहुत आदर-सत्कार से बैठाया और आने का कारण पूछा। अकरम ने सलीमा की चिट्ठी विनोद के सामने रख दी। विनोद ने पढ़कर कहा, "बहुत अच्छी लिखी है।"

"किस ख्याल से आप इसे अच्छी कहते हैं ?"

"अपने भावों को संक्षेप में और यथार्थ शब्दों में लिखने में। मैं समझता हूँ कि आप सारी बात जान गये हैं।"

"एक बात मैं आपसे पूछने आया हूँ। यह क्या काम है जिसे पूरा करने के लिए बहुत कम समय रह गया है ?"

"तो आप नहीं जानते ? एक हिन्दुस्तानी युवक-संघ बनाया गया है। संघ में केवल युनिवर्सिटियों के विद्यार्थी सम्मिलित हैं। आठ-नौ हज़ार के करीब भर्ती हो चुके हैं। हमारे लखनऊ में पाँच सौ से ऊपर इसमें शामिल हैं। अभिप्राय यह है कि दस हज़ार सदस्य बनाये जायेंगे। उन सदस्यों को साहित्य, जो खास उनके लिए लिखा गया है, बाँटा जायेगा और गर्मियों की लम्बी छुट्टियों में दस हज़ार विद्यार्थी देश-भर में घूमेंगे और उन बातों का प्रचार करेंगे जो उस साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उनको बताई गई हैं।"

"इस साहित्य में क्या लिखा हुआ है?"

"लखनऊ में साहित्य बँट रहा है। आप एक प्रति मुझसे लेकर पढ़ सकते हैं।"

"इस प्रचार से क्या होगा?"

"देश के लोगों को अपनी पराधीन अवस्था का परिचय मिलेगा। उनको ज्ञान होगा कि विदेशी राज्य की नींव किन बातों पर है। उनको यह भी बताया जायेगा कि हिन्दू-मुसलमान इकट्ठे कैसे रह सकते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि लोगों को यह बताया जायेगा कि स्वराज्य-प्राप्ति पर हम क्या होंगे और दुनिया में हमारा कितना मान होगा।"

अकरम इस योजना की रूप-रेखा सुन चकित रह गया। उसने पूछा, "इस स्कीम (योजना) पर कितना खर्च होगा और वह कहाँ से आयेगा?"

"स्कीम में दस हज़ार विद्यार्थी होंगे। पाँच-पाँच की दो हज़ार मंडलियाँ बनेंगी। हिन्दुस्तान को दो हज़ार हलकों में बाँटा जा रहा है। प्रत्येक हलके में एक-एक मण्डली भ्रमण करेगी। दो महीने तक यहाँ काम होगा। एक-एक विद्यार्थी पर पचास-पचास रुपये के खर्च का अन्दाज़ा लगाया है। इस प्रकार पाँच लाख रुपये का खर्चा है। हमें नेता ने विश्वास दिलाया है कि पाँच लाख रुपया उनके पास इस कार्य को चलाने के लिए रखा है।"

"ओह! और वह नेता कौन है?"

"वही, जिनसे सलीमा का लगाव हो गया है।"

अकरम नौजवानों के इस प्रयास को देख उत्साह से भर गया था। वह यूरोप से अत्यन्त अपमानित होकर लौटा था और अपने देश में देश को स्वतन्त्र करने की पहली बात लोगों में अपनी परिस्थिति से असन्तोष पैदा करने की योजना बनी देख बहुत प्रसन्न हुआ। यह जानकर कि उसकी बहिन सलीमा भी इस स्कीम को चलाने में लगी है, उसे और भी खुशी हुई। मगर वह कौन है जिसके पास लाखों रुपये ऐसे कामों के लिए हैं, वह जानना चाहता था। उसने विनोद से कहा, "मैं सलीमा को लखनऊ नहीं बुला सकता। अब्बाजान पसन्द नहीं करते। मगर मैं उससे मिलना चाहता हूँ। आपका अब क्या ख्याल है?"

"मैं आपको पता बता दूंगा।"

: १३ :

सलीमा अभी डॉक्टर घोष के घर रहती थी। डॉक्टर और उनकी धर्मपत्नी सलीमा से ऐसा व्यवहार करते थे कि उसे यह कभी अनुभव नहीं हुआ कि वह किसी पराये घर में रहती है। डॉक्टर घोष की दो लड़कियाँ थीं, एक का नाम मिलिन्द था और दूसरी का कल्याणी। दोनों पथिक की योजना में संलग्न थीं। कल्याणी तो बी० ए० श्रेणी में पढ़ती थी और मिलिन्द एम० ए० पास कर चुकी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्याणी कलकत्ते में हिन्दुस्तानी युवक-संघ के सदस्य बनाने में लगी थी और मिलिन्द दफ्तर का काम सँभाले हुए थी। पथिक को अब संघ के संगठन-कार्य के लिए इधर-उधर जाना पड़ता था और पीछे चिट्ठी-पत्री का काम मिलिन्द ने सँभाल लिया था। ज्यों-ज्यों सदस्यों की संख्या बढ़ती जाती थी, त्यों-त्यों चिट्ठी-पत्री का काम बढ़ता जाता था। अब सलीमा के आ जाने से मिलिन्द उसे भी साथ ले आती थी और दोनों मिलकर काम भली-भाँति कर लेती थीं।

पथिक सलीमा को काम में व्यस्त देख बहुत प्रसन्न था। वह सलीमा के विषय में अभी निर्णय नहीं कर सका था। उसने सुरेश को लिखा था कि एक इस प्रकार की लड़की है जिसके मैडिकल कॉलेज में पढ़ाने का प्रबन्ध करना है। वह क्या प्रबन्ध कर सकता है। सुरेश की चिट्ठी आने पर वह अब सन्तोष से सलीमा के सम्मुख बात करने के लिए तैयार हो एक दिन डॉक्टर घोष के मकान पर पहुँचा।

सलीमा ने पथिक से, पहले दिन की कलकत्ते में भेंट के पश्चात्, अपने विषय में कभी बातचीत नहीं की थी और अब तो, जब से मिलिन्द के साथ वह हिन्दुस्तानी युवक-संघ का काम करने लगी थी, उसे अपने विषय में सोचने का अवसर ही नहीं था। इसके अतिरिक्त पथिक प्रायः कलकत्ते से बाहर रहता था। इस बीच में अकरम की चिट्ठी आई और उसने चिट्ठी का उत्तर भी दे दिया। वह आशा लगाये हुए थी कि अकरम उसे वापस लखनऊ बुलायेगा और वह, कम-से-कम अपनी सफाई देने के लिए, कुछ दिन के लिए जायेगी। परन्तु न तो अकरम की चिट्ठी आयी और न ही अकरम आया।

पथिक डॉक्टर घोष के घर में घर का आदमी ही समझा जाता था। वह घर के लोगों से बिलकुल हिलमिल गया था। मिलिन्द की माता को वह माँजी कहता था। उस दिन सायंकाल जब वह आया तो मिलिन्द की माता को बैठक में देख बोला, "माँजी, आज खाना यहीं खाऊँगा। पंजाब में गेहूँ की रोटी खाते-खाते जी ऊब गया है। दाल-भात खाने के लिए जी करता है।"

"माँगी भी तो बहुत बढ़िया चीज़, दाल-भात," मिलिन्द ने, जो माँ के पास बैठी थी, कह दिया। माँ ने कह दिया, "जाओ, देखो तो खाने में कितनी देरी है। ज़रा जल्दी तैयार करा दो।" मिलिन्द चली गई और पथिक मिलिन्द की जगह पर बैठ गया। मिलिन्द की माँ डॉक्टर साहब के एक पुराने कोट की मरम्मत कर रही थी। सुई कोट में टाँगकर पथिक के मुख पर देखते हुए बोली, "सलीमा के विषय में तुमने क्या निश्चय किया है?"

"क्यों, क्या वह कुछ कहती थी?"

"नहीं; बेटा, वह तो बिलकुल बकरी की भाँति जिधर लगाओ, लगी रहती है। उसने एक दिन भी इस विषय पर बात नहीं की। मगर मैं तो समझती हूँ; कम-से-कम तुम दोनों के परस्पर सम्बन्ध का निश्चय हो जाना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँजी, आप इतनी अधीर क्यों हैं? इतनी जल्दी ही क्या है? आजकल काम इतना अधिक है कि हमारे पास इस झगड़े को सुलझाने का समय नहीं है। इस पर भी मैं एक प्रस्ताव लेकर आया हूँ। वह प्रस्ताव मैं आपके सम्मुख ही उसको बताना चाहता हूँ। आप उसे यहीं बुला लीजिये।"

सलीमा को माताजी कल्याणी के कमरे में बुला लाईं। सलीमा, पथिक और माताजी को विशेष रूप से गम्भीर देख, कुछ डर गई। वह अनुमान लगाने लगी थी कि लखनऊ से कोई पत्र आया है, अथवा उसके पिताजी ने कोई झगड़ा और खड़ा कर दिया है। वह अपने भाग्य-चक्र का फल सुनने के लिए चुपचाप आ बैठी। पथिक ने कहना आरम्भ किया, "मेरा विचार था कि तुम्हारी डॉक्टरी की शिक्षा के जारी रखने का प्रबन्ध कर दूँ। इस विचार से मैंने अपने एक मित्र को लिखा था। उन्होंने तुम्हारे लिए रहने का प्रबन्ध और एक सौ रुपया महीना खर्च के लिए देने का प्रबन्ध कर दिया है।"

सलीमा ने उत्साहहीनता दिखाते हुए कहा, "डॉक्टरी पढ़ने से क्या होगा?"

"यह प्रश्न तो उस समय किया जाता है जब पढ़ाई आरम्भ की जाये। अब जब दो वर्ष व्यतीत हो चुके हैं तो इसके कुछ अर्थ नहीं।"

"मैं अब डॉक्टरी पढ़ना नहीं चाहती।"

"क्यों?"

"मैं अब यहाँ से जाना नहीं चाहती।"

"क्यों?"

"मैं नहीं जानती। हाँ, अगर माताजी को मेरे यहाँ रहने में असुविधा है तो मैं एक-दो दिन में कहीं और ठहरने का प्रबन्ध कर लूँगी।"

मिलिन्द की माँ ने कहा, "यह तो मैंने नहीं कहा। हमें तो तुम्हारे यहाँ रहने से बहुत खुशी है। कल्याणी की बात तो तुम देख ही रही हो। वह तो तुम्हारे बिना खाना भी नहीं खा सकती।"

"तो फिर यह सब झगड़ा क्या है?"

पथिक ने कहा, "पढ़ना अथवा न पढ़ना तो तुम्हारी रुचि पर है। तुम पहले पढ़ती थीं, इस कारण मैंने समझा, इसका प्रबन्ध होना ही चाहिये। सो प्रबन्ध हो गया है।"

सलीमा ने वैसे ही शान्ति से कहा, "धन्यवाद। मुझे लखनऊ नहीं जाना है। पढ़ाई में मेरी रुचि नहीं रही।"

"तो तुम क्या चाहती हो?"

"मैं क्या चाहती हूँ? कुछ नहीं। यहीं कहीं इधर-उधर समीप रहना, जिससे आपको देख लिया करूँ और यदि अवकाश हो तो उस प्रश्न का उत्तर भी, जिसको आपने मेरे कलकत्ते में आने के पहले दिन देने का वचन दिया था, पा लूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह !"

"आपने कहा था, 'जो तुम कहती हो, वह क्या मैं समझा नहीं हूँ ? परन्तु क्या तुम उसका उत्तर पाये बिना चली जाओगी ?' मैं उसी उत्तर की प्रतीक्षा में यहाँ ठहरी हूँ। मेरा भविष्य उसी उत्तर पर निर्भर है।"

"तो तुम्हें अभी उस बात का उत्तर नहीं मिला ?"

"क्या आपने उत्तर दे दिया है ?"

"मैं अपने मन में तो यही समझता हूँ कि उत्तर दे चुका हूँ।"

सलीमा विस्मय में पड़ गई। वह इस बात का अर्थ लगाने में अपने-आपको असमर्थ पाती थी। पथिक के इस कहने को, वह हाँ समझे या न, वह निश्चय नहीं कर सकी थी। कुछ काल तक वह सोचती रही। जब कुछ नहीं जान सकी तो उसने पथिक के मुख से अनुमान लगाने के लिए आँखें उठा उसको देखना शुरू कर दिया। पथिक इतना कह सलीमा के मुख पर अपने उत्तर का प्रभाव देख रहा था। जब दोनों की आँखें मिलीं तो दोनों एकदम हँस पड़े। मिलिन्द की माँ भी हँसने लगी।

इस समय अपने कमरे से हँसी का कहकहा सुन कल्याणी और रसोईघर से मिलिन्द, दोनों वहाँ चली आईं और प्रश्न-भरी दृष्टि से तीनों को देखने लगीं। मिलिन्द ने पूछा, "माँ, क्या है ?"

माँ ने कहा, "एक पहेली है। बेटी सलीमा कहती है कि उसके एक प्रश्न का उत्तर नहीं मिला। बेटा पथिक कहता है कि उसने दे दिया है। दोनों हँस पड़े हैं। प्रतीत होता है कि सलीमा को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया है और पथिक को उत्तर देने से छुट्टी हो गई है। इस कारण दोनों हँस रहे हैं। क्यों, सलीमा, ठीक है न ?"

सलीमा ने कहा, "मुझे तो मेरे प्रश्न का उत्तर अभी नहीं मिला। मैं तो इस कारण हँसी थी कि यह ठग सबको ठग लेते हैं, परन्तु मुझे नहीं ठग सके।"

"माँजी, मैंने तो उत्तर दे दिया था उसी समय। यह नहीं समझी। कितनी भोली है यह ! इसी से हँस पड़ा था।"

मिलिन्द ने कहा, "पहले प्रश्न का पता चले तो पश्चात् उत्तर का भी सोचा जायेगा।"

"उत्तर देने वाले को प्रश्न का पता नहीं तो उत्तर कैसे दे दिया है ?" मिलिन्द की माँ ने कहा।

कल्याणी ने कहा, "मैं जान गई हूँ।"

पथिक ने पूछा, "क्या ?"

"प्रश्न भी और उत्तर भी।"

"ओह ! तब तो दोनों की छुट्टी हुई। न प्रश्नकर्ता को प्रश्न करने की जरूरत रही और न उत्तरदाता को उत्तर देने की। योग्य ज्योतिषी मिल गया है और वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबकुछ जान गया है।"

"हाँ, मगर बिना फीस लिये बताऊँगी नहीं," कल्याणी ने अब सलीमा के पास बैठ उसके गले में बाँह डालकर कहा, "दीदी, खिलाओ न मिठाई।"

पथिक ने अचम्भा प्रकट करते हुए कहा, "मिठाई ! कैसे जाना कि मेरा उत्तर मिठाई खाने योग्य है ?"

"और कैसे जाना कि मेरा प्रश्न मिठाई वाले उत्तर की जिज्ञासा रखता है ?" सलीमा ने शर्म से लाल होते हुए कहा।

"देखो, दादा, दो और दो चार होते हैं या नहीं ?"

"दो और दो चार। हाँ, लोग कहते तो हैं।"

"बस, ऐसे ही जहाँ भाई होगा वहाँ भाभी होगी और मिठाई खायी जायेगी।"

सब हँसने लगे।

"मगर, कल्याणी बहिन, दो और दो चार होते हैं ठीक, परन्तु ये दो और दो हैं, इसकी तो जाँच होनी चाहिये न। कहीं जिसे तुम दो समझ रही हो, वह एक ही न रह जाये और जोड़ चार की बजाय तीन ही रहे।"

अब मिलिन्द ने कहा, "इससे तो और भी मिठाई मिलेगी। अगर जोड़ तीन हो तो मिठाई की मात्रा बढ़ जानी चाहिये।"

इस पर तो हँसी और वेग से बढ़ने लगी।

मिलिन्द की माँ ने कुछ डाँटकर कहा, "यह बेहूदापन बस करो। हाँ तो, सलीमा, तुम उत्तर से सन्तुष्ट हो ?"

सलीमा के बोलने से पहले पथिक बोल पड़ा, "नहीं, कुछ भ्रम हो रहा है, माँजी। इन दोनों बहिनों ने मिलकर सब सत्यानाश कर दिया है। मुझे अपना उत्तर स्पष्ट भाषा में बताना होगा।"

"यही तो मैं चाहती हूँ।" सलीमा ने आँखें नीची किये हुए कहा। वह अब बुरा-से-बुरा उत्तर सुनने के लिए तैयार थी।

"देखो, दादा," कल्याणी ने बीच में ही टोककर कहा, "अगर उत्तर के परिणाम में मिठाई न मिली तो आयु-भर क्षमा नहीं करूँगी।"

सलीमा ने कल्याणी के चुटकी काटकर कहा, "चुप रहो, बहिन, भला धमकी से कोई बात हो सकती है।"

"उई," कल्याणी चुटकी काटने पर सलीमा के पास से उठ खड़ी हुई। वह अपनी जाँघ पर, जहाँ सलीमा ने चुटकी काटी थी, हाथ से मलती हुई बोली, "धमकी से तो ब्रिटिश साम्राज्य भी चलता है, क्या भैया-भाभी की नहीं चलेगी ?"

पथिक ने उठकर पीटने का भाव दिखाते हुए कहा, "हट, चुड़ैल, जैसे ब्रिटिश प्राइम मिनिस्टर बनकर आई है।"

कल्याणी कमरे से भाग गई। पथिक अपने स्थान पर बैठ गया। मिलिन्द, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी तक खड़ी थी, सलीमा के पास कल्याणी वाले स्थान पर जा बैठी। पथिक ने कुछ देर में अपने विचारों को एकत्रित कर कहना शुरू किया, "माँजी, बात यह है कि सलीमा एक नवाब की लड़की है। इसके बाप की लाखों की आय है। बिना तिनका तोड़े यह सुख-चैन से जीवन व्यतीत कर सकती है। यह पढ़ी-लिखी, सुशील, चरित्रवान और सुन्दर है। कोई धनी आदमी इसके लिए लाखों रुपये न्योछावर कर सकता है और मैं, मुझे अपने माता-पिता का नाम भी स्मरण नहीं। कुछ ही काल पूर्व मैं पागल था। देवा के लोग इस बात के साक्षी हैं। उस पागलपन से पूर्व मैं क्या था, कोई नहीं जानता। मेरे पास जेब में एक फूटी कौड़ी भी नहीं और मेरा काम है राज्य में विप्लव करना। किसी भी दिन पकड़कर फाँसी के तख्ते पर लटकाया जा सकता हूँ। जेल भेज दिया जाना तो एक बहुत ही साधारण-सी बात है। मैं कैसे सलीमा के प्रश्न का उत्तर 'हाँ' में दे सकता हूँ?"

पथिक कुछ देर ठहर गया। सब चुपचाप इस आशा में थे कि उसे अभी कुछ और कहना है। पथिक ने लम्बा साँस खींचकर कहा, "एक आवारा, जिसके माँ-बाप का पता नहीं; जिसकी न जायदाद है, न कोई रिश्तेदार; जिसकी जान हमेशा खतरे में है, वह सलीमा जैसी लड़की से शादी कर अन्याय का भागी नहीं बन सकता। और फिर मैं कट्टर हिन्दू हूँ। वेद, उपनिषद्, गीता की फिलॉसफी को सत्य मानता हूँ। मैं कैसे मुसलमान परिवार के वातावरण में पली लड़की को ज़बरदस्ती अपने जगत् में घसीटकर ला सकता हूँ।"

इसके आगे पथिक नहीं बोल सका। उसका गला भर्रा उठा था। वह उठकर वहाँ से भाग जाना चाहता था। उसने उठकर चुपचाप नमस्ते करने के लिए हाथ जोड़ दिये। परन्तु सलीमा उठकर मार्ग में खड़ी हो गई। उसका शरीर थर-थर काँप रहा था। मिलिन्द और उसकी माँ अवाक् मुख इस जीवन-नाटक के एक अंक को देख रही थीं।

सलीमा ने काँपती हुई आवाज़ में कहा, "ज़रा बैठ जाइये। बात अधूरी रह जानी ठीक नहीं। आपने मेरा भारी अपमान किया है। जिसे आप मेरी प्रशंसा मानकर कह रहे हैं, मैं चाहती हूँ कि आपको पता लग जाये कि मैं उसे अपमान समझती हूँ। आप पत्थर की मूर्तियाँ पूजते-पूजते हृदय से पत्थर हो गये हैं। इसीलिए एक रक्त-मांस के बने हृदय की कोमलता का अनुमान नहीं लगा सकते। मैंने आपसे खाने-पहनने अथवा बिना तिनका तोड़े सुख-चैन का जीवन व्यतीत कर सकने का प्रश्न कब किया था? नवाबी ढंग और ठाट-बाट आपने मुझमें कब देखा है? आपके हिन्दुत्व को मैं नहीं समझती। इस पर भी मैंने तो आशा उस दिन बाँधी थी जब मैंने पूछा था कि हिन्दू-मुसलमान परस्पर विवाह करें तो मज़हब किसको बदलना चाहिये और आपने बताया था कि किसी को भी नहीं। तो अब क्या हो गया है? मेरा प्रश्न यह नहीं था जिसका आपने उत्तर दिया है। मेरा प्रश्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था……"

वह वाक्य पूरा नहीं कर पाई। एक-एक शब्द मुख से कहना कठिन हो रहा था। कुछ ठहरकर वह फिर कहने लगी, "कुछ नहीं, अब इसे जाने दो। मैं आपको एक बात कहे देती हूँ। मैं आपके पास रहने के लिए आई थी, बिना किसी प्रकार की शर्त किये। मैं आपके पास रहना चाहती हूँ, अब एक शर्त के साथ। आप मुझे नहीं देख सकेंगे। आप पर एक नवाब की या एक मुसलमान परिवार के वातावरण में पली लड़की की परछाईं नहीं पड़ेगी। कभी जब कुदरत को मंज़ूर हुआ…।" सलीमा और आगे नहीं कह सकी। वह वहाँ से भागकर बाहर निकल गई। मिलिन्द उसके पीछे बाहर चली गई।

मिलिन्द की माँ ने कहा, "बेटा, यह क्या किया है तुमने ?"

"माँजी, क्या मैं दोषी हूँ ?"

"तुम बस लैक्चर देना ही जानते हो और कुछ नहीं।"

: १४ :

लखनऊ में 'अंजुमन-तन्ज़ीम-ए-इस्लाम' का जलसा हो रहा था। नवाब मुर्तज़ाअली साहब जलसे के स्वागताध्यक्ष थे। इसमें देश-भर से प्रतिनिधि आये हुए थे। अंजुमन की कार्यकारिणी के बहुत-से सदस्य उनकी ही कोठी में ठहरे हुए थे। कोठी में खूब चहल-पहल थी। नौकर और मालिकों का आने-जाने का ताँता लगा था।

नियमित रूप से कार्यकारिणी के अधिवेशन में अभी दो दिन थे। परन्तु जो लोग आ गये थे वे सामयिक बातों पर चर्चा कर रहे थे। अंजुमन के जलसे में क्या-क्या प्रस्ताव होने चाहियें, भविष्य में मुसलमानों का अपना क्या प्रोग्राम होना चाहिये, मुल्क में किस प्रकार वे अपना प्रभाव रख सकते हैं, यूरोप में जंग छिड़ जायेगी या नहीं और जंग छिड़ जाने पर हिन्दुस्तान की क्या अवस्था होगी, इस अवस्था में मुसलमानों का क्या रवैया होना चाहिये, ये सब विषय थे जिन पर दिन-रात बातचीत होती रहती थी।

नवाब साहब मेहमानों की आवभगत में लगे थे, इस कारण वार्तालाप में कुछ विशेष भाग नहीं ले सकते थे। फिर भी आते-जाते थोड़ी-बहुत टीका-टिप्पणी करते रहते थे। एक साहब खान बहादुर थे। टर्की से इंगलैंड तक सब मुल्क घूम चुके थे। बड़े-बड़े लोगों से सम्बन्ध था और इस अंजुमन के कर्ताधर्ता थे। वह कह रहे थे, "इस वक्त हमारी अंजुमन की हालत ऐसी होती जाती है कि हम अपने-आपको हिन्दुस्तान के मुसलमानों का नुमाइन्दा कहें तो कोई मुगालता न होगा। सरकार मुसलमानों में हम ही लोगों से बातचीत करती है। कांग्रेस वाले हम ही से समझौता करने आते हैं। अब हम मनमानी बातें मनवा सकते हैं।"

अकरम कुछ उदासीन था। वह इन बातों में दिलचस्पी नहीं रखता था। इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों की मानसिक अवस्था जानने के लिए कभी-कभी इनमें बैठता था। आज वह अपने कमरे से नीचे आया तो लोगों को बहुत ध्यान से खान बहादुर की बातें सुनता देख वह भी समीप आ खड़ा हुआ। अकरम इन बातों को नीरस पा वहाँ से जाने ही वाला था कि मिस्टर तकी बोल उठे, "मिस्टर अकरम, आइये, बैठिये न।"

अकरम रुक गया और शुक्रिया अदा कर बोला, "उम्मीद है, आप मुझे माफ करेंगे।"

इस पर खान बहादुर बोले, "आपको राजनीति में कुछ दिलचस्पी नहीं है शायद।"

अकरम जवाब देने पर मजबूर हो गया। उसने कहा, "खान बहादुर साहब, है तो, मगर मेरी दिलचस्पी आपसे कुछ दूसरी किस्म की है।"

"ओह ! तो राजनीति और राजनीति में कुछ फर्क है ?"

"हाँ, साहब, आपका पॉलिटिक्स गुलामी को लम्बा करने वाला है और मैं गुलामी कम करने वाले पॉलिटिक्स में यकीन रखता हूँ।"

"किसकी गुलामी ?"

"हिन्दुस्तान की।"

"हिन्दुस्तान कोई एक मुल्क नहीं है, यह बर्रे-आज़म है। इसमें कई मुल्क शामिल हैं।"

"मैं तो इसको नहीं मानता। हिन्दुस्तान में रहता हुआ और आँखें रखता हुआ आदमी आपके विचार को नहीं मान सकता। उसे तो हिन्दुस्तान के लोगों में समानता दिखाई देती है। एक कश्मीरी ब्राह्मण और एक मद्रासी ब्राह्मण के विवाह-शादी की रस्मों को और उनके विचार और विश्वास को आप देखें तो आप समझ जायेंगे कि हिन्दुस्तान में रहने वाले एक ही सूत्र में बँधे हैं या नहीं। अंग्रेज़ी एजेण्टों ने आपको बहका दिया है।"

"अंग्रेज़ी एजेण्ट ! कहाँ हैं वे ?"

"स्कूलों और कॉलिजों के अंग्रेज प्रोफेसर, अंग्रेज़ी तवारीख लिखने वाले और अंग्रेज़ अखबारनवीस, जो हिन्दुस्तान की बाबत कुछ न जानते हुए भी कहते हैं कि वे बहुत कुछ जानते हैं। ये लोग ज़बानों में फर्क देख समझने लगते हैं कि लोगों में फर्क है। इन ज़बानों के फर्क के नीचे वही उपनिषदों और शास्त्रों की फिलॉसफी, वही राम और कृष्ण पर भक्ति और वही वेद-मन्त्रों से रस्मों का अदा होना, गौ, ब्राह्मण के लिए मान इत्यादि हैं। ये चीज़ें वे लोग न तो समझने की कोशिश करते है और न ही वे समझ सकते हैं। उनका इन बातों की ओर ध्यान न देना भी किसी मतलब से है। वे चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी अपने को एक-दूसरे से अलहदा-अलहदा समझें तो वे हिन्दुस्तान के छोटे-छोटे लुकमे कर निगल सकें। सारा हिन्दुस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसानी से हज़म नहीं हो सकता।"

"हज़रत, हज़म हो सकने से आपका क्या मतलब है?"

"किसी ज़माने में हिन्दुस्तान उन्नत अवस्था पर था। अपने बुरे कामों से यह देश विदेशियों के अधीन हो गया। इस पर भी हिन्दुस्तानी अपनी पुरानी शानो-शौकत को मान की नज़र से देखते हैं। हर वक्त हर बशर को फिर अपनी पुरानी इज्ज़त और रसूख पाने की लालसा लगी रहती है। ये किसी कौम के न हज़म हो जाने के निशानात हैं। विदेशी कौम की हुकूमत का प्रभाव हमेशा यह होता है कि वहाँ के लोग अपने बुज़ुर्गों को बेवकूफ, कमअकल, चरित्रहीन, जंगली और अनपढ़ समझने लगते हैं और उनके मुकाबले में अपने शासकों के साहित्य, चाल-चलन और तौरोतरीके को काबिले अमल। अगर यह बात मुकम्मल तौर पर हो जाये तो एक कौम हज़म हो गई समझनी चाहिये। हिन्दुस्तानी सोसायटी की बावजूद सियासी, आर्थिक, तालीमी और मज़हबी हमलों के भी पूरी तौर पर अभी विजय नहीं हुई, इसलिए दूसरा तरीका अमल में लाया जायेगा। वह यह है कि हिन्दुस्तान के टुकड़े-टुकड़े किये जायें और फिर इनको बारी-बारी से हज़म किया जाये।

"मसलन अगर एक टुकड़ा दक्खिन कर दिया जाये तो इसे हिन्दुस्तान से अलहदा करने से यहाँ के लड़के-लड़कियों को हिन्दुस्तान का इतिहास पढ़ाने की ज़रूरत नहीं रहेगी। उनके सामाजिक जीवन में से राम, कृष्ण, गीता, शास्त्र, उपनिषद, या अकबर और बाबर के कारनामे, या प्रताप और शिवाजी की देशभक्ति निकल जायेगी। ये सब बातें उनके लिए विदेशी कारनामे हो जायेंगे और उनका साहित्य, इतिहास और मज़हब गरीब हो जायेगा। तब वे लोग आसानी से हज़म किये जा सकेंगे।"

अकरम अभी-अभी हिन्दुस्तानी युवक-संघ के साहित्य में से ये बातें पढ़ रहा था। यह साहित्य उसे विनोद से मिला था और इससे वह प्रभावित हुआ था, पर खान बहादुर और दूसरे मजलिस-तन्ज़ीमे-इस्लाम के सदस्यों पर इसका कुछ विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। खान बहादुर बोले, "यह तो सब बात तुमने हिन्दू नुक्ता-निगाह से कही है। हम मुसलमानों को इससे क्या फायदा होगा? हम तो हिन्दुओं से एक अलहदा जमात हैं।"

अकरम ने फिर युवक-संघ की किताब में पढ़ी बात कह दी, "ठीक है। हम मज़हबी तौर पर हिन्दुओं से एक अलहदा जमात हैं, मगर सियासी विचार से नहीं। राम, कृष्ण, सीता, सावित्री और उपनिषदों और गीता के लिखने वाले हमारे भी बुज़ुर्ग थे। उनके कमाल के ख्यालात और बारीक सूझ पर हम भी उतना ही फख्र कर सकते हैं जितना कि हिन्दू। मज़हबी सुधार के ये मायने कहाँ हैं कि इन्सानी खूबियों में ज़ो कुछ हमारे बुज़ुर्गों की मालूमात (आविष्कार) हैं उनको भी छोड़ बैठें। हम मानें चाहे न मानें, मगर उन बुज़ुर्गों का, जिन्होंने उस अन्धेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़माने में, जब खुदा के रसूल हज़रत सुला-उल-इस्लाम का आना नहीं हुआ था तब भी ज़िन्दगी के वे उसूल मालूम किये थे जो कमाल की लियाकत और दूरवीनी का सबूत हैं, क्या हमें फख्र नहीं करना चाहिये ?"

"तुम तो किसी हिन्दू पण्डित की पाठशाला से पढ़कर आये हो। मियाँ, तुम्हें तो ऑक्सफोर्ड भेजा गया था। यह कैसे हुआ ? मगर, साहब, एक बात हम बता देना चाहते हैं। वह यह कि मुसलमानी हुकूमत कायम करना हमारा मकसद है। हम तमाम हिन्दुस्तान पर अपनी हुकूमत कायम करना चाहेंगे या नहीं, यह न हम अभी बताना चाहते हैं, न बता सकते हैं। कम-से-कम यह तो हम अभी साफ कह देना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान के उन हिस्सों में, जहाँ मुसलमान ज्यादा तादाद में हैं, मुसलमानी हुकूमत होगी।"

"मुसलमानी हुकूमत के तौर-तरीके क्या होंगे ?"

"जैसे किताबे-पाक में बयान किये गये हैं।"

"आपने किताबे-पाक पढ़ी है ?"

"कम-से-कम समझता ज़रूर हूँ।"

"अच्छा, बताइये, आपकी शरीयत के मुताबिक औरतें परदे में रहेंगी या जैसे टर्की में अब रहती हैं ?"

खान बहादुर निरुत्तर थे। अकरम ने फिर पूछा, "आप लोग मुझे बतायें कि वह कौन-सी बात है जिसे हिन्दुओं के साथ साझी हुकूमत रखने पर आप नहीं कर सकेंगे ?"

"मुस्लिम तहज़ीब की हिमायत हम सहूलियत से नहीं कर सकेंगे।"

"तहज़ीब किसे कहते हैं ?"

"रहन-सहन के तौर-तरीके को।"

"भला, बताइये कि आपके रहन-सहन के ढंग और आपके एक हिन्दू पड़ोसी के रहन-सहन के ढंग में क्या फर्क है ?"

"फर्क क्यों नहीं, बहुत फर्क है। उस बुतपरस्त के तरीकों में और एक खुदा-परस्त के तरीकों में तुम फर्क नहीं समझते ?"

"तो मैं और मेरे जैसे लाखों, जो खुदा को ही नहीं मानते, आपके पाकिस्तान में शामिल नहीं हो सकेंगे। और देखिये, अस्सी फीसदी से ज़्यादा मुसलमान पीरों और मज़ारों को पूजते फिरते हैं। उनको तो आप वोट का हक नहीं देंगे। भला, पाकिस्तान में मुझ जैसे खुदा के न मानने वालों या आगाखानी जैसे पीर-परस्तों को आप क्या समझेंगे, हिन्दू या मुसलमान ?"

"मिस्टर अकरम, तुम नहीं समझते। तुम एक मुसलमान के फरज (सुपुत्र) हो। तुम्हें सब मुसलमानी हक-हकूक हासिल होंगे।"

"मगर, साहब, हमारा दादा एक हिन्दू था और हम उसकी औलाद होने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दू क्यों नहीं हैं।"

यथार्थ में इन युक्तियों और उक्तियों की भरमार से खान बहादुर घबरा गये थे। उन्होंने पीछा छुड़ाने के लिए कह दिया, "नहीं, साहब, तुम नहीं समझते।"

"अजी, हज़रत, खूब समझता हूँ। आपमें कोई नवाब है, कोई खान बहादुर, कोई खाँ साहब और कोई जागीरदार। आप लोग जो कुछ हैं, अंग्रेज़ी सरकार की मेहरबानी से हैं। इसलिए आप सरकार को, जिसने आपको बड़ा बनाया है, हानि पहुँचती नहीं देख सकते। जब-जब हिन्दुस्तान के आज़ाद होने के लिए कोई मौका आता है, आप लोग घबराकर आज़ादी की तहरीर की मुखालफत करने लगते हैं। यह पाकिस्तान, सच बताइये, इसी घबराहट का नतीजा नहीं है क्या ?"

इस पर खान बहादुर कुछ धीरे से कहने लगे, "मिस्टर अकरम, तुम मेरे दोस्त के साहबज़ादे होकर भी ऐसी बातें करते हो। देखो, मैं तुम्हें राजनीति का एक राज़ (भेद) बताऊँ। तुम विलायत में जाकर भी छोटे तबके के लोगों में रहे हो। मैं उन लोगों की संगत में रहा हूँ जो आज सिर्फ इंग्लिस्तान ही नहीं, बल्कि तमाम सल्तनत पर हुकूमत करते हैं; जिनके इशारों पर इंग्लिस्तान के शाह भी गद्दी से उतारे जा सकते हैं; और जिनकी उँगलियों पर दुनिया-भर की कौमें नाचती फिरती हैं। मैं उनकी बात बताता हूँ। वे लोग भी अपने मतलब के लिए ही इतनी बड़ी सल्तनत चला रहे हैं। आम लोगों के लाभ, तहज़ीब और कल्चर (सभ्यता और संस्कृति) की बातें, इन्सानियत (मनुष्यता) का ढोंग, सब आम लोगों को धोखा देने के लिए है। असली बात तो हुकूमत चलाने वालों की ज़ातीगर्ज़ है। अगर हिन्दुओं के साथ हम शामिल रहते हैं तो वे लोग तादाद, लियाकत, काबलियत और दूरन्देशी में हमसे आगे बढ़े होने से हमेशा हम लोगों को दबाये रखेंगे। ऐसे स्वराज्य से हम लोगों को क्या लाभ ? मुसलमानों में हम लायक़ हैं। अगर मुसलमानों को रियायतें मिलेंगी तो हकीकत में हम लोगों को फायदा होगा।"

इस बात का भाव पूर्ण करते हुए अकरम ने कहा, "और आम मुसलमान तो ज्यों-के-त्यों ही रहेंगे।"

"नहीं, उनको नमाज़ पढ़ने, रोज़ा रखने, हज करने, मसजिदें बनवाने, हिन्दुओं के बाजे बन्द करने, मन्दिर तोड़ने और सैकड़ों और ऐसी ही बातें करने की सहूलियत मिल जायेगी। और वे लोग चाहते भी तो यही हैं। देखो, हम चाहते हैं ताकत, हुकूमत, ऐशो-आराम के सामान और सब किस्म की आज़ादी और आम मुसलमान चाहते हैं मज़हबी जुनून (पागलपन), काफिरों का तहेतेग करना, उनकी बीवियों और लड़कियों से शादी करना। ये दोनों बातें हिन्दुओं के साथ रहकर नहीं हो सकतीं। इसके लिए पाकिस्तान का बनना लाज़िमी है।"

अकरम इस विकृत मानसिक अवस्था को देख चकरा गया। वह तो यह समझता था कि ये लोग, हज़ारों मीलों का सफर तय कर, अपने कामधन्धे छोड़कर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आम खलकत (प्रजा) के हित के लिए एकत्रित हो रहे हैं। उसका विचार था कि ये लोग मनुष्यों के हित-चिन्तन में पागल हुए, शुद्ध हृदय से त्याग कर रहे हैं। अब इनको स्वार्थपरता की नंगी मूर्ति देख वह चकित रह गया। उसकी हैरानी इतनी थी कि उसके मुख से कोई बात नहीं निकली। उसके चुप रहने को उसका निरुत्तर होना समझ एक साहब बोल उठे, "बरखुरदार, तुम अभी कुछ नहीं जानते। यह है राजनीति। इसमें ऐसा ही होता है। यह झगड़ा अगरचे दो कौमों के नाम पर हो रहा है, पर हक़ीकत में यह झगड़ा हिन्दू धनिकों और मुसलमान धनिकों का है। भला, सारी-की-सारी कौम न तो सरकारी नौकरियाँ कर सकती है, न जागीरदारी ही।"

आखिर में अकरम ने एक लम्बी साँस खींचकर कहा, "तो हिन्दू-मुसलमान चन्द लोगों के लाभ के लिए लड़ मरेंगे ?"

"लड़ मरेंगे तो ये अपने पागलपन की वजह से। हाँ, देखना यह है कि इस झगड़े से लाभ हिन्दुओं के बड़े लोगों को होता है या मुसलमानों के बड़े लोगों को।"

मुसलमानों की इस प्रमुख सभा के प्रमुख नेताओं के विचार सुन अकरम का सिर चकराने लगा। वह इन लोगों को सुधार से दूर समझ वहाँ से उठकर बाहर की तरफ चल पड़ा।

उसके मन को भारी चोट लगी। वह हिन्दुस्तानियों की दुर्गति यूरोप के देशों में देख आया था और अब करोड़ों हिन्दुस्तानियों के लीडरों को केवल अपने लाभ के लिए हिन्दुस्तान के हिस्से करते देख, लज्जा से सिर झुकाये, कोठी से बाहर निकल किसी एकान्त स्थान की ओर चला जाना चाहता था।

वह अभी कोठी के बाहर चबूतरे पर ही खड़ा था कि पीछे से नवाब साहब ने पुकारा, "अकरम, अकरम, ज़रा इधर आना।"

अकरम ने घूमकर देखा। नवाब साहब हाथ में एक समाचार-पत्र लिए, कोठी के भीतर, बड़े हॉल में, जहाँ दूसरे मेहमान बैठे हुए थे, जा रहे थे। अकरम को बुलाकर कहने लगे "ज़रा इधर आना, एक काम है।"

अकरम लौट पड़ा और नवाब साहब के पीछे-पीछे फिर कोठी के हॉल में जा पहुँचा। नवाब साहब एक कुर्सी के बाज़ू पर बैठकर बोले, "अकरम, एक रिज़ोल्यूशन का ड्राफ्ट बना देना ज़रा।"

अकरम नवाब साहब का खड़े-खड़े मुख देख रहा था। नवाब साहब ने उसे एक कुर्सी, जो मेज़ के पास रखी थी, दिखाकर कहा, "बैठ जाओ। यह कागज़ और कलम लो।"

अकरम ने नवाब साहब का बढ़िया पार्कर पैन पकड़कर कहा, "क्या लिखूँ ?"

"एक रिज़ोल्यूशन। मैं यह मजलिस की इन्तज़ामिया कमेटी में पेश करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता हूँ ।"

"मगर अब्बाजान, किसकी बाबत रिज़ोल्यूशन होगा ?"

"ओह ! ठीक, यह तो बताया ही नहीं ।"

सब लोग नवाब साहब के चारों ओर एकत्रित हो गये थे । नवाब साहब ने समाचार-पत्र को खोलकर कहा, "मद्रास के कांग्रेसी प्रीमियर का एक बयान छपा है । पहले यह सुन लो तो फिर इसके जवाब में रिज़ोल्यूशन होगा ।" नवाब साहब ने समाचार-पत्र में से पढ़ना आरम्भ कर दिया । लिखा था :

"हिन्दी सब मुल्क की कौमी ज़बान होगी । इसमें कुछ भी सन्देह की बात नहीं है । इस कारण कि कहीं स्वतन्त्र हिन्दुस्तान के राज्य-प्रबन्ध में मद्रास प्रान्त के लोगों का हाथ कम न हो जाये, मैं चाहता हूँ कि मद्रास में अधिकाधिक नवयुवक हिन्दी भाषा सीखने के लिए यत्नशील हों । मैंने हिन्दी को स्कूलों में एक आवश्यक विषय रखकर प्रांत के युवकों के लिए पूर्ण हिन्दुस्तान के व्यापार और भविष्य की सरकारी नौकरियों के द्वार खोल दिये हैं । मेरी आत्मा जानती है कि मैं हिन्दी के विषय में जो हठ कर रहा हूँ, वह प्रान्त के भविष्य को अधिक उज्ज्वल करने के लिए कर रहा हूँ ।"

इतना पढ़कर नवाब साहब ठहर गये । अकरम इस वक्तव्य में कोई आपत्ति-जनक बात न देख सबका मुख देख रहा था । मजलिस-तन्ज़ीमे-इस्लाम के नेता लोग क्रोध से लाल-पीले हो रहे थे । अकरम ने पूछा, "अब्बाजान, क्या लिखा जाये ?"

"बस, इसके खिलाफ लिख दो ।"

"मुझे तो इसके खिलाफ लिखने को कुछ सूझ ही नहीं रहा ।"

"बस, लिख दो कि यह बयान मुस्लिम मफाद के खिलाफ है ।"

"मुसलमानों के खिलाफ इसमें क्या है ?"

"उफ ! तुम तो कुछ समझते ही नहीं । मैं तुम्हारे जितनी अंग्रेज़ी जानता होता तो लिखकर रख भी देता ।"

"अब्बाजान, हिन्दुस्तान की ज़बान तो हिन्दी होगी, क्योंकि कसीर तादाद में लोग हिन्दी पढ़-लिख सकते हैं । मुसलमान जो पंजाब और सिन्ध में रहते हैं उनको कुछ समय के लिए फारसी हरुफ इस्तेमाल करने की इजाज़त दे दी जायेगी, मगर इन गैर-मुल्की हरुफों को हम हिन्दुस्तान में हमेशा के लिए रहने देंगे, यह शायद मुमकिन नहीं ।"

यह बात भी अकरम हिन्दुस्तानी युवक-संघ के साहित्य में से पढ़कर आया था और उसके मन लगी थी ।

"ओह ! तो तुम यह समझते हो कि ये फारसी हरुफ यहाँ नहीं रह सकेंगे ?"

"नहीं । कुछ वक्त के लिए रियायतन फारसी हरुफ पढ़े-लिखे लोगों के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहने दिया जायेगा। मगर ये हरुफ विदेशी हैं, कम हिन्दुस्तानी इन्हें पढ़ते हैं, और फिर इनमें कोई विशेष साहित्य हो, ऐसी बात भी नहीं। क्यों इनको गले बाँध रखा जाये? मुगलों के ज़माने में मुगल बादशाह ईरानी होने की वजह से ईरानी हरुफों में लिखत-पढ़त करते थे। अब वे नहीं रहे। न ही उनके फिर हिन्दुस्तान में हुक्मरान होने की उम्मीद है। तो हम क्यों इन हरुफों को गले में बाँध रखें?"

नवाब साहब आजकल अकरम की बातों को पसन्द नहीं करते थे। अब फिर इस तरह सबके सामने अकरम को अपने राजनैतिक विश्वास पर टीका-टिप्पणी करते देख चिढ़ गये। बोले, "छोड़ो कलम, तुम नहीं लिख सकोगे।"

"हाँ, अब्बाजान, मुल्क के साथ यह गद्दारी मुझसे नहीं हो सकती।"

इतना कह अकरम जल्दी-जल्दी कोठी से बाहर निकल गया।

: १५ :

अकरम कोठी से निकला तो सीधा विनोद के घर पहुँचा। विनोद अपनी परीक्षा की तैयारी में लगा था, इस कारण वह घर से बाहर बहुत कम निकलता था और उसे अकरम से मिले एक महीने के लगभग हो चुका था। वह एकाएक अकरम को धड़ाधड़ अपने कमरे में घुसते देख समझा कि सलीमा की कुछ खबर लाया है। इसलिए उसने अकरम से उसके कुर्सी पर बैठते ही पूछा, "क्या कलकत्ते से कोई चिट्ठी आई है?"

"नहीं, भैया विनोद, तुमने मुझे पता तो ठीक दिया था? दो चिट्ठियाँ लिख चुका हूँ। कुछ तो उत्तर आना चाहिये था।"

"पता तो ठीक दिया था। लो देखो," इतना कह उसने अपनी मेज़ की दराज से एक पथिक की चिट्ठी निकालकर दिखाई। उस पर पता छपा था, १०५, रासबिहारी एविन्यू।

"मिस्टर पथिक यहाँ, लखनऊ में, पन्द्रह-बीस दिन तक आने वाले हैं। तब तक मेरी परीक्षा समाप्त हो जायेगी। फिर हम इस स्कीम को सुचारु रूप से चला सकेंगे।"

"लेकिन सलीमा ने चिट्ठी क्यों नहीं लिखी? मुझे तो यह आशा नहीं थी।"

"तो कलकत्ते से क़ोई चिट्ठी नहीं आई? शेखरानन्द पिछले सप्ताह कलकत्ते गया था। उसने सलीमा को वहाँ देखा था। सलीमा ने बताया तो कुछ नहीं, परन्तु दादा का अनुमान है कि वह चिंतित थी। वह डॉक्टर घोष के मकान पर उनकी लड़कियों के साथ रहती है और नित्य संघ के दफ्तर में काम करने जाती है।"

"मगर मेरी चिट्ठी का उत्तर क्यों नहीं दिया?"

"आपने चिट्ठी स्वयं डाक में जाकर डाली थी?"

"खुद? क्यों? खुद तो डालने नहीं गया। रोज़ डाक छोड़ने चपरासी जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो बस ठीक है। एक बार सलीमा की एक चिट्ठी भी चपरासी से नवाब साहब ने रोक ली थी।"

"मगर क्यों?"

"यह तो मैं नहीं जानता, परन्तु है बात सत्य। सलीमा ने मुझे बताया था।"

अकरम के मुख पर घृणा का भाव प्रकट होने लगा। वह कुछ देर तक विचार-मग्न रहा। फिर कहने लगा, "मैं आज ही कलकत्ते के लिए रवाना हो जाऊँगा। मुझसे यह नादिरशाही नहीं सही जा सकती।"

"मैं तो यह समझ रहा था कि आप कलकत्ते में हैं।"

"मैंने चला जाना था; लेकिन एक तो सलीमा का जवाब नहीं आया; दूसरे, अंजुमन-तन्ज़ीम-ए-इस्लाम का जलसा है। मैंने समझा था कि उन पर अपने विचारों का प्रभाव डाल सकूँगा।"

"परन्तु जलसा तो अभी होगा न?"

"हाँ, परसों है। परन्तु मुझे उसमें अरुचि हो गई है। वे और मैं ज़मीन और आसमान में विचरते हैं।"

अकरम उलटे पाँव कोठी को लौट आया। आते ही उसने नौकर को बुला कलकत्ता जाने की तैयारी कर दी। डाक ले जाने वाले चपरासी को बुलाकर बहुत डाँटा तो वह बक गया। उसने कहा, "हुज़ूर, बड़े सरकार का हुक्म है कि घर-भर की डाक जाने से पहले उनको दिखाई जाया करे और वह कुछ चिट्ठियाँ निकाल लिया करते हैं।"

अकरम ने और कुछ नहीं कहा। जब उसका बिस्तर और सूटकेस मोटर गाड़ी पर रखा जा रहा था तो नवाब साहब ने देख लिया। पूछा, "ड्राइवर, कौन जा रहा है?"

"हुज़ूर, छोटे सरकार स्टेशन पर जा रहे हैं।"

इतने में अकरम नीचे उतर आया।

"शाहज़ादा, साहब की सवारी किधर जा रही है?"

"अब्बाजान, सलीमा से मिलने जा रहा हूँ।"

"सलीमा से? तुमको यह पता होना चाहिए कि उसने हमारी कितनी बदनामी की है। उस बदकार लड़की ने मुझे कहीं का नहीं रखा। मैं नहीं चाहता कि तुम......।"

अकरम के दिल पर छुरियाँ चल रही थीं। वह और ज़्यादा सुन नहीं सका। लपककर मोटर में सवार हो गया और बोला, "अब्बाजान, गाड़ी का वक्त हो गया है, खुदा हाफिज़।"

गाड़ी भर्र से स्टार्ट हो निकल गई और नवाब साहब मुँह देखते रह गये।

मिस्टर तकी ज़िला मुरादाबाद के रहने वाले थे। कोठी के बाहर चबूतरे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़े बाप-बेटे में झगड़ा सुन रहे थे। जब मोटर चली गई और नवाब साहब सिर झुकाये चबूतरे पर चढ़ रहे थे तो मिस्टर तकी उनके पास पहुँच पूछने लगे, "कहाँ गये हैं मिस्टर अकरम ?"

"भाईजान, क्या करूँ ? इन भाई-बहिन ने मेरे तो नाक में दम कर रखा है।"

मिस्टर तकी ने नवाब साहब के कान में कुछ कहा।

"मगर यह होगा कैसे ? कौन करेगा इसको ?"

"आप कितना रुपया खर्च करने को तैयार हैं ?"

"कितना खर्च करने से काम चल जायेगा ?"

"पाँच-छः हज़ार इस काम के लिए और अन्दाज़न बीस-तीस हज़ार मुकदमा लड़ने के लिए। मुकदमा नाकामयाब होने पर उसके घरवालों को पैंशन।"

"कोई मिला दो न। मैं तो बहुत तंग आ गया हूँ।"

"आदमी तो ऐसा दूँ कि काम पूरा करके ही छोड़ेगा।"

: १६ :

सलीमा पथिक को अपने मन की बात पूरी-पूरी नहीं बता सकी थी। वह समझती थी कि पथिक कहेगा कि वह उससे प्रेम नहीं करता। परन्तु पथिक ने यह नहीं कहा। उसने जो आपत्ति उठाई थी वह प्रेम के आधार पर नहीं थी, प्रत्युत् दोनों में परिवार-सम्बन्धी तथा मज़हब-सम्बन्धी अन्तर के आधार पर थी। सलीमा अपने मन के भावों को मन के उद्‌गारों के कारण प्रकट नहीं कर सकी। वह जब बैठक से निकली तो कल्याणी के कमरे में चली गई। कल्याणी ने सलीमा के पीतवर्ण मुख को देख समझ लिया कि झगड़ा हो गया है। उसने कहा, "दीदी···!"

और आगे पूछने का वह साहस नहीं कर सकी। सलीमा अपने पलंग पर लेट गई और उसने चादर से अपना मुख ढक लिया। इस समय मिलिन्द भी आ गई। वे दोनों सलीमा के पलंग पर बैठ गईं। सलीमा को कल्याणी ने फिर पुकारा, "दीदी !"

सलीमा ने मुख से चादर नहीं उठाई। तब मिलिन्द ने गले में बाँह डालकर चादर मुख से खींच ली और बोली, "सलीमा बहिन, भैया का मतलब तुम नहीं समझीं। उसका मतलब यह नहीं था जो तुम समझी हो।" सलीमा की आँखें आँसुओं से भर रही थीं। सलीमा चुप थी और छत की ओर देख रही थी। यथार्थ में उसे बहुत दुःख हुआ था और वह अभी भी बोलने में अशक्त थी। मिलिन्द ने फिर कहा, "उसने तो केवल यह कहा है कि वह तुमको हाँ कैसे कर सकता है। संसार की दृष्टि में वह तुमसे छोटा है। बहिन, यह कोई रोने की बात थोड़े ही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलिन्द ने अपने रूमाल से सलीमा के आँसू पोंछने शुरू कर दिये। सलीमा भी उठकर बैठ गई और बोली, "तो तुम क्या समझती हो कि मैं यह समझती नहीं ? मुझे तो अफसोस इस बात का हुआ है कि इतनी देर में वह यह नहीं समझे कि इन बातों की, जिनका उन्होंने ज़िक्र किया है, मैं कुछ कीमत नहीं समझती। नवाबी का शौक होता तो लखनऊ और औरंगाबाद में बहुत मिल सकती थी। मुसलमानी आपने मेरे में क्या देखी है ? ये बाधायें उनके मन में कहाँ से आईं ?"

मिलिन्द ने कहा, "यही तो मैं कह रही हूँ कि संसार ऐसा कहता है। इस कारण, बहिन, यह तुम्हारा काम था कि तुम उनको बता देतीं कि तुम इन बातों को बाधा नहीं समझतीं।"

"तो क्या यह मैंने अपने आचरण से सिद्ध नहीं कर दिया है ? इसको मैं अपना अपमान समझती हूँ। अब तो मैंने एक बात का निर्णय लिया है कि मैं उन्हें यह बात अपनी ज़िन्दगी से स्पष्ट कर दूंगी कि मैं उन्हें छोटा नहीं, अपने से बड़ा समझती हूँ। मैं उन्हें हिन्दू नहीं मानती। मेरे दिमाग में तो वह एक हिन्दुस्तानी, एक आला हिन्दुस्तानी ही हैं। उनके देवी-देवता उनके हैं, मुझे उनसे कोई मतलब नहीं है।"

मिलिन्द ने सलीमा को गले से लगा लिया और बोली, "हम तुम्हें मुसलमान तो कभी नहीं समझते थे। हम तो तुम्हें एक हिन्दुस्तानी लड़की ही मानते रहे हैं। परन्तु अब जो बात तुमने कही है, उससे तो मैं समझती हूँ कि तुम श्रद्धा और भक्ति में एक हिन्दू औरत को भी मात कर गई हो। प्राचीन काल की हिन्दू स्त्रियों में यदि कोई खूबी की बात रही है और जो आजकल की यूरोपियन सभ्यता में पली स्त्रियों में नहीं है, तो वह यही है कि वे पग-पग पर 'माई डियर', 'डार्लिंग', 'माई लव' इत्यादि शाब्दिक प्रेम-प्रलाप न करके अपने क्रियात्मक जीवन से अपने पति को मन का देवता बना रखती थीं। तुममें यह भावना देखकर तुम्हें तो कोई भी कट्टर हिन्दू ही मान लेगा।"

अब तक सलीमा अपने मन में अपना व्यवहार तय कर चुकी थी। उसने कहा, "बहिन, अब तो मुझे आपका घर छोड़ना ही होगा।"

ये शब्द मिलिन्द की माँ ने सुन लिए थे। वह उसे मनाकर वापस पथिक के पास ले जाने के लिए आई थी। उसने कहा, "नहीं, नहीं, बेटी, ऐसा नहीं हो सकता। भला हमसे तुम क्यों नाराज़ हो ? हम तुम्हारी यह बात नहीं मान सकते। देखो, डॉक्टर साहब के आने का समय हो गया है और मैं चाहती हूँ कि तुम उसे चलकर यह कह दो कि जैसा वह है वैसा ही तुम्हें स्वीकार है। बस, इतनी ही तो बात है।"

कल्याणी अभी तक चुप थी और वार्तालाप में कोई भाग नहीं ले रही थी। उससे अब नहीं रहा गया। कहने लगी, "माँ, अन्धे को दीपक दिखाने से क्या होता है ? क्या भैया को अभी तक ज्ञात नहीं हुआ कि उसके ही लिए माँ, बाप, भाई सब-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ छोड़ा गया है ? पुरुष सब अन्यायी होते हैं। उनके लिए जो कुछ भी किया जाये, वे कम समझते हैं। देखो, सलीमा दीदी, यहाँ से मत जाना। जरूरत है तो भैया यहाँ आकर क्षमा माँग लें। नहीं तो जायें जहाँ उनकी इच्छा है। मैं तो उनका मुँह भी देखना नहीं चाहती।"

माँ ने त्योरी चढ़ाकर कल्याणी को देखा। वह उसे डाँटने ही वाली थी कि सलीमा ने कहा, "माँजी, मुझे बातें करने का ढंग नहीं आता। मैं उनसे अब कुछ नहीं कहूँगी। मैं अपना जीवन ऐसा बनाना चाहती हूँ कि उनको मेरे इस कहने की आवश्यकता ही न जान पड़े। मैं तो समझी थी कि मैं अपने रहन-सहन और व्यवहार से उन तक पहुँच गई हूँ, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि मेरी तपस्या में अभी कमी है। मुझे अभी अपने जीवन को और पाक करना चाहिये। मैं बातों से किसी के मन को जीतना नहीं चाहती। आप उनसे कह दें कि मेरी तपस्या में कुछ त्रुटि रह गई है। उसे पूरी कर मैं फिर चरणों में उपस्थित होऊँगी। अभी मुझे क्षमा करें।"

"नहीं, बेटी, ऐसा न कह······।"

"नहीं, माँजी, अभी नहीं। मुझे क्षमा करें और यदि आपने उन्हें या मुझे मजबूर किया तो मैं आत्मघात कर लूंगी।"

मिलिन्द की माँ लौट गई। सलीमा ने मिलिन्द और कल्याणी से कह दिया, "मैं कल अपने रहने के लिए स्थान ढूंढ़ लूंगी और आप बहिनों से अपनी भूल-चूक के लिए क्षमा माँगती हूँ।"

मिलिन्द ने बहुत समझाया कि यह कलकत्ता है। यहाँ मकान मिलना और फिर अकेले रहना बहुत कठिन है, परन्तु सलीमा बोली, "कोशिश तो करने दो, बहिन। नहीं मिलेगा तो फिर विचार कर लिया जायेगा।"

रात को कल्याणी और सलीमा एक ही कमरे में सोती थीं। आज दोनों एक ही पलंग पर सो रही थीं। कल्याणी समझती थी कि सलीमा को रोकने के स्थान उसे अपने विचारों की पूर्ति में सहायता देनी चाहिये। वह माँ और मिलिन्द की भाँति शिक्षा के स्थान सहानुभूति का बर्ताव रखना अधिक उचित समझती थी। बहुत कहने और कई प्रकार के आश्वासन दिलाने के पश्चात् सलीमा मान गई।

उसने कहा, "अच्छी बात है। मैं तुमसे छुपाकर कुछ नहीं करूँगी। तुम मुझे मिला करोगी, मगर कुछ शर्तें हैं जो तुम्हें माननी होंगी। पहली, यह कि किसी को यानी माँजी, मिलिन्द, अपने भैया अथवा पिताजी को भी नहीं बताना होगा कि मैं कहाँ हूँ, क्या करती हूँ और किस प्रकार अपनी बात उनके मन पर अंकित करने का यत्न कर रही हूँ। दूसरी, यह कि मुझे मेरी स्कीम में सहायता देनी होगी। और बाकी बात फिर बताऊँगी। बहिन कल्याणी, मैं यह उनको दिखा देना चाहती हूँ कि उनके प्रेम के सम्मुख मेरे लिए और कोई भी वस्तु कुछ भी कीमत नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखती ।"

समझौता हो गया। अगले दिन कल्याणी की एक सहेली, जो कॉरपोरेशन में एक स्कूल की मुख्य अध्यापिका थी, सलीमा को अपने पास रखने के लिए तैयार हो गई। सलीमा स्वयं रोती हुई और घर-भर को रुलाती हुई डॉ० घोष के घर से अकेली विदा हो गई। घर-भर में से कल्याणी ही एक थी जो गम्भीर विचार में पड़ी सोच रही थी और कुछ नहीं कर रही थी।

: १७ :

इस दिन मिलिन्द कुछ देरी से संघ के दफ्तर में पहुँची। पथिक उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसके आते ही पूछने लगा, "मिलिन्द बहिन, सफलता हुई ?"

मिलिन्द ने सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं मानी। आज चली गई है।"

"कहाँ ?"

"बता नहीं गई।"

"माँजी ने और तुमने उसे रोका नहीं ?"

"वह नहीं मानी।"

पथिक चुप था। कुछ देर चुपचाप बैठा रहा। पश्चात् एक लम्बी साँस खींचकर अपने काम में लग गया।

आज कॉलेज के पश्चात् कल्याणी भी संघ के दफ्तर में आई थी और बहुत देर तक बैठी रही। मिलिन्द जब दिन-भर का काम समाप्त कर चुकी तो उठी।

मोहन देवा गया हुआ था। संघ के दफ्तर में अकेला पथिक रहता था। मिलिन्द और कल्याणी जब वहाँ से जाने लगीं तो कल्याणी ने कहा, "दादा, यहाँ बैठे अब क्या करोगे ? चलो हमारे साथ। हम झील पर घूमने जा रहे हैं।"

मिलिन्द ने अचम्भे में कहा, "झील पर ?"

"हाँ, हाँ, मैं माँजी से कह आई हूँ और यह भी कह आई हूँ कि आप खाना वहीं खायेंगे।"

सब झील की ओर चल पड़े। रासबिहारी एविन्यू से बालीगंज की ट्राम में बैठ वे वहाँ से पैदल झील पर जा पहुँचे। पथिक अपना प्रोग्राम बता रहा था, "सबसे पहले संयुक्त प्रांत में काम होगा। संयुक्त प्रांत को दो सौ हलकों में बाँट दिया है। एक-एक हलके में पाँच-पाँच विद्यार्थियों की मण्डली काम करेगी। सब मण्डलियों को अपने-अपने हलके का भूगोल समझा दिया गया है। उनका दो मास का प्रोग्राम भी निश्चित कर दिया गया है। प्रत्येक बीस हलकों पर एक अधिकारी नियत कर दिया है और तमाम प्रांत-भर का एक नेता। संयुक्त प्रांत में शेखरानन्द प्रांत-भर का नेता नियत किया गया है। पन्द्रह अप्रैल से काम आरम्भ हो जायेगा। एकदम एक ही दिन प्रांत-भर में दो सौ स्थानों पर एक ढंग का प्रचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ हो जायेगा। काम आरम्भ होने के दिन मैं इलाहाबाद में रहूँगा। जब कार्य चल पड़ेगा तो पंजाब में संगठन पूरा करने के लिए मैं वहाँ चला जाऊँगा। वहाँ मिस पुरी प्रबन्ध कर रही है।"

"मोहन भैया कब तक लौटेंगे?" कल्याणी ने पूछा।

"वह अभी जल्दी यहाँ नहीं आयेगा। देवा से चलकर वह इलाहाबाद में मुझे मिलेगा। संयुक्त प्रांत वालों को रुपया बाँटना है। मोहन इलाहाबाद में ही रहेगा। जब मैं पंजाब से लौटूँगा तब वह भी मेरे साथ लौट आयेगा।"

इस समय वे झील के किनारे चलते हुए एक ऐसे कोने में जा पहुँचे थे, जहाँ सिर्फ दो औरतें बैठी थीं। उनमें से एक मुसलमानी थी। उसने पथिक की पार्टी को दूर से आते देख बुर्का नीचे कर लिया था। दोनों एक बेंच पर बैठी हुई थीं। समीप पहुँचने पर कल्याणी ने बिना बुर्के वाली को पहचान लिया था। उसने मिलिन्द से कहा, "वह विभूतिदेवी बैठी है।"

मिलिन्द, जो पथिक की बातों में लीन थी, विभूति का नाम सुन उधर देखने लगी। "यह साथ कौन है?" उसने पूछा।

"उनके स्कूल में एक उर्दू टीचर रखी गई है। शायद वही होगी।"

इस समय तक वे सब भी उसी बेंच के पास पहुँच गये थे। मिलिन्द और कल्याणी पथिक को पीछे छोड़ विभूतिदेवी से मिलने के लिए चली गईं। कुशल-मंगल पूछने के पश्चात् विभूतिदेवी ने पथिक की ओर संकेत कर पूछा, "मिलिन्द, यह कौन हैं?"

"भैया पथिक। वही, युवक-संघ के कर्ता-धर्ता।"

"ओह! तो तुम इनसे परिचय नहीं कराओगी?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं? आओ, अभी करा दूँ।" मिलिन्द यह कहती हुई विभूतिदेवी का हाथ पकड़कर पथिक के समीप ले गई। कल्याणी उस बुर्के वाली औरत के पास बैठकर बातें करने लगी।

"सलीमा बहिन!"

"बहिन, शुक्रिया। और दूसरी बात?"

"हाँ, वह भी। यह लो।" इतना कह उसने एक चाबी निकालकर सलीमा के हाथ में दे दी। सलीमा ने उसे बुर्के के अन्दर छिपा लिया। अब कल्याणी कहने लगी, "यहाँ से वे लखनऊ और इलाहाबाद जायेंगे। वहाँ से लाहौर। लाहौर से वापस इलाहाबाद और फिर कलकत्ते का प्रोग्राम है। तारीखें फिर बताऊँगी।"

इतने में मिलिन्द, विभूतिदेवी और पथिक धीरे-धीरे चलते हुए बेंच के पास आ पहुँचे। सलीमा और कल्याणी बेंच से उठ खड़ी हुईं। पथिक ने कहा, "बैठी रहो, बैठी रहो।"

विभूतिदेवी ने कहा, "यह हमारे स्कूल में उर्दू टीचर लगी हैं। अभी नई-नई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते में आई हैं। इन्हें घूमने का बहुत शौक है। मेरे साथ झील देखने चली आई हैं।"

इसके पश्चात् पथिक ने विभूतिदेवी को नमस्ते की। बुर्के वाली औरत ने विभूतिदेवी के कान में कुछ कह दिया। विभूतिदेवी ने मुस्कराते हुए पथिक की ओर देखकर कहा, "यह आपको सलाम कहती हैं।"

पथिक ने कह दिया, "तसलीमात।"

पश्चात् पथिक की मण्डली चली गई। विभूतिदेवी और वह बुर्के वाली औरत फिर बेंच पर बैठ गईं। विभूतिदेवी ने कहा, "सलीमा, चाबी मिली?"

"हाँ, मिल गई और प्रोग्राम भी कुछ-कुछ पता चल गया है। वह यहाँ से लखनऊ जायेंगे और फिर इलाहाबाद। वहाँ से लाहौर और वापस यहाँ। और हाँ, मेरा नाम तुमने इनको क्या बताया है?"

"असगरी बेगम।"

"बहुत ठीक, परन्तु घर पर मैं हूँगी कीर्तिदेवी। देखो, आज का दिन बहुत मुबारक है। एक तो मैं तुम्हारे घर में आई; दूसरे, मुझे एक सौ तीस रुपये की नौकरी मिल गई; तीसरे, यह चाबी और उनके दर्शन। आज किसी भाग्यवान का मुख देखा है।"

विभूतिदेवी ने पूछा, "और हाँ, नौकरी कैसी है? देखना, जिस मार्ग पर तुम चल पड़ी हो उसमें यह ज़रूरी है कि चरित्र पर दाग न लगने पाये। नहीं तो कुछ फल न होगा।"

"कैसी बातें करती हो, बहिन, तुम! वे बहुत भले लोग प्रतीत होते हैं। डॉक्टर घोष कभी-कभी उनका ज़िक्र किया करते थे। सेठ कुंजबिहारी मालिक 'सेठ एण्ड कम्पनी' कलकत्ते के नामी आदमी हैं। मैं जब घर से निकली तो वहीं जाना चाहती थी और आशा रखती थी कि वे मेरी सहायता करेंगे। मैं गई और अपनी इत्तला कराई। सेठ साहब साठ वर्ष के वृद्ध हैं। मैं गई तो पूछने लगे, 'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'

"मैंने कहा, 'नौकरी की खोज में हूँ। क्या आप मुझे कोई काम दे सकते हैं?'

'कितनी पढ़ी-लिखी हो?'

'वैसे तो इण्टरमीडियेट पास हूँ, मगर मेरी अंग्रेज़ी, उर्दू और हिसाब की लियाकत किसी ग्रेजुएट से कम नहीं है। आप मुझसे कोई ड्राफ्ट बनवाकर देखिये।'

"उन्होंने बर्न एण्ड कम्पनी की फाइल मेरे सामने रख दी और उनकी आखिरी चिट्ठी मुझे देकर कहा, 'इसे पढ़ो और फिर इस चिट्ठी का जवाब बना दो। उस मेज़ पर जा बैठो और इतमीनान से जवाब बनाओ। घबराओ नहीं।'

"मैं फाइल और चिट्ठी लेकर मेज़ पर जा बैठी। सारी फाइल को पढ़कर समझने में एक घण्टा लगा। जब बात मेरी समझ में आ गई तो मैंने चिट्ठी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाब लिख दिया।

"चिट्ठी पढ़ सेठ साहब ने टाइपिस्ट को दे दी। जब चिट्ठी टाइप हो गई तो उन्होंने कम्पनी के जनरल मैनेजर को बुलवाया और टाइप किया हुआ ड्राफ्ट उसको दिखाकर कहने लगे, 'यह लड़की नौकरी की तलाश में आई है। मैंने बिना कुछ कहे फाइल दिखाकर इसका जवाब लिखकर लाने को कहा। इसने यह जवाब लिखा है। आप क्या समझते हैं?'

"जनरल मैनेजर ने मेरे उत्तर को पढ़ा और कहा, 'बहुत अच्छा लिखा है। क्या वेतन माँगती है?'

"मुझे बुलाकर सेठ साहब ने पूछा, 'क्या वेतन लोगी?'

"मैंने कह दिया, 'जनाब, माँगने से तो कुछ मिलता नहीं। आप जो मुनासिब समझें, कह दें। मेरा गुज़र न हो सकेगा तो ना कर दूँगी।'

"सेठ साहब ने मैनेजर के मुख पर देखा। मैनेजर ने कह दिया, 'एक सौ तीस आरम्भ में। एक वर्ष के पश्चात् एक सौ पचास, फिर दस रुपये वार्षिक उन्नति।'

"मैंने कह दिया, 'मंजूर, मगर नौकरी छोड़ने पर नोटिस कितने दिन का होगा?'

"मैनेजर ने कहा, 'अभी नौकरी लगी नहीं और छोड़ने की बात पहले ही तय कर रही हैं? हमारे यहाँ नौकरी के नियम बने हुए हैं, जिन्हें आप देख सकती हैं।'

"मैंने मंजूर कर लिया है। सेठ साहब ने मेरे सामने फाइलों का ढेर लगा दिया और कहा, 'अच्छी बात, आज से ही शुरू कर दो।'

"मैं साढ़े नौ बजे सेठ एण्ड कम्पनी में दाखिल हुई थी और ग्यारह बजे काम पर बैठ गई। पाँच बजे काम बन्द हो गया। मुझे चिट्ठियों के ड्राफ्ट बना-बनाकर चपरासी के हाथ मैनेजर के पास भेजने होते हैं। वह थोड़ा-बहुत संशोधन कर टाइपिस्ट के पास भेज देते हैं। टाइप होकर सेठ साहब के दस्तखत होकर चिट्ठी डिस्पैचर के पास चली जाती है। इस प्रकार आज मैंने सात-आठ चिट्ठियाँ लिखी हैं और चार रुपये की मज़दूरी कर घर लौट आई हूँ।

"जनरल मैनेजर भी बहुत भले आदमी प्रतीत होते थे। उनका नाम है मिस्टर सक्सेना। ठीक पाँच बजे उनकी बीवी अपने बच्चे को साथ लिये वहाँ पहुँच गई। मैं अभी काम बन्द ही कर रही थी कि मिस्टर सक्सेना मिसेज़ सक्सेना को लेकर मेरे पास आ गये और बोले, 'कीर्तिदेवी, यह मेरी धर्मपत्नी श्रीमती तपस्विनीदेवी हैं। आपसे परिचय चाहती हैं। और यह देखो, यह बन्दर मास्टर सक्सेना है। बाप के कान मरोड़ने में इसे बहुत मज़ा आता है।'

"तपस्विनी चाहती थी कि मैं उनके घर चलूँ। मगर मैंने कहा, 'अभी मैं नहीं जा सकती। मेरी बहिन मेरी प्रतीक्षा में होगी।' "

दोनों इसी प्रकार की बातें करती-करती धीरे-धीरे झील से चल पड़ीं। अँधेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो रहा था। वे रासबिहारी एविन्यू के लिए ट्राम में बैठ गईं।

: १८ :

पथिक डॉ॰ घोष के यहाँ से बहुत रात गये लौटा था। आते ही विस्तर पर लेट गया और गहरी नींद सो गया। प्रातःकाल उठकर अपने नित्य प्रति के संगीत के अभ्यास में लग गया। वह गाने लगा :

मेरा मन भूला-भूला रे।
घटाटोप अँधेरा छाया, मन में मोह, मलिन, मद, माया।
हाथ पसारे कछु नहीं आया, मन मेरा प्रतिकूला रे ।।
मेरा मन भूला-भूला रे।

आज पथिक का मन संगीत में नहीं लगा। वह जल्दी ही आसन से उठ बैठा और नित्य से जल्दी ही प्रातः-भ्रमण के लिए निकल गया। भ्रमण में भी चित्त की अवस्था वैसी ही थी। पाँव कहीं जा रहे थे, परन्तु मन उधर नहीं था। मन जीवन की समस्याओं को सुलझाने में लगा था। वह सोच रहा था, 'मैं कौन हूँ? यह सब प्रयास किसके लिए कर रहा हूँ? मुझे इससे क्या मिलेगा? विप्लव यदि सफल भी हो गया तो क्या होगा? कुछ वर्ष के पश्चात् मर जाना है। पीछे फिर मैं रहूँगा या नहीं। क्या मनुष्य ही बना रहूँगा? मान लो, पुनर्जन्म का सिद्धान्त सत्य है तो भी मैं मनुष्य-जन्म पाऊँगा क्या? और मनुष्य होकर भी हिन्दुस्तान में हिन्दू बनूँगा क्या? और फिर क्या मुझे स्मरण रहेगा कि यह विप्लव से उत्पन्न स्वतन्त्रता मेरे ही विपुल प्रयत्न का फल है? असम्भव है। तो फिर यह मैं किसलिए कर रहा हूँ? क्या यह सब माया नहीं है? इस माया के लिए ही क्या मैंने सलीमा को छोड़ दिया? क्या वर्तमान को अनिश्चित भविष्य के लिए त्याग देना बुद्धिमत्ता है?'

ये अण्टशण्ट विचार, इस समय जब उसकी वृहत् योजना का आरम्भ होने वाला था, उसके मन में एकाएक उत्पन्न हो उसे कर्त्तव्य से विमुख कर रहे थे। वह मन में सोच रहा था कि क्या यह अच्छा नहीं कि इस सब झंझट को छोड़-छाड़कर वह हिमालय की शरण में चला जाये। वहाँ शांति थी, यहाँ अशांति है। देवा का दृश्य कितना सुन्दर था। कितना सुख और शांति थी वहाँ। अब उसे नलिनी स्मरण हो आई। कैसी भोली लड़की है। कैसी मीठी-मीठी बातें करती है। वह मन में निश्चय कर कि काम मिलिन्द के हाथ में छोड़ एक बार देवा हो आवे; घर की ओर लौट पड़ा।

उस दिन पूजा के पश्चात् वह फिर प्रातःकाल के विचारों में लीन हो गया। दस बजे बाहर बैठक में मिलिन्द के आकर बैठने की आहट हुई तो वह उठ, कपड़े पहन, बैठक में चला आया और डाक देखने लगा।

अभी डाक समाप्त नहीं हुई थी कि बेनी ऊपर आया और बोला, "गुरुदेव, आपसे कोई मिलना चाहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नाम बताया है ?"

"जी, अकरम, लखनऊ से।"

"ले आओ।"

पथिक ने कह तो दिया, परन्तु उसका मुख मलिन हो गया। वह सोचता था कि यह भद्र पुरुष दो दिन पूर्व क्यों नहीं आ गया।

अकरम के आने पर पथिक ने उठकर स्वागत किया और उससे पूछा, "कहाँ ठहरे हैं आप ?"

"होटल में ठहरा हूँ। असबाब वहाँ रख पहले यहाँ आना ज़रूरी समझ चला आया हूँ। कहाँ है मेरी बहिन ?"

मिलिन्द पथिक को दोषियों की भाँति निरुत्तर देख बोल उठी, "आपकी प्रतीक्षा तो कई दिन से थी। यदि आप दो दिन भी पहले आ जाते तो बात शायद यहाँ तक नहीं पहुँचती।" मिलिन्द ने सलीमा के आने और उसके उनके घर से विदा होने तक की कथा ज्यों-की-त्यों सुना दी।

अकरम अवाक् मुख बैठा रह गया। वह भी सोचता था कि उसने आने में देरी क्यों की। उसने पूछा, "आपने उसे ढूँढ़ने की कोशिश नहीं की ?"

"वह जाते समय कह गई थी कि ज्योंही वह पक्का ठहरने का प्रबन्ध कर लेगी, हमें लिखेगी और आज प्रातः की डाक से हमारी माताजी को उसकी चिट्ठी आई है। उसमें लिखा है कि वह एक औरत के पास रहती है। उसे एक दुकान पर क्लर्की की नौकरी मिल गई है। वह अब अपने रहने और गुजारे के लिए निश्चिन्त है।"

"क्या मैं वह चिट्ठी देख सकता हूँ ?"

"हाँ, अभी आपको मैं अपने घर ले चलूंगी। चिट्ठी माताजी के पास है।"

अकरम अपने विचारों में खो गया। मिलिन्द और पथिक डाक का जवाब देने में लग गये। बारह बजे तक डाक समाप्त हुई। डाक एकत्रित कर बेनी के हाथ डाकखाने में भेज दी।

पथिक से मिलने के लिए लोगों का आना आरम्भ हो गया था। मिलिन्द अकरम को साथ ले अपने घर की ओर चल पड़ी। जब दोनों ट्राम में बैठे तो अकरम ने कहा, "आपने सलीमा को रोकने की पूरी कोशिश नहीं की मालूम होती।"

मिलिन्द ने व्यंग्य के भाव से कह दिया, "आपके पिता और माता ने पूरी कोशिश की थी तो परिणाम क्या निकला ? हम लोग जबरदस्ती में विश्वास नहीं रखते।"

अकरम चुप था। मिलिन्द ने फिर कहा, "सलीमा बहुत प्यारी लड़की है। उससे मिलकर चित्त प्रफुल्लित हो जाता है। हमारे यहाँ जब तक रही, हँसी से दिन-रात गूँजता रहा। मेरी बहिन कल्याणी तो भैया पथिक से इसी कारण नाराज़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। परन्तु सलीमा भी एक दर्जे की हठी लड़की है। जब उसके मन में आया तो फिर माताजी, पिताजी और मेरे बहुत समझाने पर भी वह नहीं मानी।"

अकरम डॉक्टर घोष के घर पहुँचा तो डॉक्टर साहब घर पर ही थे। दोनों में बहुत सहानुभूतिपूर्ण भेंट हुई। डॉक्टर साहब सलीमा की प्रशंसा करते नहीं थकते थे और सलीमा के चले जाने पर बहुत शोक प्रकट कर रहे थे। मिलिन्द की माँ ने सलीमा की चिट्ठी लाकर अकरम को दिखाई। चिट्ठी पढ़कर अकरम को प्रतीत हुआ कि वह तकलीफ में नहीं है। इस पर भी वह उसे कलकत्ते जैसे बड़े शहर में अकेली रहने देना पसन्द नहीं करता था और वह उसे मिलने के लिए अधीर हो रहा था।

कलकत्ते में वह धीरेन्द्र का पता जानता था। धीरेन्द्र से उसकी बर्लिन में मित्रता हो गई थी और वे दोनों एक ही जहाज़ में मिश्र और मिश्र से बम्बई तक आये थे। बम्बई में विदा होते समय धीरेन्द्र ने उसे अपना कार्ड दिया था और कभी वहाँ आन के लिए आमंत्रित किया था। धीरेन्द्र का पता था : मार्फत नरोत्तमप्रसाद सक्सेना, जनरल मैनेजर, सेठ एण्ड कम्पनी। अकरम ने डॉक्टर घोष से इस कम्पनी का पता पूछा। डॉक्टर घोष ने बताया, "कम्पनी के मालिक और मैनेजर मेरे पुराने मरीज़ों में से हैं। मैं उनके परिवारों का चिकित्सक हूँ और वे बहुत धनी आदमी हैं। बीसियों कारखाने हैं, कई कोयले की खानों के ठेके लिए हुए हैं। बड़ी-बड़ी दुकानें हैं और विदेशों से माल मँगवाने और विदेशों को माल भेजने का बहुत काम होता है। मैनेजर और मालिक इकट्ठे एक ही मकान में रहते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आपस में रिश्तेदार भी हैं। कहिये, परिचय-पत्र दे दूं?"

"हाँ, दे दीजिये। उनसे मेरा परिचय नहीं। शायद वे सलीमा को खोजने में सहायता दे सकें। मैं मिस्टर धीरेन्द्र को जानता हूँ। वह इस कम्पनी के एजेण्ट बन जर्मनी गये हुए थे। हम दोनों वहाँ से इकट्ठे आये हैं।"

डॉक्टर घोष ने एक चिट्ठी सेठ साहब के नाम दे दी। अकरम ने खाना वहीं खाया। पश्चात् वह यह वचन देकर कि शाम को भी खाना वहीं खायेगा, सेठ एण्ड कम्पनी की ओर चल पड़ा। अकरम सलीमा की फिर कोई सूचना पाने की आशा में था। इसी कारण वह डॉक्टर घोष के घर से सम्बन्ध बनाये रखना चाहता था।

: १९ :

सलीमा ठीक दस बजे दफ्तर में हाज़िर हो गई। सेठ साहब ने उसकी मेज़ का मुख दीवार की तरफ करवा दिया था, ताकि आने-जाने वालों का ध्यान उसकी ओर न जाये। सेठ साहब का अनुमान था कि कोई भले घर की लड़की है। किसी मुसीबत के कारण नौकरी करने पर मजबूर हुई है। इस कारण सेठ साहब ने नौकरी देने और अपनी कम्पनी के संरक्षण में लेने का निश्चय तो उसे देखते ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लिया था। बाद में नरोत्तम ने भी जब उसे नौकरी देनी स्वीकार कर ली तो वह प्रसन्न थे। नरोत्तम के मन में ठीक वही विचार उत्पन्न हुए थे जो सेठ साहब के हुए थे। इसी कारण उसने वेतन भी कुछ उदारता से कहा था। साथ ही जब उसकी स्त्री, नित्य की भाँति, दफ्तर में उसे भ्रमणार्थ साथ ले जाने के लिए आई तो उसने उसे समझाकर उससे परिचय करवा दिया। नरोत्तम की इच्छा थी कि दोनों में परिचय हो जाये तो ऐसी लड़की की सहायता की जाये।

सलीमा को आते ही काम मिल गया और वह काम में लीन हो गई। दस बजे से एक बजे तक काम कर वह लंच के लिए जाने लगी तो नौकर चाय और खाने का सामान ले आया। उसने पूछा, "किसके लिए लाये हो?"

"आपके लिए।"

"किसने कहा है?"

"यहाँ सबको मिलता है। सेठ साहब का हुक्म है। यदि यह पसन्द न हो तो और जो कहें आ सकता है।"

सलीमा ने चाय पी और नाश्ता किया। एक-दो अंगड़ाइयाँ लेकर वह अपने काम पर लगने ही वाली थी कि नरोत्तम आ गया। उसने कहा, "कीर्तिदेवीजी, हमारे दफ्तर का दस्तूर है कि दोपहर का नाश्ता यहाँ मिलता है। यह वेतन के अतिरिक्त होता है। आपको यदि यह पसन्द न हो या यदि आप और ज़्यादा कुछ खाना चाहें तो खा सकती हैं। आपके लिए तीस रुपये मासिक इस काम के लिए मंज़ूर हुए हैं। इससे अधिक खर्चा आपको अपने पास से देना होगा।"

"सेठ साहब की बहुत कृपा है। मुझे और कुछ नहीं चाहिये। यह बहुत काफी है।"

"आपने पहले भी किसी दफ्तर में काम किया है?"

सलीमा ने कुछ चौकन्ने होकर कहा, "यह बात तो आपको कल नौकरी देने से पहले पूछनी चाहिये थी।"

नरोत्तम ने कुछ झेंपकर कहा, "इसका मतलब यह नहीं कि आपकी नौकरी पक्की नहीं। मेरे पूछने का अभिप्राय यह था कि मैं आपके ड्राफ्ट देखकर समझा हूँ कि आपको पहले कहीं काम करने का अनुभव है।"

"नहीं, यह मेरी पहली नौकरी है।" इस उत्तर को देते समय सलीमा के गाल लाल हो गये। नरोत्तम ने समझ लिया कि और आगे पूछना शिष्टाचार के विपरीत होगा। इस कारण वह यह कह कि यदि कोई दिक्कत हो तो वह निःशंक होकर बता दे, चला गया।

सलीमा के मन में सन्तोष हुआ और वह काम में लग गई। नरोत्तम अपने कमरे में चला गया। इस समय अकरम दफ्तर में आया। एक चपरासी उसे नरोत्तम के कमरे में ले गया। जाते-जाते उसने सलीमा को देखा। उसे सलीमा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखे पाँच वर्ष से ऊपर हो चुके थे और सलीमा की आकृति में बहुत अन्तर पड़ चुका था। इस पर भी उसे वह कुछ जानी हुई लड़की प्रतीत हुई। पहले तो उसके मन में आया कि जाकर उससे ही पूछ ले। फिर यह सोचकर कि, पहले मैनेजर से मालूम कर लिया जाये तो ठीक है, वह चपरासी के पीछे-पीछे चला गया। सलीमा दीवार की तरफ मुख किये एक चिट्ठी पढ़ रही थी। उसने अकरम को आते नहीं देखा।

नरोत्तम को अकरम ने धीरेन्द्र का कार्ड दिया और बताया, "मैं इनका दोस्त हूँ। मेरा नाम मुहम्मद अकरम है। इनसे कहाँ मिल सकता हूँ ?"

"ओह, आप नवाब मुर्तज़ाअली साहब के फरज़न्द हैं! धीरेन्द्र ने मुझे बताया था। देखिये, यह मिस्टर धीरेन्द्र सिर्फ हमारी कम्पनी के एजेण्ट ही नहीं हैं, प्रत्युत् वह मेरे गहरे दोस्त भी हैं। यह कहो कि मेरे बड़े भाई हैं। वह आजकल कम्पनी के काम से जमशेदपुर गये हुए हैं। आप कहाँ ठहरे हुए हैं ? इस गरीब के घर को आबाद करिये न।"

इस पर अकरम ने डॉक्टर घोष की चिट्ठी निकालकर दिखाई। डॉक्टर साहब की चिट्ठी पढ़ नरोत्तम ने अचम्भा प्रकट करते हुए कहा, "ओह, आप इनको जानते हैं! यह बड़े योग्य डॉक्टर हैं। हमारे सेठ साहब को और मुझे इन पर बहुत विश्वास है। आप सेठ साहब से मिलियेगा ?"

"मिलना चाहूँगा, मगर पीछे। पहले मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ।"

"हाँ, पूछिये ?"

"यह लड़की जो कोने में बैठी है, इसका क्या नाम है ?"

"कीर्तिदेवी।"

"कब से नौकर है ?"

"कल से।"

"मैं समझता हूँ कि यह मेरी बहिन है। मैं इसी की तलाश में यहाँ आया हूँ। मुझे इसे देखे पाँच साल से ऊपर हो चुके हैं। कुछ शक हुआ था, परन्तु अब मुझे यकीन हो गया है। मैं चाहता हूँ कि यह पता निकालूँ कि यह कहाँ रहती है और वहाँ क्या करती है। क्या इसमें आप मेरी मदद कर सकेंगे ?"

नरोत्तम ने कुछ सोचकर कहा, "हाँ, मैं आज ही इसके पीछे एक आदमी भेज दूँगा। कल तक सब बात मालूम हो जायेगी। यह तो मुझे भी शक हुआ था कि यह किसी बड़े घर की लड़की है, मगर यह मुसलमान होगी और एक नवाब साहब की लड़की होगी, मेरे दिमाग में नहीं आ सकता था। आखिर यह घर से निकल क्यों आई है ?"

"यह एक लम्बा किस्सा है। फिर किसी वक्त बताऊँगा। इस वक्त तो मैं इससे मिलना नहीं चाहता। आप यदि यह मालूम कर दें कि यह कहाँ रहती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और क्या-क्या करती है, तो मैं बहुत मशकूर हूँगा। और हाँ, मैं दफ्तर में आपसे न मिलकर कहीं और मिलना चाहूँगा। मैं इसके विषय में सबकुछ जानने के पश्चात् ही इससे मिलना पसन्द करूँगा।"

नरोत्तम ने कहा, "आप चिन्ता न करें। मैं सब प्रबन्ध ऐसे ढंग से करूँगा कि इसे पता नहीं चलेगा। आप कल लंच के समय मुझसे फिरपो रेस्टोरेंट में मिलियेगा। मैं ठीक सवा दो बजे वहाँ पहुँच जाऊँगा।"

इसके पश्चात् अकरम और सेठ साहब में भेंट हुई। तदनन्तर अकरम पिछले दरवाज़े से बाहर निकल गया।

रात को डॉ० घोष के मकान में अकरम ने सलीमा के मिल जाने की बात नहीं की।

: २० :

अकरम आज के काम से सन्तुष्ट था। वह सलीमा का पता पा गया था। वह अब यह जानना चाहता था कि गुप्त रहकर वह क्या करना चाहती है, इसमें उसका क्या प्रयोजन है। इतना जानने के पश्चात् वह सलीमा से मिलने का विचार रखता था। इस कारण उसने डॉक्टर घोष के घर में यह नहीं बताया कि सेठ एण्ड कम्पनी में क्या बातचीत हुई। अकरम पथिक को वहाँ देख बहुत प्रसन्न हुआ। वह उससे उसकी योजना की बाबत प्रश्न करना चाहता था। पथिक से मिलने के पश्चात् उसने कहा, "मैंने आपके संघ की किताबें पढ़ी हैं। आपके विचार अद्भुत हैं। परन्तु एक-दो बातें मेरी समझ में नहीं आईं। अगर आप पसन्द करें तो मैं कुछ पूछूँ?"

"हाँ, पूछिये। मैं आपको बताने को तैयार हूँ।"

"आपने लिखा है कि हमको हिन्दू और मुसलमान के विचार से एक-दूसरे को नहीं देखना चाहिये। क्या आपका मतलब यह है कि हिन्दू, हिन्दू धर्म को छोड़ दें और मुसलमान इस्लाम को?"

"मैंने तो यह नहीं लिखा। मेरा मतलब यह है कि हमारे सामाजिक और राजनीतिक सम्बन्ध मज़हब के आधार पर न हों। देखो, हिन्दुओं में यह बात कुछ हद तक मौजूद है। कई घरों में ऐसा है कि पति मांस खाता है और पत्नी नहीं खाती। पति आर्यसमाजी है तो पत्नी देवी-देवताओं की पूजा करती है। पत्नी काली पर बकरा चढ़ाती है तो पति वैष्णव-मतानुयायी है। मैं इस सिद्धान्त को अधिक विस्तृत करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि हिन्दुस्तानी परिवार में यह भी हो सके कि पिता मुसलमान है तो पुत्र शिव का उपासक हो सके; पिता अगर वैष्णव है तो लड़की मुसलमान हो सके। इस बात में ऐसे ही कोई आपत्ति न की जाये जैसे एक हिन्दू परिवार में भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं की पूजा में आपत्ति नहीं की जाती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर यह बहुत कठिन है। सदियों के वहम और तास्सुब इस बात के रास्ते में रुकावट बनकर आयेंगे।"

"मैं इसको जानता हूँ, मगर ठीक तरीका यही है।"

"मेरा पूछना तो यह है कि जब तक ये वहम मिट नहीं जाते तब तक क्या किया जाये ?"

"मैं सारे मुल्क को इस ख्याल का बनाना चाहता हूँ। मगर मेरा राजनीतिक प्रोग्राम इस बात की इन्तज़ार नहीं करता। मुझे तो दो-चार लाख इस बात में विश्वास रखने वाले चाहियें। यदि वे सच्चे हैं और इस बात को सिद्धान्त-रूप में मानते हैं तो तमाम मुल्क की बागडोर बदलकर उन लोगों के हाथ में आ जायेगी।"

"मान लो कि आपके पास कुछ लाख ऐसे आदमी हैं, जो हिन्दू-मुसलमानों को ऐसे रूप में देखते हैं, तब भी वे करोड़ों के खिलाफ क्या कर सकेंगे ?"

"मुझे तो हिन्दुस्तान आज़ाद करने के लिए ठीक विचार रखने वाले और स्वस्थ शरीर वाले सिर्फ दो-तीन लाख आदमी चाहियें। देश में जन-साधारण तो भेड़ों की भाँति पीछे लगने वाला है। ये दो-तीन लाख नेता बन जायेंगे।"

"आपका कहना उसूल से तो ठीक है, मगर व्यवहार में नहीं आयेगा। बात यह है कि मुसलमान और हिन्दू एक-दूसरे को अपने मज़हब में घसीटने का यत्न करते रहते हैं और अगर यह बात जारी रही तो दोनों कौमें हमेशा एक-दूसरे को शक की नज़र से देखती रहेंगी। परिणाम यह होगा कि करोड़ों के शक में लाखों का विश्वास भी बह जायेगा।"

"मैं अपने मार्ग की कठिनाई को जानता हूँ। यह मार्ग कठिन होने पर भी अकेला मार्ग ही है। इसके मुकाबले में दूसरा मार्ग है कि हिन्दू-हिन्दुस्तान और मुस्लिम-हिन्दुस्तान पृथक्-पृथक् कर दिये जायें। यह झगड़े को और भी लम्बा करने वाला मार्ग है। देश के दो भाग हो जाने पर भी शांति नहीं होगी। मध्य-भारत अपने दरवाज़े पर दूसरों का अधिकार स्वीकार नहीं करेगा। मुस्लिम-हिन्दुस्तान भौगोलिक विचार से सुदृढ़ स्थान पर होने से मध्य-भारत पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहेगा। परिणाम यह होगा कि फिर वही सात सौ वर्षों का इतिहास दुहराया जायेगा, जो मुहम्मद गौरी के ज़माने से लेकर मुगलों के अन्तिम बादशाह शाह अकबर तक चलता रहा था।

"इसके विपरीत मेरा मत है कि सम्प्रदायों (हिन्दू-मुसलमानों) को राजनीति का आधार न बनाया जाये। कौंसिलों और व्यवस्थापिका सभाओं में, दफ्तरों और फौजों में, चाहे वह सामाजिक महत्त्व रखता हो और चाहे राजनीतिक, सम्प्रदाय अथवा मज़हबी विश्वास का विचार न किया जाये। प्रत्येक बात में योग्यता को आधार बनाया जाये। दूसरे शब्दों में धारा-सभाओं में अथवा नौकरियों में फिरकेवार प्रतिनिधित्व त्याग दिया जाये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह त्याग तो दिया जाये, परन्तु होगा कैसे ? जब तक करोड़ों लोग यह मानते हैं तो कैसे आप उनके विपरीत कर सकेंगे ? करोड़ों लोग तो विचारशील नहीं होते। विचारशील तो बहुत कम संख्या में हैं।"

"लोगों को समझाना हमारा काम है। जितने भी विचारशील लोग हैं वे अवश्य समझ जायेंगे। जो ऐसी बात को, जो युक्तियुक्त है, नहीं मानेंगे उन्हें बल-पूर्वक मनवायेंगे।"

"बल का प्रयोग करना तो बहुत अशांति फैलायेगा।"

"जहाँ तक देश की स्वतन्त्रता का सम्बन्ध है वहाँ तक हम किसी भी व्यक्ति अथवा फिरके को स्वतन्त्रता पाने में बाधा डालने नहीं देंगे। यह बाधा दूर करने के लिए बल का प्रयोग भी अनुचित नहीं होगा।"

"जो लोग अपने-अपने फिरके के अधिकार सुरक्षित रखने की माँग पेश करते हैं, वे स्वतन्त्रता में बाधा डालने वाले कैसे कहे जा सकते हैं ?"

"माँग उपस्थित करना अथवा माँगों के लिए झगड़ा करना अनुचित नहीं। न ही इन माँगों को दबाने के लिए बल के प्रयोग की आवश्यकता है। बलप्रयोग की आवश्यकता तब होती है जब अयुक्तिसंगत माँगों के आधार पर देश की अथवा दूसरों की उन्नति में बाधा डालने का यत्न किया जाये।"

"यह कौन निर्णय करेगा कि माँग अयुक्तिसंगत है ?"

"देश के विद्वान् आदमी।"

"जन-साधारण का वोट क्यों नहीं ?"

"यद्यपि मैं जन-साधारण का वोट किसी विषय के न्याययुक्त अथवा अन्याय-युक्त होने में प्रमाण नहीं मानता तो भी जन-साधारण ही ले लो। मगर बिना वोट लिये जो अपनी बात मनवाना चाहते हैं और न मानी जाने पर देश-द्रोह की बात करते हैं उनको बलपूर्वक बन्द कराना ही होगा। यही तो मुस्लिम-लीग का व्यवहार है। वे पाकिस्तान चाहते हैं। जब लोग उनको कहते हैं कि पाकिस्तान के विषय में जन-साधारण के वोट से बनी हुई संविधान सभा जो निश्चय करे वही किया जाये, तब मुस्लिम-लीग वालों को यह मान लेना चाहिये।"

"संविधान सभा में हिन्दुओं की संख्या अधिक होगी।"

"निश्चय। हिन्दुस्तान में हिन्दू अधिक बसते हैं। परन्तु यदि संविधान सभा का चुनाव हिन्दू-मुसलमानों के संयुक्त वोट से हो तो जो हिन्दू और मुसलमान वहाँ आयेंगे वे न तो कट्टर हिन्दू होंगे, न कट्टर मुसलमान।"

"मुसलमान चाहते हैं कि पाकिस्तान का विषय केवल मुसलमानों के वोट पर छोड़ दिया जाये।"

"क्यों ? क्या इससे हिन्दुओं को हानि अथवा लाभ नहीं होगा ? यह कोई मुसलमानों के मज़हबी रीति-रिवाज से ताल्लुक रखने वाली बात नहीं है। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक खालिस राजनीतिक बात है। इस पर सब देशवासियों को राय देनी चाहिये।"

"मुस्लिम-लीग वाले चाहते हैं कि वे और कांग्रेस दोनों मिलकर बातचीत कर लें। मुस्लिम-लीग मुसलमानों की ओर से और कांग्रेस हिन्दुओं की ओर से।"

"यही तो देखना है कि मुस्लिम-लीग मुसलमानों की ओर से है या नहीं और कांग्रेस हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व करती है या नहीं। कम-से-कम कांग्रेस के नेता तो अपने-आपको केवल हिन्दुओं का प्रतिनिधि नहीं मानते। सभा को अगर मुसलमान और हिन्दुओं के मिश्रित वोट से न चुना जाये तब भी कोई हानि नहीं। परन्तु यह कैसे हो सकता है कि हिन्दुओं से पूछा ही न जाये और उस देश के टुकड़े कर दिये जायें जहाँ हिन्दुओं की संख्या अधिक है?

"देखो मिस्टर अकरम, बात यह है कि युक्ति तो मुसलमानों की इस माँग का साथ देती नहीं और मुस्लिम-लीग का यह ऐलान कि, जब तक उनकी माँग का निर्णय न कर दिया जाये वे स्वराज्य स्थापित होने नहीं देंगे, केवल धींगामस्ती है। इस समय उनका ऐसा कहना चूँकि अंग्रेज़ी हुकूमत के हक में जाता है, इस कारण अंग्रेज़ भी कहने लगते हैं कि आपस में फैसला कर लो, फिर स्वराज्य की बाबत सोचेंगे।"

अकरम ने पूछा, "माना कि आप, जो कहते हैं, ठीक है, अब आप इसका क्या उपाय बताते हैं? यह तिगड्डम है—हिन्दू, मुसलमान और अंग्रेज़। अंग्रेज़ों की मौजूदगी में आप इस उलझन को कैसे सुलझाना चाहते हैं?"

"मेरी योजना केवल प्रचार की है। मैं तो उसी बात का प्रचार कर सकता हूँ जिसे बुद्धि माने। लोगों में युक्तिसंगत बात मानने और युक्तियुक्त माँग उपस्थित करने का प्रचार कर सकता हूँ। इसका परिणाम यह होगा कि देश में लोगों की दो श्रेणियाँ हो जायेंगी। एक, वह जो देश में सब रहने वालों का बिना हिन्दू-मुसलमान का विचार किये समान अधिकार मानेगी। दूसरी, वह जो अपने-अपने फिरके वालों के लिए विशेष अधिकारों की माँग उपस्थित करेगी। हमारा यत्न यह होना चाहिये कि उन लोगों की ताकत बढ़े जो सबको समान अधिकार देने और सबके समान अधिकार लेने के लिए तैयार हैं। ब्रिटिश सरकार की नीति यह रही है कि वह विशेष रियायतें चाहने वालों का पक्ष लेती रही है। इस कारण दूसरी श्रेणी में ब्रिटिश सरकार भी सम्मिलित है। या यों कहो कि एक श्रेणी में शुद्ध राष्ट्रीयता के पक्षपाती होंगे और दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार के पक्षपाती। यह देश-विरोधी पार्टी होगी। इस समय ब्रिटिश सरकार की पक्षपाती पार्टी प्रबल है। उनके पास फौज है और पुलिस है। राष्ट्रीयता के पक्षपाती दुर्बल हैं। मेरे प्रचार का अर्थ यही है कि राष्ट्रीयता के पक्षपाती दूसरे पक्ष से प्रबल हो जायें।"

पथिक के विचारों की स्पष्टता को देख अकरम का साहस बहुत बढ़ रहा था। वह मन में सोचता था कि यह एक ऐसी बात है जिसकी देश को भारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है और इसको पूर्णता तक पहुँचाने के लिए जो भी यत्न किया जा सके, करना चाहिए। एक बात उसने अन्त में पूछी। उसने पूछा, "आपकी इस प्रकार बनाई गई दो श्रेणियों में हिन्दू भी होंगे और मुसलमान भी ?"

"हाँ, मैं चाहता हूँ, अपना-अपना मज़हब अलग-अलग रखते हुए भी लोग हिन्दुस्तानी हो जायें। और हिन्दुस्तानी वे होंगे जो यहाँ शुद्ध राष्ट्रीयता के पक्षपाती हैं और दूसरे प्रकार के लोग वे होंगे जो अपने निज के लिए, अपने परिवार के लिए अथवा अपने मज़हबी भाई-बन्दों के लिए खास रियायतों के प्राप्त करने के लिए ब्रिटिश सरकार की हिमायत करते हैं। एक-न-एक दिन दोनों में भारी युद्ध होगा। मैं चाहता हूँ कि राष्ट्रीयता के पक्षपाती इस युद्ध में सफलतापूर्वक भाग लेने के लिए तैयार हो जायें। यह हिन्दुस्तान का सौभाग्य होगा यदि यह युद्ध केवल युक्तियों और वोटों तक ही रहे और इसमें रक्त की नदियाँ न बहें।"

: २१ :

फिरपो रेस्टोरेंट में ठीक सवा बजे नरोत्तम और अकरम की भेंट हो गई। लंच का तो बहाना था। दोनों खाना खाकर आये थे। इस पर भी कुछ चाय इत्यादि सामान का ऑर्डर देकर बातें करने लगे। नरोत्तम ने अकरम को उत्सुक देख एक कागज़ जेब से निकालकर कहा, "हमने अपनी कम्पनी का काम सुचारु रूप से चलाने के लिए कुछ भेदिये रखे हुए हैं। इनमें से एक को मैंने कीर्तिदेवी का पीछा करने के लिए कह दिया था। उसकी रिपोर्ट यह है।" इतना कह नरोत्तम ने रिपोर्ट पढ़नी आरम्भ की :

"पाँच बजे कीर्तिदेवी दफ्तर से निकल सीधी ट्राम स्टैंड पर पहुँची। अलीपुर गई। वहाँ लेन नं० १०२, मकान नं० १२ की सबसे ऊपर की मंज़िल में चली गई। पूछने पर मालूम हुआ कि उस स्थान पर एक विभूतिदेवी, कॉरपोरेशन के अलीपुर गर्ल्स हाईस्कूल की मुख्याध्यापिका, रहती हैं। कीर्तिदेवी तीन दिन से उनके पास ठहरी है। सायंकाल साढ़े छः बजे दोनों औरतें झील पर घूमने गईं। वहाँ से रात के आठ बजे लौटीं। विभूतिदेवी अलीपुर की ट्राम पर बैठ गईं और कीर्तिदेवी रासबिहारी एविन्यू में पहुँची। वहाँ मकान नं० १०५ के पिछवाड़े के दरवाज़े को, जो ताले से बन्द था, खोलकर भीतर चली गई। मकान के अगली तरफ, मकान का चौकीदार अथवा वहाँ का चपरासी रहता है। उससे बातों-बातों में पता चला कि एक गुरुदेव, जिन्हें लोग पथिक कहते हैं, उस मकान में रहते हैं। वह एक विद्यार्थियों की सभा के प्रधान हैं। बहुत विद्यार्थी उनसे मिलने को आते रहते हैं। उस समय वह घर पर नहीं थे। नित्य सायंकाल वह घूमने डॉ० घोष के घर चले जाते हैं। रात को दस बजे तक लौटते हैं। और पूछने पर उसने बताया कि डॉ० घोष की लड़कियाँ तथा और भी कॉलेज की लड़कियाँ वहाँ दफ्तर में आती हैं। जब कीर्तिदेवी की बात पूछी गई तो उसने कहा कि वह सिर्फ तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़कियों के नाम जानता है। डॉ० घोष की लड़कियों के अतिरिक्त एक और लड़की लखनऊ से आकर डॉ० घोष के घर ठहरी है। उसका नाम सलीमा है। अब दो-तीन दिन से वह नहीं आती।

"लगभग एक घण्टे के बाद कीर्तिदेवी पिछवाड़े की गली से निकली। वहाँ से वह कालीघाट ट्राम स्टैंड तक पैदल गई। फिर वह अलीपुर वाले मकान पर पहुँची। रात के बारह बजे तक वहाँ से नहीं निकली। जब उसके कमरे की बिजली बुझ गई तो मैं वहाँ से लौट आया।"

"यह आपका भेदिया बहुत ही चतुर प्रतीत होता है। एक ही दिन में इसने इतना कुछ जान लिया है।"

नरोत्तम ने मुस्कराते हुए कहा, "मगर, साहब, यह कीर्तिदेवी उससे भी अधिक चतुर प्रतीत होती है। आज सुबह ही जब वह दफ्तर में आई तो मेरे कमरे में चली आई। पूछने लगी, 'क्या मैं आ सकती हूँ?'

"मैंने कहा, 'हाँ, हाँ, बताइये। मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'

"बोली, 'आप मुझे यहाँ नौकरी करने देंगे या नहीं?'

"मैंने बहुत हैरानी से पूछा, 'क्यों? क्या हुआ है, बहिन? क्या अनुचित बात हो गई? बताइये न, आपको क्या कष्ट है?'

"इस पर वह कुछ नरम हो गई। बोली, 'बहिन? अच्छा, भैया, यह आपने बहिन के पीछे भेदिया क्यों छोड़ दिया?'

"इस कलकत्ते जैसे नगर के दूषित वातावरण में बहिन की रक्षा के लिए।'

"इस पर वह निरुत्तर हो गई। बोली, 'मिस्टर सक्सेना, मुझे क्षमा करना। मैं कुछ और समझी थी।' इतना कह वह अपनी मेज़ पर जा बैठी।"

अकरम ने कहा, "मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"

"कहाँ मिलियेगा?"

"अगर आपको आपत्ति न हो तो आपके दफ्तर में।"

"चलिये।"

वे दोनों वहाँ दफ्तर में पिछवाड़े के मार्ग से दाखिल हो गये। नरोत्तम ने चपरासी के हाथ कीर्तिदेवी को बुलवा लिया। कीर्तिदेवी कुछ खीझी हुई थी। अभी-अभी कल्याणी उसके पास से होकर गई थी। वह बता गई थी कि उसका भाई अकरम कलकत्ते में आया है। वह उससे मिलने और मिलकर क्या करना चाहिये, इस पर विचार कर रही थी। ऐसे अवसर पर नरोत्तम का बुलावा आया।

वह जब मैनेजर के कमरे में पहुँची तो माथे पर त्योरी चढ़ी हुई थी। खासकर जब उसने देखा कि मैनेजर साहब अकेले नहीं हैं तो उसका क्रोध और भी बढ़ गया। उसके भीतर आते ही अकरम खड़ा हो गया और कीर्तिदेवी को एक बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर से पाँवों तक देख पहचान गया। वह बोला, "सलीमा !"

"भैया !" और सलीमा अकरम की बाँहों में थी। एकाएक उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। अकरम ने उसके सिर पर हाथ फेरकर प्यार से पूछा, "सलीमा, तुम रोती हो ! क्यों ?"

"भैया, चलो, चलें।"

इतना कह वह मैनेजर से छुट्टी माँगने वाली थी कि अकरम ने कहा, "देखो, सलीमा, बैठो। यह मिस्टर सक्सेना मेरे एक मित्र के मित्र हैं। कलकत्ते में इनकी बड़ी पोज़ीशन है। यह मेरी खुशकिस्मती है कि तुम इनके यहाँ नौकरी पर आईं और मैं तुम्हें यहाँ पहुँचने के पहले ही दिन पा गया।"

नरोत्तम ने अकरम से हाथ मिलाते हुए कहा, "यह एक बहुत ही सुखदायक घटना हुई है। मैं अपनी तरफ से और मिसेज़ सक्सेना की तरफ से आप दोनों को अपने घर पर रात के भोजन के लिए आमन्त्रित करता हूँ। उम्मीद है कि आप इन्कार नहीं करेंगे। हाँ, सलीमा बहिन, आप दफ्तर से जा सकती हैं।"

सलीमा और अकरम दोनों सेठ एण्ड कम्पनी के दफ्तर से बाहर आये तो अकरम ने कहा, "कहाँ चलें ?"

"कहीं एकान्त में।"

अकरम ने टैक्सी की और कम्पनी बाग की तरफ चल पड़े।

"तुम घर से भाग क्यों आई हो ?"

"तो अब्बाजान ने आपसे कुछ नहीं कहा ?"

"मैं तुम्हारी बात सुनना चाहता हूँ।"

सलीमा ने पूर्ण वृतांत ज्यों-का-त्यों स्टूडेंट्स फैडरेशन के जलसे में दिल्ली जाने के पूर्व से लेकर नवाबगंज से भागने तक का बता दिया। अकरम यह सब बात सुनकर बहुत दुःखी हुआ। वह अपने माता-पिता को इतना निठुर नहीं समझता था। सलीमा ने कहा, "दिल्ली में मिस्टर पथिक से मेरी भेंट हुई थी। तब से ही मेरे मन में उनके लिए एक विशेष भावना उत्पन्न हो गई है। जब मैं घर से भागने पर मजबूर हुई तो मैंने उन्हीं का आश्रय लेना उचित समझा। उन्होंने मेरे लिए एक अति मानयुक्त परिवार में स्थान बना दिया। मैं वहाँ रहती हुई अपने घर को उस समय भूल गई थी। परन्तु चार दिन हुए जो घटना हुई उससे मुझे फिर क्रोध आया। मिस्टर पथिक ने कहा था कि, 'मैं एक नवाब की लड़की को विवाह करने के लिए कैसे कह सकता हूँ ? मैं बहुत छोटे दर्जे का आदमी हूँ। मेरे यहाँ बिना तिनका तोड़े खाने को नहीं मिल सकता।'

"मुझे क्रोध इस बात का था कि मैं जब से उनके पास आई थी, मैंने अपने आचरण से सिद्ध कर दिया था कि मुझमें न तो नवाबी की गन्ध है और न ही मैं बिना काम किये खाने को अच्छा समझती हूँ। इस पर भी उन्होंने यह एतराज़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठाया। परन्तु, भैया, मैं अब सोचती हूँ कि मुझे नाराज़ नहीं होना चाहिये था। मुझे अपने-आपको ऐसा बनाना चाहिये था कि वह मेरे मन के भावों को समझ जाते।"

अकरम ने कुछ सोचकर कहा, "मैं मिस्टर पथिक से मिल चुका हूँ। मेरी समझ में तो एक बात आई है कि वह अपने राजनैतिक काम में इतना लगा हुआ है कि उसे विवाह करने की फुर्सत ही नहीं। मिस कल्याणी, डॉ० घोष की लड़की, से आज सुबह बहुत बातें होती रहीं और मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि वह देवता है।"

"तो मैं उनसे जाकर क्षमा माँग लूं?"

"नहीं, मेरा विचार है कि हमें, मुझे और तुम्हें भी, उसके राजनैतिक काम में मदद करनी चाहिये। यह काम इतना बड़ा है कि हम जैसे लोगों के कई जीवन खत्म हो जायेंगे। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस ज़माने में हिन्दुस्तान के राज-नैतिक आसमान पर हिन्दू-मुसलमान का सवाल काली घटा बनकर मँडरा रहा है। इसका सिर्फ़ एक ही हल है, वह हल मिस्टर पथिक की 'राजनैतिक काम' नाम की पुस्तक में साफ तौर पर लिखा है। वह हिन्दू है। उसकी ज़बान से मुसलमान यह बात मानना तो दूर रहा, सुनना भी पसन्द नहीं करेंगे। यह मेरा और तुम्हारा काम है। आओ, सलीमा, अपने मुल्क के लिए हम भी कुछ करें। विवाह-शादी तो होते रहेंगे। अगर तुम अपने मन के देवता को रिझाना चाहती हो तो यही तरीका ठीक रहेगा। जाकर क्षमा माँगने से यह तरीका ज़्यादा अच्छा और बाइज़्ज़त रहेगा।"

सलीमा भाई की तजवीज़ सुनकर फड़क उठी और खुशी से उछलती हुई बोली, "भैया, आप यह करेंगे? भाईजान, मैं आपसे यही आशा रखती थी। देखो, भैया!···ओहो···एक बात मैं बता दूं। बहिन मिलिन्द और कल्याणी के साथ रहते-रहते मेरी ज़बान और बोलने में कुछ हिन्दीपन आ गया है। मुआफ करना, भाईजान।

"हाँ, मैं कह रही थी कि मैं काम तो करूँगी, मगर उनसे छिपकर। अगर मैं इस स्कीम को आगे ले जाने में कुछ भी कर सकी तो ज़ाहिर हो जाऊँगी।"

"इस विषय में भी सोचेंगे। अभी तो मैं समझता हूँ कि मिस्टर पथिक को और डॉ० घोष को पता न चले कि मैं तुम्हें पा गया हूँ।"

"मगर कल्याणी बहिन तो मुझे कहने आई थी कि आप आ गये हैं। और वह आज सायंकाल आपको मुझसे मिलाने का वचन दे गई है।"

"ओह! तो वह जानती थी कि तुम यहाँ हो! बड़ी नटखट लड़की है। मुझे कहती थी कि चलो, किसी ज्योतिषी से पूछें कि सलीमा बहिन कब, कहाँ और कैसे मिलेंगी। वह कहती थी कि एक स्कूल की हैडमिस्ट्रेस हैं। बहुत ज्योतिष जानती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। नाम विभूतिदेवी है। उनसे चलकर सलीमा की बाबत पूछेंगे।"

"बड़ी चतुर है। बस, केवल वह ही थी, जो मेरा पता और मेरे काम को जानती है। आज लंच के समय मेरे पास दफ्तर में आई थी और आपके आने की बात बताकर बोली कि मुझे आज मिल लेना चाहिये। कहती थी, मिस्टर अकरम बहुत परेशान हैं और सिर्फ मेरे कान मरोड़ेंगे। ज़्यादा नहीं।"

पथिक अथवा मधुसूदन

नरोत्तम ने अपनी स्त्री को जब कीर्तिदेवी का पूर्ण परिचय दिया तो वह हैरान रह गई। वह बोली, "लड़की बहुत सुन्दर और सुशील मालूम होती थी। परन्तु वह एक नवाब की लड़की होगी, यह विचार में भी नहीं आ सकता था और फिर उसने हिन्दू नाम रख लिया। ज़रूर इसमें कोई प्रेम-गाथा छिपी है।"

"आज वह और उसका भाई तुम्हारे मेहमान होंगे। रात को वे खाना यहीं खाने आयेंगे।"

तपस्विनी यह सुन गम्भीर विचार में डूब गयी। उसे अपना अविवाहित जीवन याद आ गया था। नरोत्तम ने इस गम्भीरता का कारण पूछा तो बोली, "कुछ नहीं, इस लड़की की बात सुन अपनी बात याद आ गई है।"

"ओह, तो तुम भी घर से भाग चुकी हो?"

"नहीं। भागी तो नहीं, भागने ही वाली थी। दादा धीरेन्द्र ने शायद आपको बताया नहीं।"

"नहीं। क्या कोई भेद की बात है? मैं सुनना नहीं चाहता।"

"हूँ। सुनना नहीं चाहते न! कहने के लिए। मुझे पूर्ण विश्वास है कि कल ही दादा से पूछने बैठ जाएँगे। श्रीमान्, कोई भेद की बात नहीं। घबराओ नहीं। एक बार पिताजी को पता लग गया कि मैं आपकी पार्टी में शामिल हो गई हूँ। वह बहुत घबराये। कई रात उनको नींद नहीं आई। जब वह और अधिक देर तक अपने मन को न रोक सके तो मुझे अपने कमरे में बुलाकर बहुत डाँटा, फटकारा और मुझे कुलटा, कुल-कलंकिनी इत्यादि बातें कहीं। जब मैंने कारण पूछा तो बोले, 'इन लफंगे लड़कों की पार्टी में जाती हो तो और क्या कहा जाय तुम्हें?'

"मैंने पूर्णिमा का नाम लेकर कहा, 'वह भी तो जाती है।'

"वह बोले, 'उस नचनी को कौन अच्छा समझता है।'

"मुझे अपने पर लांछन लगते सुन क्रोध नहीं आया था। परन्तु मैं पूर्णिमा को पवित्र मोती समझती थी। उसको भी बुरा कहा गया सुन मेरा पारा एक सौ पाँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भी ऊपर चढ़ गया। मैंने कहा, 'पिताजी, मैं आपका मान करती हूँ, आपके गन्दे विचार सुन मुझे इस घर में रहते लज्जा आती है। मैं अब यहाँ नहीं रहूँगी।'

"इतना कह मैं घर से बाहर निकल आई। ज्यों ही मैं घर की ड्योढ़ी से बाहर निकली कि सौभाग्य से दादा मुझे बुलाने आते हुए दिखाई दिये। मैंने दादा से कह दिया, 'मैं घर छोड़ रही हूँ।'

'क्यों?'

'पिताजी मुझे कुल-कलंकिनी समझते हैं, पूर्णिमा को तुच्छ नचनी और आप सबको लफंगे। ऐसे पिता के घर मेरा स्थान नहीं है।'

"दादा हँस पड़े। बोले, 'पगली-सी। अज्ञानवश कही गई बात पर क्रोध करना मूर्खता है। तुम पवित्र हो तो अपने आचरण से उनकी अज्ञानता को दूर करो, न कि क्रोध करके। चलो वापस।'

"वह मुझे अपने कमरे में भेज सीधे मेरे पिताजी से मिले। उनमें क्या बातचीत हुई, मुझे मालूम नहीं। न तो पिताजी ने फिर कभी इस विषय पर बात की और न ही दादा ने। अब इस लड़की की बात सुनकर मेरे मन में यही बात आ रही थी। सम्भव है, इसके भागने में भी मेरे-समान कोई मूर्खता की बात हो। दादा धीरेन्द्र सब स्थान पर तो होते नहीं।

"जब मेरे विवाह की चर्चा हुई और मैंने चिट्ठी लिखकर अपना निश्चय आपसे शादी के लिए बताया तो मैं आशा करती थी कि फिर डाँटी-डपटी जाऊँगी। सोचती थी कि आपको अभी भी वह एक नचनी के भाई समझते होंगे। परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ और मुझे आपके घर भेजकर पिताजी को कभी पश्चात्ताप नहीं हुआ।"

"वह देवता हैं।"

तपस्विनी चुप थी। एक लम्बी साँस खींचकर वह बोली, "यदि पूर्णिमा अब होती······।" उसकी आँखें कुछ भीग गई थीं।

रात के आठ बजे अकरम और सलीमा खाना खाने आये। तपस्विनी ने सलीमा को अपने पास बैठाकर खाना खाते-खाते तंग कर दिया, "बताती नहीं, बहिन, तुम्हें चुराकर लाने वाला कौन है?"

पहले तो सलीमा संकोच के मारे चुप बैठी रही, परन्तु सबको बेतकल्लुफी से बातें करते देख वह कुछ-कुछ खुलने लगी। नरोत्तम ने तपस्विनी के घर से भागने का किस्सा जब बताया तो सलीमा अब अपने को सर्वथा स्वाभाविक वातावरण में अनुभव करने लगी। उसने आखिर कह दिया, "भाभी, ननद की बातों पर परदा डालना चाहिए, न कि ढिंढोरा पीटना।"

सब हँस पड़े।

डाइनिंग हॉल से वे ड्राइंग हॉल में आ गये। वहाँ नरोत्तम की माँ थी। नरोत्तम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने सलीमा का परिचय दिया। उसने लड़की के सिर पर हाथ फेर आशीर्वाद दिया। सलीमा तपस्विनी के लड़के को गोदी में उठाकर रेडियो के पास जाकर खड़ी हो गई। लड़का गाना सुनने का बहुत शौकीन था। वह गाना सुनने में लीन हो गया। रेडियो सेट पर एक लड़की की तस्वीर रखी थी। सलीमा को ऐसा अनुभव हुआ कि उसने वह तस्वीर कहीं देखी है। वह तस्वीर को उठाकर ध्यान से देखने लगी। उसने उसे पहचान लिया। इसी लड़की की तस्वीर पथिक के सन्दूक में तैल-चित्र में बनी वह देख चुकी थी। उस तस्वीर के नीचे नलिनी लिखा था। पथिक से पूछने पर उसने बताया था कि वह मोहन की बहिन की है। उसी लड़की की फोटो देख, और वह भी इन लोगों के घर, वह चकित रह गई। उसने तस्वीर रेडियो पर से उठाकर एक बार फिर ध्यान से देखी। जब उसे विश्वास हो गया कि यह वही लड़की है तो वह तस्वीर हाथ में लिए तपस्विनी के पास जाकर बोली, "भाभी, इस लड़की को तुम जानती हो?"

"क्यों, तुम भी जानती हो?"

"हाँ।"

"हाँ! अरी, यह क्या कहती हो?" वह सलीमा और तस्वीर को नरोत्तम के पास ले गई। नरोत्तम और अकरम ड्राइंगरूम के एक कोने में बैठे बातें कर रहे थे।

"देखो जी, यह इस लड़की को जानती है।"

नरोत्तम ने भी अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा, "कहाँ देखा था आपने इसे?"

"देखा तो नहीं। हाँ, उनके सन्दूक में इसकी तस्वीर देखी थी।"

"किसके सन्दूक में?"

अब अकरम ने पूछा, "मिस्टर पथिक के?"

"हाँ, एक दिन मैं सन्दूक की तलाशी ले रही थी तो दो तस्वीरें इसी लड़की की मिलीं। एक तैल-चित्र था और दूसरी पैन्सिल-ड्राइंग। तस्वीरों के नीचे लिखा था 'नलिनी'। यह लड़की आपकी क्या लगती है?"

"बहिन। उसे मरे आठ वर्ष से ऊपर हो चुके हैं।"

"तब यह कोई और है। मगर बिलकुल एक जैसी है।"

"क्या मैं वह तस्वीर देख सकता हूँ?"

"तस्वीर!" यह कह सलीमा कुछ सोचने लगी। फिर बोली, "हाँ, चोरी करके ला सकती हूँ। वह रासबिहारी एविन्यू नं० १०५ में रखी है।"

नरोत्तम सब समझ गया। कुछ सोचकर बोला, "अगर आप यह बता दें कि मकान के किस कमरे में कहाँ सन्दूक रखा है और चोरी करने का कौन समय ठीक है तो आपके जाने की जरूरत नहीं होगी। तस्वीर यहीं आ जायेगी।"

"आपके भेदिये लोग? नहीं, मैं उन्हें नहीं बताऊँगी। न ही उन्हें चाबी दूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरोत्तम के मन में उस तस्वीर को देखने की बहुत लालसा हो रही थी। उसने बड़ी नम्रता से कहा, "बहिन, घबराओ नहीं। भाई साहब ने सब बात बता दी है। तस्वीर सुबह आयेगी और अगले दिन वापस हो जायेगी। आपको विश्वास दिलाता हूँ कि और कुछ भी चोरी नहीं जायेगा। और अब मैं आपको वहाँ नहीं जाने दूंगा। हमने निश्चय कर लिया है कि अब से आप हमारे यहाँ ही रहेंगी, ताकि डॉ० घोष की लड़की न जान सके कि आप कहाँ हैं। उसे बता दूंगा कि आप दफ्तर नहीं आईं।"

: २ :

कल्याणी अकरम की प्रतीक्षा करती रही। वह नहीं आया। उस रात जब पथिक उसके घर में आया तो वह यही सोच रही थी कि अकरम सलीमा से मिलने के लिए क्यों नहीं आया। वह सलीमा को वचन दे आई थी कि अकरम को लेकर विभूतिदेवी के घर पहुँचेगी। वह सोचती थी कि सलीमा प्रतीक्षा करती होगी।

पथिक ने कल्याणी को विह्वल-सी देखा तो पूछने लगा, "क्या बात है, बहिन? आज मुख मलिन क्यों है?"

कल्याणी ने मन की बात छिपाते हुए कहा, "कुछ भी तो नहीं। मैं सलीमा के विषय में सोच रही थी कि उसका फिर कोई पता नहीं आया।"

"आ जायेगा। मुझे उस पर विश्वास है। वह जब सोचेगी तो समझ जायेगी कि उसका स्थान हमारे साथ है। हमसे दूर नहीं।"

"क्या सोचेगी, दादा? सोचना तो आपको चाहिए था। उस बेचारी का क्या दोष है?"

"अच्छा, बहिन, अब तुम उसको ढूंढ़ निकालो तो मैं वहाँ जाकर उसे मना लाऊँगा।"

"ठीक। वचन दो तो मैं ढूंढ़ने का यत्न करूँ।"

"हाँ, हाँ, वचन दिया।"

"अच्छी बात, अखबार में विज्ञापन दिलवा देती हूँ।"

इसी समय डॉ० घोष आ गये और भविष्य के प्रोग्राम की बातें होने लगीं। पथिक ने कहा, "डॉक्टर साहब, बम्बई में काम में दिक्कत हो रही है। एक तो वह कांग्रेस का गढ़ है; दूसरे, वहाँ के मुसलमान विद्यार्थी बहुत बाधा डाल रहे हैं। हमारे आन्दोलन में मुसलमान केवल अँगुलियों पर गिने जा सकते हैं। अब वहाँ किसको भेजूं, यह समझ में नहीं आ रहा है। कुछ मुसलमान विद्यार्थी मिल जाते तो बात ठीक हो जाती।"

दूसरे दिन प्रातःकाल ही कल्याणी विभूतिदेवी के घर सलीमा से क्षमा माँगने गई; परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब विभूतिदेवी ने उसे बताया कि वह रात आई ही नहीं। अब अकरम को ढूंढ़ने के अतिरिक्त और कोई चारा न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे उस होटल का पता मालूम था, जहाँ वह ठहरा हुआ था। वह वहाँ पहुँची तो उसे पता चला कि अकरम अपना सामान लेकर चला गया है। अब उसने निश्चय किया कि वह 'सेठ एण्ड कम्पनी' में जाकर पता करेगी। कम्पनी का दफ्तर खुलते ही वह वहाँ पहुँची। ज्यों ही उसने चपरासी से कीर्तिदेवी के विषय में पूछा, तो चपरासी ने कहा, "आपसे मैनेजर साहब मिलना चाहते हैं।"

"मुझसे? भला बताओ, मैं कौन हूँ?"

"आप कल कीर्तिदेवी से मिलने आई थीं न?"

विवश कल्याणी मैनेजर के कमरे में पहुँची। उसने पूछा, "आपको मुझसे क्या काम है?"

नरोत्तम ने मुस्कराते हुए कहा, "मिस घोष, आपको हमारे दफ्तर में क्या काम है? आप कल भी आई थीं और आज फिर आने की कृपा की है।"

"तो आप मुझ पहचानते हैं?"

"हाँ, आपका नाम कल्याणीदेवी है न। आप बैठिये और अपने यहाँ आने क कारण बता दीजिये तो अत्यन्त कृपा होगी।"

"आपके दफ्तर में एक कीर्तिदेवी नौकर हुई थी। वह मेरी सहेली है। कल उससे मिलने आई थी और आज उसे ढूंढ़ने आई हूँ।"

"ढूंढ़ने क्यों?"

"कल से वह लापता है।"

नरोत्तम हँस पड़ा।

"तो आपको मालूम है कि वह कल कहाँ रही है?" कल्याणी ने पूछा।

"हाँ, मेरे घर में।"

"ओ! उसने मुझे भी नहीं बताया।"

"उसने मुझे कह दिया था कि अगर कल्याणी बहिन मिलने के लिए उत्सुक हो तो मिला देना।"

"और आप क्या समझते हैं कि मैं उत्सुक हूँ या नहीं?"

"यही जानने के लिए तो आपको बुलवाया है। अब आप मेरे घर जाना चाहेंगी?"

"मैं अभी कुछ निश्चय नहीं कर सकी।" वह पराये घर में ऐसे जाना नहीं चाहती थी।

"तो आपके निश्चय करने में मैं सहायता कर दूं? देखिये, मिस्टर अकरम ने कीर्तिदेवी के प्रोग्राम में परिवर्तन कर दिया है। मेरा विचार है कि आपको उसका नया प्रोग्राम जानना हो तो उससे मिल लेना चाहिये।"

"मैं सोच रही हूँ कि आखिर मुझे उसका प्रोग्राम जानने की क्या आवश्यकता है। जब तक वह अपने भाई से नहीं मिली थी, मैं अपने-आपको उसकी देख-भाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उत्तरदायी समझती थी। अब······अब मेरी दिलचस्पी नहीं है।"

इतना कह वह दफ्तर से बाहर आने के लिए उठ खड़ी हुई। इसी समय अकरम दफ्तर में दाखिल हुआ। उसने कल्याणी को देखते ही कहा, "कल्याणीदेवी, आप मिल गईं, बहुत अच्छा हुआ। मैं आपके घर से ही चला आ रहा हूँ। आपकी माँजी कह रही थीं कि आप बहुत सुबह से ही लापता हैं। मैं तो ज्योतिषी के पास चलने के लिए तैयार होकर आया था।"

"क्या अभी भी ज्योतिषी से कुछ पूछने की आवश्यकता है? मुझे मैनेजर साहब ने सब बता दिया है।"

"पूछने की नहीं। अब उन्हें बताने की आवश्यकता है। उनको धन्यवाद देना चाहता था। आप लोगों का तो धन्यवाद करने की ज़रूरत नहीं। आप तो घर के-से मालूम होते हैं। हाँ, विभूतिदेवीजी को धन्यवाद देने ज़रूर जाना था।"

"तो सलीमा अपने-आप चली जाती। मेरे जाने की क्या ज़रूरत है?"

"वह नहीं जा सकती। जानती हैं, क्यों? उनको मैनेजर साहब की बीवी ने कैद कर रखा है।"

"कैद? कोई भारी जुर्म किया होगा।"

नरोत्तम हँस पड़ा और बोला, "कभी-कभी बिना जुर्म के भी लोग कैद हो जाते हैं।"

"तो दारोगा साहब मुझे मुलाकात की इजाज़त दे रहे हैं?"

नरोत्तम और अकरम दोनों हँसने लगे। नरोत्तम बोला, "हाँ, आप ठीक समझी हैं। देखिये, कैदी आपसे मिलना चाहता है।"

कल्याणी ने विवशता प्रकट करते हुए कहा, "अच्छा।"

अकरम कल्याणी को लेकर सलीमा के पास गया। सलीमा ने अपना प्रोग्राम बताया और कहा, "भैया अकरम आज उनसे मिल आये हैं। उन्हें बम्बई में कुछ मुसलमान काम करने वालों की सख्त ज़रूरत है। भैया वहाँ जा रहे हैं। मैं भी उनके साथ जाऊँगी, मगर बहिन, उनको न बताना। वह अकरम से पूछते थे कि मेरा क्या होगा। अकरम ने बताया है कि यहाँ वह अपने मित्रों से मेरी खोज करने को कहकर जा रहा है। मैंने आज माताजी को एक और चिट्ठी लिखी है। उसमें अपने बहुत अच्छी तरह से होने की बाबत लिखा है। मेरी ऐसी चिट्ठियाँ आपको भी मिलती रहा करेंगी।"

कल्याणी ने कहा, "मुझे तो तुम्हारी आँख-मिचौनी का खेल पसन्द नहीं है। मैं तो चाहती हूँ कि एक बार तुम दोनों को मिला दूँ। यदि हो सके तो विवाह भी हो जाये। अब मिस्टर अकरम भी हैं। सब बात ठीक है। वह स्वयं आ तुमको मनाकर ले जायेंगे।"

"नहीं, नहीं। मैं यह नहीं चाहती। उनका इस वर्ष का प्रोग्राम जब तक चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है, तब तक नहीं। मैं इसमें विघ्न बनना नहीं चाहती।"

कल्याणी चुप थी। यथार्थ में वह भी अनुभव करती थी कि विवाहित पथिक से अकेला पथिक इस कण्टकाकीर्ण पथ को अधिक उत्तमता से पार कर सकेगा।

: ३ :

संयुक्त प्रान्त में युवक-संघ के प्रचार का काम पथिक ने स्वयं इलाहाबाद से आरम्भ किया। अकेले इलाहाबाद में से साठ मंडलियाँ प्रचार के लिए जाने वाली थीं। पथिक ने पहले तो इन मंडलियों में जाने वाले विद्यार्थियों की एक सभा में भाषण दिया। इस समय तो उसने केवल यह बताया कि देहातों में विद्यार्थियों को कैसा आचरण रखना चाहिये। सायंकाल इलाहाबाद में एक सार्वजनिक सभा से प्रचार का कार्य आरम्भ किया गया। इसमें पथिक का व्याख्यान मुख्य रूप से हुआ। उसने अपने कार्य को और उस कार्य के प्रयोजन को भली-भाँति लोगों को समझाया। इसके पश्चात् लोगों को बताया कि उन्हें क्या करना चाहिये। संक्षेप में उसका कहना था कि इन लोगों को राजनीतिक रूप में उन्नति करने के लिए अपने में राजनीतिक मानसिकता उत्पन्न करनी चाहिये। इसका अर्थ यह नहीं कि लोग अपने धर्म, कर्म, सामाजिक और मज़हबी जीवन को छोड़ बैठें। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक अपने-आपको हिन्दुस्तान का रहने वाला समझे। ऐसा समझते हुए वह दूसरे हिन्दुस्तानियों से अपना विशेष सम्बन्ध समझे। प्रत्येक यह समझे कि इस समय देश में विदेशी राज्य है और इस राज्य से मुक्ति प्राप्त करना आवश्यक है। उन सब बातों से घृणा करे जिनसे विदेशी राज्य यहाँ स्थापित है और उन बातों को भला समझे जिनसे स्वराज्य स्थापित होने वाला है। यह कोई बहाना नहीं हो सकता कि किसी की विशेष परिस्थिति ऐसी है कि वह सरकार-पोषक कामों में संलग्न हो रहा है। यदि कोई आदमी ऐसी परिस्थिति में है तो उसे अपनी परिस्थिति में परिवर्तन करना चाहिये। यह कैसे हो सकता है कि कोई आदमी न तो अपनी अवस्था और परिस्थिति बदलता है, साथ ही वह यह भी कहता है कि वह परिस्थिति से विवश है और सरकार को सुदृढ़ करने के काम के अतिरिक्त उसके पास करने को और काम ही नहीं। पथिक ने इसमें एक उदाहरण भी दिया। बताया कि एक पिता अपने पुत्र को क्लर्क बनने की शिक्षा देता है और उस शिक्षा के पश्चात् कुछ थोड़े वेतन के लिए सरकारी दफ्तर में भरती करा देता है और इस पर वह कहता है कि उसका लड़का सरकारी नौकरी न करे तो और क्या करे। वह तो और किसी काम करने के योग्य नहीं है। ऐसा कहने वाला या तो महामूर्ख है या अव्वल दर्जे का धूर्त। स्पष्ट बात उसे स्वीकार कर लेनी चाहिये कि वह सरकार का सहायक बनना चाहता है। इससे भी लाभ ही होगा। प्रत्येक राष्ट्रीय काम करने वाले को यह स्पष्ट रूप से विदित हो जायगा कि कौन सरकार की मशीनरी को चला रहा है या चलाना चाहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक ने अपना प्रोग्राम बताते हुए कहा, "राष्ट्रीयता को सर्वोपरि समझो। यह आपके जीवन में रक्त का काम करती है। कोई भी व्यक्ति चिरकाल तक व्यक्तिगत लाभ के आधार पर नहीं जी सकता। हम देशवासियों का जीवन परस्पर इतना ओतप्रोत है कि हम बिना एक-दूसरे की उन्नति का ध्यान किये वास्तविक उन्नति नहीं कर सकते। जो व्यक्ति अथवा फिरका केवल अपनी उन्नति का ध्यान रखेगा और देश के सब लोगों की सामूहिक उन्नति को दूसरे स्थान पर रखेगा, वह व्यक्ति अथवा फिरका उन्नति नहीं कर सकता। अवश्य अवनति की ओर जायगा।"

: ४ :

यद्यपि प्रान्तीय सरकार की ओर से यह आज्ञा निकल चुकी थी कि पब्लिक जलसों में खुफिया पुलिस के रिपोर्टरों के जाने की आवश्यकता नहीं है, इस पर भी रिपोर्टर जाते ही थे। पुलिस विभाग मन्त्रिमण्डल के अधीन नहीं था और इसका संचालन गवर्नर बहादुर प्रान्तीय सरकार के चीफ सेक्रेटरी द्वारा स्वयं करते थे।

इलाहाबाद की उस मीटिंग में भी, जिसमें पथिक व्याख्यान दे रहा था, एक इन्स्पेक्टर दो रिपोर्टरों के साथ मौजूद था। इन्स्पेक्टर का नाम था ज्योतिप्रसाद मिश्र। इन्स्पेक्टर ने जब पथिक को देखा तो उसे प्रतीत हुआ कि वह कोई देखा-भाला आदमी है। जब तक जलसा होता रहा वह यह स्मरण करने का यत्न करता रहा कि वक्ता को उसने कहाँ देखा है। वह बार-बार उसके मुख की ओर देखता था और फिर आँखें मूँदकर अपने पूर्व-परिचित लोगों का स्मरण कर उनकी मुखाकृति मिलाता था, परन्तु वह कहीं ठीक मिलती नहीं थी। पुलिस के दूसरे लोग जलसे की कार्यवाही लिखने में लगे हुए थे और इन्स्पेक्टर पथिक को पहचानने में।

जलसा समाप्त हुआ और इन्स्पेक्टर अभी भी अपने प्रयत्न में असफल ही था। जब पथिक हॉल से बाहर निकला तो इन्स्पेक्टर समीप जाकर एक अन्तिम प्रयत्न करना चाहता था। उसने पथिक से हाथ मिलाकर कहा, "आपके विचार सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है।"

पथिक ने सहज भाव से कह दिया, "आप लोगों की प्रसन्नता देखकर कुछ उत्साह बढ़ता नहीं है।"

इन्स्पेक्टर ने हाथ मिलाने में निस्संकोच भाव तथा निर्भयता पर विशेष ध्यान दिया। इसका भी कुछ परिणाम नहीं निकला। उसका मन कहता था कि वह कोई पुराना राजनैतिक अपराधी है और किसी मुकदमे में फँस चुका है। पिछले कई वर्षों के मुकदमों के अपराधी तथा सन्देहोत्पादक व्यक्तियों के चित्र खुफिया पुलिस के दफ्तर में रखे थे। उसने एक-एक चित्र ध्यान से देखा, परन्तु उसका चित्र वहाँ नहीं था।

ज्योतिप्रसाद मिश्र ने इतने से आशा नहीं छोड़ी। उसने दो सफेदपोश पथिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पीछे लगा दिये। स्वयं उसने पथिक के मामले में खोज करने के लिए कलकत्ते में संघ के कार्यालय जाने का निर्णय कर लिया।

कलकत्ते में जब वह संघ के कार्यालय में पहुँचा तो वहाँ मिलिन्द और कल्याणी बैठी डाक देख रही थीं। ज्योतिप्रसाद ने सूचना भिजवाई। कार्यालय में पहुँचने पर मिलिन्द ने उसे बैठने का संकेत कर पूछा, "आप क्या चाहते हैं ?"

"पथिक का पूर्व-परिचय।"

"हम लोग नहीं जानते।"

"वह यहाँ किस स्थान से आया था ?"

"एक गाँव और ताल्लुकेदारी है, जिसे देवा कहते हैं, वहाँ से।"

ज्योतिप्रसाद वहाँ से सफल न हो देवा पहुँचा। देवा में वह थाने में गया। थानेदार ने, जो कुछ परिचय वह जानता था, बताकर कहा, "वह यहाँ के ताल्लुकेदार सुरेश बाबू का बहुत मित्र है। सुरेश बाबू का एक मित्र है विजयबहादुर। वह गाँव में सरकारी मुखबिर (लोगों के समाचार देने वाला) है। विजयबहादुर की पथिक से शत्रुता रही है, इस कारण वह आपको बहुत-सी बातें और बता सकेगा।"

परिणामस्वरूप विजयबहादुर बुलाया गया। उसने बताया, "कुछ दिन हुए कलकत्ते के एक सेठ और उनके मैनेजर यहाँ आये थे। वह सुरेश बाबू की अतिथिशाला में ठहरे थे। उन्होंने मोहन की बहिन नलिनी से और मोहन की माँ से बहुत बातें पूछी थीं और अन्त में सेठ साहब ने कहा था, 'यह अवश्य वही है।' सुरेश बाबू के पूछने पर उन्होंने बताया था कि वह पथिक को जानते हैं।"

ज्योतिप्रसाद इस सूचना से फड़क उठा। उसने विजयबहादुर से पूछा, "तुम्हें इसका कैसे पता चला ? क्या यह बात तुम्हारे सम्मुख हुई थी ?"

"नहीं, मुझे एक नौकर ने बताई थी, जो सेठ साहब की खिदमत करने में लगा था।"

"सेठ साहब का नाम बता सकते हो ?"

"सुरेश बाबू को मालूम है। मुझे मालूम नहीं।"

"तुम मालूम कर सकते हो ?"

"नहीं, साहब। सुरेश से मेरी बातचीत बन्द हो गई है।"

इस समय ज्योतिप्रसाद को एक तरकीब सूझी। उसने देवा के थानेदार को सुरेश के पास भेज कलकत्ते के सेठ साहब का पता मँगवा लिया। पता था—'सेठ एण्ड कम्पनी, कलकत्ता के मालिक सेठ कुंजबिहारी'।

सेठ कुंजबिहारी का नाम वह जानता था। वह इलाहाबाद के एक बड़े रईस थे जो अब कलकत्ते जा बसे थे। एकाएक उसे यह स्मरण हो आया कि सेठ साहब सन् १६२६ में एक ब्राह्मण के लड़के में भारी दिलचस्पी ले रहे थे। उस लड़के का नाम मधुसूदन था और मधुसूदन के खिलाफ उन्हीं के घर डाका डालने में सहायता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने का दोषारोपण था। पुलिस जब यह सिद्ध नहीं कर सकी थी तो उसे रैग्युलेशन १८१८ का बन्दी बना लिया गया था। सेठ साहब का नाम सुनते ही ये बातें इन्स्पेक्टर ज्योतिप्रसाद के मन में प्रस्फुरित हो उठीं।

वह देवा से इलाहाबाद लौटा तो अपनी सफलता पर अति प्रसन्न था, परन्तु जब उसने मधुसूदन का रिकॉर्ड निकलवाकर देखा तो उसके जंगल में बाघ द्वारा खाए जाने की बात पढ़कर अति निराश हुआ। वह अपनी इस चमत्कारी खोज से अपने अफसरों को खुश कर देना चाहता था, परन्तु वह सोचता था कि अब उसे यह सिद्ध करना पड़ेगा कि मधुसूदन मरा नहीं था। उसके मरने की रिपोर्ट गलत थी। यह सीधी बात नहीं थी। अतएव उसने रिपोर्ट और उसके साथ मृत्यु पर खोज की कार्यवाही पढ़ी। उसमें किसी प्रकार छिद्र न देख कोई अन्य उपाय सोचने लगा। एकाएक उसके मन में आया कि सेठ कुंजबिहारी से जाकर पूछना चाहिये। शायद किसी बात का पता चल जाये।

: ५ :

सलीमा ने जब नरोतम से नलिनी की तस्वीर और पूर्णिमा की तस्वीर में समानता का वर्णन किया था तो उसके मन में केवल शुद्ध जिज्ञासा का भाव ही उत्पन्न हुआ था। वह जानना चाहता था कि वह कौन लड़की है जो पूर्णिमा से इतनी मिलती-जुलती है। उसी समय उसने अपने एक भेदिये को रासबिहारी एविन्यू नं १०५ की चाबी देकर कहा कि वहाँ अमुक कमरे में पड़े सन्दूक में रखी एक लड़की की दो तस्वीरों को उठा लाये। अगले दिन वह भेदिया प्रातःकाल, जब पथिक भ्रमणार्थ जाया करता था, घर में घुसकर उस सन्दूक में रखी कई तस्वीरें उठा लाया। नरोत्तम ने जब नलिनी की तस्वीरों को देखा तो वह उनकी पूर्णिमा से समानता देख चकित रह गया। उन तस्वीरों में, जो भेदिया लाया था, एक तस्वीर पथिक की अपनी थी। इस तस्वीर को देख तो नरोत्तम सुन्न रह गया। यह तस्वीर उसके एक परम मित्र मधुसूदन की थी। मधुसूदन से ही उसकी स्वर्गीय बहिन पूर्णिमा का विवाह होने वाला था। उसने सलीमा से पूछा, "क्या यही आपके पथिक साहब हैं?"

"जी हाँ।" सलीमा ने आँखें नीची किये हुए कहा।

"ओह!" इसके आगे नरोत्तम कुछ नहीं कह सका। वह तुरन्त सेठ साहब के पास गया और उन्हें पथिक का चित्र दिखाया। सेठ साहब ने चश्मा चढ़ाकर उस तस्वीर को बहुत ध्यान से देखा और जब उन्होंने कह दिया कि यह मधुसूदन की तस्वीर है तो सन्देह को स्थान नहीं रहा।

सेठ साहब तुरन्त मधुसूदन से मिलने चल पड़े। परन्तु मिलना सम्भव न हो सका। जब ये लोग रासबिहारी एविन्यू में पहुँचे तो पथिक मद्रास के लिए रवाना हो चुका था। वहाँ मिली मिलिन्द। नरोत्तम ने पथिक के विषय में बहुत प्रश्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किये, परन्तु सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। सेठ साहब ने यह सोचा कि पहले देवा से पता करना चाहिये। वहाँ के लोग पथिक के विषय में मिलिन्द से अधिक जानते होंगे। साथ ही नरोत्तम पूर्णिमा के सम-रूप नलिनी को देखने के लिए व्याकुल हो रहा था। अतएव दूसरे ही दिन वे लोग देवा के लिए रवाना हो गये। देवा में वे तीन दिन रहे। सुरेश बाबू से मिले और मोहन की माँ और नलिनी से मिले। नलिनी सत्य ही पूर्णिमा की ठीक प्रतिलिपि थी। जब नलिनी के जन्मदिन का पता किया गया तो वे लोग यह देखकर चकित रह गये कि वह पूर्णिमा के देहावसान से ठीक तेरह दिन पीछे की बात है। उनके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब मोहन की माँ ने बताया कि नलिनी ने पथिक को देखते ही यह कहा था कि वह उसे जानती है और उसने उसे पहले कहीं देखा है। नलिनी से पूछने पर उसने आँखें मूँदकर फिर कहा, "पथिक को मैंने देखा है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वह मेरा कोई निकट का सम्बन्धी है।"

नरोत्तम ने नलिनी से बहुत प्रश्न पूछे। उनके उत्तर भी स्पष्ट नहीं थे। कुछ धुँधली स्मरण-शक्ति वाला वृद्ध जैसे बचपन की बातें करता है वैसे ही वह अण्टशण्ट कहने लगती थी। यद्यपि कोई प्रमाण नहीं था तो भी नरोत्तम को विश्वास-सा हो गया था कि उसकी बहिन पूर्णिमा का ही पुनर्जन्म नलिनी के रूप में हुआ है। पथिक के विषय में उन्हें कुछ विशेष पता नहीं चला।

उनके कलकत्ते लौटने के लगभग एक मास पश्चात् ज्योतिप्रसाद देवा और इलाहाबाद में खोज करता हुआ वहाँ पहुँचा। सेठ साहब इन्स्पेक्टर को देख मधुसूदन के विषय में आशंका करने लगे। उन्होंने इन्स्पेक्टर को बैठने का संकेत कर पूछा, "क्या काम है?"

इन्स्पेक्टर ने बैठते हुए पूछा, "क्या आप मुझे पहचानते हैं?"

"खूब! बहुत अच्छी तरह। आप खुफिया पुलिस के इन्स्पेक्टर हैं।"

"आपकी स्मरणशक्ति की मैं प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। मैं आपसे कुछ बातें पूछने आया हूँ।"

"हाँ, पूछिये।"

"यह मिस्टर नरोत्तम आपके क्या लगते हैं?"

"मेरे कारोबार के जनरल मैनेजर हैं।"

"आपने उन्हें इतने बड़े काम पर नियुक्त कर उन पर बहुत भरोसा किया हुआ है।"

"वह बहुत ही ईमानदार आदमी है।"

"आप युवक-संघ की बाबत कुछ जानते हैं?"

"नहीं।"

"मिस्टर पथिक से आप कभी मिले हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन पथिक ? मैं किसी पथिक को नहीं जानता।"

"आप देवा किसलिए गये थे ?"

"सुरेश बाबू से कुछ काम था।"

"मगर वहाँ पथिक के विषय में भी तो पूछताछ की थी आपने।"

"बातों-ही-बातों में ज़िक्र आया था; परन्तु मैंने पथिक को देखा नहीं, न ही पहचानता हूँ।"

"आपको याद होगा कि १९२९ में आपका एक परिचित पकड़ा गया था और रैग्युलेशन १८१८ का बन्दी बना लिया गया था ?"

"हाँ, हमारे पुरोहित के लड़के को।"

"आपके पास उसका कोई चित्र है ?"

"नहीं। क्यों ?"

"कुछ नहीं। मुझे कुछ सन्देह होता है कि मैंने उसे कहीं देखा है। परन्तु मैं हैरान हूँ कि यह कैसे हो सकता है।"

सेठ साहब ने हँसते हुए कहा, "अब आप पेंशन ले लें तो ठीक रहेगा। आपको अब मरे हुए भी दिखाई देने लगे हैं।"

"अभी तक तो मेरा दिमाग और आँखें ठीक काम करते हैं।"

"दिमाग तो आपका उस समय भी खराब था जब आपने उसे पकड़कर बन्दी बनवाया था।"

ज्योतिप्रसाद हँस पड़ा और कहने लगा, "अभी आप उस समय की बात भूले नहीं हैं।"

"और आपके दिमाग में तो वह बेचारा अभी भी चक्कर काट रहा है। अच्छा, तो बताइये, अब उस बात को दस वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, क्या इतने समय में भी आप उसके विपरीत कुछ प्रमाण पा सके हैं ?"

"सत्य बताऊँ ?"

"और क्या, यहाँ कोई अंग्रेज़ी अदालत थोड़े ही बैठी है जो झूठ बोलकर धोखा दे दोगे।"

ज्योतिप्रसाद ने हँसते हुए कहा, "सबूत तो नहीं मिला; परन्तु मेरा मन कहता है कि उसका सम्बन्ध क्रान्तिकारी लोगों से था ज़रूर। वह सर्वथा निर्दोष नहीं था।"

"और आपका मन अब कहता है कि वह कलकत्ते में कहीं घूम रहा है। अरे, बाबा, किसी और निर्दोष को फँसाने की नीयत क्यों बना ली है ? क्या तुम्हारी आत्मा तुमको धिक्कारती नहीं है ? तनिक विचार करो कि कितने निर्दोषों को फाँसी के तख्ते पर लटकवा चुके हो। तुम्हारे कोई बहिन, भाई, बेटा, बेटी नहीं है जिनसे तुम्हारा कुछ भी प्रेम हो ? यदि तुमको केवल संशय-मात्र पर काल-कोठरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में डाल दिया जाय तो तुम्हारे स्त्री, पुत्र, भाई अथवा बहिन के मन पर क्या बीतेगी? उनके रोने-धोने, उनकी आर्थिक दुर्दशा का ध्यान करो और फिर सोचो कि जिस निर्दोष को तुमने फँसाया था, उसका भी कोई सम्बन्धी था और उस सम्बन्धी को भी दु:ख हुआ होगा।"

इस प्रकार सम्बोधन किये जाने पर ज्योतिप्रसाद के मस्तक पर से पसीने की बूँदें टपकने लगीं। उसकी आत्मा में भय समा गया था। क्या जाने कितने मुकदमों में झूठी गवाही पैदा कर उसने मुकदमों की स्वाभाविक त्रुटियों को मिटाया था। जब सेठ साहब उसके पुत्र-पुत्री की अवस्था का उसके पकड़े जाने पर वर्णन कर रहे थे, वह कानों में उँगलियां देकर उठ खड़ा हुआ और बिना कुछ कहे दफ्तर से बाहर निकल गया।

सेठ साहब पुलिस इन्स्पेक्टर को भयभीत कर ही निश्चिन्त नहीं हुए। वह भली-भाँति समझते थे कि ऐसे आदमियों का पश्चात्ताप स्थायी नहीं हो सकता। इस प्रकार के लोग अपने अफसरों को प्रसन्न करने के लिए सच-झूठ की परवाह न कर अपनी कारगुज़ारी दिखाते रहते हैं। ऐसा करना उनके लिए अनिवार्य है। उनके वेतन में, मान-मर्यादा में और पदवी में उन्नति का आधार मुकदमों को सफल बनाना है। सेठ साहब भली-भाँति समझते थे कि अगले ही दिन वह पश्चात्ताप, जो पुलिस इन्स्पेक्टर के मन में व्याप्त दिखाई देता है, मिट जायगा और फिर अपने अफसरों को प्रसन्न करने के लिए और कुछ-न-कुछ कारगुज़ारी कर दिखाने के लिए वह फिर निरपराधों को फँसाने में लग जायगा।

इस प्रकार विचार कर सेठ साहब ने नरोत्तम को बुलाकर सब बात बताई और कहा, "इसमें अब सन्देह नहीं रहा कि पथिक मधुसूदन है और इसको भी निश्चित ही समझो कि पुलिस को भी सन्देह हो गया है। ऐसी अवस्था में मधुसूदन का पकड़ा जाना बहुत सम्भव है। यदि उससे मिलकर उसको सचेत कर दो तो कुछ बचाव की सूरत हो सकती है।"

: ६ :

युवक-संघ के प्रचार-कार्य से संयुक्त प्रांत-भर में ऐसी हलचल मच गई थी कि जिसका वर्णन करना सहज नहीं था। प्रांत-भर के पुलिस-थानों से विद्यार्थियों के इन कामों की रिपोर्टें लखनऊ में धड़ाधड़ आने लगी थीं। यह आन्दोलन अभी एक सप्ताह तक भी नहीं चला था कि पुलिस अफसरों और प्रांतीय सरकार के चीफ सेक्रेटरी तक के कान खड़े हो गये। ये लोग रिपोर्टों को पढ़कर सोचते थे कि यह क्या आन्दोलन है, इसका प्रयोजन क्या है, कौन इसे चला रहा है और इस आन्दोलन का फल क्या होगा। चीफ सेक्रेटरी ने वह पुस्तक मँगवाई जो पथिक ने संघ के सदस्यों के प्रचार में सहायतार्थ लिखी थी। इस पुस्तक को पढ़ने के पश्चात् उसकी बेचैनी का ठिकाना नहीं था। बात यह थी कि पुस्तक में कोई भी बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानून के विरुद्ध नहीं थी। इस पर भी मूल रूप से वह लोगों को सरकार के विरुद्ध संगठित करने के लिए भारी प्रभाव रख सकती थी। इसी पुस्तक की बातों का प्रचार गाँव-गाँव में, कस्बे-कस्बे में, नगर-नगर में और नगरों के मुहल्ले-मुहल्ले में हो रहा था। ऐसे विस्तृत और व्यापक आन्दोलन को चलाने वाला कौन है, यह स्पष्ट नहीं था। चीफ सेक्रेटरी का सन्देह स्वाभाविक रूप में मन्त्री-मंडल पर गया। इस कारण वह सीधा गवर्नर के पास पहुँचा। लगभग एक घण्टे के वार्तालाप के पश्चात् चीफ सेक्रेटरी बहुत लम्बा मुख बनाये गवर्नर की कोठी से निकला।

कृष्णकुमार एक जत्थे के साथ लखनऊ से चलकर रायबरेली पहुँचा और वहाँ से वह साथियों सहित देहात में प्रचार के लिए निकल पड़ा। पहले आठ-दस दिन तो बहुत सुभीते से निकल गये। पुलिस के कर्मचारी और अन्य सरकारी अफसर या तो इन लोगों को कुछ कहते ही न थे या कहते थे तो वे इनके रहने, खाने-पीने में सहायता देने के लिए। परन्तु एक दिन एकाएक व्यवहार में परिवर्तन हो गया।

विनोद अवध-भर का नायक था। वह एक-एक, दो-दो दिन प्रत्येक मण्डली के साथ रहकर उनके काम का निरीक्षण कर रहा था। कृष्णकुमार की मण्डली घूमती हुई एक गाँव कृष्णगंज में पहुँच चुकी थी। ये लोग रात को एक मन्दिर में सोये। जब प्रातःकाल उठे तो विनोद उनके साथ काम करने के लिए वहाँ पहुँच गया। स्नानादि कर गाँव में घोषणा करने के लिए उनमें से एक विद्यार्थी ने डुग्गी गले में लटका ली। वह एक और को साथ लेकर जाने ही वाला था कि वहाँ पुलिस आ धमकी। एक कान्स्टेबल एक दस्ती लिखा कागज़ का टुकड़ा लिये आ पहुँचा। लिखा था, 'शिव मन्दिर में जितने गाँव से बाहर के लोग आये हैं, थाने में उपस्थित करो।'

यह पैन्सिल से लिखा कागज़ का टुकड़ा जब विनोद ने पढ़ा तो उसने पूछा, "इसको लिखने वाला कौन है?"

"दारोगा साहब।"

"कैसे पता चले? नाम तो किसी का लिखा नहीं।"

"वहाँ चलकर पता चल जायगा।"

"आखिर हम लोग वहाँ जायें ही क्यों?"

"तुम सब बदमाश हो, इसलिए।"

विनोद का देहाती पुलिस से पहला वास्ता था। वह कुछ सोचकर साथियों से बोला, "कुछ गलती हो गई प्रतीत होती है। मैं चाहता हूँ कि व्यर्थ का झगड़ा न खड़ा हो जाय, इसलिए थाने चला ही जाना चाहिए।"

मण्डली के सब-के-सब लोग थाने पहुँचे। थानेदार अभी घर से बाहर नहीं निकला था। विवश वे लोग उसकी प्रतीक्षा करने लगे। ग्यारह बजे तक दारोगा थाने में आया। इस समय वह कान्स्टेबल, जो विद्यार्थियों को बुलाकर लाया था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाना खाने चला गया था। एक बार विनोद ने दारोगा से जाकर कहा भी, "फरमाइये, हमें क्यों बुलाया है ?"

विनोद को उत्तर मिला, "अभी ठहरो।"

"साहब, हमने खाना नहीं खाया। हमें भूख लग रही है।"

"तो मैं क्या करूँ ?"

विनोद इस छोटी-सी बात से सारी योजना को बदनाम नहीं करना चाहता था। अतएव क्रोध को भीतर-ही-भीतर पी गया। दो घण्टे की और प्रतीक्षा के बाद वही कांस्टेबल एक अधेड़ उमर की औरत को साथ लिये थाने में आ पहुँचा। औरत को दारोगा साहब के सम्मुख पेश कर उसका बयान लिखा दिया। बयान इस प्रकार था, "आधी रात गुज़र चुकी थी कि मेरे मकान के सेहन में खटाक के शब्द से मेरी नींद खुल गई। मैं उठकर खाट पर बैठ गई। मैं चिल्लाकर शोर मचाना ही चाहती थी कि दो आदमियों ने मेरे मुख में कपड़ा ठूंस दिया और पीछे उन्होंने मेरे साथ व्यभिचार किया। बारी-बारी से सबने। लगभग एक घण्टे के पश्चात् वे वहाँ से दीवार फाँदकर चले गये। चाँद की चाँदनी में मैंने देखा कि सब छः व्यक्ति थे।"

बयान लिखने के पश्चात् दारोगा ने पूछा, "तुम उनको पहचानती हो ?"

"वही लौंडे थे जो कल बाज़ार में लोगों को बतला रहे थे।"

"तुम उनको पहचान लोगी ?"

"हाँ, ज़रूर पहचान लूंगी।"

दारोगा ने विनोद और दूसरे लड़कों को कमरे के भीतर बुला लिया। सबको एक पंक्ति में खड़ा कर दारोगा ने उस औरत से कहा, "देखो तो, इनमें कोई है ?"

औरत ने लड़कों के समीप आकर देखा। विनोद पर हाथ रखकर बोली, "इसने मेरा मुख बन्द किया था।"

फिर एक और की ओर संकेत कर कहने लगी, "इसने मेरे मुख पर पट्टी बाँधी थी।" पश्चात् बोली, "ये सब थे जिन्होंने मेरे साथ दुराचार किया था।"

सब लड़के अवाक् मुख खड़े रह गये। दारोगा ने हुक्म दिया, "सबको हवालात में डाल दो।"

विनोद तो यह सब माजरा देख संज्ञाशून्य हो कितनी ही देर खड़ा रहा। आखिर कहने लगा, "मैं अपने घर समाचार भेजना चाहता हूँ।"

"कैसे भेजोगे ?"

"तार द्वारा।"

दारोगा ने सोचकर स्वीकृति दे दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ७ :

विनोद का तार मिस्टर माथुर को सायंकाल मिला। लिखा था, 'मैं साथियों सहित ज़बर-ज़नाह के दोष में पकड़ा गया हूँ—विनोद।'

मिस्टर माथुर यह तार पाकर दंग रह गये। उन्हें अपने लड़के पर भारी विश्वास था। इस पर भी उन्हें बहुत क्रोध चढ़ आया। उनके मुख से निकल गया, "लड़का अब कष्ट देने लगा है।" इस समय कुछ मित्र समीप ही बैठे थे। एक ने पूछा, "दादा, क्या है?"

मिस्टर माथुर ने तार उनके हाथ में दे दिया। सब मित्र उठकर तार पढ़ने लगे। सबके मुख क्रोध से लाल हो गये। एक ने कहा, "यह झूठ है।"

मिस्टर माथुर ने कहा, "यह तो मैं भी समझता हूँ, परन्तु लड़का बदनाम तो हो जायगा।"

इस पर सब बोल उठे, "बिनू का क्या दोष है?"

मिस्टर माथुर जानते थे कि शेखरानन्द प्रान्त-भर का नेता है। उसने संघ का दफ्तर अमीनाबाद पार्क में बना रखा था। इस कारण वह पहले शेखरानन्द से ही मिलने गये। शेखरानन्द अपने दफ्तर में बैठा तारों और चिट्ठियों के ढेर को सामने रख बड़े सोच में पड़ गया था। वह विनोद के पिता को आया देख खड़ा हो, नमस्ते कर, प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगा। मिस्टर माथुर ने विनोद का तार उसके सामने रख दिया। शेखरानन्द ने तार को पढ़ा। मिस्टर माथुर को एक कुर्सी पर बैठा शेखरानन्द ने मेज़ पर पड़े तारों और चिट्ठियों के ढेर में से एक तार उठाकर सामने कर कहा, "ज़रा इसे भी पढ़िये।"

लिखा था, 'सारी मंडली चोरी के इलज़ाम में पकड़ी गई है।'

शेखरानन्द ने एक और तार दिखाया। इसमें लिखा था, 'सब पकड़े गये हैं। कुछ कारण नहीं बताया।'

एक और तार दिखाया। लिखा था, 'जलसे में पुलिस ने लाठियाँ चलाईं और पीछे बलवे का दोष लगाकर पकड़ लिया है।'

अब शेखरानन्द ने एक चिट्ठी दिखाई। लिखा था, 'सारी पार्टी में से तीन को औरत को बेइज़्ज़त करने के कारण पकड़ लिया है।'

मिस्टर माथुर अब एक-एक कर सब डाक पढ़ने लगे। प्रान्त-भर में यही दमन-नीति चलाई गई थी। अब उन्हें विश्वास हो गया था कि प्रान्त-भर में जब एक ही नीति चल रही है तो निश्चय लखनऊ से आज्ञा जाने पर ऐसा हुआ है। उन्होंने सब डाक बटोरकर एक बड़े लिफाफे में डाल ली और शेखरानन्द को साथ ले महामन्त्री के पास पहुँचे।

महामन्त्री को विद्यार्थी-संघ की सूचना तो मिल चुकी थी, परन्तु वह यह नहीं जानता था कि ये लोग क्या कर रहे हैं और कहाँ-कहाँ कर रहे हैं। शेखरानन्द ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्रम महामन्त्री को समझाया और पश्चात् बताया, "दो सौ से ऊपर विद्यार्थियों की मण्डलियाँ प्रांत में भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रचार कर रही थीं। कुछ दिन तक तो सबकी सूचना भली-भाँति कार्य चलने की आती रही, परन्तु कल से ये तार और चिट्ठियाँ आ चुकी हैं। एकाएक ही यह झगड़ा पुलिस की ओर से खड़ा हो गया है।"

महामन्त्री बहुत परेशान था। वह यद्यपि इतने विस्तृत आन्दोलन को पसन्द नहीं करता था, परन्तु वह यह भी पसन्द नहीं करता था कि उस प्रान्त में, जहाँ का वह महामन्त्री है, ऐसा अनर्थ हो। वह सोचता था कि एक ही दिन-रात में एक हज़ार से ऊपर विद्यार्थी ऐसे झूठे लांछनों पर पकड़े गये। सब-के-सब राजनैतिक काम करने वाले, परन्तु चरित्र-सम्बन्धी दोषों में दोषी ठहराये गए। उसके लिए यह सब अवस्था शोचनीय हो उठी थी। मिस्टर माथुर ने कहा, "मैंने तो आपसे पहले ही कहा था कि सन् ३० और ३२ में अन्याययुक्त व्यवहार करने वाले अफसरों पर जाँच-कमेटी बैठा देनी चाहिए थी। इसका परिणाम यह होता कि जो अंधेरगर्दी ये लोग अब तक अपने अफसरों के इशारों पर करते रहे हैं, अब करते समय झिझकते।"

"आप कहते तो ठीक हैं," महामन्त्री ने सिर झुकाते हुए कहा, "मगर गवर्नर इस बात की स्वीकृति न देता।"

"तो क्या आप केवल वही काम करने के लिए मन्त्री बने हैं, जो गवर्नर को पसन्द होंगे?"

"परन्तु एक और बात भी है। जब एक पार्टी शक्ति हाथ में ले तो क्या वह दूसरी पार्टी के समय काम करने वाले अफसरों पर जाँच-कमेटी बैठाया करे? यह सिद्धान्त रूप से गलत है।"

"ओह! तो आप गवर्नर और अंग्रेज़ी सरकार को देश की एक राजनैतिक पार्टी समझते हैं। लोगों ने कांग्रेस को एक पार्टी समझकर वोट नहीं दिया था। लोग तो आपको देश के प्रतिनिधि समझते हैं। देशी और विदेशी दो दल हैं। यह वैसी पार्टी नहीं जैसी इंगलैंड में टोरी और विग थे। आपको तो जाँच करने का पूरा अधिकार था कि विदेशियों के अधीन किसने नियम के प्रतिकूल देशवासियों को कष्ट पहुँचाया है। अब इस विषय में भी आप कुछ करियेगा या नहीं?"

महामन्त्री ने कहा, "मैं कल सुबह यत्न करूंगा।"

मिस्टर माथुर उसी रात कृष्णगंज पहुँचे और दूसरे दिन रायबरेली की ज़िला कचहरी में ज़मानत दिलवाकर विनोद और उसकी पार्टी को छुड़ा लाये। दूसरी ओर महामन्त्री के प्रयत्न का यह फल निकला कि चीफ सेक्रेटरी इस बात के लिए राजी हो गया कि सब पकड़े हुए विद्यार्थियों को ज़मानत-मुचलकों पर छोड़ दे और पुलिस की कार्यवाही की जाँच के लिए दो-चार 'टेस्ट केस' (नमूने के मुकदमे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलने दिये जायें।

युवक-संघ के प्रायः सब लोग छूट तो गये, परन्तु ज़मानत-मुचलकों में यह लिखा लिया गया था कि वे लोग अब अपने-अपने हलकों में भ्रमण नहीं करेंगे। इस प्रकार पहले ही प्रान्त में पथिक की योजना केवल एक ही सप्ताह तक चल सकी।

पंजाब में केन्द्रीय सरकार की सूचना आने पर ही सब कॉलेजों के प्रिन्सिपलों को डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन का डी० ओ० आ गया कि युवक-संघ एक अस्वीकृत संस्था है और किसी भी यूनिवर्सिटी से प्रमाणित कॉलेज के विद्यार्थी उसमें नहीं जा सकते। परिणाम यह हुआ कि कॉलेज के अधिकारियों ने अपने-अपने कॉलेज के लड़कों को मना कर दिया। लड़कों को यह धमकी दे दी कि यदि वे इस संस्था से सम्बन्ध रखेंगे तो कॉलेज से निकाल दिये जायेंगे। इस धमकी ने कॉलेज के विद्यार्थियों में एक बार तो क्रोध उत्पन्न किया, परन्तु प्रांत-भर से कोई प्रोत्साहन न पाकर उनका क्रोध शीघ्र ही शांत हो गया। लड़कों के इस उत्तम आचरण पर कॉलेजों के प्रिन्सिपलों और प्रांत के अन्य बड़े-बड़े लोगों ने उनको बधाइयाँ दीं। प्रांत के एक वयोवृद्ध शिक्षा विशेषज्ञ ने इस समय एक अंग्रेज़ी समाचार-पत्र में विद्यार्थियों की अनुशासनप्रियता की सराहना करते हुए लिखा, 'पंजाब को इस बात का गर्व होना चाहिए कि पंजाब के युवक प्रांत के दूसरों युवकों से अधिक विचारशील और गम्भीर सिद्ध हुए हैं।'

केन्द्रीय सरकार की ओर से सब प्रांतों की सरकारों को युवक-संघ की योजना में बाधा डालने के लिए लिखा गया था। पंजाब सरकार ने इस योजना को सरलता से रोक दिया। बंगाल सरकार ने इस संस्था के केन्द्र-स्थान पर अधिकार जमाकर अपनी ओर से इसका स्रोत बन्द कर दिया। बम्बई प्रांत में कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल को गवर्नर द्वारा संघ की कार्यवाही का रोका जाना पसन्द नहीं आया और मन्त्री-मण्डल ने गवर्नर को पहले ही सचेत कर दिया कि वे लोगों के अपने विचारों के प्रचार में बाधा पसन्द नहीं करेंगे। जो नीति संयुक्त प्रांत में चली थी, वह बम्बई में दुहराई नहीं जा सकती थी। अतएव बम्बई सरकार बहुत परेशान थी।

देश की परिस्थिति सरकार के अनुकूल होती जाती थी। जब कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल बने तो शुद्ध कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल ही बनाये गये। कांग्रेस के लिए ऐसा करना सम्भव था। कारण यह कि कांग्रेस-कमेटी में सब फिरकों के लोग सम्मिलित थे। कांग्रेस एक राजनैतिक विचार के आधार पर बनी थी। इसके विपरीत मुस्लिम-लीग और हिन्दू-महासभा को पहले तो कुछ सफलता नहीं मिली। पश्चात् जब दो प्रांतों में दो मुसलमान पार्टियाँ बहुसंख्या में चुनाव में चुनी गईं तो वे कांग्रेस की तरह सब फिरकों के लोगों का मन्त्री-मण्डल नहीं बना सकीं। कारण स्पष्ट था। ये मुसलमान पार्टियाँ किसी राजनैतिक विचार के आधार पर नहीं थीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्युत् फिरकेदारी के विचार पर बनी थीं। इसलिए अपने-अपने फिरके के लोग ही रखती थीं। परिणाम यह हुआ कि इन मुस्लिम पार्टियों को अपने से विरोधी विचार की पार्टियों में से भी मन्त्री बनाने पड़े। मुसलमान पार्टियों वाले चाहते तो थे कि वे केवल-मात्र अपनी पार्टी में से मन्त्री-मण्डल बनायें, परन्तु इन पार्टियों के नेताओं के मन में मन्त्री बनाने का लोभ शायद पार्टी का अधिकार-निर्माण करने से अधिक था। या शायद वे स्वयं भी समझते थे कि पार्टी एक फिरके की होने से प्रांत में मन्त्री-मण्डल नहीं चला सकेंगे। परिणाम यह हुआ कि उन प्रांतों में, जहाँ कांग्रेस के सदस्य बहुसंख्या में चुने गये, वहाँ तो शुद्ध कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल बन गये और जहाँ मुस्लिम पार्टियों के लोग बहुसंख्या में थे, उन्हें मिश्रित मन्त्री-मण्डल बनाने पड़े।

मुसलमान नेता इस बात से लज्जित थे। देश-भर में एक स्थान पर भी अपनी पार्टी का विशुद्ध मन्त्री-मण्डल नहीं बना सके। ऐसी परिस्थिति में इसके कारण को जानने और यथार्थ त्रुटि को दूर करने के स्थान पर उन्होंने उस पार्टी पर निराधार दोषारोपण करने आरम्भ किये जो पार्टी अपने विशुद्ध मन्त्री-मण्डल बनाने में सफल हुई थी। चाहिये तो यह था कि वे अपनी पार्टी-बन्दी के तरीके में त्रुटि को पहचानते। उन्हें यह समझना चाहिये था कि राजनैतिक पार्टियाँ मज़हबी विचारों के आधार पर नहीं बन सकतीं। ऐसी पार्टी में चाहे आप कितनी भी राजनीति पर चर्चा करें जब तक उसके सिद्धान्तों में एक फिरके के लाभ की ही बातें होंगी तब तक दूसरे फिरके वाले उसमें सम्मिलित नहीं हो सकेंगे।

कांग्रेसी नेता स्वयं तो एक राजनैतिक पार्टी बनाने में सफल हो गये, परन्तु वे यह नहीं समझ सके कि उनके विपक्षी कोई राजनैतिक पार्टी नहीं है। उदाहरण के रूप में कांग्रेस-पार्टी देश को स्वतन्त्र करना अपना ध्येय मानती थी तो क्या विपक्षी देश को स्वतन्त्र न करना अपना ध्येय मानते थे? या यों कहो कि कांग्रेस घरेलू दस्तकारियों को प्रोत्साहन देना चाहती थी तो क्या उसके विपक्षी घरेलू दस्तकारी के विरोधी थे? या यदि कांग्रेस वाले किसानों को आर्थिक सुभीता देना चाहते थे तो क्या विपक्षी किसानों को सुभीता देने के विपरीत थे? यथार्थ बात यह थी कि सिद्धान्त रूप से राजनैतिक विचार से विपक्षी, विपक्षी नहीं थे। जब कांग्रेस वाले यह नहीं समझे तो उन्होंने उनके साथ समझौता करने का यत्न किया। मतभेद किसी राजनैतिक विषय पर तो था नहीं, तो समझौता क्या हो सकता था। हाँ, इस समझौते का परिणाम वही हुआ, जो एक फिरके के लाभ को देश के लाभ से ऊँचा समझने से हो सकता था। राजनैतिक क्षेत्र में फिरकेबन्दी का वातावरण पैदा कर दिया गया। मुस्लिम-लीग को चुनाव में असफलता मिली थी। इस असफलता से उत्पन्न रोष को शांत करने के लिए उसने कांग्रेस को गालियाँ दीं। कांग्रेस ने उससे समझौता करने के लिए उत्सुकता प्रकट की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम में मुस्लिम-लीग वालों को यह असत्य बात कहने का अवसर मिल गया कि उनकी माँगें ठीक हैं, नहीं तो कांग्रेस वाले समझौता क्यों करते। समझौता इसलिए नहीं हो सका कि उनकी माँगें, एक बनिये की माँगों की भाँति, कांग्रेस स्वीकार नहीं करना चाहती थी।

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का प्रभाव भी देश पर हो रहा था। जर्मनी को ज्यों-ज्यों अपने में शक्ति का आभास होता जाता था, त्यों-त्यों वह अपने अड़ोस-पड़ोस के देशों को तोड़-मरोड़कर उदरस्थ करता जाता था। यूरोप की राजनैतिक अवस्था डाँवाडोल थी। दुनिया-भर के लोग प्रतिक्षण यह सोच रहे थे कि अभी युद्ध छिड़ा और छिड़ा। हिन्दुस्तान में भी इस युद्ध के छिड़ जाने पर आशायें बाँधी जा रही थीं। वे लोग, जिनकी सरकार को युद्ध में आवश्यकता पड़नी थी, देश के दूसरे लोगों से समझौता करने के स्थान पर सरकार से बातें करना अधिक उपयुक्त समझते थे। उन्हें इसी में अपना भला प्रतीत होता था।

ऐसे अयुक्तिसंगत वातावरण में युवक-संघ के कार्यक्रम की नौका डाँवाडोल थी।

: ८ :

नवाब मुर्तज़ाअली खाँ अकरम के चले जाने से भौचक्के रह गये। कई दिन तक तो उनको यह समझ ही नहीं पड़ा कि यह हो क्या गया है। उनकी लड़की भाग गई, एक हिन्दू से विवाह करने के लिए। उनका लड़का घर से चला गया, हिन्दुओं की राजनीति का समर्थन करता हुआ। वह सोचते थे कि उनके विचार क्यों सलीमा और अकरम को पसन्द नहीं आये। भला एक मुसलमान लड़की मुसलमान से विवाह करना क्यों पसन्द नहीं करती, और एक मुसलमान लड़का क्यों मुसलमानों के एक नये मुल्क के बनने को पसन्द नहीं करता—ये प्रश्न थे जो उनके मस्तिष्क में चक्कर काटते रहते थे और वह किसी प्रकार भी सलीमा और अकरम के आचरण को युक्तियुक्त मानने के लिए तैयार नहीं थे।

अकरम के चले जाने के पश्चात् कई दिन तक नवाब साहब घर से बाहर नहीं निकले। वह सोचते थे कि एक बार सलीमा से मिलकर फिर उसे समझायें। उन्हें सलीमा का पता ज्ञात था। यह पता उन्हें सलीमा को अकरम की चिट्ठियाँ रोकने से मालूम हुआ था। हर रात को वह कलकत्ता जाने की सोचकर सोते थे; परन्तु प्रातःकाल उठते समय उनका निश्चय ढीला पड़ जाता था और जाने की तैयारी आरम्भ भी नहीं हो सकती थी।

एक दिन उनको अकरम और सलीमा की चिट्ठियाँ मिलीं। ये चिट्ठियाँ उन्होंने कलकत्ते से बम्बई जाते समय लिखी थीं। सलीमा ने लिखा था :

अब्बाजान व अम्मीजान, सलामालैकुम।

भाईजान अकरम से मालूम हुआ है कि मेरे आपके यहाँ से चले आने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको बहुत तकलीफ हुई है। मैं इसके लिए आपसे माफी चाहती हूँ। मैं हकीकत में, यह जानकर कि आप मेरे लिए फिक्रमन्द हैं, बहुत परेशान हूँ। मैं आपकी फिक्र दूर करने के लिए क्या कर सकती हूँ, यह समझ में नहीं आता। आप जानते हैं कि मैं घर से खुशी-खुशी नहीं निकली। निकलने पर मजबूर की गई थी। और फिर मैं लड़की की जात हूँ। एक-न-एक दिन बाप के घर से विदा होना ही था। तो फिर आपको इस बात से तकलीफ नहीं होनी चाहिये। हाँ, अगर आपको फिक्र है कि मैं अच्छी तरह खुशोखुर्रम हूँ या नहीं, तो मैं आपकी फिक्र दूर करने के लिए लिख रही हूँ। माँ-बाप को अपनी लड़की को खुश और आराम से देखकर तसकीन होनी चाहिये। और मैं आपको तसकीन दिलाती हूँ कि मैं पूरी तरह से खुश हूँ और आराम से हूँ। मैंने अभी शादी नहीं की। इसलिए नहीं की कि मेरी शादी का अभी फैसला नहीं हुआ, वल्कि इसलिए कि अभी शादी करना मुनासिब नहीं समझती। अब मैं भाईजान के साथ रहती हूँ।

—आपकी एहसानमन्द, सलीमा।

अकरम की चिट्ठी इस प्रकार थी :

अब्बाजान व अम्मीजान, सलामालैकुम।

मैंने जब से घर छोड़ा है मैं लगातार सोचता रहता हूँ कि मैंने यह अच्छा किया है या खराब। आज तक मुझे घर छोड़ने में कभी भी अफसोस नहीं हुआ। सिर्फ एक बात है जिससे कभी-कभी दिल के आसमान पर काले-काले बादल मँडराने लगते हैं। वह है आपकी परेशानी। इस पर भी मैं आजकल एक ऐसे काम में लगा हूँ कि जिसके मुकाबले में आपकी परेशानी कुछ ज्यादा हकीकत नहीं रखती। यह काम मैं मुल्क, मादरे-वतन की परेशानी को दूर करने के लिए कर रहा हूँ।

मैं जानता हूँ कि आप मुझसे मुत्तफिक नहीं हैं और हो भी कैसे सकते हैं। आपने तो दुनिया के मुल्कों की तवारीख पढ़ी नहीं। आपने मेरी तरह दुनिया के मुल्कों के तौर-तरीकों को देखा नहीं। इसलिए अगर आप मेरी तरह सोचते नहीं और मेरी तरह महसूस नहीं करते तो कोई हैरानी की बात नहीं हो सकती। इसलिए मैं आपसे नाराज़ नहीं हो सकता। आप अपने ख्यालात को रखें, तो भी मेरे तो आप माँ और बाप हैं। मैं आपकी उतनी ही इज़्ज़त करता हूँ, जितनी तब करता, जब आप मेरे ख्याल को दुरुस्त मानते।

मैं आपको अपना हालचाल लिखता रहूँगा और जब मेरा कोई मुस्तकिल पता होगा तब मैं आपको लिख दूँगा। उम्मीद है, आप भी मेरे ऊपर नाराज़ न होकर अपनी नज़रें मेहर रखेंगे। —फरज़न्द, अकरम।

इन चिट्ठियों ने नवाब साहब के क्रोध को शांत करने के स्थान और भी भड़का दिया। 'मादरे वतन की परेशानी दूर करने के लिए कर रहा हूँ,' छीः!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन-सा मादरे वतन ? ऐसा सोचकर नवाब साहब ने चिट्ठियों को मेज़ की दराज में बन्द कर दिया।

इसके लगभग दो सप्ताह पश्चात् की बात है। बम्बई से मजलिस-तन्जीम-इस्लाम के सदस्य खानबहादुर मियाँ अब्दुलरशीद, बम्बई के एक मशहूर खोजा सौदागर, की चिट्ठी आई। लिखा था :

मोतरिम नवाब साहब,

आपको निहायत ज़रूरी बात लिख रहा हूँ। यहाँ बम्बई में पाकिस्तान के ख्याल के हक में हमने बहुत मुआफिक फिज़ा पैदा कर ली थी। जायदाद-टैक्स के खिलाफ इज़हार करने में लोगों का सरगना बनकर हमने पारसी और मारवाड़ी लोगों को भी अपने मुआफिक कर लिया था। मुसलमानों में तो मानो एक नई रूह फूंक दी थी। क्या लड़के और क्या लड़कियाँ, क्या मर्द और क्या औरतें, किसी स्कूल, कॉलेज या किसी जलसे में वन्देमातरम् का गाना सुनना तक गवारा नहीं करते थे। एक दिन तो गवर्नमेंट कॉलेज के मुसलमानों और हिन्दू तुल्बा में इसी बात पर झगड़ा हो गया। खूब जूतपैंज़ार हुई।

जब यह सबकुछ हो गया तो लखनऊ के एक नवाबज़ादे, आँ जनाब के फरज़न्द, यहाँ तशरीफ ले आये। उन्होंने कॉलेजों और स्कूलों के लड़कों में घूम-घूमकर, उन्हें समझा-समझाकर हमारी सब मेहनत को मिट्टी में मिला दिया है। आपके फरज़न्द के साथ एक लड़की भी है। उसका नाम कीर्तिदेवी उर्फ सलीमा है। कोई कहते हैं, वह मुसलमान थी, अब हिन्दू हो गई है। दूसरे कहते हैं, हिन्दू थी, अब मुसलमान हो गई है। दोनों ने बम्बई के तुल्बा में इन्कलाब पैदा कर दिया है। कल ही मैं एक मुसलमान तुल्बा की तरफ से आपके फरज़न्द को दी गई दावत में हाज़िर था। दावत के पहले वन्देमातरम् का गीत गाया गया। मैंने इसके खिलाफ एतराज़ किया तो एक हज़रत कहने लगे, 'हम इसमें कोई एतराज़ की बात नहीं देखते।' मैंने कहा, 'यह बुतपरस्ती सिखाता है।' तो वह कीर्तिदेवी या सलीमा, जो कुछ भी वह है, मुझसे पूछने लगी, 'ये लाखों आगाखानी बुतपरस्त हैं या नहीं ?' मैंने कहा, 'यह बंगालियों की चालबाज़ी है। वे धोखा देकर तुमसे अपनी काली देवी या दुर्गा भवानी की पूजा करवाना चाहते हैं।' इस पर आपके फरज़न्द उठ खड़े हुए। कहने लगे, 'बंगाली धोखा दे रहे हैं या कुछ मुसलमान लीडर अपनी लाइल्मी का इज़हार कर रहे हैं, यह समझाने के लिए मैं आपको वन्देमातरम् गीत के लफ्ज़ी मायने बताता हूँ।' इस पर वह वन्देमातरम् गीत के मायने बताने लगे। हकीकत में मायने तो मुझे भी नहीं आते थे। मैंने जेब से कलम-कागज़ निकाल लिखना शुरू कर दिया। मिस्टर अकरम बताने लगे :

वन्देमातरम्—मैं मादरे वतन को सलाम करता हूँ।

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्—इसमें अच्छी-अच्छी नदियाँ, नाले और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालाब हैं। इसमें अच्छे-अच्छे फल पैदा होते हैं। इसमें मलय पर्वत से ठण्डी हवा चलती है।

शस्यश्यामलाम् मातरम्—यह हरे खेतों से भरी हुई है। इसे हम सलाम करते हैं।

शुभ्रज्योत्स्नाम् पुलकितयामिनीम्—जिसमें रातें दिल को खुश करने वाली चाँदनी से भरी हैं।

सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्—जो हँसती रहती है और जिसकी ज़बान में मिठास है।

सुखदाम् वरदाम् मातरम्—ऐसी माँ से हम सुख माँगते हैं और बरकत माँगते हैं। ऐसा हमारा वतन है। इसे हम सलाम करते हैं।

इसके बाद अकरम साहब कहने लगे, 'बस, इतना ही यहाँ गाया गया है और इसके यही मायने हैं। इसे कोई क्या बुतपरस्ती कह सकता है? कुछ बूढ़े, अनपढ़, लाइल्म मुसलमान लीडर हिन्दू-मुसलमानों में फसाद पैदा करने का इसे बहाना बना रहे हैं।' इस पर मैंने फिर कहा, 'यह संस्कृत ज़बान में है। इसलिए एतराज़ की बात है।' अब एक मुसलमान लड़की उठकर कहने लगी, 'मैं नहीं जानती कि यह संस्कृत है या बंगाली है। मेरी मादरी ज़ुबान गुजराती है और मैं इस गीत की ज़ुबान को बखूबी समझ सकती हूँ। असल बात तो यह है कि इस गीत का जो तरजुमा उर्दू ज़ुबान में मिस्टर अकरम ने किया है, वह मेरे लिए समझना ज्यादा मुश्किल है।'

नवाब साहब, हमारी महीनों की, बल्कि यों कहो कि, सालों की मेहनत इस तरह जाया की जा रही है। अभी तक ये ख्यालात तालिब-इल्मों तक ही महदूद हैं। आम मुसलमानों तक नहीं पहुँचे। मगर मिस्टर अकरम और उनके साथ सलीमा ने एक स्कीम बनाई है जिसके मुताबिक दो-डेढ़ हज़ार के करीब तालिबे-इल्म सूबे-भर में घूमकर इन्हीं बातों का प्रचार करेंगे। अगर यह हो गया तो मुसलमानी हुकूमत के ख्वाब काफूर समझिये। मुझे इस स्कीम की मुखालफत करनी पड़ेगी। हम यह पसन्द नहीं करेंगे कि हज़ारों तालिबे-इल्म, पढ़े-लिखे नौजवान, हिन्दू और मुसलमान, मुसलमानों को हिन्दुओं से मेल-मिलाप की तालीम दें।

हम यह चाहते हैं कि एक बार आप यहाँ आकर अपने बरखुरदार को समझा दें, नहीं तो दूसरे तरीके इस्तेमाल करने पड़ेंगे।

यह लड़की कौन है? क्या वह मिस्टर अकरम की बीवी है या बीवी बनने वाली है? अगर आप आ जायें तो सब बात साफ हो जायेगी। मुझे तो कुछ ऐसा मालूम होता है कि इसी लड़की ने अपना गन्दा असर अकरम के दिमाग पर डाल रखा है। अगर मेरा ख्याल ठीक है तो इस लड़की को यहाँ से हटा देना ठीक होगा, तभी अकरम का दिमाग ठीक हो सकेगा। आप कब आवेंगे? —आपका, अब्दुलरशीद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवाब साहब यह चिट्ठी पढ़ आगबबूला हो गये। वह सोचते थे कि क्या यह कलंक का टीका उनके माथे पर ही लगना है कि उनका ही लड़का मुसलमानों की उठती हुई ख्वाहिशात (अभिलाषाओं) को मटियामेट करेगा। उन्होंने बम्बई जाने का फैसला कर लिया।

: ९ :

जब नरोत्तम ने पथिक से मिलने का निर्णय किया तो युवक-संघ का कलकत्ते वाला कार्यालय बन्द हो चुका था। मिलिन्द और कल्याणी बन्दी बनाई जा चुकी थीं। यह तो सौभाग्य की बात थी कि मोहन वहाँ नहीं था। नहीं तो वह भी पकड़ लिया जाता। पथिक बिहार और मध्य-भारत का दौरा कर रहा था, जब संयुक्त प्रांत के संघ के कार्यकर्ता चरित्र सम्बन्धी दोषों के लिए पकड़ लिए गये थे। वह यह देख चकित था कि उसकी योजना कैसे बन्द की गई है। उसे परेशानी भी थी कि भले घर के लड़कों को किस प्रकार बदनाम किया गया।

इसके कुछ दिन पश्चात् पंजाब में डाली गई बाधा की सूचना भी उसे मिली। इस पर भी वह निराश नहीं हुआ। वह यह सोच रहा था कि मध्य-भारत का दौरा कर पंजाब जायेगा और वहाँ जीवन-संचार करने का यत्न करेगा। वह यह सोच रहा था कि यदि विद्यार्थी-जगत् में से पर्याप्त कार्यकर्ता न मिले तो बाहर के युवकों को भी इस योजना में सम्मिलित करने का यत्न करेगा। मोहन बाबू को जब कलकत्ते की सूचना मिली तो वह कलकत्ते नहीं गया। वह देवा वापस लौट गया। वहाँ वह पथिक की आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा कि वह पंजाब में जाये अथवा बम्बई में।

नरोत्तम को डॉ० घोष के मकान से पता मिला कि मिलिन्द के पकड़े जाने के पश्चात् केवल मोहन ही पथिक का प्रोग्राम और मिलने का स्थान बता सकता है। मोहन का पता उसकी माँ अथवा सुरेश से मिल सकता है। अतएव नरोत्तम ने सुरेश को पत्र लिख पूछा कि मोहन का पता क्या है। वहाँ से उत्तर मिला कि मोहन देवा में है। नरोत्तम बिना और समय व्यर्थ खोने के स्वयं देवा जा पहुँचा। वहाँ वह मोहन से मिला। मोहन को यह तो मालूम हो गया था कि नरोत्तम अपने-आपको पथिक के पूर्व परिचितों में समझता है, परन्तु वह नरोत्तम से पहले कभी मिला नहीं था।

नरोत्तम जब देवा पहुँचा तो थानेदार ने ज्योतिप्रसाद मिश्र को इलाहाबाद चिट्ठी से सूचना दे दी कि कलकत्ते के लोग फिर पथिक की पूछताछ के लिए आये हैं। इधर विजयबहादुर को थानेदार को भड़काने का अवसर मिल गया। वह यद्यपि यह नहीं जानता था कि पथिक की पुलिस वाले क्यों खोज कर रहे हैं, तो भी वह यह अवश्य चाहता था कि पथिक पकड़ा जाये। वह अभी तक बेनी की स्त्री का उसे छोड़ देना भूला नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन एक-दो दिन में पथिक से उत्तर पाने की आशा में था। इस कारण नरोत्तम को वह देवा में ही रोके हुए था। एक दिन सायंकाल मोहन नरोत्तम को सुरेश के अतिथिगृह से साथ लेकर पद्मा के घाट की ओर जा रहा था कि मार्ग में विजयबहादुर मिल गया। वह शराब पीकर मदमस्त हो रहा था। मोहन को देखकर वह वहीं खड़ा हो गया। "ओह ! तुम आ गये हो ?" वह झूमता हुआ कहने लगा, "यह सेठ भी ! ओह हो ! बहुत मज़ा हुआ। वोह···वोह···तुम उस पगले को जानते हो न···हुक···।" विजयबहादुर को अधिक पी जाने के कारण हिचकियाँ आ रही थीं न "···ओ···हुक···तुम जानते हो न उसे···वह पागल पकड़ा जायेगा ···हुक···हा-हा-हा···!"

विजयबहादुर झूमता हुआ मोहन के बहुत समीप आ गया और मोहन की आँखों में आँखें डालकर देखने लगा। विजयबहादुर के मुख से शराब की ऐसी सख्त दुर्गन्ध आ रही थी कि मोहन ने नाक चढ़ाकर मुख फेर लिया। विजयबहादुर हँसता हुआ पीछे हट गया। कहने लगा, "डर गये···ओह मोहन भैया, डर गये न ···पगले के साथ तुम भी पागल···हुक···डरो···नहीं···हुक। थानेदार कहता था ···हुक···पगला पकड़ा जायेगा···हुक···।" विजयबहादुर हँसता हुआ आगे बढ़ने लगा कि उसका पाँव किसी वस्तु से अटक गया। वह अपने को अपनी टाँगों पर स्थिर नहीं रख सका। वह सड़क पर लुढ़क गया।

नरोत्तम और मोहन विजयबहादुर को वहीं छोड़ पद्मा की ओर चल पड़े। नरोत्तम ने पूछा, "यह कौन था ?"

"यहाँ का एक आवारा आदमी है।"

"यह पागल कौन है, जिसके पकड़े जाने की बात कर रहा था ?"

"वही, गुरुदेव। जब वह यहाँ आये थे तो उनका दिमाग कुछ-कुछ खराब था।"

नरोत्तम इस बात को सुनकर गम्भीर विचार में डूब गया। वह मन में सोचता था कि यह शराब के नशे में था अवश्य, परन्तु पथिक के पकड़े जाने की बात इसके दिमाग में कहाँ से आ गई। इस विषय पर मोहन कुछ भी प्रकाश नहीं डाल सका।

रात को नरोत्तम सुरेश से मिला और उसने विजयबहादुर की बात बताई। सुरेश ने नरोत्तम को बताया, "पिछली बार जब आप और सेठ साहब यहाँ आये थे तो थानेदार यह तहकीकात करने आया था कि आप लोग कौन थे और यहाँ किस काम से आये थे। विजयबहादुर आजकल थानेदार से बहुत मेलजोल रखता है। मालूम होता है कि थानेदार ने उसके दिमाग में कुछ भर दिया है। और हाँ, तब इलाहाबाद से भी एक पुलिस अफसर आया था और आपके विषय में पूछताछ कर रहा था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद के अफसर की बात सुनकर नरोत्तम बहुत घबराया। वह जानता था कि यह अफसर ज्योतिप्रसाद के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता। विजयबहादुर के बार-बार पथिक के पकड़े जाने की बात कहने से वह समझ गया कि इस विषय में थाने में बातचीत अवश्य हुई होगी। उसने तुरन्त निश्चय किया कि पथिक को ढूंढ़कर, यदि वह मधुसूदन हो तो, सचेत कर देना चाहिये।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही नरोत्तम मोहन के घर पहुँचा और उससे बोला, "मैंने विजयबहादुर की बातों पर बहुत विचार किया है और मैं समझता हूँ कि उसको पथिक के पकड़े जाने की बात थाने से मालूम हुई है। यह सम्भव है कि पथिक के वारण्ट निकल चुके हैं। ऐसी अवस्था में मेरा उससे मिलना अत्यावश्यक है। मैं चाहता हूँ कि आप भी मेरे साथ चलें।"

मोहन यद्यपि पथिक के आदेश की प्रतीक्षा में था, तो भी उसके पकड़े जाने की सम्भावना ने उसे बेचैन कर दिया। वह नरोत्तम के साथ चलने को तैयार हो गया। नलिनी समीप बैठी बातें सुन रही थी। उसने कहा, "भैया, मैं भी चलूंगी।"

मोहन ने पूछा, "कहाँ?"

"भूतनाथ से मिलने।"

"तुम क्या करोगी?"

"मैं उससे मिलूंगी। मेरा जी चाहता है।"

मोहन ने कहा, "हट, नहीं जाना। माँ के पास कौन रहेगा?"

नलिनी सहम गई। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें आँसुओं से भर आईं। वह वहाँ से उठी और भीतर कमरे में चली गई। नरोत्तम ने मोहन से कहा, "इसे ले चलो न। क्या हानि है?"

"व्यर्थ का झंझट होगा।"

"झंझट की क्या बात है? ले चलो न। मैं इसे कलकत्ते ले चलूंगा। वहाँ माँ इसे देखकर बहुत प्रसन्न होंगी।"

मोहन मानता नहीं था, परन्तु नरोत्तम ने बहुत ज़ोर दिया। मोहन की माँ ने भी जब नलिनी को भीतर कमरे में चुपचाप रोते हुए देखा तो बाहर आ कहने लगी, "मोहन, ले जाओ न बिटिया को साथ। पहले गुरुदेव गये तो कई महीने रोती रही थी। उसका मन छोटा न करो।"

मोहन मान गया।

: १० :

मुसलमान विद्यार्थियों के जलसे में वन्देमातरम् गीत पर विरोध और उसमें सलीमा का विद्यार्थियों को समझाना, इस पर सब विद्यार्थियों का चुपचाप वन्देमातरम् सुनने के लिए तैयार हो जाना, यह समाचार 'बॉम्बे क्रॉनिकल' में छप गया। जब से अकरम और सलीमा बम्बई में पहुँचे थे, उन्होंने चुपचाप काम करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसन्द किया था। वे सदा यह यत्न करते रहते थे कि उनका नाम समाचार-पत्रों में न जाये। इस पर भी इस बार सलीमा की राष्ट्रीयता के लिए अपील इतनी प्रभावशाली थी कि संवाददाता उनका नाम दिये बिना नहीं रह सका।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' की यह प्रति मध्य-प्रांत के अमरावती नगर में पथिक को मिल गई। वह बम्बई में सलीमा को देश का काम करते पढ़ सुन्न रह गया। उसका विचार था कि वह अभी भी कलकत्ते में कहीं किसी दुकान पर क्लर्की कर रही होगी। कल्याणी द्वारा डाँटे जाने के पश्चात् वह सलीमा को समझा-बुझाकर राज़ी कर लेने का निश्चय कर चुका था। अब जब उसे विदित हुआ कि वह बम्बई में वही काम कर रही है, जिसको करने के लिए उसने अकरम को कहा था, वह चकित रह गया। उसका मन कहता था कि वह सत्य कहती थी कि वह अपने आचरण से यह सिद्ध कर देगी कि वह उसके योग्य है। उसने क़माल कर दिया है।

पथिक के मन में आया कि पंजाब जाने से पूर्व वह एक बार बम्बई होता जाये तो क्या हानि है। अगले ही दिन वह बम्बई के लिए चल पड़ा।

अकरम और सलीमा धोबी तालाब पर एक मकान की सबसे ऊपर की मंज़िल पर दो कमरे भाड़े में लेकर रहते थे। उनका दिन-भर का काम यह था कि बम्बई के विद्यार्थियों को प्रचार-कार्य के लिए संगठित करें। जो बाधा मुसलमान विद्यार्थियों ने खड़ी कर रखी थी, वह धीरे-धीरे कम हो रही थी। जब लड़कों को पता चला कि ये बहिन-भाई किसी बड़े नवाब की सन्तान हैं और युवक-संघ की ओर से विद्यार्थियों को संगठित करने बम्बई में आये हैं तो उनसे मिलने वाले और अपनी शंकायें दूर करने वाले विद्यार्थियों के आने-जाने का ताँता बँध गया। प्रतिदिन सायंकाल पाँच बजे से विद्यार्थियों का आना-जाना आरम्भ हो जाता था। बम्बई में पढ़ने वाली लड़कियाँ भारी संख्या में थीं। उन्होंने प्रचार-कार्य के लिए अपनी पृथक्-पृथक् मण्डलियाँ बना ली थीं। इस प्रकार कार्य आगे बढ़ता जाता था।

एकाएक एक दिन पथिक पहुँच गया। सलीमा तो यह समझती थी कि वह चुपचाप काम करती जायेगी और पथिक को उसका पता नहीं चलेगा। उसे नहीं मालूम था कि उसका नाम 'बॉम्बे क्रॉनिकल' में निकल गया है। वह उसे कुली के सिर पर असबाब लदवाये उनके कमरे के बाहर खड़ा देख चकित रह गई। सलीमा कई क्षण तक उसे देख भौचक्की-सी खड़ी रही। उसके मुख से केवल एक शब्द निकला, "आप?"

पथिक ने हाथ जोड़ नमस्ते की और सलीमा को हैरानी में चुपचाप खड़े अपनी ओर देखते हुए देख कुछ विस्मय में पूछा, "सलीमा, क्या मैंने यहाँ आने में भूल की है? क्या अभी तुमने मुझे क्षमा नहीं किया?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सलीमा को चेतना हुई। उसने पूछा, "क्षमा ! मैंने ?" इतना कह उसने मुख से कुछ उत्तर देने के स्थान में पथिक के चरण-स्पर्श किये। पथिक ने उसे उठाकर कहा, "नहीं, नहीं, ऐसा मत करो, सलीमा। हम मनु के काल में नहीं रहते। इस समय हम अपने-अपने स्थान को अधिक अच्छी तरह से जानते हैं।"

इस समय अकरम कमरे से निकल आया। वह पथिक को देख अति प्रसन्न हुआ। "ओह, दादा !" और वह आगे बढ़कर पथिक से हाथ मिलाकर गले मिला।

सलीमा अवसर पा कुली को कमरे में ले गई, असबाब रखवाया और चाय बनाने लगी।

अकरम ने यहाँ की परिस्थिति से पथिक को परिचित कर दिया। अकरम का अनुमान था कि प्रांत-भर में से दो सहस्र के लगभग विद्यार्थी मिल जायेंगे जो यह काम करने के लिए तैयार हैं। पथिक इस सफलता पर बहुत प्रसन्न था। वह जानता था कि इस प्रांत में मुसलमानों के विरोध को शांत करने में इन भाई-बहिन का बहुत हाथ है।

अकरम सलीमा के मन की अवस्था को समझता था। स्त्री-सुलभ लज्जा के कारण वह यह प्रकट नहीं करती थी कि वह पथिक के समीप रहना चाहती है और विवाह को पसन्द करेगी। इस पर भी मन की यथार्थ बात तो स्पष्ट ही थी। इस कारण उस दिन जब सलीमा कहीं घर से बाहर गई हुई थी तो अकरम ने इस विषय पर बातचीत आरम्भ कर दी। पथिक का कहना था, "मुझे इस बात में आपत्ति नहीं है। तब भी मैंने तो यही कहा था कि मेरे में अवगुण हैं। वे अवगुण मेरे मुख पर ताला लगाये हुए हैं। इस ताले को खोलने की शक्ति सलीमा में ही है।"

जब सलीमा बाज़ार से लौटकर आई तो अकरम ने उससे कहा, "देखो, बहिन, मैंने मिस्टर पथिक से सबकुछ तय कर लिया है। अब सिर्फ दो बातों का फैसला रह गया है। एक यह कि शादी कब और कहाँ होगी और दूसरे यह कि हिन्दू तरीके से होगी या मुसलमानी तरीके से।"

सलीमा का मुख लज्जा से लाल हो गया। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। अकरम ने फिर कहा, "ये दोनों बातें तुम्हारे फैसले पर छोड़ी गई हैं।"

"अभी कुछ दिन ठहरा नहीं जा सकता ?"

"इसमें क्या लाभ होगा ?"

"अगर वालिद साहब मान जाते तो क्या अच्छा न होता ?"

"मुझे उनके मान जाने की कोई उम्मीद नहीं है।"

"यह बम्बई का प्रोग्राम खत्म हो जाता तो।"

"यह क्या बहाना बना रही हो ? हम लोगों के लिए बम्बई और लखनऊ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या फर्क पड़ जाता है। रहा यहाँ का प्रोग्राम। यदि आज यहाँ हैं तो कल कहीं और का होगा।"

सलीमा निरुत्तर थी। अकरम ने जब सलीमा को चुप देखा तो पूछा, "क्या कोई और एतराज़ है?"

"भैया, आप क्या चाहते हैं? जैसा आप उचित समझें, कर दें।"

"मेरे करने पर तुम्हें कोई एतराज़ तो न होगा?"

"बड़े भाई माँ और बाप के बराबर होते हैं।"

"अच्छी बात, तो मेरा फैसला यह है कि शादी बम्बई में 'स्पेशल मैरिज एक्ट' के मुताबिक हो जाये।"

"जैसा मन करे।"

इसी समय किसी ने बाहर से आवाज़ दी।

"कोई है? कोई है?"

अकरम ने सलीमा से कहा, "अब्बाजान मालूम होते हैं।"

सलीमा ने भागकर दरवाज़ा खोल दिया। नवाब साहब हाथ में एक कागज़ का पुर्ज़ा लिये कमरे का नम्बर पढ़ रहे थे। सलीमा ने जब दरवाज़ा खोला तो नवाब साहब ने सलीमा को देख लिया और कहा, "ओह, तुम!"

"अब्बाजान, सलामालैकुम।"

"कहाँ है तुम्हारा भाई?"

इस समय अकरम भी कमरे से बाहर आ गया। उसने कहा "सलाम, अब्बाजान। आप बहुत अच्छे मौके पर तशरीफ लाये हैं। आइये, अन्दर आइये न।"

नवाब साहब कमरे में चले गये। उन्हें बहुत आदर-सत्कार से बैठाया गया। अकरम और सलीमा अभी खड़े ही थे। अकरम ने पूछा, "आप कब तशरीफ लाये हैं?"

"आज सुबह की गाड़ी से पहुँचा हूँ।"

"अम्मी अच्छी तरह से हैं?"

"हूँ।"

"उन्हें भी साथ ले आते तो मिलकर दिल को तसल्ली होती।"

"वह वहीं ठीक है। तुम लोगों का मुंह देखना नहीं चाहती।"

"क्यों, हमने क्या किया है?"

"खानदान का नाम डुबोया है।"

"किस फैल (कर्म) से?"

"हिन्दू होकर।"

"कौन कहता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारे ख्यालात।"

"कैसे ख्यालात, अब्बाजान ? ख्याल (विचार) दो हिस्सों में बँटे हुए हैं। एक वे विचार, जो मजहब (धर्म) से ताल्लुक रखते हैं और दूसरे, जो मुल्क से ताल्लुक रखते हैं। आपका मतलब किस किस्म के ख्यालों से है ?"

"दोनों किस्म के ख्यालात से। इस्लाम सिर्फ एक मजहबी जमात नहीं है। यह मजहबी और सियासी दोनों बातों को अपने अन्दर रखने की खूबी रखता है।" सियासियात के मुताल्लिक इस्लाम का क्या अकीदा है ?"

"दुनिया के हर मुल्क में इस्लामी हुकूमत कायम करना।"

"इस्लामी हुकूमत से आपका क्या मतलब है ?"

"इस्लामी हुकूमत वह हुकूमत है, जो मुसलमानों द्वारा इस्लाम की तरक्की व बहबूदी के लिए चलाई जाये।"

"और उन लोगों का क्या होगा, जो इस्लाम को नहीं मानते ?"

"वे या तो मुसलमान हो जायें या मुल्क को छोड़ दें।"

"और अगर उनकी तादाद मुसलमानों से ज्यादा हो तो ?"

"तो तब्लीग (मुसलमान बनाने) का प्रोग्राम जारी रखा जाये।"

"तो, अब्बाजान, मैं मुसलमान न था और न हूँ। मैं आपके ख्यालात को ठीक नहीं समझता। मैं मजहब को अपना जाती मसला समझता हूँ। इसका सियासियात से कोई वास्ता नहीं मानता।"

"इसी से तो कहता हूँ कि तुम हिन्दू हो गये हो। एक हिन्दू का मजहब उसकी अपनी चीज है। सैकड़ों मजहबों के रखने वाले भी मुल्की, इख्तसादी (आर्थिक) और मजलिसी (सामाजिक) बातों में मिल-बैठ सकते हैं। इस्लाम में ऐसा नहीं है।"

"मैं इस्लाम को ऐसा नहीं समझता था। अगर हकीकत में यह ऐसा है तो मैं मुसलमान नहीं हूँ।"

"इसी से तो मैं कहता हूँ कि तुमने खानदान का नाम डुबो दिया है।"

"जिस वक्त हमारे एक बुजुर्ग हिन्दू से मुसलमान हुए थे तो क्या उस वक्त भी खानदान का नाम डूब गया था ? अगर नहीं तो अब भी नहीं डूबेगा।"

"वह बात दूसरी थी। मुसलमान की औलाद तो मुसलमान ही होगी। मगर हिन्दू की औलाद कोई भी मजहब अख्तियार कर सकती है।"

सलीमा यह सब वार्तालाप चुपचाप सुन रही थी। अब उससे नहीं रहा गया। वह बोली, "हम लोग तो इस्लाम को इतना तंग नहीं समझते। अगर आप इस्लाम को ऐसा मानते हैं कि इसमें जो एक बार आ गया फिर वह उसे छोड़ने का हक नहीं रखता, तो मैं तो ऐसे मजहब में नहीं रह सकती।"

"तुम क्यों मानोगी ? तुम्हारे पर इश्क सवार है। उसने तुम्हारे दिमाग को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खराब कर रखा है। तुम......।"

अकरम ने अपने वालिद को बीच में ही रोककर कहा, "अब्बाजान, सुनिये। आप हमें गलत समझ रहे हैं। सलीमा का यह मतलब नहीं कि वह कोई दूसरा मज़हब अख्तियार कर लेगी। बात यह है कि हम आपको इस्लाम की गलत तशरीह (व्याख्या) करते देख रहे हैं। आपके गलत इस्लाम को भला हम कैसे मान सकते हैं?"

"देखो, मैंने बताया है कि इस्लाम जहाँ एक मज़हब है, वहाँ एक सियासी जमात भी है। मान लो एक मुल्क में रहने वाले मुल्क को छोड़-छोड़कर जाना शुरू कर दें तो उस मुल्क में रहने वाले क्या इसकी इजाज़त दे सकते हैं? इसी तरह एक सियासी जमात अपनी ताकत कम होती नहीं देख सकती।"

सलीमा कुछ कहने लगी थी कि अकरम ने उसे रोक दिया और वह खुद कहने लगा, "तो, अब्बाजान, आपका मतलब यह है कि तब्लीग एक सियासी हथियार है?"

"हाँ, बिलकुल। जब किसी मुल्क में मुसलमानों की तादाद कम होती है तो हम तादाद बढ़ाने की कोशिश करते हैं। जब हमारी कसरत हो जाती है तो हम उस मुल्क की हुकूमत अपने हाथ में लेने की कोशिश करते हैं। हिन्दुस्तान में तो इससे उलटी बात हुई थी। मुसलमानी हुकूमत पहले कायम हो गई थी। पीछे हुकूमत को मज़बूत करने के लिए हमने तब्लीग का काम शुरू किया। अगर कुछ अर्से तक यह तब्लीग का काम और जारी रहा तो हिन्दुस्तान में हमारी तादाद हिन्दुओं से ज़्यादा हो जायेगी और हमारी ही हुकूमत होगी।"

अकरम इस मानसिक अवस्था से सर्वथा निराश था। वह समझने लगा था कि बहस करनी फिज़ूल है। इस कारण उसने कहा, "अब्बाजान, हम दोनों आपके ख्यालात को बहुत अच्छी तरह समझ गये हैं। अब आप फरमायें कि आप हमको क्या करने को कहते हैं?"

"मैं लखनऊ से सिर्फ तुमको समझाने के लिए आया हूँ। तुम इस युवक-संघ का काम करके मुसलमान तुलबा को बरगला रहे हो। इससे इस्लाम को नुकसान पहुँच रहा है। यह इस्लाम के साथ गद्दारी है। मैं तुम दोनों को इस गुनाह से बचाने के लिए आया हूँ।"

सलीमा फिर कुछ कहने लगी थी, परन्तु अकरम ने उसे हाथ के संकेत से चुप कराकर कहा, "अब्बाजान, अगर हम आपकी बात न मानें तो क्या होगा?"

"तो मैं तुम्हें अपने हक से बरतरफ कर दूंगा और जागीर किसी और को दे दूंगा।"

इसी समय पथिक, जो कहीं बाहर गया हुआ था, वहाँ आ गया। उसने देखा कि एक वृद्ध, भला पुरुष कुर्सी पर बैठा क्रोध में अकरम और सलीमा को डाँट रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। अकरम और सलीमा उसके सामने बहुत उदास मुख खड़े हैं। पथिक को समझने में देरी नहीं लगी कि वह नवाब साहब हैं। वह चुपचाप वहाँ से चला जाना चाहता था कि अकरम ने उसे रोक लिया। "मिस्टर पथिक, ठहरो।" उसने कहा।

पथिक घूमकर फिर कमरे में आकर खड़ा हो गया। अकरम ने कहा, "मिस्टर पथिक, यह हमारे वालिद शरीफ हैं।"

पथिक ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते कर दी। नवाब साहब ने बहुत ध्यान से पथिक को सिर से पाँव तक देखा और फिर प्रश्न-भरी दृष्टि से अकरम की ओर देखा। अकरम ने पथिक का परिचय केवल इतना दिया, "यह हैं मिस्टर पथिक, युवक-संघ के सबसे बड़े नेता और मेरे होने वाले बहिनोई।"

"तुम्हारे बहिनोई! क्या मतलब?"

"सलीमा की इनसे 'स्पेशल मैरिज एक्ट' से शादी होने वाली है।"

नवाब साहब यह सुन एकदम चौंककर कुर्सी से उठ खड़े हुए। अकरम ने समझा कि वहाँ से चले जाने वाले हैं। उसने उन्हें कहा, "अब्बाजान, ज़रा तशरीफ रखें। एक-आध बात अभी और बतानी है।"

नवाब साहब कुछ क्षण तक पथिक को बहुत हैरानी से देखते रहे। फिर धीरे-धीरे कुर्सी पर बैठ गये। अब अकरम ने पथिक को एक और कुर्सी पर बैठाया और स्वयं सलीमा के साथ पलंग पर बैठ गया। नवाब साहब कुछ काल तक सोचते रहे। फिर बोले, "क्यों, हज़रत, आपमें क्या खूबी है कि एक नवाब की लड़की को फुसलाने में आप कामयाब हो गये हैं?"

पथिक ने बहुत शांति और नम्रता से कहा, "मैं नहीं जानता। यह तो सलीमा ही बता सकती है।"

"तुम्हें अपना जाल यहाँ नहीं बिछाना चाहिये था।"

"मैं नहीं समझता कि मैंने जाल बिछाया है। यह तो सलीमा की अत्यन्त कृपा है कि उसने मुझे अपना साथी चुना है।"

"तो तुम समझते हो कि इस मामले में तुम्हारा कुछ कुसूर नहीं है?"

"कुसूर? नहीं, साहब, इसमें तो मैं अपना अहोभाग्य समझता हूँ। सलीमा की कृपा-दृष्टि का पात्र बनना यदि दोष भी हो तो भी बहुत आनन्दप्रद दोष है। मगर यह सलीमा का दोष नहीं, यह तो उसकी उदारता है।"

"बताओ, तुम इस रिश्ते से इन्कार क्यों नहीं कर देते?"

पथिक ने मुस्कराते हुए कहा, "इसका कारण तो स्पष्ट ही है। सलीमा जैसी लड़की से शादी करने से कौन इन्कार करेगा?"

"अपनी औकात देखो।"

"यह तो मुझे मालूम नहीं कि मैं किसका लड़का हूँ, कहाँ पैदा हुआ हूँ, कौन जात में से हूँ। मेरे पास धन-सम्पत्ति भी कुछ नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम्हें अपने खानदान का पता नहीं है ?"

"बिलकुल नहीं। मैं एक राजा का लड़का भी हो सकता हूँ और एक कंगाल का भी।"

"ओह, तो तुम बेघर और बेसामान के हो। तुम्हारा न कहीं ठौर है, न ठिकाना और एक नवाब की नखरों से पली लड़की से शादी करने की जुर्रत कर रहे हो। देखो जी, इस आग में न कूदो। जल जाओगे। बेहतर है, तुम यहाँ से चले जाओ।"

"जो जलकर पहले से ही भस्म हो चुका है, उसे और क्या जलाइयेगा। आप मुझे कहने की अपेक्षा अपनी लड़की को क्यों नहीं समझाते ?"

"अच्छा, यह बताओ कि तुम मुसलमान क्यों नहीं हो जाते ?"

"इसलिये कि मैं इस्लाम को नहीं समझता।"

"पीछे फुरसत पर समझ लेना। इसकी जल्दी क्या है ?"

"आखिर किसलिये इस्लाम कबूल करूँ ?"

"इसलिये कि सलीमा से शादी करना चाहते हो।"

"अब्बाजान," सलीमा ने बीच में बात काटकर कहा, "आपको यह कहने का हक नहीं है।"

"क्यों ? क्या मैं तुम्हारा बाप नहीं हूँ ?"

"मगर आपने तो शादी का इन्तज़ाम नहीं किया। जिसने किया है वह यह बात तय कर लेगा।"

"अगर तुम मेरी और अपनी कौम की रज़ामन्दी चाहती हो तो इन्हें इस्लाम कबूल करना होगा।"

"मैं अब बालिग हूँ और कानून की रूह से मुझे आप या आपकी कौम की रज़ामन्दी की ज़रूरत नहीं है।"

"यह तो अंग्रेज़ी कानून की बात करती हो न। मगर शरह और कौमी मफाद इसको मंज़ूर नहीं करते।"

"मैं आपकी शरह को नहीं मानती और मैं आपकी कौम से बाहर हूँ।"

"यह कैसे हो सकता है ? तुम एक मुसलमान की लड़की हो।"

"और आप एक हिन्दू के पोते।"

"कुछ भी हो, तुम अभी तक मुसलमान हो।"

"मैं आज ही हिन्दू बन जाऊँगी।"

"मगर हिन्दू तुम्हें कबूल नहीं करेंगे।"

"मुझे बेवकूफों से कोई मतलब नहीं। जिनसे मेरा ताल्लुक होना है, वह तो मुझे बिना हिन्दू बने भी कबूल करते हैं।"

"तो मैं समझूं कि यह सब तुम्हारा कुसूर है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुसूर बुरी बात करने में होता है या अच्छी बात करने में भी ?"

इस पर अकरम ने कहा, "अब्बाजान, बहस से तो कुछ नतीजा नहीं निकलेगा। आपको मैं एक अर्ज़ करता हूँ। सलीमा की शादी की दरख्वास्त कचहरी में एक-दो दिन में दी जायेगी। मेरी आपसे इल्तिजा (विनम्र निवेदन) है कि आप इस शादी को अपनी रज़ामन्दी देकर खुदा से दुआ करें कि इसमें बरकत पड़े।"

"मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

"तो मुझे सख्त अफसोस है।" सलीमा ने पलंग से उठते हुए कहा। उसके उठने का प्रयोजन यह था कि वह नवाब साहब को चले जाने के लिए कहती थी।

नवाब साहब इस बात को समझते थे। वह उठ खड़े हुए और यह कहते हुए बाहर निकल गये, "तुम लोग ठीक नहीं कर रहे हो। बहुत नुकसान उठाओगे।"

: ११ :

सायंकाल की नमाज़ का वक्त था। मस्जिद में नमाज़ी वज़ू कर-करके पंक्तियाँ बाँध घुटनों के बल बैठते जाते थे। देखते-देखते मस्जिद का आँगन भर गया। मुल्ला मुँडेर पर खड़ा अज़ान दे रहा था। अज़ान समाप्त कर वह नीचे उतर आया और नमाज़ आरम्भ हो गई। नमाज़ खत्म कर लोग अपना-अपना स्थान छोड़ने ही वाले थे कि मुल्ला ने ऊँची आवाज़ में कहा, "ठहरो, मोमिनो, ठहरो।"

सब लोग अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो गये। मुतवल्ली फिर मुंडेर पर चढ़ गया और कहने लगा, "वह देखो।" यह कह उसने एक ओर हाथ लम्बा कर उँगली से इशारा किया। सब लोगों की दृष्टि उधर चली गई।

मस्जिद सड़क के किनारे पर थी। सड़क की दूसरी तरफ एक मकान धड़ाधड़ बहुत सरगरमी से बन रहा था। यद्यपि अब सायंकाल का समय हो गया था, इस पर भी बनाने वाले काम कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि मकान बनाने का काम रात-भर जारी रहेगा। स्थान-स्थान पर गैस के हंडे लगाकर रोशनी की जा रही थी। सब लोग बड़ी तेज़ी से काम कर रहे थे।

मुल्ला के कहने पर सब नमाज़ी उसी तरफ देखने लगे। उसने कहना जारी रखा, "यह काफिरों का मन्दिर बन रहा है। मस्जिद के नज़दीक आप ऐसी कुफरगाह बननी गवारा करेंगे ?"

किसी ने उत्तर नहीं दिया।

मुल्ला ने कहा, "ऐ मुसलमानो, ऐ एक खुदा और रसूलेपाक को मानने वालो, क्या तुम अपने घर में भी बैठकर खुदा परवरदिगार की इबादत अमन से नहीं करना चाहोगे ? यहाँ मन्दिर पर चढ़कर काफिर आपको नमाज़ पढ़ते देखेंगे और मज़ाक करेंगे। आप जब नमाज़ पढ़ते होंगे, वे मन्दिर में घण्टे-घड़ियाल बजायेंगे। यह आपकी मज़हबी हकतलफी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग अगरचे चुप थे, इस पर भी सबकी आँखों में लहू उतरता दिखाई देता था।

मुल्ला फिर कहने लगा, "क्या इस कांग्रेसी सरकार से हम जाबजा ज़लील ही किये जायेंगे ? ऐ रसूल सुलाउल इस्लाम के पैंराओ, ऐ दुनिया को इस्लाम के झण्डे तले लाने का दावा करने वालो, वक्त आ गया है कि तुम अपने मज़हब के लिए, अपने ईमान के लिए और अपने रसूल के लिए कमर-बस्ता हो जाओ।"

नमाज़ियों में से एक ने पुकारा, "नारा-ए-तकबीर !" नमाज़ियों का जवाब था, "अल्ला-हो-अकबर !" मस्जिद का कोना-कोना गूंज उठा।

इस समय सबसे पिछली पंक्ति में से एक नौजवान अपनी पंक्ति में खड़ा-खड़ा कहने लगा, "मगर यह मन्दिर तो यहाँ पर पहले भी था।"

मुल्ला का जवाब था, "हाँ, मगर ऊँचा नहीं था।"

"उसकी छत से मस्जिद पहले भी दिखाई देती थी।"

इस पर सब लोग बोल उठे, "चुप रहो, बकवास बन्द करो।"

मुल्ला ने हाथ ऊँचा कर सबको चुप कराया और कहने लगा, "जमात में करामात है। अगर तुम सब मिलकर जाओ तो मन्दिर बनना अभी रुक सकता है।"

फिर किसी ने नारा लगाया। 'अल्ला-हो-अकबर' के नारों से बाहर बाज़ार में भी भीड़ एकत्रित होने लगी। लोग मस्जिद से बाहर निकल आये। बाज़ार में लोगों का आना-जाना बन्द हो गया। हज़ारों की भीड़ ने मन्दिर को चारों तरफ से घेर लिया। लोग मेमारों और मज़दूरों को काम बन्द करने के लिए कहने लगे।

एक खद्दरपोश मन्दिर में खड़ा यह सबकुछ देख रहा था। मन्दिर के प्रबन्धकों ने जब मस्जिद में खास चहल-पहल देखी तो बलवे की आशंका कर एक कांग्रेसी नेता को टेलीफ़ोन कर वहाँ बुला लिया था। उस खद्दरधारी व्यक्ति ने बाहर आकर गुस्से और जोश से भरे लोगों की भीड़ को देखा। मस्जिद का मुतवल्ली भीड़ में सबसे आगे खड़ा था। खद्दरपोश उसके पास जाकर पूछने लगा, "यह क्या है ?"

मुल्ला ने उत्तर दिया, "हम मन्दिर नहीं बनने देंगे।"

"क्यों ?"

"हमारी नमाज़ में खलल पड़ेगा।"

"यह तो पहले भी था।"

"अब नया जो बन रहा है।"

खद्दरपोश विस्मय में पड़ गया। कुछ सोचकर पूछने लगा, "तुम कौन हो ?"

"एक मुसलमान।"

"बहुत अच्छा। काम अभी बन्द करवा देता हूँ। तुम लोगों को चुप करवाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कह वह भीतर चला गया। मन्दिर के पिछवाड़े एक दुकान में जाकर उसने पुलिस को टेलीफोन पर इत्तला कर दी।

अभी लोग हल्ला कर हीं रहे थे कि पुलिस का एक दस्ता बन्दूकें लिए वहाँ पहुँच गया। पुलिस बन्दूकें तान मन्दिर के सम्मुख खड़ी हो गई। एक मैजिस्ट्रेट भी वहाँ पहुँच गया, जो लोगों को वहाँ से हट जाने के लिए कहने लगा। लोग नहीं हटे। कुछ समय बाद लोगों ने यत्न किया कि पुलिस पर काबू पा जायें और मन्दिर पर चढ़कर काम बन्द करवा दें। परन्तु पुलिस ने लाठी से पीट-पीटकर भीड़ को तितर-बितर करना शुरू कर दिया। लोग दूर-दूर हट गये। अब लोगों ने पुलिस पर ईंटें फेंकनी शुरू कर दीं। पुलिस ने गोली चला दी।

जब लोग गोली चलने से भागे तो मुल्ला के पास खड़े हुए एक आदमी ने पूछा, "अब ?"

उसने भागते हुए लोगों को ललकारकर कहा, "ओ बुज़दिलो, ओ गद्दारो, इधर आओ; अभी भागने की ज़रूरत नहीं।"

भागते हुए लोगों में से बहुतों को उसने अपनी ओर बुला लिया और सबको अपने साथ ले वह एक हिन्दू मुहल्ले की तरफ चल पड़ा। मुल्ला के उसी साथी ने फिर पूछा, "अब किधर ?"

उसने उत्तर दिया, "शहर को लूट लो। काफिरों को मार डालो। यही मौका है। फिर हाथ नहीं आयेगा।"

"मगर मन्दिर ?"

"वह तो बहाना था।"

मुल्ला के साथी ने नारा लगाया, "नारा-ए-तकबीर !"

इसके उत्तर में 'अल्ला-हो-अकबर' पीछे आने वाले लोगों ने कहा। ज्यों-ज्यों ये नारे लगाते जाते थे, लोगों की भीड़ बढ़ती जाती थी।

शहर की दुकानें बन्द हो गईं। आने-जाने वालों के पेट में छुरे भोंके जाने लगे। ट्राम-गाड़ियाँ रोक-रोककर लोगों को मारना-पीटना आरम्भ हो गया।

: १२ :

पथिक नवाब साहब की बातचीत से विस्मय में डूबा हुआ सिर झुकाये बैठा रह गया। सलीमा और अकरम भी इससे प्रसन्न नहीं थे। नवाब साहब के चले जाने के पश्चात् तीनों अपने-अपने विचारों में डूबे हुए बैठे रहे। सबसे पहले पथिक ने सिर उठाया। वह सलीमा और अकरम को सम्बोधित कर कहने लगा, "सलीमा, क्या यह अच्छा न होगा कि शादी अभी कुछ दिन के लिए रोक दी जाये ?"

अकरम ने पूछा, "इससे लाभ ?"

"यही कि सलीमा को नवाब साहब के कहने पर विचार करने का और अव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर मिल जायेगा। मैं चाहता हूँ कि आप फिर एक बार मेरी गरीबी व मेरे परिवार के पता न होने की बात पर ठण्डे दिल से सोच लें।"

सलीमा ने आँखें नीची किये हुए कहा, "आपकी गरीबी पर या आपके खानदान के पता न होने पर तो आपत्ति नहीं की गई। अगर ऐसा होता तो फिर आपसे मुसलमान होने को क्यों कहा जाता ?"

"वह पुराने ख्यालों का शिकार हो रहे हैं। क्या एक बार फिर उनको अपने ख्याल का बनाने का यत्न किया जाये ?"

"बेसूद है।" अकरम का जवाब था।

सलीमा ने कहा, "मैं तो यह समझती हूँ कि मैं आज ही हिन्दू हो जाऊँ। सुना है, यहाँ आर्यसमाज में मुसलमान हिन्दू बनाये जाते हैं। तब मैं हिन्दू तरीके से शादी कर सकूँगी।"

पथिक ने हैरानी से पूछा, "हिन्दू बन जाओगी, क्यों ?"

"इस्लाम मुझे पसन्द नहीं है।"

"और क्या हिन्दू बनना पसन्द है ? देखो, सलीमा, कोई बात क्रोध में अथवा घबराकर नहीं करनी चाहिये।"

"इसमें घबराने की क्या बात है। आप ही तो एक बार कहते थे न कि हिन्दू मज़हब नहीं है। यह एक सियासी जमात है। हिन्दुस्तान को अपना मुल्क समझने वाले अपने-आपको हिन्दू कहते हैं और हिन्दू लोग किसी मज़हबी अकीदे पर आपत्ति नहीं उठाते। आप बतायें कि हिन्दुओं में नास्तिक, मेरे जैसे नास्तिक, रह सकते हैं या नहीं ?"

"हाँ, हिन्दुओं में नास्तिक भी रह सकते हैं। हिन्दू तो एक राजनैतिक श्रेणी, हिन्दुस्तान को अपनी पुण्यभूमि और पूज्य भूमि मानने वाली श्रेणी है।"

"तो मैं हिन्दू बन जाऊँगी।"

अकरम ने कहा, "मगर, बहिन, हमारा रसूख, जो मुसलमानों में है और जिसकी वजह से हम यहाँ मुसलमान तुलबा में बहुत कुछ काम कर सके हैं, जायल हो जायेगा।"

"मैं तो उनको भी हिन्दू बन जाने के लिए कहूँगी। इस्लाम की जो तशरीह (व्याख्या) अब्बाजान ने की है वह हिन्दुस्तान क्या, तमाम दुनिया में बदअमनी (अशांति) फैलाने वाली है। ऐसे इस्लाम को मैं खतरनाक समझती हूँ।"

"मगर अब्बाजान की तशरीह ठीक है, यह तुम कैसे जानती हो ?"

"जो हकीकत में इस्लाम है, वह मैं न तो जानती हूँ और न ही उसके खिलाफ कुछ कहती हूँ। मैं तो उसी इस्लाम को नापसन्द करती हूँ जिसकी तशरीह एक अंजुमन-तन्ज़ीम-इस्लाम के मुअज़्ज़िज़ (माननीय) सदस्य ने की है। इस वक्त हिन्दुस्तान में जो इस्लाम के दावेदार हैं, यह उनका फर्ज़ है कि वे इसकी ठीक तश–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीह करें।"

पथिक ने कहा, "कल हमें तीन जगहों पर जाना है। एक तो इस्लामिया कॉलेज के तुलबा का जलसा है। दूसरे डॉक्टर अहमद की चाय पार्टी है। तीसरे चौपाटी में पब्लिक जलसे में जाना है।"

पथिक ने सलीमा का ध्यान बदलने के लिए बात बदल दी थी। अकरम इसको समझ गया। उसने कहा, "डॉक्टर अहमद की पार्टी पर तो आपको जाना चाहिये।"

"मैं पार्टियों को पसन्द नहीं करता। कुछ-न-कुछ तो खाना ही पड़ता है। मुझे यह चाय और दूसरी चीज़ें रुचिकर नहीं लगतीं। मैं कॉलेज के तुलबा में चला जाऊँगा।"

सलीमा ने सायंकाल के प्रोग्राम में रुचि प्रकट करते हुए कहा, "मैं तो समझती हूँ कि इस्लामिया कॉलेज में अधिकतर मुसलमान विद्यार्थी होंगे। वहाँ भैया चले जायें तो ठीक रहेगा और आप पार्टी में ही जाइये। डॉक्टर अहमद अगरचे कौमी ख्याल के आदमी हैं, मगर वहाँ सब किस्म के मुसलमान जमा होंगे। उनसे बात-चीत करने के लिए आपका जाना ज्यादा अच्छा होगा।"

"और देवीजी किधर जायेंगी?" पथिक ने पूछा।

"मैं कमज़ोर पार्टी की मदद करने के लिए।"

"ओह," अकरम ने कहा, "तो तुम मेरे साथ चलोगी?"

"मैं तो आपको कमज़ोर नहीं समझती।"

"नहीं, मेरे साथ ही चलना होगा। जो कुछ कहना मैं भूल जाऊँ तुम पीछे कह देना।"

"हाँ," सलीमा ने कहा, "चौपाटी पर हम सब पहुँचेंगे।"

पथिक सलीमा को अपने साथ ले चलने के लिए आग्रह करना नहीं चाहता था। इस कारण बात तय हो गई।

दूसरे दिन सायंकाल पथिक विक्टोरिया गाड़ी भाड़े पर करके डॉ० अहमद की पार्टी में पहुँच गया।

अकरम और सलीमा एक टैक्सी भाड़े पर कर इस्लामिया कॉलेज में जा पहुँचे। कॉलेज के लड़कों ने बम्बई-भर के विद्यार्थियों को आमंत्रित किया हुआ था। पथिक की वहाँ पहुँचने की पूरी आशा थी। कॉलेज के विद्यार्थियों ने आज सामयिक राजनीति पर चर्चा करने का विचार कर रखा था।

जब अकरम और सलीमा वहाँ पहुँचे तो लड़के पथिक के स्वागत के लिए आगे बढ़े। मोटर गाड़ी के चारों तरफ लड़कों की भीड़ खड़ी हो गई। इस्लामिया कॉलेज के विद्यार्थियों के नेता ने सलीमा और अकरम के गले में फूलों की माला डाली और पूछा, "मिस्टर पथिक नहीं आये क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उन्हें एक पार्टी पर ज़रूरी जाना था। वहाँ से आ सके तो शायद आयेंगे।"

इस समय एक नवयुवक फूलों की एक माला लिए हुए भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ आया। उसने माला अकरम के गले में डाल अपनी आस्तीन में से एक तेज़ चाकू निकाल अकरम के पेट में भोंक दिया। "आह!" अकरम के मुख से निकल गया। आह की आवाज सुनते ही सलीमा, जो एक विद्यार्थी से बातें करती-करती कुछ आगे बढ़ गई थी, घूमी। उसने घातक को हाथ से लहू से लथपथ चाकू को ज़मीन पर फेंकते देखा। वह उसकी ओर लपकी। इसी समय कुछ और विद्यार्थी लपककर घातक पर झपटे। वह भागने का यत्न करता हुआ पकड़ लिया गया। अकरम वहीं ज़मीन पर लेट गया।

सलीमा ने अकरम को दो-तीन विद्यार्थियों की सहायता से उठा फिर टैक्सी में लिटा दिया और स्वयं उसमें बैठ घाव पर हाथ रख लहू के बहने को रोकती हुई, टैक्सी वाले को अस्पताल ले चलने के लिए बोली।

घातक को पकड़कर लड़के कॉलेज में ले गये। वहाँ उसे एक बेंच पर हाथ-पाँव बाँधकर बैठा, लहू से लथपथ चाकू उसके पास रख दिया और पुलिस को टेलीफोन कर दिया।

सभा के प्रधान बम्बई के एक विख्यात वकील, मुन्शी खलील अहमद बैरिस्टर थे। वह कुछ देरी से पहुँचे। जब उन्होंने घटना का वृत्तान्त सुना तो वह घातक के पास पहुँच लड़कों को वहाँ से दूर हटाकर उससे पूछने लगे, "तुम कौन हो?"

"एक मुसलमान।"

"बेवकूफ, यह तुमने क्या किया है?"

"मुझे मालूम नहीं।"

"तुमने कत्ल क्यों किया है? जानते हो, यह कितना बड़ा गुनाह है?"

"एक काफिर को मार डालना सबाब (पुण्य) है।"

"काफिर को? किसको कत्ल कर दिया है, तुम नहीं जानते हो?"

"पथिक को। एक मुसलमान लड़की को भगा लाने वाले को।"

"पाजी आदमी, तुमने एक होनहार मुसलमान नौजवान को मार डाला है।"

इसी समय पुलिस के अफसर एक मोटर में वहाँ पहुँच गये। उन्होंने घातक को बन्दी बना लिया और घटनास्थल के कुछ गवाहों को साथ ले थाने चले गये।

: १३ :

पथिक अकेला जब डॉ० अहमद की पार्टी पर पहुँचा तो सबसे पहले उसकी दृष्टि नवाब साहब पर पड़ी। पथिक ने निश्चय कर लिया था कि वह नवाब साहब से दूर रहेगा। वह पार्टी में 'तू-तू मैं-मैं' से बचना चाहता था। नवाब साहब जिनके घर ठहरे हुए थे, वह पार्टी में आमंत्रित थे। वह अपने मेहमान को भी साथ ले आये। नवाब साहब का चित्त स्थिर नहीं था और यह विचार कर कि पार्टी में जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ध्यान दूसरी ओर लगेगा, वह वहाँ चले आये थे। डॉक्टर अहमद से जब परिचय हुआ तो वह अपने विचारों में डूबे हुए होने से डॉक्टर साहब की किसी बात को सुन नहीं सके। अब वह एक मेज़ के पास बैठ गये। बैरा चाय वगैरह सामान वहाँ रख गया, परन्तु उनको कुछ खाने-पीने का ध्यान नहीं था।

पथिक आया। वह उनके पास से गुज़र गया। लोगों में चहल-पहल हो उठी थी, परन्तु नवाब साहब अपने स्थान पर बैठे अपने विचारों में लीन थे। उन्होंने कुछ न देखा, न सुना।

पथिक ने जानबूझकर अपने बैठने का स्थान ऐसा ढूंढ़ा जहाँ पर नवाब साहब उसे न देख सकें। कुछ देर तक खाना-पीना होता रहा। पश्चात् डॉक्टर अहमद ने मिस्टर पथिक की प्रशंसा कर बताया, "आज की दावत के एक अतिथि मिस्टर पथिक को मैं, जब वह पहले बम्बई आये थे, एक दिन एक जलसे में मिला था। वहाँ और उसके बाद उनसे बातचीत करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। मैंने उनको एक अति शुद्ध, निर्मल विचारों वाला विद्वान् पाया है। आज हिन्दुस्तान को ऐसे ही निःस्वार्थी कारकूनों की ज़रूरत है। मैं मिस्टर पथिक से प्रार्थना करता हूँ कि वह थोड़े शब्दों में अपने विचार प्रकट करें।"

इसके पश्चात् तालियों से पथिक का अभिवादन किया गया। इन तालियों के बजने से नवाब साहब का ध्यान भंग हुआ। वह देखने लगे कि यह कौन है, जिसका स्वागत किया गया है। जब तक उन्होंने पहचाना, पथिक ने अपना वक्तव्य आरम्भ कर दिया था। पथिक कह रहा था, "लेडीज़ एण्ड जेण्टलमेन, डॉक्टर साहब ने और आप लोगों ने जो मेरा सम्मान किया है वह मेरी ज़ात का नहीं है, क्योंकि मैं स्वयं तो एक बहुत छोटा मनुष्य हूँ। हाँ, मैं कुछ विचार रखता हूँ। वे मेरी दृष्टि में तो कुछ भी चमत्कारक नहीं हैं। सर्वथा सीधी-सादी बातें हैं। कोई भी आदमी जो अपने साथ, अपने समाज के साथ अथवा अपने देश के साथ ईमानदारी का बर्ताव करना चाहता है, जो मन, वचन और कर्म से सत्य-प्रिय है, यह बिना किसी संकोच के कह देगा।"

नवाब साहब पथिक को वहाँ पार्टी में देख और पहचान पसीना-पसीना हो उठे। उनके दिमाग में अनेकानेक अशुभ विचार चक्कर काट रहे थे। कुछ देर तक तो वह पथिक के कथन को चुपचाप, परन्तु बिना समझे हुए, सुनते रहे। आखिर उनसे नहीं रहा गया। वह अपने स्थान से उठकर, मेहमानों की मेज़ों को चीरते हुए, आगे बढ़कर पथिक के सम्मुख आ खड़े हुए। पथिक कह रहा था, "हिन्दुस्तान में कोई भी हिन्दुस्तानी विदेशी सरकार को अपने देश में हुकूमत मजबूत करने में मददगार······।" वह आगे नहीं कह सका।

नवाब साहब ने उसे बोलने से रोककर पूछा, "सलीमा और अकरम कहाँ हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक ने नवाब साहब की घबराहट देखकर अचम्भे में पूछा, "क्यों ?"

"मैं पूछता हूँ, वे कहाँ हैं ?"

"मेरे ख्याल में इस्लामिया कॉलेज में होंगे।"

"और तुम वहाँ क्यों नहीं गये ?"

इस गड़बड़ को देख लोगों ने समझा कि कोई पागल है, जो इस प्रकार वक्ता से झगड़ा करने आ गया है। डॉक्टर अहमद ने नवाब साहब को हाथ से पकड़ एक तरफ करने का यत्न किया; मगर उन्होंने झटका देकर डॉक्टर को एक तरफ कर दिया। वह साहब, जिनके घर में नवाब साहब ठहरे हुए थे, बहुत लज्जा अनुभव करने लगे थे। जब कुछ शांति हुई तो डॉक्टर अहमद ने उनसे पूछा, "यह क्या माजरा है ?"

वह कहने लगे, "नवाब साहब को कभी-कभी हिस्टीरिया के फिट पड़ते हैं।"

वह नवाब साहब को, कुछ दूसरे मेहमानों की सहायता से, अपनी मोटरगाड़ी में ले गये। वहाँ से वे घर की ओर चल पड़े। मार्ग में नवाब साहब से पूछा, "यह आपने क्या किया है ?"

नवाब साहब ने कुछ उत्तर नहीं दिया। जब गाड़ी कुछ दूर तक चली गई तो नवाब साहब ने कहा, "मुझे खानबहादुर अब्दुलरशीद के घर पर छोड़ दो।"

नवाब साहब जब खानबहादुर के घर पहुँचे तो वह एक बहुत मैले-कुचैले कपड़े पहने, रूमी टोपी सिर पर रखे, अधेड़ उम्र के मुसलमान से बातें कर रहे थे। नवाब साहब को देख खानबहादुर बोले, "आइये, नवाब साहब, आइये। आपको अब इधर-उधर भागना नहीं चाहिये।"

नवाब साहब बहुत उत्सुकता से खड़े-खड़े ही प्रश्न-भरी दृष्टि से खानबहादुर की ओर देखने लगे। खानबहादुर ने स्वयं उत्तर देने के स्थान उसी मैले कपड़े पहने आदमी से कहा, "सब बात एक बार फिर कह दो।"

वह कहने लगा, "मैंने उस पठान नौजवान को भाड़े के कपड़े ले दिये और उसके दिमाग में यह नक्श कर दिया कि यह काम सबाब का है। यदि वह काफिर मार दिया जायेगा तो एक शरीफ मुसलमान खानदान की लड़की बच जायेगी, नहीं तो वह हिन्दू हो जायेगी। इसके बाद मैंने उसे दो सौ रुपया दिया जो उसने अपनी माँ के लिए क्वेटा में अपने भाई को मनीऑर्डर कर दिया। पीछे मैं, उसके हाथ में एक फूलों की माला दे, उसे कॉलेज के अन्दर भेज, कॉलेज के दरवाज़े के बाहर बैठ गया।

"कुछ देर बाद एक मोटर आई। उसके अहाते में जाते ही लोगों ने वन्दे-मातरम् के नारे लगाये। कुछ सैकण्ड बाद ही 'पकड़ो, पकड़ो' का शोर मच गया। फिर वही मोटर बहुत तेज़ी से भागती हुई हॉस्पिटल रोड की तरफ चली गई। ड्राइवर घबराया हुआ था। लड़के दो-दो, चार-चार की टोलियों में वापस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने लगे। मैंने कइयों को कहते सुना कि वह बचेगा नहीं। उसकी आँतें बाहर निकल आई थीं।

"कुछ देर बाद मोटरगाड़ियों में पुलिस वहाँ आई और उस पठान नौजवान को हथकड़ियाँ लगाकर मोटर में बैठा ले गई।

"मैं वहाँ से चल मस्जिद के मुल्ला के पास गया। मस्जिद के सामने हज़ारों लोगों की भीड़ जमा थी। मेरे वहाँ पहुचते ही पुलिस ने गोली चला दी। लोग भाग खड़े हुए। मगर मुल्ला ने ललकारकर फिर लोगों को जमा कर लिया। अब वह हज़ारों मुसलमानों की भीड़ के साथ कालबादेवी रोड पर तबाही मचाता हुआ जा रहा है।

"शहर-भर में हड़ताल हो गई है। हिन्दू धड़ाधड़ मर रहे हैं। यह देख मैं अपने इनाम के लिए हुज़ूर के पास हाज़िर हुआ हूँ।"

नवाब साहब यह सब सुनकर क्रोध से थर-थर काँप रहे थे। उनके मुख से कोई शब्द नहीं निकलता था। मुख का रंग पीला पड़ता जाता था। खानबहादुर ने खुशी से नवाब साहब की तरफ देखकर कहा, "क्या इनाम······।"

इससे आगे वह कुछ नहीं कह सके। नवाब साहब बेहोश हो ज़मीन पर गिर पड़े थे। खानबहादुर ने नौकर को बुला नवाब साहब को उठवा बगल के कमरे में पलंग पर लिटा दिया। पश्चात् उस मैले कपड़ों वाले मुसलमान को एक सौ रुपया देकर विदा करते हुए कहा, "फिर आना, और देंगे।"

: १४ :

पथिक जब डॉक्टर अहमद की पार्टी के पश्चात् बाहर सड़क पर आया तो उसने लोगों को चारों ओर भागते हुए देखा। उसने एक आदमी से पूछा, "क्या बात है?"

भागते हुए आदमी ने कहा, "फसाद हो गया है।"

पथिक हैरान था और नहीं जानता था कि क्या करे। वह अकरम और सलीमा से किये निश्चय के अनुसार चौपाटी पर मीटिंग में जाना चाहता था। जिधर से चौपाटी को मार्ग था, उधर से ही लोग भागे चले आते थे। पथिक ने उधर जाना उचित नहीं समझा। वह उलटी तरफ चल पड़ा। उस तरफ से वह धोबी तालाब अपने घर पहुँचना चाहता था। कुछ दूर जाने पर उधर मार्ग भी रुका हुआ मिला। हिन्दू और मुसलमान बलवाइयों में डण्डेबाज़ी हो रही थी। इतने में पुलिस पथिक के पीछे से लारियों में आई और जहाँ पथिक खड़ा यह देख रहा था, लारियाँ ठहरा, उतरकर बन्दूकें तान खड़ी हो गई। पुलिस को देख बलवाई भाग खड़े हुए। इस प्रकार मार्ग साफ हो गया। पथिक जल्दी-जल्दी पाँव उठाता हुआ धोबी तालाब की तरफ चल पड़ा।

धोबी तालाब पर जिस मकान में पथिक और अकरम ठहरे हुए थे, उसके नीचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक जौहरी की दुकान थी। मुसलमानों की एक भारी भीड़ उस दुकान पर लूट मचा रही थी। दुकान का चौकीदार मार डाला गया था और उसका शव कुछ लोग टांग पकड़कर घसीटते हुए लिए जाते थे। पथिक ने चौकीदार को पहचान लिया था। पथिक अँधेरे में एक तरफ खड़ा हो यह सब झगड़ा देख रहा था। एका-एक नलिनी की आवाज़ उसके कान में पड़ी, "भूतनाथ, भूतनाथ !"

पहले तो पथिक ने यह भ्रम समझा, परन्तु जब दुबारा यही पुकार आई तो वह इधर-उधर देखने लगा। भीड़ में से एक आदमी नलिनी को उठाये हुए भागा जा रहा था। पथिक उसके पीछे भागा। यदि अधिकतर लोग दुकानों को लूटने में न लगे होते तो शायद पथिक के लिए इस आदमी तक पहुँचना कठिन हो जाता। प्रायः लोग जब कोई चाँदी-सोने की वस्तु अथवा कोई अन्य वस्तु पा जाते थे तो वे घर को भागने की करते थे। ऐसी परिस्थिति में नलिनी को लेकर भागते हुए आदमी को पथिक ने पकड़ लिया। पथिक ने एक घूँसा उसके मुख पर लगाया। वह आदमी चक्कर खाकर भूमि पर गिर पड़ा। पथिक ने नलिनी को गोदी में उठा लिया। नलिनी ने भूतनाथ से कहा, "भैया, मोहन भैया लड़ रहे हैं। वोह हैं।" इतना कह उसने जौहरी की दुकान के साथ मकान के ऊपर जाती हुई सीढ़ियों की ओर हाथ उठाकर दिखाया। वहाँ पर लाठी चल रही थी। दस-पाँच आदमी सीढ़ियों के ऊपर चढ़ना चाहते थे। मोहन लाठी लिए ड्योढ़ी पर खड़ा था। समीप आने वाले पर लाठी की चोट की जाती थी। पथिक समझ गया कि मोहन की जान जाने का भय है। यदि अभी तक वह भीड़ को मकान पर चढ़ने से रोके हुए था तो यह उसका ड्योढ़ी में तंग और ऊँचे स्थान पर खड़े होने के कारण था।

बहुत सोचने का समय नहीं था। सड़क के एक तरफ एक पेड़ के नीचे कुछ अँधेरा था। पथिक ने नलिनी को वहाँ खड़ा कर समझाया, "यहाँ पर लेट जाओ और बोलना नहीं। चुपचाप पड़ी रहना। मैं मोहन को छुड़ाने जा रहा हूँ।"

नलिनी को भूतनाथ पर अगाध विश्वास था और वह बहुत सहमी हुई भी थी। वह चुपचाप पेड़ के तले लेट गई। पथिक ने एक आदमी के हाथ से, जो दुकान से लूटा हुआ कुछ सामान अपनी जेबों में ठूँसता हुआ भागा जा रहा था, लाठी छीन ली और पूर्व इसके कि वह घूमकर देखे कि किसने लाठी छीनी है, वह मकान की ड्योढ़ी की ओर भागा जा रहा था। लुटेरे ने यह समझकर कि कोई और दुकान में अपनी भाग्य-परीक्षा करने जा रहा है, लाठी का ध्यान छोड़ वहाँ से भागने की सोची।

पथिक ने ड्योढ़ी के पास पहुँचते ही ड्योढ़ी को घेरे हुए मुसलमानों की भीड़ पर लाठियाँ बरसानी आरम्भ कर दीं। जब पथिक ने लाठी घुमाई तो ड्योढ़ी के सामने मैदान हो गया। दो-चार घायल हो वहीं गिर गये। शेष पीछे हट गये और ड्योढ़ी का मार्ग खुल गया। अब लोगों ने ईंटें, पत्थर फेंकने आरम्भ किये। मोहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो लाठी की चोट से घायल हो चुका था। वह बहुत कठिनाई से मार्ग रोके हुए था। पथिक को वहाँ पहुँचा देख वह अचेत हो वहीं लेट गया।

पथिक ने देखा कि मोहन के पीछे एक और घायल आदमी अचेत पड़ा है। वह मोहन को वहीं छोड़े, अथवा न छोड़े, यह सोचने लगा। बलवाइयों ने अवसर पा फिर धावा बोल दिया। पथिक की लाठी फिर चलने लगी। दूसरी बार ड्योढ़ी के सामने मैदान हो गया। इस समय दुकान लूटने वालों ने, जब दुकान खाली कर दी तो, उसे आग लगा दी। अब तो मोहन को वहीं छोड़ जाना असम्भव हो गया। यदि मोहन जिन्दा है तो जलते हुए मकान में जल जायेगा, पथिक ने यह विचार कर मोहन को उठाकर ड्योढ़ी के बाहर कर लिया। लोगों ने फिर धावा बोल दिया। इस समय पथिक का एक हाथ मोहन को पकड़ने में लगा था। केवल एक हाथ से लाठी नहीं चल सकी। वह हार गया। कई लाठियाँ एकदम उसे लगीं। वह मोहन के अचेत शरीर पर ढेर हो गया।

: १५ :

सलीमा अकरम को लेकर अस्पताल पहुँची। अकरम को तुरन्त सर्जिकल-रूम में ले गये। परीक्षा करने पर पता चला कि वह मर चुका है। रक्त अधिक निकल जाने के कारण हृदय की गति बन्द हो गई थी। जब सलीमा को बताया गया कि अकरम डॉक्टरों की चिकित्सा से दूर हो गया है तो वह वहीं बरामदे में अपने सिर को पकड़कर बैठ गई। उसका सिर घूम रहा था और उसे कुछ नहीं सूझ रहा था कि क्या करे। अस्पताल में उसने अपना नाम-पता लिखा दिया था और घटना का स्थान और समय भी बता दिया था।

एकाएक उसे यह सूझा कि पथिक को सूचित कर देना चाहिये। वह उठी और टैक्सी कर डॉक्टर अहमद के मकान पर पहुँची। वहाँ उसे मालूम हुआ कि पथिक पैदल चला गया है। वह समझती थी कि अवश्य चौपाटी की ओर गया होगा। वहाँ से उसने चौपाटी की ओर जाने का यत्न किया, परन्तु बलवाइयों को देख टैक्सी ड्राइवर ने उधर जाने से इन्कार कर दिया। अब वह घर की ओर लौटी। घर से कुछ दूर ही टैक्सी वाले ने गाड़ी खड़ी कर दी और अपना भाड़ा माँगा। मकान के सामने भारी भीड़ देख सलीमा घबराई। उसने टैक्सी वाले को विदा कर दिया। स्वयं पैदल सड़क के एक तरफ हो, वह मकान की तरफ जाने लगी।

जब वह वहाँ पहुँची तो जौहरी की दुकान धक्-धक् जल रही थी। आग की रोशनी में उसने देखा कि एक नौजवान, जो देखने से मुसलमान प्रतीत होता था, दो अचेत अथवा मृत, लहू से लथपथ, आदमियों की जेबें टटोल रहा था। लोगों में भगदड़ मच गई थी। किसी ने कह दिया था, पुलिस आ गई है। सलीमा ने देखा कि उस नौजवान ने पथिक के शरीर को उठाकर एक तरफ किया। सलीमा ने कहा, "यह क्या कर रहे हो? यह तो मुसलमान है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस आदमी का हाथ रुक गया, परन्तु वह सलीमा को देख चकाचौंध रह गया। उसके सौन्दर्य को देख उसके मन में मैल आ गया था। उसने पथिक को वहीं छोड़ सलीमा को पकड़ कन्धे पर डाल लिया और भाग खड़ा हुआ।

सलीमा ने शोर मचाना आरम्भ कर दिया, "बचाओ, बचाओ!"

सलीमा को उठाये हुए वह आदमी अभी पचास पग से अधिक नहीं गया था कि उसकी कमर में गोली लगी और वह 'हाय' कह वहीं गिर गया। गिरते समय सलीमा के सिर में चोट लगी और उसे चक्कर आ गया। कई क्षण तक वह वहीं पड़ी रही। उसे अपना पूर्ण शरीर शिथिल हो गया प्रतीत होता था। किंचित्मात्र चेतना आने पर वह उठी। उसने देखा कि सड़क खाली हो गई है। आग बुझाने का इंजन आग बुझाने का यत्न कर रहा है। पुलिस के लोग भागते हुए बलवाइयों का पीछा करते हुए दूर निकल गये थे। सलीमा लड़खड़ाते हुए कदमों से वहाँ पहुँची जहाँ पथिक और मोहन को अचेत पड़े देखा था। वे अभी भी अचेत थे। समीप एक लड़की बैठी, "भैया, मोहन भैया!" कहती हुई मोहन के शरीर को हिला रही थी। सलीमा ने पथिक की नाक पर हाथ रखा। अभी श्वास चल रहा था। उसके मन में आशा जागृत होने से हिम्मत बँध गई। मोहन के शरीर के पास खड़ी लड़की से सलीमा ने पूछा, "तुम कौन हो?"

"नलिनी। यह मोहन भैया है।"

"नलिनी और मोहन भैया," सलीमा को याद आ गया। "मोहन और तुम यहाँ कैसे आये?" उसने कहा।

इस समय एक आदमी रेंगकर मकान की ड्योढ़ी से बाहर निकलता हुआ पुकारने लगा, "कीर्तिदेवी, कीर्तिदेवी!"

सलीमा ने देखा और पहचान लिया। वह नरोत्तम था। सलीमा भागकर उसके पास पहुँच गई और बोली, "भाई साहब, आप!"

"हाँ, मेरी टाँग टूट गई मालूम होती है। देखो, कोई गाड़ी मिले तो अस्पताल ले चलो।"

सलीमा ने चारों ओर नज़र दौड़ाई। सड़क की दूसरी ओर एक एम्बुलेंस कार खड़ी थी। वह पुलिस पार्टी के साथ आई थी। सलीमा वहाँ पहुँच ड्राइवर से बोली, "तीन-चार ज़ख्मी हैं। अस्पताल ले चलो।"

ड्राइवर समझता था कि वह पुलिस के ज़ख्मियों के लिए ही भेजा गया है। उसने इन्कार कर दिया। सलीमा निराश हो वापस लौट आई। नरोतम ने पूछा, "क्या कहता है?"

"कहता है, पुलिस वालों के लिए है।"

नरोत्तम, जो ज़मीन पर पथिक, मोहन और नलिनी के समीप आकर बैठ गया था, सलीमा से बोला, "मेरी जेब में रुपया है; निकाल लो और उसे लालच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देकर कहो।"

सलीमा ने नरोत्तम की जेब में हाथ डाला। सौ-सौ रुपये के कितने ही नोट थे। सलीमा ने दो निकाल लिये और फिर एम्बुलेंस कार के ड्राइवर के पास आकर बोली, "इन लोगों को अस्पताल पहुँचा दो तो एक सौ रुपया दूंगी।" ऐसा कह नरोत्तम इत्यादि की ओर संकेत किया और सौ रुपये का एक नोट दिखाया।

ड्राइवर तैयार हो गया। मोहन और पथिक अचेत थे। उनको ड्राइवर और सलीमा ने मिलकर उठाया और गाड़ी में लिटा दिया। नरोत्तम को ड्राइवर आश्रय देकर मोटर में ले गया और उसे अपने पास की सीट पर बैठा लिया। सलीमा और नलिनी पीछे बैठ गईं।

अस्पताल में जगह नहीं थी। ज़ख्मियों को बाहर मैदान में लिटाया हुआ था और उनके कराहने का शब्द चारों ओर फैल रहा था। नरोत्तम ने जब यह अवस्था देखी तो ड्राइवर से बोला, "यहाँ कोई प्राइवेट नर्सिंग होम नहीं है?"

"है तो, पर दूर है।"

"वहाँ ले चलो; एक सौ और दूंगा।"

ड्राइवर इन रुपयों की वर्षा से अति प्रसन्न था। उसने गाड़ी घुमाई और मालाबार हिल की तरफ चल पड़ा। डॉक्टर फिशर के नर्सिंग होम में गाड़ी पहुँच गई। डॉक्टर साहब ने पहले तो बलवे के घायलों को लेने से इन्कार किया। पश्चात्, जब नरोत्तम ने नोटों का बण्डल दिखाया तो राज़ी हो गया। तुरन्त स्ट्रेचरों पर घायलों को लिटाकर भीतर पहुँचाया गया। नरोत्तम ने सब रुपया सलीमा को दे दिया और कहा कि पाँच सौ रुपया डॉक्टर के पास जमा करा दो और कह दो, "आपका बिल पूरा-पूरा दे दिया जायेगा।"

: १६ :

कई घण्टों के प्रयत्न के पश्चात् नवाब साहब को चेतना हुई। खानबहादुर और उनके घर के सब लोग उन्हें सचेत करने में लगे हुए थे। जब नवाब साहब को सब बातें अपने अचेत होने से पूर्व की स्मरण हो आईं तो उन्होंने खानबहादुर के कान में कुछ कहा। खानबहादुर ने सब घर वालों को वहाँ से हटा दिया। नवाब साहब ने कहा, "मैं बरबाद हो गया हूँ, और अपने ही हाथों।"

"क्यों, क्या हुआ?"

"उस पठान के बच्चे ने मेरे ही लड़के अकरम को मार डाला है।"

"ओह, कैसे हुआ है?"

"मुझे नहीं मालूम। वह काफिर का बच्चा पथिक डॉक्टर अहमद की पार्टी में था। जब मैंने उससे पूछा कि अकरम और सलीमा कहाँ हैं तो उसने बताया कि इस्लामिया कॉलेज में गये हैं।

"डॉक्टर अहमद के यहाँ से मैं तुम्हारे पास आया और कत्ल की वारदात सुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे सिर में चक्कर आने लगा था। ज़रा अस्पताल में टेलीफोन करके पता निकालो तो।" खानबहादुर ने टेलीफोन घुमाया। कई बार यत्न करने पर नम्बर मिला और बड़ी कठिनाई से बातचीत हुई। अस्पताल दंगे के घायलों से भर रहा था। डॉक्टरों को बातचीत करने की फ़ुरसत नहीं थी। बहुत मिन्नत करने पर डॉक्टर ने कहा, "हाँ, सायंकाल पाँच बजे के लगभग एक लड़की एक आदमी को लेकर यहाँ आई थी। उसके पेट में छुरे से ज़ख्म किया गया था। लड़का मरा पड़ा है और पुलिस के कब्ज़े में है। लड़की अपना नाम बताकर अपने सम्बन्धियों को बुलाने गई थी, परन्तु फिर नहीं आई। मृतक का नाम अकरम लिखाया गया है और लड़की ने अपना नाम सलीमा बताया है। अपना पता उसने धोबी तालाब नम्बर पाँच में रूम-नम्बर बीस और इक्कीस बताया है।"

खानबहादुर ने डॉक्टर की सब बात ज्यों-की-त्यों नवाब साहब को बता दी। नवाब साहब अपना माथा पीटकर रह गए। रात को नगर-भर में कर्फ़्यू लग गया था और सड़क पर निकलना असम्भव था।

दिन निकलने पर भी शहर में शान्ति नहीं थी। इस पर भी नवाब साहब ने खानबहादुर की गाड़ी ली और अस्पताल का रास्ता पकड़ा। अस्पताल में प्रति चार-पाँच मिनट के बाद एम्बुलेंस गाड़ी घायलों से लदी हुई आती थी। इससे प्रकट होता था कि शहर में अभी भी फसाद चल रहा है।

नवाब साहब ने अस्पताल के सबसे बड़े डॉक्टर के पास पहुँच अपना कार्ड दिया और अकरम की बाबत पूछा। डॉक्टर उन्हें अकरम की लाश के पास ले गया। नवाब साहब ने लाश को पहचान लिया। एक डॉक्टर पोस्टमार्टम करने के लिए आया हुआ था। इतने में पुलिस आ पहुँची। उन्होंने नवाब साहब के बयान भी कलमबन्द कर लिये। नवाब साहब को सलीमा की चिन्ता लग रही थी। पुलिस भी उसकी तलाश में थी। सबका ख्याल था कि रात कहीं बलवे में मारी गई है, अथवा घायल हो कहीं पड़ी है। सलीमा ने जो पता लिखाया था, पुलिस वालों ने बताया कि वह मकान तो जलकर भस्म हो गया है।

लगभग दस बजे डॉक्टर ने बताया कि सलीमा का टेलीफोन डॉक्टर फिशर के नर्सिंग होम से आया है। उसके कुछ सम्बन्धी बलवे में घायल हो वहाँ पड़े हैं और गाड़ी न मिल सकने के कारण वह भी अभी तक आ नहीं सकी। पुलिस वालों ने अपनी कार, जिसमें हथियारबन्द पुलिस वाले भी थे, मालाबार हिल पर नर्सिंग होम में भेज सलीमा को बुलवा लिया।

नवाब साहब के मन में चोर था और उनको साहस नहीं हुआ कि वह सलीमा के सामने आँखें उठा सकें। जब वह आई तो वह आँखें नीची किये बैठे रहे। सलीमा भागकर उनके आगे घुटनों के बल बैठ अपना सिर उनकी गोद में रख रोने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ समय तक यह हृदयविदारक दृश्य सब देखते रहे। पोस्टमार्टम समाप्त हुआ। अकरम का शव दे दिया गया। नवाब साहब ने खानबहादुर को टेलीफोन कर अकरम को दफनाने का प्रबन्ध करने को कहा।

सायंकाल पुलिस के निरीक्षण में अकरम का जनाज़ा निकला। नगर के बड़े-बड़े मुसलमान लीडर साथ थे। सलीमा और नवाब साहब से हमदर्दी करने वाले सैंकड़ों लोग कब्रिस्तान में पहुँचे थे।

सलीमा यह तो समझी थी कि किसी मज़हबी दीवाने ने पथिक के धोखे में उसके भाई को मार डाला है, पर उसे यह नहीं मालूम था कि उसके बाप ने ही कातिल को भेजा था।

नवाब साहब अपने किये पर बहुत लज्जित थे। यद्यपि उपस्थित लोगों में, सिवाय खानबहादुर अब्दुलरशीद के, कोई नहीं जानता था कि अपने लड़के को कत्ल कराने वाले वह स्वयं हैं, इस पर भी मन-ही-मन वह अपने-आपसे घृणा कर रहे थे।

खानबहादुर अब्दुलरशीद यद्यपि जनाज़े में सम्मिलित थे, इस पर भी अपने विचारों में लीन थे। उनके मुख का रंग पीला पड़ गया था। वह थोड़े-थोड़े समय के पश्चात् भय से काँप उठते थे। उन्हें साहस नहीं हुआ कि नवाब साहब को अपना मुख भी दिखा सकें।

जनाज़े के पश्चात् जब सब लोग चले गए तो नवाब साहब ने सलीमा से कहा, "अब?"

"मुझे नर्सिंग होम जाना है। अगर खानबहादुर अपनी गाड़ी दे सकें तो उनकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

"वहाँ क्या है?"

"वह वहाँ बेहोश पड़े हैं।"

"वह कौन, पथिक?"

"हाँ, बलवे में फँस गए थे।"

नवाब साहब चुप थे। खानबहादुर ने सिर हिलाकर गाड़ी देनी स्वीकार कर ली। सलीमा उसमें सवार हो नर्सिंग होम को चली गई। किसी ने उसे रोकने का यत्न नहीं किया।

जब वह चली गई तो नवाब साहब ने लम्बी साँस खींचकर कहा, "अब क्या होगा?"

खानबहादुर ने कहा, "नवाब साहब, सख्त अफसोस है। हमारा मन्शा यह न था।"

"आपने मेरा घर तबाह कर दिया। मैं भी वेवकूफों की तरह आपके चकमे में फँस गया। उफ, या खुदा!"

नवाब साहब की आँखों से आँसू बहने लगे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १७ :

नरोत्तम की टाँग की हड्डी टूट गई थी। उसे ठीक बैठाकर पट्टी बाँध दी गई। वह खाट पर लेटा हुआ था। मोहन की कनपटी में सख्त चोट आई थी। वह यद्यपि होश में था, तो भी बातचीत करने में कष्ट अनुभव करता था। उसका मुँह और सिर पट्टियों से बँधा हुआ था। पथिक के सिर में कई चोटें आई थीं। खोपड़ी की हड्डी एक स्थान से चटक गई। उसे अभी चेतना नहीं हुई थी। इस पर भी डॉक्टर आशा कर रहा था।

सलीमा जब सायंकाल पहुँची तो अवस्था अभी वैसी ही थी। उसने डॉक्टर से पूछा, "कब तक होश आएगा?"

"कह नहीं सकता।"

"ठीक हो जाएंगे?"

"बहुत उम्मीद है।"

सलीमा ने नरोत्तम को अकरम की मौत का हाल सुनाया। उसे इससे बहुत ही शोक हुआ। नरोत्तम ने अपने बम्बई पहुँचने का कारण बताते हुए कहा, "मुझे कई बातों से यह मालूम हो गया था कि यह मिस्टर पथिक वही हैं जो मैं समझ रहा था। मेरा एक मित्र था। उसका नाम था मधुसूदन। उसकी सगाई मेरी बहिन पूर्णिमा से हो चुकी थी। पूर्णिमा की तस्वीर तुमने देखी थी न। वह नलिनी से बिलकुल मिलती थी। उसी तस्वीर से मुझे सन्देह हुआ था कि पथिक मधुसूदन हैं। मधुसूदन हाथ से चित्र बनाना जानता था। मैंने समझा था कि उसने पूर्व-स्मृति से पूर्णिमा का चित्र बनाया है। चित्र तो नलिनी का निकला, परन्तु पथिक के मधुसूदन होने के और प्रमाण मिल गए। मैं उसे मिलना चाहता था। पथिक का पता जानने के लिए मैं देवा पहुँचा। वहाँ से मोहन और नलिनी मेरे साथ हो लिये। हम उसे ढूँढ़ते हुए जबलपुर, अमरावती होते हुए बम्बई पहुँचे। कल दिन-भर हम आपका और पथिक के रहने का पता मालूम करते रहे। सायंकाल हम पता जान आपके मकान पर पहुँचे। आपमें से वहाँ कोई नहीं था। कुछ देर तक आपकी प्रतीक्षा की। फिर यह सोच कि कुछ देर बाद लौट आएँगे, मकान के नीचे उतरे। उतरते ही हमें बलवाइयों ने घेर लिया। एक ने बड़े ज़ोर से मेरी टाँग पर लाठी मारी। मैं तो वहीं गिर गया। मोहन ने मुझे उठा सीढ़ियों की ड्योढ़ी में लिटा दिया। स्वयं वह लाठी तानकर खड़ा हो गया। पश्चात् मुझे बेहोशी हो गई। जब मुझे चेतना हुई तो मकान में आग लग चुकी थी। मैं उठ नहीं सकता था। रेंगता हुआ मकान से बाहर आया। नलिनी बेहोश पथिक और मोहन के पास बैठी थी। उसी समय आप वहाँ आ गईं।"

अगले दिन पथिक ने आँखें खोलीं। परन्तु अभी भी वह किसी को पहचान नहीं सका था, न ही कुछ बोल सका। हाँ, इससे आशा बहुत बढ़ गई। दो दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात् पथिक के मुख से पहला शब्द निकला और यह शब्द था पूर्णिमा। उस समय नलिनी उसके पास खड़ी थी।

नरोत्तम ने जब देखा कि शहर में फसाद बन्द हो गया है तो उसने कलकत्ते तार भेजकर अपने नर्सिंग होम में होने की सूचना भेज दी। परिणाम यह हुआ कि नरोत्तम की माता और पत्नी वहाँ पहुँच गईं। चिट्ठी में मधुसूदन का हाल जब भेजा गया तो सेठ कुन्जबिहारी भी वहाँ पहुँच गए।

इस समय तक पथिक को पर्याप्त चेतना हो चुकी थी। उसने नरोत्तम, तपस्विनी इत्यादि को पहचान लिया था। सबसे कठिन समस्या नलिनी की थी। वह उसे पूर्णिमा ही समझता था। जब उसे बताया जाता कि वह मोहन की बहिन है तो वह अचम्भे में सबका मुख देखने लगता था। सलीमा को वह नहीं पहचानता था। अकरम की बाबत वह कुछ नहीं जानता था। देवा की उसे कोई बात याद नहीं थी। युवक-संघ की बातें उसे ज्ञात नहीं थीं।

मोहन ने उसके देवा पहुँचने से लेकर बम्बई आने तक का सारा वृत्तान्त सुनाया, परन्तु पथिक को यह सब एक कहानी ही प्रतीत हुई। उसने एक दिन सलीमा से कहा, "आपका मेरे पास आकर बातें करना मुझे बहुत भला प्रतीत होता है। परन्तु आप जो कुछ पिछली बातें कहती हैं वे मुझे स्मरण नहीं आतीं। आप कहती हैं कि मेरा आपसे विवाह होने वाला था। सत्य? कितनी अच्छी बात आप कहती हैं। क्या अब मेरे दिमाग की ऐसी हालत जानकर भी आप मेरे प्रति वही भाव रखती हैं? मगर कल भैया नरोत्तम बता रहे थे कि आपके पिता एक बड़े जागीरदार, नवाब हैं और मैं भिखारी हूँ। आप मुसलमान हैं और मैं हिन्दू हूँ। मैं अब क्या समझूं?"

सलीमा ने कहा, "क्या फिर वही झगड़ा करना होगा जो पिछले छः महीनों से होता रहा है? क्या मेरी तपस्या अभी पूर्ण नहीं हुई? क्या मुझे फिर यह सिद्ध करना होगा कि मैं आपके योग्य हूँ? आप कैसे समझेंगे?"

"देखो, सलीमा, मैं एक गरीब ब्राह्मण का लड़का हूँ। मैं जेल से भागा हुआ कैदी हूँ। मुझे एक देवी ने इसी कारण अस्वीकार कर दिया था। उसकी याद अभी भी मेरे दिमाग में विद्यमान है।"

"उसने आपको अस्वीकार कर दिया था?"

"हाँ, उसने महात्मा गांधी का सत्य का व्रत लिया हुआ था। एक सत्याग्रही के लिए भागे हुए कैदी को आश्रय देना उचित नहीं माना गया। इस कारण मेरा उससे विवाह न हो सका।"

"और वह नरोत्तम बाबू की बहिन थी?"

"हाँ।"

ऐसी ही बातें होती रहती थीं, जिनके कारण सलीमा एक विचित्र परिस्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पड़ गई थी। उसने राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत एक व्यक्ति को अपना हृदय अर्पण किया था। वह व्यक्ति एकाएक बदल गया है। शक्ल-सूरत वही है। सहृदयता और सौजन्य भी वही है। चमत्कार और आकर्षण भी उपस्थित है। परन्तु क्या देश-प्रेम भी वही है, यह सलीमा जानने का यत्न करती थी। वह पूछना चाहती थी कि क्या वह इसी मज़हब में रहते हुए भी उसे पत्नी बनाना स्वीकार करेगा, परन्तु डरती थी कि वह ब्राह्मण का लड़का है। उसके पूर्व संस्कार जागृत हो उठे हैं। वह कहीं इन्कार न कर दे। वह बात करने के लिए आती थी, परन्तु बात होंठों पर आकर रह जाती थी।

सलीमा, जब से अकरम का देहान्त हुआ था, नवाब साहब से मिलने रोज़ जाती थी। वह समझती थी कि उसके पिता को बहुत सदमा पहुँचा है और उसका यह कर्त्तव्य है कि उन्हें हर रोज़ मिलकर उनके चित्त को शांति दे और उनके मन को दूसरी ओर लगाए। सलीमा की माँ भी बम्बई आ गई थी। वे सब लोग खानबहादुर के मकान पर ही रहते थे। अकरम के कातिल पर मुकदमा चल रहा था। खानबहादुर और नवाब साहब यह समझते थे कि ऐसे अवसर पर उनका बम्बई में रहना निहायत ज़रूरी है।

इस समय अजीब-अजीब किस्म के लोग नवाब साहब और खानबहादुर से मिलने आते थे। एक दिन की बात है कि सलीमा अपने पिता से मिलने आई। उनसे प्राय: वह बैठक में मिला करती थी। उस दिन उसके पिता और खानबहादुर दोनों घर पर नहीं थे। वह पथिक से ठीक रूप से वार्तालाप न कर सकने के कारण उदास थी। जब बैठक को खाली देखा तो नौकर से यह जानकर, कि उसके पिता आधे घण्टे में लौट आने को कह गए हैं, वह वहीं बैठ गई। अपनी माँ से मिलने को उसे अब कुछ चाह नहीं रही थी। वह माँ को, उसे धोखा देने के लिए, नाटक करते देख चुकी थी। अपने पिता के लिए उसके हृदय में अभी भी कुछ स्थान था। वह उन्हें अकरम के जनाज़े पर रोते देख चुकी थी।

सलीमा को बैठे अभी दस मिनट से अधिक नहीं हुए थे कि एक बहुत मैले-कुचैले कपड़े पहने, रूमी टोपी लगाए आदमी को बैठक में निधड़क आते देख वह घबराई। उसने समझा कि कोई खानबहादुर से मिलने आया है। उसने उसे पहले कभी वहाँ नहीं देखा था। सलीमा उठकर बगल के कमरे में हो गई। यह कमरा खानबहादुर का स्टडी-रूम था। वहीं एक कुर्सी पर बैठ गई और मेज़ पर रखी एक किताब उठाकर पढ़ने लगी।

एक-दो मिनट पश्चात् एक और आदमी बैठक में पहुँच गया प्रतीत होता था। दो आदमियों की बातें करने की आवाज़ उसे आने लगी थी। सलीमा का मन किताब में नहीं लग रहा था, इस कारण उसने उठकर देखना चाहा कि दूसरा व्यक्ति कौन है। कमरे के दरवाज़े पर परदा लगा था। सलीमा ने परदे को थोड़ा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सा हटाकर झाँका। यह नया आया हुआ एक मुल्ला मालूम होता था। दाढ़ी-मूँछों और कपड़ों से कोई मस्जिद में लड़कों को कुरान पढ़ाने वाला मालूम होता था। वह परदे के पीछे से हटने ही वाली थी कि उसके कान में एक के यह कहने के शब्द पड़े, "मैं आज नवाब साहब से आखिरी बात करने आया हूँ। अगर वह न माने तो कल उनको हथकड़ी लगवा दूंगा।"

यह हथकड़ी की बात सुन सलीमा रुक गई। वह वहीं खड़ी रह गई। दूसरे ने उत्तर दिया, "देखो, भाईजान, ज़रा उनके जज़्बात का भी ख्याल करो। उन्होंने जो कुछ किया, कौमी मफाद के लिए किया था। इस पर मर गया उनका लड़का। इससे उनको सदमा पहुँचा है। वह अभी भी अपने होश में नहीं हैं। आराम से समझाने पर सब बात सुलझ जाएगी।"

पहले आदमी ने क्रोध में फिर कहा, "कौमी मफाद की बातों को मैं खूब समझता हूँ। बात यह थी कि उनकी लड़की की आशनाई एक हिन्दू से थी। वह उस नौजवान को मरवाना चाहते थे। गलती उन्होंने की कि उस हिन्दू के मिलने की जगह के बजाय अपने लड़के के मिलने की जगह बता दी। हुलिया भी जो बयान किया था, वह गलत था। हिन्दू की जगह उनका लड़का मारा गया है। और फिर मेरा भी तो लड़का मारा गया है।"

"तुम्हारा लड़का मारा गया है! कैसे?" खानबहादुर ने बैठक में दाखिल होते हुए कहा। इस समय नवाब साहब और खानबहादुर वहाँ आ पहुँचे थे। सलीमा के लिए यह वार्तालाप असह्य हो रहा था। वह पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ी रह गई।

खानबहादुर के प्रश्न पर वही आदमी अब और भी क्रोध में कहने लगा, "देखिए, साहब, आपने मुझे दो हज़ार रुपए देने का वायदा किया था और अभी तक सिर्फ पाँच सौ रुपए दिए हैं।"

नवाब साहब ने कहा, "तो बाकी देने से इन्कार तो किया नहीं। मैंने तो यह कहा था कि कत्ल का मुकदमा खत्म हो जाय तो तुम्हारी रकम तुम्हें दे देंगे।"

"साहब, मुकदमा खत्म करने की बात तो थी नहीं। उसके लिए आपने बीस हज़ार तक और खर्च करने को कहा था। यह दो हज़ार तो मुझे फौरन मिलना चाहिए और फिर कातिल को और कातिल के रिश्तेदारों को चुप कराने के लिए उस बीस हज़ार में से खर्च करें। मेरे दो हज़ार में से इसके लिए देना तय नहीं था।"

"हाँ, हाँ, तुम ठीक कहते हो।" खानबहादुर ने कहा, "तुम्हारे दो हज़ार में से कुछ कम नहीं करेंगे। सिर्फ बात यह है कि नवाब साहब के बेटे के मारे जाने से कई खर्च और पैदा हो गए हैं और मुकदमा लड़ने के लिए भी धड़ाधड़ रुपया खर्च हो रहा है। कुछ देर ठहर जाओ। तुम्हारी रकम अदा कर दी जायगी।"

"मगर, साहब, मेरा लड़का मर गया है और मुझे रुपए की सख्त ज़रूरत है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवाब साहब ने सहानुभूति दिखाते हुए पूछा, "उसे क्या हुआ था ?"

"आप लोगों की बुरी नज़र उस पर पड़ी थी। उसे बलवे में गोली लग गयी थी।"

"गोली ! किस जगह ?" खानबहादुर ने पूछा। वह इस प्रकार क्रोध में भरे हुए से हमदर्दी प्रकट कर उसे कुछ शान्त करना चाहते थे।

उसने कहा, "पहली शाम की ही बात है। मैं आपके यहाँ से जब गया तो एक झुंड में शामिल हो गया। मेरा लड़का भी उसी में था और मैं उसे बलवाइयों से निकालकर बाहर ले जाना चाहता था। मेरे उसके पास पहुँचने से पहले ही लोग धोबी तालाब के चौक में जा पहुँचे। वहाँ जौहरी की दूकान में लूट मच गयी। मुझे लूटने में कुछ दिलचस्पी नहीं थी। कुछ हिन्दू जौहरी की दूकान के ऊपर के मकान से नीचे उतरे। उनमें एक आठ-नौ साल की निहायत ख़ूबसूरत लड़की भी थी। जब लोगों ने उन हिन्दुओं से लड़ना शुरू किया तो मैं उस लड़की को उठाकर ले भागा। अभी कुछ दूर ही पहुंचा था कि लड़की ने पुकारा, 'भूतनाथ, भूतनाथ !' और एक आदमी पेड़ के पीछे से निकल आया और मेरे मुख पर ऐसे ज़ोर का घूँसा मारा कि मैं चक्कर खाकर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। जब मुझे होश आया तो पुलिस आ पहुँची थी। मैं अपने लड़के की तलाश में था। वह दो हिन्दुओं की लाशों की जेबें टटोल रहा था। इतने में एक नौजवान लड़की उसके पास पहुँच तकरार करने लगी। वह शायद मकान के ऊपर से उतरी थी। मेरे लड़के ने उस लड़की को ले भागने के लिए उठाकर कंधे पर रख लिया और भाग खड़ा हुआ। लड़की ने 'बचाओ, बचाओ' का शोर मचा दिया। पुलिस के आदमी ने देख लिया और निशाना बाँधकर गोली चला दी। गोली लड़के की कमर में लगी और वह गिर पड़ा। लड़की तो बेहोश हो गई और मैंने अपने लड़के को, जो अभी मरा नहीं था, कंधे पर उठाया और समीप ही एक गली में घुस गया और वहाँ से घर पहुँच गया। तब से उस लड़के का इलाज कर रहा था। कल वह फौत हो गया है।"

सलीमा ने यह किस्सा सुना तो सुन्न रह गई। वह अपने पिता को रुपया देकर उसके प्रेमी को मरवाने के लिए हत्यारा भेजने की बात सुन बहुत ही बेचैन हो उठी थी और अब वह देख रही थी कि उस नौजवान का बाप, जो उसे उठाकर उसकी बेइज़्ज़ती करने के लिए ले जा रहा था, उसके बाप से रुपया माँग रहा है। वह थरथर काँपने लगी थी। इतने विचार उसके मस्तिष्क में एकदम उठ रहे थे कि वह नहीं जानती थी कि क्या करे। वह इसी समय कुछ करने के लिए छटपटा रही थी, परन्तु निश्चय नहीं कर सकती थी। एक ओर तो उसके मस्तिष्क में अपने पिता के प्रति घृणा उत्पन्न हो रही थी, दूसरी ओर वह सोचती थी कि इस षड्यन्त्र को प्रकाशित कर दे। फिर वह सोचती थी कि इस बदमाश को, जो रुपया लेकर लोगों की हत्या करने या करवाने पर तैयार हो जाता है, अभी जाकर जूतों से पीट दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भी अनेकानेक क्रोध से उत्पन्न विचार उसके मन में पैदा हो रहे थे। इनके साथ ही उसके मन में आत्मग्लानि उत्पन्न हो रही थी। वह सोच रही थी कि हिन्दुस्तान जैसे पतित देश में, जहाँ निजी बातों पर कौमी बलवे करवा दिए जाते हैं, जहाँ कोई निरर्थक खिताब लेने के लिए जाति के लाभ को बेच दिया जाता है, जहाँ बीस-पच्चीस रुपए की नौकरी के लिए अपने ही सगों पर अन्याय और अत्याचार किया जा सकता है, जहाँ बाप मज़हबी जुनून के लिए अपने लड़के का घात करवा सकता है अथवा लड़की को विधवा बना सकता है, रहते हुए जीने में क्या कोई अच्छाई है। वह आत्मघात कर हिन्दुस्तानी होने के कलंक से छुटकारा पाना चाहती थी।

जब इस प्रकार के विचार उसके दिमाग में भर रहे थे तो उसने सुना कि उसका पिता कह रहा था, "अभी ये दो सौ रुपए ले लो।"

माँगने वाला कह रहा था, "नहीं, एक हज़ार फौरन दे दो वरना···।"

सलीमा और आगे नहीं सुन सकी। वह स्टडी-रूम से बाहर निकल आई। बैठक में मैले-कुचैले कपड़े पहने खड़ा हुआ आदमी घूर-घूरकर नवाब साहब और खानबहादुर की ओर देख रहा था। मुल्ला की रूपरेखा का आदमी कुर्सी पर धीरज से बैठा हुआ था और खानबहादुर तथा नवाब साहब बहुत बेचैनी से एक-दूसरे की ओर देख रहे थे। सलीमा को आते देख काँपते हाथों से नवाब साहब रुपयों के बण्डल को उठाकर जेब में रखने लगे और रक्तविहीन होंठों से मुस्कराने का बहाना करने लगे। सलीमा ने अपने पिता को घबराया हुआ देखकर कहा, "अब्बाजान, मैंने सब सुन लिया है। इसको छुपाने की कोई ज़रूरत नहीं। आप इसे दें या न दें, मुझे कुछ नहीं कहना। हाँ, मैं एक बात आपको बताना चाहती हूँ कि इसका लड़का मुझे ही उठाकर ले भागा था जब उसे गोली लगी थी। कहीं इत्तफाक से भाग जाने में वह कामयाब हो जाता तो वह आपकी लड़की की अस्मतदरी करता। अच्छा, अब्बाजान, अब मैं जाती हूँ और शायद अब फिर नहीं आऊँगी।" इतना कह सलीमा बैठक से बाहर की ओर चल पड़ी।

नवाब साहब ने अपने आचरण की सफाई देने के लिए सलीमा को पुकारा, "सलीमा, सलीमा, ठहरो, सुनो।"

सलीमा दरवाज़े के समीप गई और अपने पिता की ओर देखकर बोली, "सलीमा मर गई है। उसका ख्याल आप छोड़ दें। सलीमा और अकरम दोनों गए, ऐसा समझ लें।" इतना कह वह बैठक से निकल मकान से बाहर निकल गई।

: १८ :

नरोत्तम अब बैसाखियों के सहारे चल सकता था। उसकी टाँग की हड्डी जुड़ तो गई थी, परन्तु डॉक्टर ने उस पर बोझ डालकर चलने की अभी सम्मति नहीं दी थी। मोहन अब नर्सिंग होम में नहीं रहता था। वह अब बिलकुल ठीक हो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। मोहन, मोहन की माँ, नलिनी, नरोत्तम की माता और स्त्री सब नर्सिंग होम से कुछ फासले पर एक कोठी में रहते थे। पथिक अब भी नर्सिंग होम में था।

नरोत्तम सलीमा की परेशानी को समझता था। वह देख रहा था कि पथिक सलीमा से विवाह के लिए कुछ अधिक उत्सुक प्रतीत नहीं होता। सलीमा एक ओर तो माता-पिता से झगड़ा कर चुकी थी और दूसरी ओर अपने एकमात्र सहायक, भाई की मृत्यु से घुलती जाती थी। वह समझ रहा था कि यदि यही अवस्था कुछ दिन और चलती रही तो सलीमा या तो आत्मघात कर लेगी या पागल हो जाएगी। कभी-कभी वह घण्टों ही चुपचाप बैठी मन में सोचती रहती थी।

एक दिन नरोत्तम के मन में आया कि कहीं पूर्णिमा की कहानी दोबारा न घट जाय। उसने मन में निश्चय कर लिया कि इस समस्या को सुलझाना चाहिए और तुरन्त। तपस्विनी ने भी इस बात पर बहुत ज़ोर दिया। नरोत्तम ने सेठ साहब से बात की। वह अभी तक बम्बई में ही टिके थे। सेठ साहब ने कहा, "यदि मधुसूदन का पथिक बनकर अपना पूर्व इतिहास भूल जाना पागलपन था तो अब पुनः मधुसूदन बन पथिक के जीवन को भूलना भी पागलपन ही कहा जाना चाहिए। इस पागलपन की चिकित्सा होनी चाहिए।" नरोत्तम को यह युक्ति अच्छी लगी। उसने डॉक्टर घोष को कलकत्ते से बुला लिया।

डॉक्टर साहब का सलीमा से स्नेह हो गया था और वह सब बात सुनकर इस विषय पर गम्भीरता से विचार करने लगे। एक दिन डॉक्टर साहब ने सेठ साहब, नरोत्तम, सलीमा और तपस्विनी को पथिक के रोग का निदान और चिकित्सा बताई। उन्होंने बताया, "पथिक को पागल तो नहीं कहा जा सकता था और न वह अब भी पागल ही है। यह मस्तिष्क की एक विशेष परिस्थिति है जो पागल के दिमाग से सर्वथा भिन्न है। पागल के दिमाग पर उसके वातावरण का वह प्रभाव नहीं होता जो एक साधारण मनुष्य के मस्तिष्क पर होता है। पथिक के मस्तिष्क पर तो बाहरी बातों का वैसा ही प्रभाव होता है जैसा कि मेरे, आपके तथा किसी भी साधारण मनुष्य के मस्तिष्क पर होता है अथवा होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर मैंने उसके सम्मुख देश की राजनैतिक परिस्थिति रखी। उसका उत्तर सर्वथा युक्तिसंगत था। उसने कहा, 'माँगने से कुछ नहीं मिल सकता। अधिकार प्राप्त करने के लिए अधिकारी बनना आवश्यक है। दूसरों को अपने अधिकारी होने की योग्यता बतानी होगी। राजनैतिक अधिकार चरित्रवान, बुद्धिमान और वीरों को मिलते हैं।' मैंने उससे मज़हब के विषय पर वार्तालाप किया। वह बोला, 'किसी बात को किसी ढंग से मानने को मज़हब कहते हैं। कोई भी दो व्यक्ति किसी भी बात को सर्वथा एक ढंग से मान नहीं सकते। इससे यह कहना कि संसार में कोई भी दो व्यक्ति समानधर्मी (एक ही मज़हब के मानने वाले) हैं, मिथ्या है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण रूप से कोई भी बात दो मस्तिष्क एक ही समान न तो समझ सकते हैं, न मान सकते हैं।'

"ऐसी परिस्थिति में मैं उसे पागल नहीं कहता। मैं उसकी त्रुटि को इस प्रकार वर्णन करता हूँ। मनुष्य का मस्तिष्क दाहिने और बाएँ दो भागों में विभक्त है। दोनों भाग एक जैसा काम करते हैं, परन्तु दोनों एक ही समय काम नहीं करते। प्राय: मनुष्यों के मस्तिष्क का बायाँ भाग काम करता है और दाहिना सोया रहता है। यही कारण है कि मनुष्य के दाहिने अंग अधिक कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। दाहिने अंगों का सम्बन्ध मस्तिष्क के बाएँ भाग से होता है और बाएँ अंगों का सम्बन्ध मस्तिष्क के दाहिने भाग से। प्रकृति ने यह दोहरा प्रबन्ध इसलिए कर रखा है कि कहीं किसी कारण से मस्तिष्क का एक भाग बेकार हो जाय अथवा थक जाय तो दूसरा भाग काम कर सके। ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्णिमा की मृत्यु के समय उसे भारी शोक और सदमा हुआ, जिससे मस्तिष्क का वह भाग, जो उस समय काम करता था, थक गया अथवा बेकार हो गया। उसके मस्तिष्क का वह भाग सो गया तो काम करने के लिए दूसरा जाग उठा। वे सब संस्कार, जो पहले भाग में थे, उसके सो जाने के साथ सो गए और नवीन संस्कार एकत्रित होने लगे। अब फिर मस्तिष्क पर बहुत बोझा पड़ा है और सिर पर चोट लगना भी कारण हो सकता है जिससे यह भाग, जो पथिक की अवस्था में संस्कार एकत्रित कर रहा था, शिथिल होकर सो गया है और पुन: पहला भाग जागृत हो उठा है। यही कारण है कि उसे पथिक के जीवन की घटनाएँ भूल गई हैं।

"दिमाग के इस भाग को, जो अब थककर अथवा किसी अन्य कारण से सो गया है, पुन: जागृत करने का उपाय है। यदि पथिक को विवश कर दिया जाय कि वह अपने बाएं हाथ और दूसरे बाएँ अंगों से काम करे तो मस्तिष्क के सोए हुए अंग को उत्तेजना दी जा सकती है। हम उसे बाएँ पाँव से फुटबॉल खेलने और बाएँ हाथ में छड़ी रखने पर विवश करें। हमें चाहिए कि उसके चलने, बैठने, बातें करने, उसके कमरे के फर्नीचर को सजाने का ढंग ऐसा कर दें कि उसे बाएँ अंगों से काम करने पर विवश होना पड़े। उसको जब भी कोई चीज़ पकड़ाओ, बाएँ हाथ में; उसके साथ चलो और बातें करो तो बाईं तरफ होकर। उसके कमरे का दरवाज़ा उसके बैठने के स्थान से बाईं तरफ हो। इस प्रकार कुछ महीनों तक करने से उसके मस्तिष्क का दाहिना भाग पुन: स्फूर्ति पकड़ लेगा और पथिक की योजनाओं को चलाने में सफल हो सकेगा।"

सलीमा को डॉक्टर घोष से पथिक की अवस्था का निदान और चिकित्सा सुन बहुत सन्तोष हुआ। एक बात तो स्पष्ट हो गयी थी कि पथिक की इस अवस्था को पागलपन नहीं कहा जा सकता। यदि यह अवस्था केवल भूलने के साथ सम्बन्ध रखती है और मस्तिष्क में विचार करने से सम्बन्ध नहीं रखती तो पथिक के मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण मधुसूदन में होने सम्भव हैं। मधुसूदन भी वैसा ही देशभक्त, मजहबी पक्षपात से ऊपर और दृढ़ चरित्रवान हो सकता है। यदि विचार-शक्ति का लोप नहीं हुआ, जो पागलों में हो जाता है, तो मधुसूदन पथिक के जीवन को भूलकर भी वैसा ही देश तथा जाति के लिए कार्य करने में धीर, वीर और गम्भीर होगा।

कठिनाई केवल यह रह गई थी कि उसके मन में सलीमा के लिए प्रेम जागृत किया जाय। अब यह कुछ कठिन अवश्य था। पथिक पूर्णिमा को भूल चुका था। अब पूर्णिमा की स्मृति सलीमा से प्रेम के विचार का विरोध कर सकती है। इस विरोध को विजय करना सलीमा का काम था और इसके लिए वह अपनी पूर्ण शक्ति लगा देने के लिए कमर बांध तैयार हो गयी। वह सोचती थी कि यह तो करना ही होगा। यदि यह चोट लगने की घटना कहीं विवाह के पश्चात् होती तो बहुत बुरा होता। अब तो परिस्थिति और भी स्पष्ट है। पथिक को पीछे यह कहने का अवसर नहीं आयेगा कि उसने सलीमा से विवाह अज्ञानता में किया था।

डॉक्टर घोष की बताई विधि, जिससे उसके मस्तिष्क का वह भाग जो पथिक के काल से जागृत था पुनः जागृत हो, सलीमा प्रयोग में लाने लगी। साथ ही वह सेवा-सुश्रूषा, विचार-विनिमय और अपने त्याग का दिग्दर्शन करा उस पर विजय प्राप्त करने के लिए अपने पूर्ण मन से लग गयी।

वह पथिक के समीप नर्सिंग होम में ही रहती थी। पथिक अब इतना ठीक हो चुका था कि वह नर्सिंग होम के लॉन में घूम-फिर सकता था। डॉक्टर फिशर अभी एक-आध सप्ताह उसे अपने यहाँ और रखना चाहता था। इन दिनों सलीमा जहाँ पथिक से बायें हाथ से काम करने के लिए आग्रह किया करती थी, वहाँ उसमें अपने साथ प्रेम रखने की स्मृति को भी जागृत करने का यत्न करती थी।

पथिक अब तक सलीमा के पूर्ण इतिहास से परिचित हो चुका था और मन-ही-मन वह सलीमा से विवाह कर लेने पर तैयार हो चुका था। केवल वह स्वयं अपने-आपको सलीमा से प्रत्येक बात में, समाज की दृष्टि में, छोटा समझता था और चाहता था कि ऐसी अवस्था में सलीमा को स्वयं प्रस्ताव करना चाहिए।

एक दिन नरोत्तम ने पथिक के मन की अवस्था जानकर विवाह का निर्णय करने का निश्चय करने की ठान ली। वह नर्सिंग होम में आया तो पथिक और सलीमा लॉन में बैठे इधर-उधर की बातें कर रहे थे। नरोत्तम को देख सलीमा पथिक के समीप से उठ खड़ी हुई और उससे बोली, "लो, अब आप अपने मित्र की रखवाली करें, मैं ज़रा अपने वालिद साहब से मिल आऊँ।"

यह वही दिन था जिस दिन सलीमा ने एकाएक जाना था कि अकरम के मरवाने में उसके पिता का हाथ था। वह यहीं से खानबहादुर के घर के लिए रवाना हुई थी जहाँ उसने वह वार्तालाप सुना, जिसने उसके मन में विप्लव उत्पन्न कर दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरोत्तम सलीमा से रिक्त किये स्थान पर बैठ गया और स्वास्थ्य-सम्बन्धी बातें पूछने के पश्चात् कहने लगा, "दादा, आज मैं तुमसे एक अत्यावश्यक विषय पर वार्तालाप करने आया हूँ।"

"हाँ, तो बताओ, भाई।"

"तुम्हारा सलीमा के विषय में कैसा विचार है?"

"मैं समझता हूँ कि वह अच्छी लड़की है।"

"उसके अच्छे होने में तुमसे प्रमाण-पत्र नहीं माँगा गया। तुम जानते हो कि वह तुम्हारे लिए ही घर से भागकर आई है और यथार्थ में उसके भाई का कत्ल भी इसी कारण हुआ है।"

"हाँ, मैं जानता हूँ। परन्तु, भैया नरोत्तम, तुम यह भी जानते हो कि वह प्रेम करती थी पथिक से और मैं हूँ मधुसूदन। तुमको यह तो विदित ही है कि पथिक और मधुसूदन में भारी अन्तर है।"

"मुझे तो कुछ भी अन्तर प्रतीत नहीं होता। क्या कोई, दफ्तर में काम करता हुआ जब घर की बातें भूल जाता है और फिर घर पहुँचने पर जब घर की बातों का स्मरण कर लेता है, बदल रहा होता है। मैं तो, दादा, तुममें कोई अन्तर नहीं पाता। तुम मधुसूदन बनो अथवा पथिक, तुम वही आकर्षण रखते हो, जो पूर्णिमा को पागल बनाए हुए था। क्या तुम चाहते हो कि पूर्णिमा की भाँति सलीमा भी इस प्रेम के दीपक पर पतंगा बन जाए?"

"परन्तु मेरा पकड़ा जाना और पुनः जेल में ठूँस दिया जाना क्या सम्भव नहीं है? ऐसी अवस्था में विवाह के पश्चात् उसे किस सुख की आशा हो सकती है?"

"दादा, तुममें यही भारी दोष है कि तुम दूसरों की बातें स्वयं सोचने लग जाते हो। प्रत्येक मनुष्य अपने मन की अवस्था के अनुकूल विचार करता है। तुम दूसरे के मन की अवस्था को कैसे समझ और जान सकते हो और फिर इस अधूरे ज्ञान पर जो युक्ति तुम देते हो, क्या मिथ्या अथवा भ्रमपूर्ण नहीं होगी?"

"तो, भैया, तुम क्या चाहते हो?"

"मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों का विवाह हो जाय।"

"आप चाहते हैं, सो ठीक। मान लो, मैं भी स्वीकार करता हूँ। परन्तु वह क्या चाहती है, कैसे चाहती है, यह आप जानते हैं क्या?"

"तो तुम यह नहीं जानते कि वह क्या चाहती है? तुम लोग इतनी देर तक बैठे-बैठे क्या बातें करते रहते हो?"

"पहले तो हम महाशय पथिक की योजना चलाने की बातें करते थे। उसके लिए अब समय नहीं रहा। इस वर्ष का काम तो सर्वथा विफल गया। भविष्य में क्या होगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। यूरोप में युद्ध छिड़ जाने के लक्षण स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। उस समय भारतवर्ष की परिस्थिति क्या होगी, कुछ कहा नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा सकता। योजना उस परिस्थिति के अनुकूल ही होनी चाहिए। सरकार के लिए फौजी-भरती करवानी होगी अथवा नहीं, मैं या और कोई भी अभी क्या कह सकता है। अब कुछ दिन से सलीमा एक बात करती है। मुझे बायें हाथ से काम करने पर, और बायीं ओर घूमने, उठने-बैठने के लिए आग्रह किया करती है। मैं इसका अर्थ नहीं समझता और जब उससे पूछता हूँ तो हँस देती है।"

नरोत्तम की भी हँसी निकल गई। उसने शीघ्र ही फिर गम्भीर होकर कहा, "मान लो, वह तुमसे कचहरी में जाकर विवाह करने के लिए कहे तो?"

"यह रीति-रिवाज की बातें मैं नहीं पूछता। मैं तो यह कहता था कि वह निर्धन की पत्नी बनना स्वीकार करेगी।"

"फिर वही बात! तुमने क्या उसे अभी तक अपने-आपको धनी होना बताया है? वह तो जब से भी तुम्हें जानती है तब से ही तुम्हें जो कुछ तुम हो वही जानती है। तुम उसकी ओर से निरर्थक शंकाएँ अपने-आप करते रहते हो। उसे सबकुछ पहले ही विचार कर लेना चाहिए था।"

"मैं कुछ नहीं जानता, जैसा उचित जान पड़े करो। मुझे आपत्ति नहीं होगी।"

"तो ठीक है। तुम लोगों का विवाह विशेष-विवाह कानून के अनुसार होगा।"

"हाँ, यदि उसे आपत्ति न हो तो।"

पथिक मान तो गया, परन्तु वह सोचता था कि सलीमा को भारी कष्ट होगा। अभी तो वह अपने पिता से मिलती है। किसी भी समय वह उनसे क्षमा माँग उनके घर जा सकती है। परन्तु विवाहोपरान्त ऐसा सम्भव नहीं होगा। यदि कहीं वह सरकार द्वारा पकड़कर कैदी बना लिया गया तो उसका कौन सहायक होगा? इसी प्रकार की बातें उसके मन में पुनः उत्पन्न होने लगी थीं और उसका मन पुनः विचलित हो रहा था।

नरोत्तम यह कहकर, कि सलीमा से कहना कि सेठ साहब उससे मिलना चाहते हैं, मधुसूदन से विदा हो गया।

: १६ :

सलीमा जब खानबहादुर के घर से निकली तो उसका मुख क्रोध और विषाद के कारण राख की भाँति पीला पड़ रहा था। उसके सिर में चक्कर आ रहा था और उसके लिए पैदल चलना कठिन हो रहा था। भाग्य से मकान के नीचे टैक्सी मिल गयी। नर्सिंग होम का पता बताकर वह उसमें बैठ गयी।

जब तक वह मोटरकार में बैठी रही और उसके पश्चात् भी जब वह अपने कमरे में चली गयी, उसके मन में विचारों की इतनी भीड़ लग रही थी कि वह कोई भी बात गम्भीरतापूर्वक विचार नहीं सकती थी। कभी वह सोचती थी कि वह मुसलमान नवाब के घर पैदा हुई है। क्यों, क्या यह आकस्मिक घटना है? वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक हिन्दू नवयुवक से प्रेम करने लगी है । क्यों, क्या यह भी इत्तफाक है ? उसने राजनैतिक कार्यक्रम में भाग लिया । क्या यह भी अकारण घटना थी ? उसके पिता को ये बातें पसन्द नहीं आईं । उन्होंने उसके प्रेमी को मरवा डालना चाहा । प्रेमी के स्थान पर उसका भाई मारा गया । अभी भी उसके पिता को पश्चात्ताप नहीं लगता । वह अभी भी अपनी हठ पर डटे हैं ।

केवल ये बातें ही नहीं थीं जो उसको चिन्तित कर रही थीं । वह अपनी परिस्थिति के अनिश्चित होने से कम चिन्तित नहीं थी । उसने अपने माता-पिता को छोड़ दिया था । घर के सुख और आराम को तिलांजलि दे दी थी । भाई, जो उसकी रक्षा के लिए उद्यत हुआ था, अब नहीं रहा था । इन सबसे अधिक जिसको प्रेम करने के कारण वह सबकुछ हुआ था, वह बदल गया था । वह पथिक से प्रेम करती थी । पथिक नहीं रहा था । पथिक के स्थान में एक नवीन व्यक्ति आ उपस्थित हुआ था । क्या मधुसूदन और पथिक एक हैं ? बाह्य शरीर से तो एक ही जैसे प्रतीत होते हैं, परन्तु पथिक अथवा मधुसूदन क्या मन से भी एक हैं ? मधुसूदन भी उतना ही आकर्षणमय शरीर रखता है जितना पथिक का था । पथिक से मधुसूदन होने में उसके शारीरिक आकर्षण में परिवर्तन नहीं हुआ था, परन्तु सलीमा के लिए शारीरिक आकर्षण कुछ अधिक मूल्य नहीं रखता था । उसने एक देशभक्त को, कर्मयोगी को, चमत्कारक विचार रखने वाले को और कंचन के समान पवित्र आचरण रखने वाले व्यक्ति को अपने प्रेम का पात्र बनाया था । क्या इन सब गुणों में मधुसूदन भी पथिक ही है ?

उसकी चिन्ता और दुःख का एक और कारण भी था । उसके मन में स्वयं भी अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र देखने की उत्कट अभिलाषा थी । इस अभिलाषा से प्रेरित होकर वह राजनीति की गन्दी नाली में अवतीर्ण हुई थी । वह अपने आचरण से अपने भाई को भी इसमें घसीट लाई । भाई गया और साथ ही उस वृहत् अभिलाषा की पूर्ति के लिए जो कुछ प्रयत्न किया गया था, वह भी मिट्टी में मिल गया ।

जिस दृष्टिकोण से भी वह अपनी, अपने परिवार की, अपने हृदय के देवता की, अपने देश और जाति की अवस्था पर विचार करती थी, उसकी विचारधारा कुछ दूर जाकर इस प्रकार अटक जाती थी जैसे मार्ग आगे से बन्द हो गया हो । यह सबकुछ उसे पागल बना रहा था । वह इस परिस्थिति के जाल से छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं पाती थी । ऐसी परिस्थिति में मनुष्य को आत्मघात का ही मार्ग दिखाई देता है । सलीमा के सम्मुख भी अपनी परेशानी से मुक्त होने का यह द्वार मुख फैलाकर कई बार आ उपस्थित हुआ था और वह इन सब झंझटों से छुट्टी पाने के इस उपाय को ग्रहण करने के लिए अपने मन को तैयार करती थी । इसी प्रकार के विचारों में लीन वह किसी निर्णय तक न पहुँच सकने के कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर्सिंग होम में अपने कमरे को अन्दर से बन्द कर अपने पलंग पर लेटी छत की ओर टकटकी लगाये हुए थी।

पथिक ने उसे आते देखा था और वह नरोत्तम का सन्देश उसे देने के लिए पीछे-पीछे आया, परन्तु उसके वहाँ पहुंचने से पहले ही सलीमा ने भीतर से किवाड़ बन्द कर लिया था। मधुसूदन ने यह विचार कर कि वह अभी बाहर आएगी तो उसे सेठ साहब से मिल लेने के लिए कह देगा, अपने कमरे में, जो सलीमा के कमरे के बगल में ही था, चला गया। वह वहाँ सलीमा की प्रतीक्षा करता रहा। लंच का समय हो गया। खाना खाया, परन्तु वह नहीं आई। प्रतीक्षा करते-करते चार बजे की चाय का समय हो गया। सलीमा अभी भी नहीं आई। पथिक ने अब फिर उसके कमरे को जाकर देखा। वह अभी भी भीतर से बन्द था। उसने इधर-उधर झाँककर देखने का यत्न किया। खिड़की का परदा कुछ हटा हुआ था। उसमें से झाँककर देखने पर पथिक ने देखा कि सलीमा पलंग पर लेटी हुई है। वह हिल-डुल नहीं रही। निश्चल पड़ी है। वह इसका अर्थ नहीं समझ सका। उसने दरवाज़े को खटखटाया। परन्तु भीतर से न तो आवाज़ आई और न ही दरवाज़ा खुला। पथिक ने फिर इस बार खूब ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाया। फिर भी दरवाज़ा नहीं खुला। उसने फिर जाकर खिड़की में से झाँका। सलीमा अभी भी वैसे ही लेटी हुई थी। यह क्या है ? उसे क्या हुआ ? क्या बेहोश पड़ी है, अथवा वह भी···? उसे पूर्णिमा की मृत्यु की याद आ गई। इस विचार के आते ही वह उतावला हो उठा। उसके मन में आया कि दरवाज़े का किवाड़ तोड़कर भीतर चला जाए। इस विचार की पूर्ति के लिए वह कोई लोहे की मज़बूत छड़ ढूंढ़ने लगा। इसके लिए वह भागता हुआ डॉक्टर फिशर के कमरे की ओर गया। उस कमरे से नरोत्तम, नरोत्तम की स्त्री और सेठ साहब को बाहर निकलते देख वह वहीं रुककर उनका मुख देखने लगा। वे लोग भी मधुसूदन को पागलों की भाँति भागते हुए उनकी ओर आते हुए देख और उसे अब अवाक् खड़ा देख, विस्मय में ठहर गए। नरोत्तम ने आगे बढ़कर मधुसूदन से पूछा, "दादा, क्या बात है, कहाँ जा रहे हो ?"

मधुसूदन के मुख से निकला, "पूर्णिमा··।" वह आगे कुछ नहीं कह सका। नरोत्तम ने समझा कि मधुसूदन फिर पागल हो गया है। उसने मधुसूदन की ज्योतिहीन आँखों और कांपते हुए ओठों को देखते ही यह अनुमान लगाया था। वह डॉक्टर फिशर की ओर घूमकर उन्हें प्रश्नभरी दृष्टि से देखने लगा। डॉक्टर, उनके पीछे-पीछे ही आ रहा था, आगे आकर मधुसूदन को कन्धे से पकड़ हिलाकर पूछने लगा, "क्यों, क्या है ? कहाँ भागे जाते हो ?"

मधुसूदन को अपनी बात कहने के लिए उचित शब्द नहीं मिल रहे थे। चिन्ता से उसका गला सूख रहा था और वह कुछ भी कहने में अशक्त था। वह नरोत्तम को हाथ से पकड़कर सलीमा के कमरे की ओर ले गया। सब लोग उसके पीछे-पीछे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए। मधुसूदन ने उसको खिड़की में से देखने के लिए कहा। नरोत्तम ने देखा कि सलीमा छत की ओर टकटकी बाँधे लेटी हुई है। डॉक्टर ने भी देखा। उसने कहा, "फेन्टेड (बेहोश हो गई है)।"

मधुसूदन ने अब फिर अपने विचार प्रकट करने का यत्न किया। कहा, "शायद पूर्णिमा की भाँति...।"

इस आशंका को सुन नरोत्तम काँप उठा। उसने डॉक्टर से भीतर चलने को कहा। डॉक्टर ने अपनी छड़ी से खिड़की का शीशा तोड़ डाला और हाथ भीतर डाल चटकनी खोल डाली। खिड़की के मार्ग से मधुसूदन कमरे के भीतर चला गया और उसने भीतर से दरवाज़ा खोल दिया।

सब लोग भीतर चले गए। सलीमा अभी भी खाट पर लेटी हुई वैसे ही छत की ओर देख रही थी। डॉक्टर ने नाड़ी देखी। डॉक्टर का हाथ लगते ही सलीमा चौंककर उठ बैठी। सबको अपने चारों ओर खड़े और प्रश्न-भरी दृष्टि से देखते हुए देख वह हैरान रह गई। पूछने लगी, "क्या है ? आप क्या देख रहे हैं ?"

डॉक्टर ने मुस्कराते हुए कहा, "देख रहे हैं कि तुम जीती हो या नहीं।"

नरोत्तम ने परिस्थिति समझाते हुए कहा, "दरवाज़ा खटखटाया, खिड़की तोड़ भीतर आये, परन्तु तुम्हारी नींद ही नहीं खुली।"

इस पर डॉक्टर ने कह दिया, "मैंटल-ट्रान्स (मानसिक एकान्त) में थी।"

सलीमा ने अचम्भे से पूछा, "सत्य ही आपने दरवाज़ा खटखटाया था ? मुझे तो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि बाहर घटाटोप काले बादल छा रहे हैं और उनमें गर्जन हो रही है। तो वह दरवाज़ा था। डॉक्टर साहब, मुझे खेद है कि आपको खिड़की तोड़नी पड़ी।"

वह पलंग से उठ पड़ी। सबने देखा कि उसका मुख पीला पड़ गया है और उसके हाथ-पाँव काँप रहे हैं। डॉक्टर अब उन बातों के सम्बन्ध में, जो वह सेठ साहब इत्यादि से अपने कमरे में से कहता हुआ आ रहा था, कहने लगा, "अच्छी बात है। आप मिस्टर पथिक को ले जा सकते हैं। मैं इनके लिए औषधि लिख देता हूँ। ये पीते रहें। ठीक हो जाएँगे। हाँ, तो सलीमा को 'डिजिटैलिस' की एक खुराक पी लेनी चाहिए।"

इतना कह डॉक्टर वहाँ से चला गया। सलीमा ने लम्बी साँस ली और पुनः पलंग पर बैठ गई। सेठ साहब ने पूछा, "क्यों, क्या है ? तुम्हारा रंग पीला क्यों पड़ गया है ?"

सलीमा के मस्तिष्क पर भारी दबाव पड़ रहा था। अब वह दबाव सब लोगों के आने से ढीला पड़ गया। इस आकस्मिक दबाव के हटने से उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह पहले तो इन आँसुओं को छुपाने का यत्न करने लगी, परन्तु इसमें सफल न हो सकने से आँचल से मुख ढाँप लाचार हो रोने लगी। तपस्विनी उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार अधीर होते देख, पलंग पर उसके पास बैठ गई और पीठ पर हाथ फेरते हुए बोली, "सलीमा, क्यों रोती हो ? क्या हुआ है जिससे तुम्हें इतना दुःख हो रहा है ?"

सबके बहुत समझाने-बुझाने पर सलीमा के आँसू थमे। उसने संक्षेप में वह सब बता दिया जो उसने खानबहादुर के स्टडी-रूम में खड़े-खड़े सुना था। यह रहस्य सुन सबकी आँखों में विषाद के आँसू झलकने लगे। अन्त में सलीमा ने कहा, "मेरे मन में आता है कि कल कोर्ट में जाकर अपना बयान दे दूँ।"

यह सुन सब घबराकर बोले, "नहीं, नहीं !"

"क्यों ?" सलीमा ने सबकी ओर देखते हुए पूछा।

"नवाब साहब ने भूल की है। उस भूल का फल उनको मिल भी गया है। उन्होंने अपनी लड़की को अपने विचारानुकूल मुसलमान बनाये रखना चाहा और एक ख्याली बात, अर्थात् इस्लाम का वह रूप, जो वह समझते हैं, को बचाने के लिए उन्होंने वास्तविक वस्तु अर्थात् अपनी लड़की खो दी। उन्होंने अशुद्ध विचार से एक हिन्दू काफिर को मरवाना चाहा था और खो बैठे हैं अपना इकलौता पुत्र। यथार्थ में तो उनको दण्ड मिल ही गया है। वह असल और नकल में अन्तर न जान, इस छोटी-सी भूल का बहुत भारी दण्ड पा चुके हैं। हम समझते हैं कि भूल से अधिक दण्ड मिल चुका है। इससे और अधिक करना अन्याय हो जाएगा।"

"परन्तु मेरी आत्मा नहीं मानती। मैं असल कातिल के स्थान पर किसी दूसरे को फाँसी चढ़ते नहीं देख सकती।"

सेठ साहब ने कहा, "इस देश में अनेक इससे भी बड़े-बड़े अन्याय हो रहे हैं। पहले उन अन्यायों को तो मिटा लें। यहाँ तो असल दोषी को पर्याप्त से अधिक दण्ड मिल चुका है।"

सलीमा को अपने मिथ्या विचारों के एक पक्ष का भास हो गया। उसने कहा, "मैं नहीं जानती, परन्तु तीन घण्टे से मैं इसी समस्या को सुलझाने का यत्न कर रही हूँ।"

"बस, इसीलिए इतनी चिन्तित थीं ?"

"नहीं, और भी बातें हैं, परन्तु वे गौण हैं। मुख्य तो यही है कि मेरी आत्मा मुझे बार-बार कह रही है कि वास्तविक दोषी वालिद साहब हैं। उन्हें दण्ड दिलवाना चाहिए।"

तपस्विनी ने कहा, "यह तो मानना ही पड़ेगा कि नवाब साहब भारी दोषी हैं, परन्तु क्या उनको उचित से अधिक दण्ड नहीं मिल चुका ? किसी का इकलौता बेटा मर जाय, यह क्या कम मुसीबत है ?"

नरोत्तम ने कहा, "सलीमा बहिन, छोड़ो इस बात को। और क्या बात है जिसकी तुम्हें चिन्ता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ नहीं। वह तो मामूली है।"

"मैं जानती हूँ।" तपस्विनी ने कहा।

"तुम ?" सबने हैरानी में पूछा।

"हाँ, इन्हें मधुसूदन दादा के विवाह करने की चिन्ता लग रही है।"

सब हँसने लगे। सलीमा का मुख लज्जा से लाल हो उठा। नरोत्तम ने हँसी के सूत्र को लम्बा करते हुए कहा, "तो क्या सलीमा की निगाह में कोई ऐसी लड़की है जो पागल दादा से विवाह करना स्वीकार कर ले ?"

"एक लड़की को तो मैं जानती हूँ।" तपस्विनी ने कहा।

"तब तो ठीक है। दादा, तुम्हें तो स्वीकार है न ?"

सलीमा और सुन नहीं सकी। उसके मन में भाँति-भाँति की आशंकाएँ उत्पन्न हो रही थीं। वह नहीं जानती थी कि वह क्या उत्तर देगी। अतएव उठकर वह कमरे से बाहर जाने लगी तो तपस्विनी ने उसकी बाँह पकड़ ली और उसे घसीटकर अपने पास बैठाते हुए कहा, "भागी कहाँ जाती हो ? देखो, दादा पर तरस खाओ न। उसके बनते काम में विघ्न नहीं डालना चाहिए।"

नरोत्तम ने कहा, "तो, दादा, क्या सम्मति है आपकी ?"

पथिक ने मुस्कराते हुए कहा, "पागल के साथ तो किसी पगली का ही विवाह हो सकता है। यदि कोई मेरी जैसी पगली मिल जाय तो।"

"वह मालूम तो पगली ही होती है," तपस्विनी ने कहा, "परन्तु न्यूनाधिक की बात मैं नहीं जानती। हाँ, वह मुसलमान है।"

"नहीं।" सलीमा बोल उठी, "वह लड़की मुसलमान नहीं है।"

"तो तुम भी उसे जानती हो ?" सेठ साहब ने अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा।

सब हँसने लगे। सलीमा की भी हँसी निकल गई।

तपस्विनी ने सलीमा की ओर देखकर पूछा, "मैं तो समझती थी कि वह मुसलमान है।"

"नहीं," सलीमा ने गम्भीर होकर कहा, "अब वह मुसलमान नहीं रही। आज दोपहर से उसने इस्लाम से ताल्लुक तोड़ दिया है।"

"किसी आर्यसमाजी पण्डित ने शुद्धि की होगी ?"

"नहीं। उसे हिन्दुस्तान में माने जाने वाले इस्लाम से नफरत हो गई है।"

"और टर्की में माने जाने वाले इस्लाम से ?"

"वह उसे नहीं जानती। उसने वहाँ के लोगों के मजहब को देखा नहीं है।"

"इस पर भी बिना शुद्धि के तो वह मुसलमान ही होगी न। क्यों, दादा, क्या विचार है आपका ?"

"मैं समझता हूँ।" मधुसूदन ने कहा, "पागलों की दुनिया में तो पागलों की बातें होनी चाहिए। यह शुद्धि-संस्कार तो बुद्धिशील व्यक्तियों में ही शोभा देता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वही दो वेद-मन्त्र पढ़ने से किसी को हिन्दू मान लेते हैं और कलमा पढ़ने से मुसलमान।"

"तो आप क्या चाहते हैं?" तपस्विनी ने पूछा।

"मैं तो इन्सान-इन्सान में विवाह होना मानता हूँ।"

"इतनी तो वह है।"

"तो ठीक है। मुझे स्वीकार है।"

: २० :

कोर्ट में नियमानुकूल प्रार्थनापत्र दे दिया गया और यथासमय विवाह हो गया।

सलीमा को अपने प्रयास में सफलता मिली। उसे बहुत सन्तोष था। वह अति आनन्दित थी। विवाह के दूसरे दिन बहुत प्रातःकाल सलीमा को पथिक ने जगाकर कहा, "मैंने एक योजना बनाई है।"

"हिन्दुस्तान को आज़ाद करने की?"

"वह भी तो बनेगी, परन्तु अपने समय पर। जो योजना हमने चलाई थी वह तो विफल गई। दूसरी योजना इससे भी अधिक प्रबल और व्यापक होनी चाहिए। उसके लिए गम्भीरतापूर्वक विचार करने की, कई लोगों से परामर्श करने की और साधन एकत्रित करने की आवश्यकता है। उसके लिए समय चाहिए। हमें तो अभी 'हनीमून' मनाना है।"

"हाँ, तो फिर?" सलीमा ने कहा।

"हम दोनों यहाँ से चुपचाप चल दें। मेरी इच्छा कश्मीर-यात्रा के लिए हो रही है।"

"परन्तु चुपचाप क्यों?"

"केवल इतना लिखकर रख जाएँगे कि हम 'हनीमून' को जा रहे हैं।"

"नरोत्तम भैया को भी नहीं बताएँगे क्या?"

"नहीं, किसी को नहीं।"

"इससे लाभ क्या होगा?"

"मैं अब किसी स्थान पर नाम बदलकर रहूँगा। वहाँ एकान्त में बैठकर भविष्य का कार्यक्रम बनाएँगे। यदि सेठ साहब इत्यादि को बताकर गया तो वे नहीं जाने देंगे। मैं उनके मुख पर उनकी बात का विरोध नहीं कर सकता।"

"कश्मीर में क्या एकान्त मिलेगा?"

"चलकर देखो तो सही। 'हनीमून' तो होगा ही।"

कश्मीर-यात्रा के विचार ने तो सलीमा के मन में भी गुदगुदी उत्पन्न कर दी। वह राज़ी हो गई। उसने पूछा, "बिना बताए कैसे जाएंगे? दिन-भर तो घर में कोई-न-कोई मेरे पास रहता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी राय है कि ये सब आभूषण और कपड़े, जो तपस्विनी बहिन ने हम लोगों को दिए हैं, एक में बाँध लो। इस समय चार बजे हैं। घर-भर के लोग सो रहे हैं। हम दबे पाँव चलेंगे तो बिना किसी को जगाए जा सकेंगे।"

सलीमा ने कपड़े और आभूषण बाँध लिये। उन्हें एक सूटकेस में रख लिया और वे दोनों बहुत ही साधारण कपड़े पहन चुपके से कोठी के पिछले दरवाज़े से निकल गए।

घूमकर जब कोठी के सामने आए तो साथ की कोठी के फाटक पर एक पुलिस लारी खड़ी थी और कई पुलिस वाले वहाँ दरवाज़े पर खड़े थे। पुलिस इन्स्पेक्टर चौकीदार से तकरार कर रहा था। सलीमा ने कहा, "यह क्या है? इतनी सुबह ये लोग यहाँ इकट्ठे हो क्या कर रहे हैं?"

वह बलवे से डरी हुई थी और समझती थी कि उसी के सम्बन्ध में ये लोग यहाँ पहुँचे हैं। पथिक के मन में एक बात आई। वह एक क्षण तक सोचता रहा। पश्चात् सलीमा से बोला, "ज़रा ठहरो। एक बात इन लोगों से करके आता हूँ।"

सलीमा सड़क के एक ओर खड़ी हो गई। पथिक ने सूटकेस उसके पास सड़क पर रख दिया और स्वयं पुलिस वाले के पास चला गया। चौकीदार कह रहा था, "यहाँ साहब लोग रहते हैं। हम किसी मधुसूदन को नहीं जानते।"

पथिक तुरन्त समझ गया कि उसकी खोज में ये लोग आए हैं। उसने पुलिस सब-इन्स्पेक्टर से, जिसके पास वारण्ट थे, पूछा, "क्यों, साहब, आप किसको चाहते हैं?"

"मिस्टर मधुसूदन उपनाम पथिक को, जो डॉक्टर फिशर के नर्सिंग होम में डेढ़ महीने से बीमार पड़ा है। डॉक्टर फिशर ने चौंतीस नम्बर कोठी बताई है और यह कहता है कि यहाँ साहब रहते हैं, देशी आदमी नहीं हैं।"

पथिक ने कन्धों को ऊपर उठा और अपनी ओर से अज्ञानता प्रकट करते हुए अपना रास्ता लिया। पुलिस सब-इन्स्पेक्टर ने पथिक को बुलाकर कहा "सुनिए, आप कहाँ रहते हैं?"

"पीछे की कोठी में रहता हूँ।"

"यह नम्बर पैंतीस में कौन रहता है?"

"कोई कलकत्ते के सेठ हैं। नाम नहीं जानता।"

"तो ठीक है। वही हैं। डॉक्टर साहब नम्बर भूल गए होंगे।"

पुलिस के लोग पैंतीस नम्बर की कोठी के फाटक की ओर चले गए और पथिक जहाँ सलीमा खड़ी थी वहाँ आ पहुँचा। उसने सूटकेस उठाया और सलीमा को चलने को कहा। दोनों टैक्सी स्टैंड की ओर चल पड़े। मार्ग में सलीमा ने पूछा, "क्या झगड़ा था?"

"एक मधुसूदन उपनाम पथिक के वारण्ट थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपके ?" सलीमा की चीख निकल गई।

"नहीं, मेरा नाम गोपाल है और तुम्हारा कीर्तिदेवी।"

"अब क्या होगा ?"

"होगा क्या ! यह मधुसूदन आठ वर्ष से लापता है और अभी कई वर्ष तक लापता रहेगा। उसे अभी बहुत कुछ करना है।"

□□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त के सर्वाधिक चर्चित उपन्यास

स्वाधीनता के पथ पर (स्वाधीनता आन्दोलन 1930 से 35 का काल)
पथिक (स्वाधीनता आन्दोलन 1935 से 40 का काल)
स्वराज्य दान (स्वाधीनता आन्दोलन 1940 से 46 का काल)
विश्वासघात (स्वाधीनता आन्दोलन 1946 से 47 का काल)
देश की हत्या (स्वाधीनता आन्दोलन 1947 से 48 का काल)
दासता के नए रूप, (1948 - 49)
सदावत्सले मातृभूमे (1949-..........)
दो लहरों की टक्कर (2 भाग)
जमाना बदल गया (4 भाग)
वीर पूजा
युद्ध और शान्ति (2 भाग)
सफलता के चरण
आवरण
अन्तरिक्ष में
अपने पराए
आकाश पाताल
एक और अनेक
कला
चंचरीक
जात न पूछे कोय
दो भद्र पुरुष
धरती और धन
नगर परिमोहन

हिन्दी साहित्य सदन
विक्री केन्द्र: 2,वी डी चैम्बर्स ,10/54 डी बी गुप्ता मार्ग
(समीप प्रह्लाद मार्केट) करोल बाग, न0 दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की प्रतिनिधि रचनाएं

हिन्दी/साहित्य को श्री गुरुदत्त ने अपनी सशक्त लेखनी से 250 के लगभग अनुपम रचनाएं दी हैं। इन रचनाओं में से चुन कर कुछ विशिष्ट रचनाएं दस खण्डों में प्रकाशित की गई हैं। सभी विशुद्ध भारतीय विचारधारा को दृष्टिकोण में रखकर लिखे गए सामाजिक, ऐतिहासिक ,वैज्ञानिक ,राजनैतिक,व पौराणिक उपन्यास हैं — उनका विवरण इस प्रकार हैं:-

1 - मेघवाहन , सागर तरंग , विक्रमादित्य साहसांक (तीन ऐतिहासिक उपन्यास)	150.00
2 - सहस्त्रबाहू , गगन के पार , अन्तरिक्ष में (तीन वैज्ञानिक उपन्यास)	150.00
3 - कला, कामना, अनदेखे बन्धन (तीन सामाजिक उपन्यास)	150.00
4 - एक और अनेक, मानव (दो भावनाप्रधान सामाजिक उपन्यास)	180.00
5 - परित्राणाय साधूनाम् (सम्पूर्ण महाभारत कथा उपन्यास रूप में)	550.00
6 - स्वाधीनता के पथ पर , पथिक (राजनीतिक श्रृंखला के प्रथम दो उपन्यास)	200.00
7 - स्वराज्यदान , दासता के नए रूप (राजनीतिक श्रृंखला की दो कड़ियाँ)	240.00
8 - देश की हत्या , विश्वासघात (राजनीतिक श्रृंखला के अन्तिम उपन्यास)	220.00
9 - प्रभातवेला , कुमार सम्भव , उमड़ती घटाएं (तीन उपन्यास पौराणिक पृष्ठभूमि पर)	280.00
10- गंगा की धारा (मुगल काल पर उपन्यास)	280.00
इस सैट (10 खण्ड)का कुल मूल्य	**2400.00**

(Tele/Fax - 51545969 , 23553624) E Mail - indiabooks@rediffmail.com

हिन्दी साहित्य सदन -

2 बी डी चैम्बर्स , 10/54 डी बी गुप्ता मार्ग , (समीप प्रह्लाद मार्केट)न0 दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर उपन्यास

परित्राणाय साधूनाम् (महाभारत पर आधारित - अवतरण, सम्भवामि युगे युगे (2 भाग) व विनाशाय च दुष्कृताम् (2 भाग) का सम्पूर्ण संयुक्त संस्करण।)

बहती रेता
(भारत के प्रथम गणतन्त्र वैशाली पर आधारित उपन्यास)

लुढ़कते पत्थर
सागर तरंग
मेघवाहन
महाकाल
भैरवी चक्र
अस्ताचल की ओर (3 भाग)
उमड़ती घटाएं
(कश्मीर के इतिहास पर आधारित उपन्यास)

खण्डहर बोल रहे हैं (3 भाग)
(शाहजहाँ औरंगज़ेब व शिवाजी के संघर्ष पर आधारित उपन्यास)

दिग्विजय
(आदि शंकराचार्य के जीवन काल पर उपन्यास)

पत्रलता
(हर्षवर्धन के काल पर आधारित उपन्यास)

गंगा की धारा
(अकबर के जीवन काल पर एक रोचक उपन्यास)

वाम मार्ग
(वाम मार्गीय जीवन शैली पर ऐतिहासिक उपन्यास)

अमृत मन्थन, परम्परा, अग्नि परीक्षा
(राम कथा पर आधारित उपन्यास तीन खण्डों में)

167931

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद, दर्शन शास्त्रों व उपनिषदों पर श्री गुरुदत्त की रचनाएं

हमारी सांस्कृतिक धरोहर
वेद मन्त्रों के देवता
वेद और वैदिक काल
सायंस और वेद
विज्ञान और विज्ञान
वेदों में सोम
वेदों में इन्द्र
वेद प्रवेशिका (2 भाग)
यजुर्वेद और गृहस्थ धर्म
सृष्टि रचना
विश्वेदेवा

ईश केन कठ उपनिषद्
प्रश्न ऐत्तरेय उपनिषद्
मुण्डक माण्डूक्य उपनिषद्
तैत्तिरीय उपनिषद्
अद्वैत मीमांसा
ब्रह्मसूत्र -1
ब्रह्मसूत्र -2
सांख्य दर्शन
न्याय दर्शन
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्ययन)
श्रीमद्भगवद्गीता (भाष्य)

इतिहास पर श्री गुरुदत्त की रचनाएं

इतिहास में भारतीय परम्पराएं
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास

167931
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

राजनीति पर अध्ययन

अन्तिम यात्रा (डा० मुखर्जी की)
राष्ट्र राज्य और संविधान
हिन्दुत्व की यात्रा
धर्म तथा समाजवाद
मैं हिन्दू हूँ (राजनैतिक संस्मरण)
भाग्यचक्र (संस्मरण)
भाव और भावना (संस्मरण)

वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान- हिन्दू राष्ट्र
धर्म संस्कृति और राज्य
स्व अस्तित्व की रक्षा (2 भाग)
मनुष्य और समाज
बुद्धि बनाम बहुमत
भारत में राष्ट्र
प्रजातंत्र अथवा वर्णाश्रम व्यवस्था

(Tele/Fax - 51545969 , 23553624) E Mail - indiabooks@rediffmail.com
हिन्दी साहित्य सदन
विक्री केन्द: 2,बी डी चैम्बर्स ,10/54 डी बी गुप
(समीप प्रह्लाद मार्केट) करोल बाग, न0 दिल्ल

081
167931

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-P आगत संख्या 167931

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

हिन्दी साहित्य सदन

विक्री केन्द्र: 2,बी डी चैम्बर्स ,10/54 डी बी गुप्त

(समीप प्रह्लाद मार्केट) करोल बाग, न० दिल्ल

081
167931

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यासकार श्री गुरुदत्त

युवावस्था से ही राजनीतिज्ञों से सम्पर्क, क्रान्तिकारियों से समीप का सम्बन्ध तथा इतिहास का गहन अध्ययन--- इन सब की पृष्ठभूमि पर श्री गुरुदत्त ने कुछ उपन्यास लिखे हैं।

'स्वाधीनता के पथ पर', 'पथिक' तथा 'स्वराज्यदान' राजनीतिक उपन्यासों की श्रृंखला में प्रथम तीन कढ़ियां हैं जिन्होंने उपन्यास जगत् में धूम मचा दी थी। श्री गुरुदत्त चोटी के उपन्यासकार माने जाने लगे।

इन उपन्यासों की श्रृंखला में ही 'विश्वासघात,' 'देश की हत्या', 'दासता के नये रूप' तथा 'सदा वत्सले मातृभूमे!' लिखकर श्री गुरुदत्त ने १९२० से स्वाधीनता आन्दोलन का विवरण उपन्यासों के रूप में अत्यन्त ही रोचक शैली में लिपि-बद्ध कर दिया है।

हिन्दी साहित्य सदन
18/28 (मार्ग 28), पंजाबी बाग पूर्वी
नई दिल्ली - 110 026

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar